हवा में पसरे जहर से जूझना होगा

यह ठीक है कि भारत और चीन की सत्ता प्रणालियों में खासा फर्क है, लेकिन इसे कुछ न करने की वजह के तौर पर तो इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। अगर हमने प्रदूषण की रोकथाम के लिए तत्काल कुछ बड़े कदम न उठाए, तो आने वाले दिनों में बहुत कुछ गंवाने पर विवश होना पड़ेगा।

आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

शशि शेखर

आजकल

बरसों पहले दक्षिण अफ्रीका के 'काला पानी' रॉबिन आइलैंड में नेल्सन मंडेला की कोठरी देखी थी। 7X9 के उस पिंजरेनुमा कमरे में छह फुटे मंडेला ने अपनी जवानी के 18 साल काटे थे। मटमैले अंधियारे की मारी इस निस्तेज कोठरी में वह प्रतिदिन कसरत के जरिये तन-मन को दुरुस्त रखने का प्रयास करते। अलग-अलग कारागारों में मंडेला कुल जमा 27 साल कैद रहे।

इस बड़े अंतराल में दुनिया ने न जाने कितनी करवटें लीं, पर मंडेला इस आरोपित अकेलेपन में भी अपनी अलख को जस की तस जिलाए रखने में कामयाब रहे। आजकल वह बहुत याद आने लगे हैं। इसकी वजह उनका त्याग, संघर्ष और सिद्धांतों के प्रति समर्पण नहीं, बल्कि वह कोठरी है, जहां मंडेला सजा काटने के साथ खुद को चुस्त-दुरुस्त रखने की तपस्या कर रहे थे। दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में जहरीली हवा ने आजकल मुझ जैसे हजारों लोगों को घर में ही टहलने या कसरत करने के लिए मजबूर कर दिया है।

पिछले रविवार को तो गजब ही हो गया।

सुबह कुछ देर से उठा और बालकनी से बाहर झांका, तो सन्न रह गया। नोएडा के मेरे 17वीं मंजिल पर स्थित अपार्टमेंट से नीचे धरती नहीं दिख रही थी। हमारी सरजमीं और हमारे बीच गहरा मोटा, मटमैला कुहासा पसरा हुआ था। आसमान से बादल नीचे उतरते हैं, परंतु यह धुंधलका तो नीचे से ऊपर की ओर बढ़ रहा था। अजीब-सी दहशत ने मुझे घेर लिया था, पर मैं अकेला नहीं था। मुझ जैसे लाखों लोग जानते थे कि यह एक बुरे हफ्ते का बहुत बुरा अवसान मात्र है। आगे भी हाल बेहाल रहने वाला है।

कोई आश्चर्य नहीं कि दिल्ली और एनसीआर में इन दिनों सिर्फ विषैली वायु के चर्चे हैं। बूढ़े सांस नहीं ले पा रहे, नौजवानों का दम घुट रहा है, गर्भवती युवतियां बाहर निकलने से कतरा रही हैं और नवजात शिशु बेचैन हैं। हर नागरिक अपने घर में 'एयर प्यूरीफायर' तो लगवा नहीं सकता और जो लगवा चुके हैं, वे भी खुद को कितनी देर बंद खिड़कियों और दरवाजों के पीछे रख लेंगे? मंडेला को रंगभेदी उपनिवेशवादी सरकार ने जेल में डाला था, पर हम लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह दंश भोगने को अभिशप्त हैं।

मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं?

अब तक हमारे देश में पर्यावरण को लेकर चिंता तो जाहिर की जाती रही, लेकिन उपाय 'ऊंट के मुंह में जीरे' के बराबर ही किए गए। मसलन, 1999 में दिल्ली में सीएनजी बसें चलनी शुरू हुईं, कुछ प्रदूषण घटा और तालियां बजने लगीं। हालांकि, हमारे नीति-नियंता जानते थे कि सिर्फ इतने से काम नहीं चलने वाला। दर-हकीकत आज भी लाखों लोग खाना बनाने और अपनी देह को गरम रखने के लिए लकड़ी या कोयले का प्रयोग करते हैं। छोटे उद्योगों में भी इनका उपयोग होता है। विदेशी वाहन निर्माता पश्चिमी देशों और भारत जैसे मुल्कों के बीच कार्बन उत्सर्जन संबंधी नियमों का द्वैत बनाए हुए हैं। जो किसान कल पराली जलाते थे, उन्हें आज तक पराली प्रबंधन के लिए संपूर्ण विकल्प मुहैया नहीं कराए गए। इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए बड़ी संख्या में पेड़ कट रहे हैं, उनकी जगह कई गुना पौधे लगाए जाने का प्रावधान है। वे समूचा आकार ले सकें, इसकी जिम्मेदारी कोई नहीं लेता।

क्या आपको लगता है कि इस मुद्दे पर हमारी संसद और विधानमंडल जरूरत के मुताबिक संवेदनशील हैं? व्यर्थ के मुद्दों पर शब्दबाण दागते सियासी बिरादरों को आपने पर्यावरण के मुद्दे पर कभी बहिर्गमन करते देखा है? अकारण नहीं है कि हमारे राजनेता अब हूटिंग के शिकार होने लगे हैं। दिल्ली की मुख्यमंत्री से हर परिचर्चा में यही सवाल पूछा जाता है। अरविंद केजरीवाल से भी लगातार यह प्रश्न किया जाना चाहिए। उन्होंने दिल्ली पर लगातार 10 साल राज किया, रेखा गुप्ता तो अभी आई हैं।

मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि जानलेवा हवा-

पानी के लिए सभी दल बराबर के जिम्मेदार हैं।

मैं यहां चीन का उदाहरण देना चाहूंगा। उसने वायु प्रदूषण पर कैसे काबू पाया, इस बारे में जान-बूझकर कम चर्चा की जाती है। यहां मैं अपनी आंखों देखी बताना चाहूंगा। सन् 2008 में मैं तत्कालीन प्रधानमंत्री के साथ बीजिंग गया था। एक साल पहले ही विश्व बैंक ने इसे दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में एक घोषित करते हुए अनुमान लगाया था कि इस महानगर में हर साल चार लाख लोग प्रदूषण की वजह से मारे जाते हैं। हम जब वहां पहुंचे, तब हर ओर ओलंपिक की तैयारियां जोरों पर थीं। स्टेडियम बन रहे थे, रहने के ठिकाने संवारे जा रहे थे और इन्फ्रास्ट्रक्चर दुरुस्त किया जा रहा था। नतीजतन, हर तरफ धूल ही धूल थी।

पश्चिमी मीडिया आशंका जता रहा था कि ओलंपिक प्रतिभागियों और दर्शकों पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा। वे गलत न थे। ओलंपिक के दौरान 10 अगस्त को बीजिंग का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 604 दर्ज किया गया, जबकि उसी दिन लंदन में 38 और न्यूयॉर्क में 24 एक्यूआई आंका गया था।

आने वाले पांच साल में हालात और खराब हो गए थे। 'अमेरिकन एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस' में पेश किए गए अध्ययन के आंकड़ों के मुताबिक, 2013 में 16 लाख लोग चीन में पर्यावरण प्रदूषण के शिकार बने थे। उस दौरान बीजिंग का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 750 पार कर गया था। यही वह मुकाम था, जब वहां के सत्तानायकों ने कमर कसी। उन्होंने प्रदूषण से जंग के लिए पंचवर्षीय योजना बनाई और भारी-भरकम बजट निर्धारित किया। पेट्रोल, डीजल से चलने वाली कारों की सीधी खरीद पर रोक लगा दी गई। अब ऐसी कारें खरीदने के लिए सीमित लॉटरी का विकल्प ही उपलब्ध था। कार खरीदने के इच्छुक लोगों को इलेक्ट्रिक वाहन आसानी से उपलब्ध कराए गए और घनी आबादी वाले शहरों में ट्रकों का प्रवेश वर्जित कर दिया गया। कोयले से चलने वाली मशीनरी का इस्तेमाल कम किया गया। साथ ही मेट्रो, रैपिड ट्रेन और नगर यातायात के अन्य संसाधनों की भरमार कर दी गई। साइकिल संस्कृति को फिर से बढ़ावा दिया गया और कागज की मिलें, प्रदूषण फैलाने वाली फैक्टरियां बड़े शहरों से हटा दी गईं।

शासन तंत्र को कसने के लिए राज्यपालों और महापौरों को भी प्रदूषण नियंत्रण लक्ष्यों से जोड़ा गया।

आज का चीन भारत की तरह सिर्फ ग्रैप की मौसमी सक्रियता मात्र तक सीमित नहीं है, वहां वर्ष भर प्रदूषण नियंत्रण और प्रबंधन होता है। इसके लिए मजबूत निगरानी तंत्र दिन-रात काम करता है। नतीजा सामने है। पिछले सोमवार को मेरा आईफोन नोएडा का एक्यूआई 460 बता रहा था, जबकि बीजिंग में उस वक्त 73 एक्यूआई दर्ज था। ठीक उसी शाम नई दिल्ली स्थित चीनी दूतावास की प्रवक्ता यू जिंग ने 'एक्स' पर लिखा, 'भारत और चीन, दोनों ही तेजी से बढ़ते शहरीकरण के बीच वायु प्रदूषण से जूझ रहे हैं। हालांकि, चुनौती अभी भी जटिल है, मगर पिछले एक दशक में चीन ने अपने लगातार प्रयासों से काफी सुधार दर्ज किया है।'

यह ठीक है कि भारत और चीन की सत्ता प्रणालियों में खासा फर्क है, लेकिन इसे कुछ न करने की वजह के तौर पर तो इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। अगर हमने प्रदूषण की रोकथाम के लिए तत्काल कुछ बड़े कदम न उठाए, तो आने वाले दिनों में बहुत कुछ गंवाने पर विवश होना पड़ेगा।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

बानू मुश्ताक
साहित्यकार व सामाजिक कार्यकर्ता

बड़े जोखिम उठाकर बानू को मिला ऊंचा मुकाम

वह बहुत मुश्किल दौर था। चूंकि बानू मुस्लिम बहुल इलाके में रहती थीं, इसलिए फतवे का असर लाजिमी रूप से परिवार पर पड़ा। उनके परिवार से लोगों ने बातचीत बंद कर दी थी, यहां तक कि बच्चों का भी बहिष्कार कर दिया गया था। इन बातों से बगैर घबराए बानू लिखती रहीं।

साल 2025 के हिस्से आई अच्छी-बुरी घटनाओं का सटीक लेखा-जोखा तो इसके व्यतीत होने पर ही होगा, मगर जिन चंद घटनाओं को हमारा इतिहास हमेशा याद रखेगा, उनमें से एक की मुख्य किरदार हैं बानू मुश्ताक। प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार पाने वाली कन्नड़ की पहली लेखिका। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मान को पाने के बाद बानू के साहित्य, उनकी लघुकथाओं के संग्रह *हार्ट लैंप* के बारे में बहुत कुछ कहा-लिखा गया, मगर विश्व मंच तक पहुंचने का उनका यह सफर कितना तवील रहा और इस मुकाम तक पहुंचने में उनके बागीपने और दूसरे कामों का क्या रोल रहा, इसे भी जानना चाहिए।

आज से करीब 77 साल पहले कर्नाटक के हासन जिले में पैदा हुईं बानू का खानदान बहुत बड़ा था। पिता सरकारी मुलाजिम थे, तालीम की अहमियत भी समझते थे। बेटी ने पढ़ने का इसरार किया, तो उन्होंने कन्नड़ माध्यम के एक कॉन्वेंट में उसका दाखिला करा दिया। बानू के बचपन का तनाव अलग ही किस्म का था। स्कूल में उन्हें कन्नड़ भाषा में आधुनिक शिक्षा के सबक याद करने पड़ते, तो घर में लाजिमी तौर पर उर्दू और *कुरान* की पढ़ाई करनी पड़ती। दोहरी शिक्षा छोटी उम्र में दबाव बनाने वाली थी। तब बानू कहां जानती थीं कि दुनिया के साइंसदां एक दिन यह स्थापना भी देंगे कि दो या इससे अधिक जुबान जानने वाले लोगों की याददाश्त बेहतर होती है और दिमागी रोगों से लड़ने की क्षमता भी उनमें ज्यादा होती है!

बानू जिस परिवेश से आती थीं, उसमें उन दिनों लड़कियों को एक सीमा से आगे पढ़ाने की रवायत वैसे ही नहीं थी, मगर उन्हें कॉलेज भी जाना था। जाहिर है, परिवार के भीतर से ही मुखालफत शुरू हो गई। कहा गया, खानदान में नाक कट जाएगी। बानू ने बागी कहलाना मंजूर किया, मगर पढ़ाई छोड़ना नहीं। वह न केवल कॉलेज, यूनिवर्सिटी गईं, बल्कि उन्होंने कानून की पढ़ाई की और 26 साल की उम्र में मुश्ताक मोहियुद्दीन से प्रेम विवाह करके पूरे समाज को यह पैगाम भी दिया कि जिंदगी एक ही है, इसको अपनी मर्जी से जीने का हक औरत को भी होना चाहिए।

जाहिर है, बानू की इस खुदमुख्तारी का जोरदार विरोध हुआ। नाते-रिश्तेदारों ने पिता को क्या कुछ नहीं सुनाया, मगर वह मुत्मईन थे कि बेटी ने दीन से हासिल हक का ही इस्तेमाल किया था। हालांकि, बानू की यह खुशी बहुत दिनों तक टिक न सकी, क्योंकि शादी भले उन्होंने अपने मनपसंद शख्स से की थी, पर ससुराल तो उसी मुआशरे का हिस्सा था, जो कदम-कदम पर औरतों को उनकी हदें बताता रहता है। ससुराल में बानू पर पढ़ना-लिखना छोड़कर घरदारी संभालने और परदे में रहने का दबाव बढ़ने लगा। ससुराल वालों को यह भी नामंजूर था कि वह नौकरी करें। 29 साल की उम्र में बानू जब पहली बार मां बनीं, तो अवसाद ने घेर लिया। उन्हें अपने

सपनों पर पाबंदियों का शिकंजा कसता हुआ दिखा और एक नाजुक मोड़ पर उन्होंने खुद को आग लगाकर खत्म करने की कोशिश कर डाली।

बानू ने अपने शरीर पर पेट्रोल छिड़क लिया था। वह माचिस जला पातीं, इसके पहले ही मुश्ताक उन तक पहुंच गए थे। बीवी के हाथों से माचिस छीनते हुए उन्होंने उनके कदमों में नवजात बेटी (समीना) को रख दिया। मां को गहरा अपराध-बोध हुआ, बेटी को सीने से लगाकर बानू काफी देर तक रोती रहीं। मुश्ताक ने वादा किया कि वह उनके लिखने-पढ़ने के हक की ही नहीं, काम करने के अधिकार की भी रक्षा करेंगे। उसके बाद तो बानू-मुश्ताक की दुनिया दो और बेटियों व एक बेटे से आबाद हुई।

परिवार के भीतर बानू अपने वजूद की जंग जीत चुकी थीं। उन्होंने एक स्थानीय पत्रिका में काम करना शुरू कर दिया था। नौकरी, लेखन के बाद वह वकालत के पेशे में उतरीं और सामाजिक गतिविधियों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगीं। खासकर कट्टरपंथियों व सामाजिक अन्याय के खिलाफ वह मुखर होकर सामने आने लगी थीं। उनका लेखन रूढ़ियों से टकराने की बात करता; औरतों के इंसानी हुकूक की पैरोकारी करता, तो अदालत में वह देश के संविधान से मिले अधिकारों के तहत पीड़िता के लिए इंसाफ की मांग करतीं। स्वाभाविक ही इससे कट्टरपंथियों में उनके प्रति चिढ़ बढ़ती जा रही थी।

साल 2000 की बात है। उन्होंने मस्जिदों में मुस्लिम महिलाओं के प्रवेश के हक में एक कहानी लिखी, जिससे कर्नाटक में हंगामा खड़ा हो गया। स्थानीय मौलवियों ने बानू के खिलाफ एक फतवा जारी किया और तीन महीने के लिए उनके परिवार को समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। उन्हें जान से मारने की धमकियां मिलने लगीं। एक शख्स ने उन पर चाकू से हमला भी किया, मगर उस समय भी पति ढाल बनकर बीच में आ गए और बानू बच गईं।

वह बहुत मुश्किल दौर था। चूंकि बानू मुस्लिम बहुल इलाके में रहती थीं, इसलिए फतवे का साफ असर उनके परिवार पर पड़ा। उनके परिवार से लोगों ने बातचीत बंद कर दी थी, यहां तक कि बच्चों का भी बहिष्कार कर दिया गया था। इन बातों से बगैर विचलित हुए बानू लिखती रहीं। तीन महीने का वह दौर भी बीत गया। बानू ने तरक्कीपसंद व इंसाफपसंद समाज के अपने सपने से कोई समझौता नहीं किया।

जिंदगी के इन मुश्किल पलों ने बानू को कहानी के नए

बानू ने बागी कहलाना मंजूर किया, पर पढ़ाई छोड़ना नहीं। वह न सिर्फ कॉलेज, यूनिवर्सिटी गईं, बल्कि उन्होंने कानून की पढ़ाई की और 26 साल की उम्र में मुश्ताक मोहियुद्दीन से प्रेम विवाह करके पूरे समाज को यह पैगाम दिया कि जिंदगी एक ही है, इसको अपनी मर्जी से जीने का हक औरत को भी होना चाहिए।

प्लॉट ही नहीं दिए, उनकी लेखनी को इससे नई धार भी मिली। वह धार्मिक रूढ़ियों, पितृ-सत्ता और ध्रुवीकरण की सियासत से अपनी कहानियों में टकराती गईं। उनके इस साहस को देश-दुनिया के समालोचकों ने पहचाना। बुकर पुरस्कार से पहले उन्हें कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार और प्रतिष्ठित 'पेन' अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित किया जाना इसी बात की गवाही देता है। कन्नड़ साहित्य साल 2025 और बानू मुश्ताक, दोनों को कभी न भुला सकेगा!

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

सुखरंजन सोमद्दार
बांग्लादेशी विद्वान

उस दिन अचानक खो गई इंसानियत

वह बहुत अच्छे गायक थे। काजी नजरुल इस्लाम और टैगोर के गीत बहुत चाव से गाते थे। उस दिन भी वह टैगोर का एक सुंदर बांग्ला गीत गुनगुना रहे थे- आमार मुक्ति आलोये आलोये...। अर्थात मेरी मुक्ति आकाश के प्रकाश में है, कण-कण में और तृण-तृण में फैली है।

किसी इंसान में खूबियां भले ही खूब हों, पर वे तभी नुमाया होती हैं, जब वह इंसान अपनी कमियों को ढकने में कामयाब होता है। छोटी कमियां हावी हो जाएं, तो बड़ी खूबियों का भी खात्मा कर देती हैं। यह उन दिनों की बात है, जब ढाका अपनी कमियों को ढकने में नाकाम हो रहा था। उर्दू के झंडाबरदार अपनी जुबान की मिठास, नजाकत, नफासत को अपनी तहजीब में नहीं उतार पाए थे, नतीजा यह कि बांग्लाभाषियों की जान पर बन आई थी। यह झगड़ा पूरे पूर्वी पाकिस्तान में खून-खराबे पर उतर आया था।

फिर भी राजशाही विश्वविद्यालय में संस्कृत भाषा के उस लेक्चरर को यही लगता था कि कोई न कोई हल निकल आएगा। उम्मीद यही थी कि कैंपस में कुछ न होगा। महज 33 की उम्र थी। वह बहुत अच्छे गायक थे। काजी नजरूल इस्लाम और टैगोर के गीत बहुत चाव से गाते थे। उस दिन भी वह टैगोर का एक सुंदर बांग्ला गीत गुनगुना रहे थे - *आमार मुक्ति आलोये आलोये...।* अर्थात मेरी मुक्ति आकाश के प्रकाश में है, कण-कण में और तृण-तृण में फैली है। वह इतना मधुर गाते थे कि सुनने वाले उनके घर के बाहर ठिठक जाते थे, मगर उस दिन पाकिस्तानी फौजियों की जीप उनके दरवाजे पर रुकी थी। फौजियों ने घर की तलाशी ली और उन्हें कुछ न मिला, तो जाने लगे, पर तभी विश्वविद्यालय के ही एक अन्य शिक्षक ने जाते हुए फौजियों को बेशर्म इशारा करते हुए सिर्फ यही कहा, 'यह हिंदू है।'

यह वाक्य शिक्षक के पूरे परिवार ने सुना और स्तब्ध रह गया। सुना तो यही जा रहा था कि फसाद उर्दू और बांग्ला के बीच है, लेकिन इसमें हिंदू होना क्या मायने रखता है? चिंता की बात तो यह थी कि संस्कृत शिक्षक महोदय अपने धर्म के प्रति निरपेक्ष थे। नजरूल, टैगोर में डूबे हुए थे। उनका सिर मंदिर देखकर भले न झुके, पर मस्जिद देखकर जरूर झुकता था। संस्कार वही थे, जो नजरूल और टैगोर ने दिए थे। पैमाना एक ही था- इंसानियत। हिंदू होना तो कतई मायने नहीं रखता था, लेकिन जब फौजियों को मालूम पड़ा कि यह शिक्षक हिंदू है, तो वे फिर लौट आए और शिक्षक से नाम पूछा। जवाब मिला, मेरा नाम सुखरंजन सोमद्दार है, लेकिन आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?

फौजियों ने बताया, बहस की बात नहीं है। तुम साथ चलो। हम विश्वविद्यालय के और भी शिक्षकों को ले गए हैं।

तब शिक्षक सुखरंजन ने गौर किया था, मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष मोतिउर रहमान व भूगोल के शिक्षक अहमद मोहम्मद पटेल पाकिस्तानी फौजियों के साथ मिले हुए थे। फौजियों ने सुखरंजन को अपनी जीप में बिठा लिया और वह अपने परिवार को रोते-निहारते नजरों से ओझल हो गए। उन दिनों पूरा राजशाही विश्वविद्यालय कैंपस ही सूना हो गया था। हर सुबह-शाम सुखरंजन के घर से संगीत-गीत से सुकून बिखरता था, लेकिन अब वहां से एक महिला और तीन बच्चों के रोने-बिलखने की आवाजें आती थीं। सुखरंजन ऐसी नामी हस्तियों में शुमार थे, जिनके गायब होने की चर्चा दक्षिण एशिया में आग की तरह फैली थी और बांग्ला मुक्ति की मांग तेज हो गई थी।

तब नजरूल और टैगोर भुला दिए गए थे। पूरे पूर्वी पाकिस्तान में अप्रैल के महीने से 14 दिसंबर 1971 तक 1,200 से ज्यादा बुद्धिजीवियों, शिक्षकों, पत्रकारों, कलाकारों को गायब कर दिया गया था। पाकिस्तान-परस्तों की साजिश यही थी कि पूर्वी पाकिस्तान में सोचने-समझने की ताकत रखने वालों की पूरी पीढ़ी को ही खत्म कर दिया जाए, ताकि वहां बगावत का कोई बिगुल न बजे। खैर, भारतीय फौज की मदद से बांग्लादेश को आजादी मिली। 21 दिसंबर, 1971 को ही संयुक्त राष्ट्र ने बांग्लादेश को मान्यता दी थी। युद्ध पूरी तरह से रुका था और उसके बाद ही सुखरंजन सोमद्दार का पता चला था।

दरअसल, उनका कत्ल उसी दिन हो गया था, जिस दिन वह अगवा हुए थे। गनीमत है, उन पर हुए जुर्म का पूरा किस्सा सामने आ गया, वरना उनके साथ अगवा हुए अनेक बुद्धिजीवियों का आज तक कुछ पता नहीं चला है। बाद में बांग्लादेश के राजशाही विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के ठीक सामने सुखरंजन सोमद्दार (1938-1971) को बहुत सम्मान से दफनाया गया। वहां से गुजरने वाले तमाम संवेदनशील बांग्लादेशियों का सिर गम और शर्म से आज भी झुक जाता है और नजरूल इस्लाम के उस गीत की याद अनायास आती है, जिसे सुखरंजन बहुत प्यार से गाते थे - *पद्मार धेऊ रे.../ मोर शून्य हृदय-पद्म निए जा रे...।* अर्थात हे पद्मा की लहरों... मेरे शून्य हृदय कमल को लिए जाओ। कहा जाता है, जहां लोग नदी की तरह बहना नहीं सीखते, वहां कोई न कोई सड़ांध ठहरी रहती है। शायद आज भी ठहरी हुई है, लेकिन पद्मा-गंगा बह रही है।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

इतिहास में जाने को व्याकुल लेखक

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

इतिहास से आ रहा हूं। इतिहास में जा रहा हूं। इतिहास में सोता हूं। इतिहास में जागता हूं, फिर भी इतिहास में जाने के लिए जी रहा हूं, मर रहा हूं, हंस रहा हूं, रो रहा हूं, अपने ही इतिहास को ढो रहा हूं। दिल में चैन नहीं, मन को यकीन नहीं कि क्या वाकई इतिहास से आ रहा हूं, इतिहास में जा रहा हूं?

इतिहास मेरा है। मैं उसका हूं। आने वाले लोग मुझे पढ़ेंगे, मेरी जीवनी पढ़ेंगे कि कभी हुआ था वह, जो अपने वक्त का बड़ा ही संघर्षकारी कवि था; अपने वक्त का टॉप का कवि, कथाकार, आलोचक, ऑल राउंडर था। बड़ा ही गोष्ठीबाज था, गप्पबाज था, दुश्मनों का दुश्मन था, यारों का यार था, साहित्य के तिलिस्म का भूतनाथ था, पूरा 'ऐयार' था!

हर शख्स लेखक होने से पहले अपने बारे में सोचता है और ऐसे ही सोचता है और साहित्य की छत पर खड़े होकर देखता रहता है कि कब इंद्र भगवान अपना स्पेशल विमान उसके लिए भेज रहे हैं और वह कब पद्मश्री से 'पदाम श्री' और छद्मश्री से 'छदाम श्री' हुआ जाता है।

हर हिंदी वाला ऐसे ही सोचता है। जितना वह रचना के बारे में सोचता है, उससे अधिक उसके छपने के बारे में, उससे भी ज्यादा उसके चर्चित होने के बारे में, फिर उसके किसी सम्मान की लिस्ट में आ जाने और जैसे-तैसे उसे झटक लेने के बारे में सोचता रहता है। यही उसका असली संघर्ष, आत्म-संघर्ष, वर्ग-संघर्ष, जाति-संघर्ष, धर्म-संघर्ष, जेंडर-संघर्ष होता है।

हिंदी के औसत साहित्यकार की समूची मेधा, सारी रचनात्मकता, वचनात्मकता, खर्चनात्मकता, अर्चनात्मकता और दूसरों की भर्त्सनात्मकता में निपट जाती है। यही साहित्य का और साहित्यकार का आत्म-संघर्ष है। बिना इसके साहित्यकार, साहित्यकार नहीं होता। आजकल सभी एक जैसे संघर्ष में लगे दिखते हैं। आप किसी से पूछिए, फौरन जवाब मिलेगा- मैं दस साल से घिस रहा हूं... मैं बीसियों वर्ष से पिस रहा हूं... मैं तीस साल से लटका हुआ हूं, लेकिन मंडी हाउस का गोल चक्कर पार नहीं कर पाता, ज्ञान की पीठ पर भी सवारी नहीं गांठ पाता, बुकर की सीट भी बुक नहीं कर पाता।

समझ में आया कि इसीलिए हिंदी का हर साहित्यकार क्षुब्ध, खिसियाता, झुंझलाता, क्रुद्ध, गुर्राता, बर्राता, गुर्राता नजर आता है। जीवन भर माल-मलाई काटने के बाद भी वह हमेशा चिर उपेक्षित, चिर वंचित प्राणी होता है, जिसकी स्थायी शिकायत होती है कि उसका दाय, उसका हक उसे नहीं मिला।

आज भी नए से नया लेखक और सोशल मीडिया का खिलाड़ी लेखक अपने को गुरुदत्त की प्यासा का हीरो समझता है और उसकी तर्ज पर अपनी पैरोडी करता रहता है- जाने वो कैसे कवि थे जिनकी हर कविता को इनाम मिला/ हमने तो जब एक ठो मांगा, हमको तो लात मिला।

कोई हम जैसा ऐसों की दिलजोई करने की कोशिश करे कि हे कवि, तू कविता कर, फल की चिंता न कर, तो अगला कहेगा, ...ये गीता का ज्ञान अपने पास रख। हम भी जानते हैं कि तू किस-किस से सेटिंग और बैटिंग करके बैठा है। हम साठ साल से कलम घिस रहे हैं, लेकिन एक सेट नहीं हुआ।

कविता बदल गई, कहानी बदल गई, मीडियम बदल गए, मीडिया बदल गया, लेकिन साहित्येषणा न बदली। साहित्य के इतिहास में जाने की ख्वाहिश न बदली। कोई कहता है कि उसे उसने इतिहास में न जाने दिया, तो कोई कहता कि इसने न जाने दिया। कई कहते रहे कि इंदिरा आंटी ने न जाने दिया, तो इन दिनों कई कहते हैं कि मोशा ने न जाने दिया।

मैं तो कहता हूं- हे लेखक! जब इतिहास का ही अंत हो गया; इतिहास ही नहीं बचा, तो मुसाफिर जाएगा कहां? अब इतिहास एक नहीं, अनेक हैं। आज सबके अपने-अपने इतिहास हैं। अगर इतिहास में जाना ही चाहता है, तो अपना इतिहास लिख, अपने इतिहास में ही जा!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

निर्मल... देखो, मैं मानसरोवर पहुंच गई

प्रसिद्ध कवयित्री गगन गिल की कैलास-मानसरोवर यात्रा को तीर्थ यात्रा कहा जाए या यात्रा या फिर एक अधूरी इच्छा को पूरा करने का शिव संकल्प? ... उनका यह वादा अपने निर्मल (वर्मा) से था, जो उनके जीते-जी पूरा नहीं हो सका, लेकिन उनके जाने के बाद उनकी निर्मल काया के पहने अंतिम वस्त्र के साथ लेखिका ने यह यात्रा-यज्ञ पूरा किया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित कवयित्री गगन गिल के यात्रा-संस्मरण 'अवाक् - कैलाश मानसरोवर : एक अंतर्यात्रा' से संपादित अंश ...

इलस्ट्रेशन : यशवंत नामदेव

अद्भुत यात्रा संस्मरण-40

गगन गिल

जन्म : 18 नवंबर, 1959

मेरे पास एक वस्त्र है, निर्मल काया का पहना अंतिम वस्त्र। उसे लेकर कैलास जाना है...

सुना है, वहां एक जगह है, डोल्मा-ला, तारा देवी का स्थान। तिब्बती लोग वहां अपने प्रियजनों को देवी तारा की रक्षा में छोड़ आने के लिए परिक्रमा करते हैं। कैलास कोरा। प्रियजन की इस्तेमाल की हुई कोई वस्तु, वस्त्र, बाल आदि छोड़ आओ, तो देवी सदा उनकी रक्षा करती हैं।

यह एक यात्रा मुझे निर्मल के लिए करनी है। उनके वस्त्र, मोजे, कमीज, स्वेटर पहने हुए करूं, तो ऐसा हो नहीं सकता कि देवी उनका आना स्वीकार न करें। जाते-जाते बड़ी जिम्मेवारी मुझ पर छोड़ गए थे।

●●●

-आप सचमुच जा रही हैं?

मित्र कवि श्री कैलाश वाजपेयी का फोन है।

-कई साल पहले मेरे एक परम मित्र प्रोफेसर युधिष्ठिर को मैंने कैलास-यात्रा में गंवा दिया था... अब आप जा रही हैं, सुबह से ही सोच-सोच कर परेशान हो रहा हूं...

-जिनका नाम ही युधिष्ठिर था, वह यदि कैलास-यात्रा से नहीं लौटे, तो अचंभे की बात क्या!

-मैं उनसे हंसी करती हूं, लेकिन उनका बरसों पुराना शोक जाता नहीं।

बार-बार कहते हैं, ध्यान से जाइएगा।

बड़े पक्के मन से तैयारी की है। घर बंद करने को हूं कि छाया आ जाती है।

अगर मैं सचमुच लौटकर न आई?

रुककर वसीयत लिखती हूं, उसकी एक कॉपी मां को भेजकर, दूसरी मेज पर छोड़कर मुक्त मन होती हूं।

यात्रा और आत्महत्या से पहले, जहां तक हो सके, सब साफ छोड़ना चाहिए...

यादों का झरोखा : गगन गिल और निर्मल वर्मा

रूबी और उसका पति पंकुल, निर्मल के भांजे, मेरे सहयात्री होने वाले हैं। युवा दंपती, ट्रैकिंग के शौकीन। आस्था है या नहीं, अभी ठीक से मालूम नहीं।

अगले दस दिन ट्रैवल एजेंसी से कई तकाजों और चक्करों के बाद जिस दोपहर हम उम्मीद छोड़कर लौट रहे होते हैं, वहां से हेमंत जी का फोन आता है।

-आप लोग कल सुबह जाने को तैयार हैं?

बुलावा आ जाए, तो फिर कौन रुक सकता है?

बदहवासी और आधी-अधूरी तैयारी के बीच ही रिनपोछे को फोन करती हूं। कहीं एक विश्वास है, उनसे बात हो जाएगी, तो सब ठीक होगा...

-कल कैलास-मानसरोवर जा रही हूं।

-अच्छा? आवाज एकदम कोमल हो आई है। तिब्बत... उनका देश।

बीस वर्ष की उम्र में छोड़ना पड़ा था। इतने लोग तिब्बत जाते हैं, वह नहीं जा सकते। चीन सरकार के प्रति सत्याग्रह छेड़ रखा है। जिस दिन जाएंगे, सब तिब्बती दलाई लामा की अगुवाई में तिब्बत वापस जाएंगे! क्या ऐसा संभव हो पाएगा? कैसा है यह दिल, निर्वासितों का। जिस बात की इतनी धुंधली उम्मीद है, उसी के लिए प्रार्थनाएं करते हैं, अनशन, प्रदर्शन, कभी-कभी आत्मदाह तक।

-निर्मल जी के लिए...

-जरूर जाइए...

उन्हें मालूम है, मैं क्या सुनना चाहती हूं।

-आपकी यात्रा सफल हो, मेरा आशीर्वाद है, आपको महादेव जी के, उमा जी के दर्शन हों! मेरी धड़कन तेज हो जाती है।

-क्या ऐसा संभव है?

-हां, हां, क्यों नहीं? यह तो आप पर है कि आप उन्हें पहचान पाती हैं कि नहीं।

-तब मेरे लिए यही प्रार्थना करिएगा कि मैं उन्हें पहचान पाऊं...

-जरूर! थोड़ा रुककर कहते हैं, निर्मल जी की इस्तेमाल की हुई कोई चीज साथ में रख लीजिएगा...

-जी!

और कुछ नहीं कहते। थोड़ा अंदाजा उन्हें है। जा रही है, तो तैयारी करके जा रही होगी...

●●●

...शिव के स्तुति-गान के बीच अगली सुबह धूलीखेल से हमारी बस चली। शायद सहस्त्र नाम थे। हमारे जत्थे में चेन्नई के एक स्वामी जी थे। वेद पाठशाला चलाते थे। पंद्रह भक्तों के साथ वह इस तीर्थयात्रा पर आए थे। उन्हीं के एक भक्त ने गायन शुरू किया।

आधे घंटे की दूरी लगभग तीन घंटे में तय करके हम झांग्मू शहर पहुंच गए हैं। चीन की सीमा के भीतर पहला शहर। साढ़े सात हजार फीट ऊंचाई। शिमला और गैंग्टोक जैसा भूदृश्य। आकार उसका कस्बे वाला है, लेकिन जिस शानो-शौकत से तरह-तरह की दुकानें सजी हैं, उसे शहर कहना ही सही होगा। रास्ते में ट्रकों के कारण ट्रैफिक जाम था। भारतीय नंबर प्लेटों वाले कई ट्रक हमारी जीप के आगे-आगे थे। पता नहीं, किस चीज का व्यापार होता है?

●●●

आज की रात, बस आज की रात बची है, यह जांचने के लिए कि हम परिक्रमा कर सकते हैं या नहीं। रूबी, पंकुल, रूपा एकदम फिट हैं। मैं डांवांडोल हूं। न रुकते बन रहा है, न जाते।

-रूबी! एकांत देख उससे कहती हूं।

-मेरी एक इच्छा है, तुमसे कह रही हूं, फिर समय मिले, न मिले... अगर ऊपर डोल्मा-ला में मुझे कुछ हो जाए, तो देह वापस मत लाना। वहीं छोड़ देना, मां तारा के पास। कोई संस्कार वगैरह नहीं करना...

-आप क्या कह रही हैं?

-तुम लोग मेरे साथ आए हो। कहीं फंस न जाओ। तुम्हें मेरी इच्छा का भी पता होना चाहिए न!

कहकर मैं मुक्त हो गई हूं।

क्या अपनी इच्छा मुझसे कहकर निर्मल भी इसी तरह मुक्त हुए होंगे?

निर्मल... देखो, मैं सचमुच मानसरोवर पहुंच गई हूं... तुम मेरे साथ ही हो न?

-आप रात को ढाई बजे उठेंगी? पंकुल पूछता है।

मानसरोवर में रात दो से चार बजे, ब्रह्म मुहूर्त में देवता स्नान करने आते हैं... देवता और तारे... ऐसा विश्वास है।

पंकुल उसी दृश्य को देखने के बारे में पूछ रहा है।

-मैं बहुत थकी हूं... तुम लोग देखकर बता देना...

घुप्प अंधेरे में, सन्नाटे में हम सात जन सो रहे हैं। हर किसी की नींद में घड़ी चल रही है टिक-टिक।

क्या सचमुच रात दो बजे 'वे' आते होंगे? यह जगह दुनिया से इतनी दूर और स्वर्ग के इतना पास है कि ऐसा बिल्कुल संभव लगता है... वैसा कट्टर अविश्वास नहीं होता, जैसा मैदान में...

पता नहीं कैसे आंख खुल गई है। पेट में तीखा दर्द उठा है। क्या बाथरूम हो आऊं?

दर्द ऐसी तेज लहर में उठा है कि जैकेट नहीं पहनी जा रही। पेट पर हाथ रखे-रखे बाहर आ गई हूं।

महादेव जी, अब क्या मेरी बारी है?

कोई जैसे चिमटे से मेरी अंतड़ियां बाहर खींच रहा है...

बाहर जकडने वाली ठंड है, लेकिन हवा नहीं।

आकाश शांत है।

आकाश...

इतने सारे तारे... लाखों...एक-से-एक चमकीले...

तारे ऐसे नाचा करते हैं? आकाश-गंगा ऐसी दूधिया होती है?

पूर्णिमा कब थी?

आठ दिन पहले। फिर भी इतनी चांदनी रात!

बजा क्या है?

कमरे में लौटकर टॉर्च की रोशनी में समय देखती हूं। सवा दो...

ये जरूर देवता ही होंगे...

मैंने कौन-सा इससे पहले कोई देखे हैं कि कहूं, ये नहीं हैं... इतने चमकीले... ये सिर्फ तारे नहीं हो सकते... जरूर इनमें सप्त ऋषि भी होंगे... कैसा डांडिया नाच चल रहा था आकाश में...

क्या फिर से बाहर जाऊं?

किसी ने कहा था, देवताओं को ऐसे छिपकर देखने जाइएगा कि उन्हें पता न पड़े, नहीं तो वे अदृश्य हो जाएंगे... अभी तक तो उन्हें नहीं पता, अब अगर गई, तो जरूर जान जाएंगे... रहने दो, लीला कर रहे हैं, करने दो...

यू आर लकी! मैं खुद से कहती हूं। एक मीठा रहस्य मेरे सीने में गुदगुदी कर रहा है... मैं इस रात की बात किसी को नहीं बताऊंगी!

लेकिन कब तक?

(साभार : 'अवाक् - कैलाश मानसरोवर : एक अंतर्यात्रा', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से संपादित अंश)

आज मैंने तेरे बाबू को तुझ में देखा

कथक के शीर्ष महारथियों पं. बिरजू महाराज तथा सितारा देवी से लेकर समकालीन अनेक कथक नर्तकों तथा कला-समीक्षक से किए गए साक्षात्कारों को हाल में आई पुस्तक 'कथक सौंदर्य : गुरुमुख से' में शामिल किया गया है। प्रस्तुत है इस पुस्तक से पं. बिरजू महाराज से की गई बातचीत के महत्वपूर्ण संपादित अंश ...

पुस्तक अंश

मुझे याद है, जब मैं छह बरस का था, तब मेरे पिता अच्छन महाराज को रामपुर नवाब ने सम्मानपूर्वक दरबारी नर्तक नियुक्त किया था। मैं जिद करके उनका रियाज देखने जाता था। चाचा का नृत्य भी मैं देखा करता था।

मेरी मां ने मेरे नृत्य के गुण और लालसा को पढ़ रखा था। अम्मा की जिद पर ही मुझे मेरे पिता ने अपना गंडाबंध शिष्य बना लिया। इस अवसर की एक स्मृति है। गुरु को, शिष्य बनने पर कुछ समर्पित करना होता है। मैंने अपने स्वयं के अर्जित और समय-समय पर प्राप्त पैसे का संग्रह कर रखा था, उसे अपने गुरु जी यानी पिता को अर्पित कर दिया।

मेरे लिए यह स्मरणीय प्रसंग है कि पिता जी ने वो पैसे न मां को दिए, न मुझे या किसी और को, बल्कि अपने पास यह कहकर रख लिए कि मेरे बेटे की दी गई गुरु दक्षिणा पर सिर्फ उनका हक है। यह शायद इस वजह से भी हुआ होगा कि इसमें संतोष और उनके लिए गर्व की बात रही होगी कि वो दक्षिणा, उनके पुत्र में उस आयु में श्रद्धा और परंपरा के ज्ञान को देखकर उन्होंने रखी होगी। वह प्रसंग मुझे भूलता नहीं।

इसके बाद कथक में मेरी शिक्षा बढ़ने लगी। मात्र सात साल की उम्र में, मैं रामपुर नवाब के दरबार में नृत्य करने लगा था। वे स्वयं मेरे पिता को कहा करते थे कि बिरजू को लाया करो। मेरे लिए यह सबसे बड़ा आघात हुआ कि नौ वर्ष की आयु में ही, मेरे पिता का लू लगने से देहांत हो गया। परिवार पर संकट छा गया और हमारे, जैसे बुरे दिन शुरू हो गए। उन दिनों लच्छू महाराज जी बंबई में थे। पिता, चाचा के पास जो भी सोना, चांदी या रुपया था, वह गर्दिश के दिनों से लड़ने में खत्म हो गया। एक वक्त था, जब खाने के लाले पड़ने लगे। मां, लेकिन नहीं घबराईं, न रुकीं और न हारीं। उनकी एक बात मेरे मन पर अंकित हो गई, "बेटा! चिंता न करो। कुछ न होने पर भी तुम्हारे पास तालीम है। बस मन लगाकर रियाज करो।"

मां का भरोसा मेरे कुछ कर गुजरने पर था। वो मुझे लेकर नेपाल तक गईं, ताकि कुछ पैसा मिले और अच्छा-बुरा सही जीवनयापन हो सके। सौभाग्यवश 14 साल की उम्र में मेरा कार्यक्रम कलकत्ता में हुआ। वहां मैंने जब नृत्य किया, तो लोगों ने बहुत सराहा, लेकिन मैंने देखा कि मां की आंखों में खुशी के आंसू झर रहे थे। मुझे छाती से लगाकर उनके मुख से तब अवाक् ये शब्द निकले थे, "मैंने आज तेरे बाबू को तुझ में देखा।"

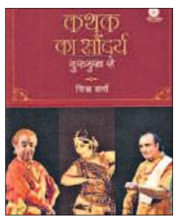

कथक का सौंदर्य : गुरुमुख से

(साक्षात्कार)

लेखिका : चित्रा शर्मा

प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

मूल्य : ₹280

पुस्तकें आई हैं

दाने अनार के हों या भुट्टे के, मजा तभी देते हैं, जब मुंह में दांत हों। इस सुख का सीधा-सादा गणित है, दूसरों को चबाने में ही आनंद आता है। बहरहाल, यहां बात हंसने-हंसाने और अनार के दानों की हो रही है। पिछले दिनों आए हास्य कहानी-संग्रह 'दाने अनार के' में कुल जमा 20 कहानियां हैं। हास्य की चाशनी में लिपटी ये कहानियां स्वस्थ और विशुद्ध हास्य के प्रति आश्वस्त करती हुई नजर आती हैं।

दाने अनार के

(कहानी-संग्रह)

लेखक : सुभाष चंदर

प्रकाशक : अद्विक पब्लिकेशन, दिल्ली

मूल्य : ₹210

समयचक्र

(कविता-संग्रह)

लेखक : संगीता शुक्ला

प्रकाशक : प्रवासी मेल पब्लिशिंग, गाजियाबाद

मूल्य : ₹270

'**समयचक्र**' काव्य-संग्रह में एक युवा कवयित्री ने अपनी नजर से अपने समय को देखने-समझने की कोशिश की है। 'समयव्यूह', 'चक्रव्यूह', 'वज्रव्यूह' नाम से तीन खंडों में विभाजित इस संग्रह में 35 कविताएं हैं। इन कविताओं में लेखिका की नार्वे में अल्पसंख्यक पृष्ठभूमि और अपनेपन की खोज के बीच व्यक्तिगत तथा सामूहिक पीड़ा के साथ-साथ अपनी पहचान ढूंढ़ने और आत्म-स्वीकार की यात्रा भी है।

अपने को ऊपर उठाना आसान काम नहीं है, लेकिन असंभव भी नहीं है। इसके लिए जरूरी है, पहले अपनी कमियों को पहचानना। इसके बाद उसे दूर करने के लिए उस पर काम करना। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, क्योंकि परिवर्तन एकाएक नहीं होते। फिर ये परिवर्तन चाहे बाहरी हों या भीतरी। श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बनने की यात्रा का आगाज है पुस्तक- 'श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम कैसे बनें : प्रकृति, पुरुष और हम।'

श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम कैसे बनें : प्रकृति, पुरुष और हम

लेखक : डॉ. वीरेन्द्र कुमार शेखर

प्रकाशक : डायमंड बुक्स, नई दिल्ली

मूल्य : ₹250

रोजनामचा

साप्ताहिक भविष्यफल

(21 दिसंबर से 27 दिसंबर 2025)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन कुछ परेशान भी हो सकता है। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। लेखनादि-बौद्धिक कार्यों से आय में वृद्धि हो सकती है। कारोबार में बदलाव के योग बन रहे हैं।

वृष (21 अप्रैल-20 मई)
मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। नौकरी में अफसरों का सहयोग तो मिलेगा, परंतु कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। कारोबार में वृद्धि होगी।

मिथुन (21 मई-21 जून)
आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। परिवार का साथ मिलेगा। नौकरी में अफसरों का सहयोग तो मिलेगा, परंतु कोई अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल मिल सकती है।

कर्क (22 जून-23 जुलाई)
मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ अधिक रहेगी।

सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)
आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव भी रहेंगे। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। माता-पिता का साथ मिलेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर भी मिलेंगे।

कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)
आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान भी हो सकता है। कारोबार में व्यस्तता रहेगी। परिवार में सुख-शांति रहेगी। किसी पुराने मित्र से लंबे समय बाद मुलाकात हो सकती है।

तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)
मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। माता की सेहत का ध्यान रखें। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा। खर्चों में वृद्धि होगी। वाणी के प्रभाव से कारोबार में वृद्धि होगी।

वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)
आत्मविश्वास में कमी रहेगी। आत्मसंयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। कारोबार में वृद्धि होगी। कारोबार के लिए पिता व परिवार के किसी बुजुर्ग से धन की प्राप्ति हो सकती है।

धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)
आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव भी हो सकते हैं। धैर्यशीलता में कमी हो सकती है। संतान सुख में वृद्धि भी हो सकती है। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। परिश्रम अधिक रहेगा।

मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)
आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान हो सकता है। कारोबार में विस्तार हो सकता है। किसी रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। कारोबार के लिए परिवार से दूर किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)
आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन में उतार-चढ़ाव भी रहेंगे। किसी नए कारोबार की शुरुआत हो सकती है। परिवार व मित्रों से सहयोग मिल सकता है। कारोबार के लिए विदेश जाने के योग बन रहे हैं।

मीन (19 फरवरी-20 मार्च)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। नौकरी के लिए परीक्षा व साक्षात्कारादि कार्यों में सफलता मिलेगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। वाहन सुख में वृद्धि।

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

21 दिसंबर, रविवार, **शक संवत्**: 30 मार्गशीर्ष (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग**: 07 पौष मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम**: 29 जमादि-उल्सानी, 1447, **विक्रमी संवत्**: पौष शुक्ल प्रतिपदा तिथि प्रात: 09.12 मिनट तक पश्चात द्वितीया तिथि, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 03.36 मिनट तक पश्चात उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, वृद्धि योग सायं 04.36 मिनट तक पश्चात ध्रुव योग, बव करण। चंद्रमा धनु राशि में (दिन-रात)।

सूर्य दक्षिणायन। सूर्य दक्षिण गोल। हेमंत ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम्। चंद्रदर्शन।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

कृपया यह बताएं कि जिनका मूलांक 4 होता है। वह कैसे होते हैं? -प्रचंड गर्ग, गोरखपुर

- ऐसे लोग बहुत व्यवस्थित, मेहनती एवं तीव्र बुद्धि वाले होते हैं।
- इन लोगों का काम करने का तरीका अपने ढंग का होता है।
- ये कभी भी भीड़ का हिस्सा नहीं बनते।
- इनके जीवन में उतार चढ़ाव बहुत आते हैं, लेकिन इनकी सफलता बाद में स्थायी होती है।
- इनमें जोखिम लेने की क्षमता बहुत होती है। ये इससे घबराते नहीं हैं।
- ये प्रैक्टिकल सोच एवं एप्रोच वाले व्यक्ति होते हैं।
- ये जल्दी ही तनाव में आ जाते हैं। ये लोगों पर विश्वास और अविश्वास जल्दी करते हैं।

वर्ग पहेली : 8185

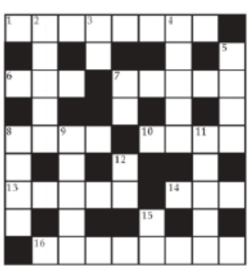

ऊपर से नीचे

2. खुशबूदार; महकने वाला; सुगंधित (5)
3. फूलों का व्यवसाय करने वाली जाति; बगीचे का रखवाला (2)
4. चलना; प्रस्थान करना; विदा होना (3,2)
5. अन्यमनस्क; अस्वस्थ; उदास; खिन्न; सुस्त (4)
7. अंदाज; ढंग; तर्ज; हावभाव; नखरा (2)
8. अस्थिरता; चंचलता; चपलता; द्रवत्व (4)
9. किए जाने वाले काम; काम का ढेर (5)
11. कभी न कभी; कुछ समय बाद; जल्दी ही; शीघ्र ही (2,3)
12. अच्छा लगना; पसंद आना; शोभा देना (2)
15. मिथ्या ज्ञान; धोखा; संशय; संदेह; शक (2)

बाएं से दाएं

1. किसी के जीवन का अंत करना; घात करना; जान ले लेना; मार डालना (2,3,3)
6. भारी वस्तु से आघात करना; पीटना; मारना (3)
7. अपनत्व; आत्माभिमान; आत्मीयता; स्वजन भावना (5)
8. भाजी; सब्जी; सागपात (4)
10. खाने को देना; पक्षियों को दाना डालना (2,2)
13. झूल जाना; ऊंचे स्थान से बंध जाना; टंग जाना; अधूरा रह जाना (3,2)
14. खींचना; जकड़ना; बांधना; परखना; पुर्जों को बैठाना (3)
16. तय कर्तव्य पालन करना; नियत काम करना; प्रयोजन सिद्ध करना; मतलब साधना (3,2,3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 8184 का उत्तर

सुडोकू : 8167

*आसान

9		8				2		3
	4			9			6	
7			8		1			4
			4		9			
8			5		6			1
			3		2			
3			2		8			9
	8			6			4	
1		2				5		6

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3×3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल : सुडोकू नं. 8166

5	6	8	9	7	4	3	2	1
4	7	9	2	3	1	8	5	6
3	1	2	8	6	5	4	7	9
6	8	7	4	2	9	5	1	3
9	4	5	6	1	3	2	8	7
2	3	1	7	5	8	6	9	4
7	2	4	5	9	6	1	3	8
1	5	6	3	8	7	9	4	2
8	9	3	1	4	2	7	6	5

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 21-12-2025 Zone: Mahanagar Edition: 1 Page: NBTMAH12 User: cci Time: 12-20-2025 21:53 Color:

कार्टून्स की साज़िश और टारगेट पर आपका बच्चा!

बच्चा जिद्दी हो गया है, बिना मोबाइल/टीवी देखे खाना नहीं खाता या फिर सोकर उठते ही रिमोट उठा लेता है तो सावधान हो जाएं! इसे अभी नहीं रोका तो यह माइग्रेन, सर्वाइकल और मेंटल डिसऑर्डर तक में बदल सकता है और इसका खामियाज़ा बच्चों को ज़िंदगी भर भुगतना पड़ सकता है। क्यों ऐसे बनाए जाते हैं बच्चों के लिए प्रोग्राम, क्या हो सकता है इस परेशानी का हल? बता रहे हैं **शुभम त्रिपाठी**

न टीवी, न फोन दें

कम से कम 5 साल तक बच्चों को स्क्रीन से दूर रखा जाए।

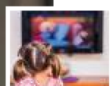

सिर्फ मोबाइल ही नहीं, टीवी की स्क्रीन भी होती है नुकसानदायक

सिर्फ बच्चे की नहीं, इसे पूरे परिवार की परेशानी समझें

5 साल तक के बच्चों का स्क्रीन टाइम 2.5 घंटा प्रतिदिन है। (AIIMS रायपुर की स्टडी)

2 साल तक के बच्चों का स्क्रीन टाइम लगभग 1.2 घंटा प्रतिदिन का है फिलहाल।

10 स्टडीज़ के आधार पर यह नतीजा निकाला गया। इसमें 2,857 बच्चे शामिल थे।

And the wheels on the bus go round and round...दुनियाभर में मशहूर कोकोमेलन यूट्यूब चैनल पर इस गाने को सुनते ही बच्चे खिलखिला उठते हैं। इसकी धुन ही इतनी अट्रैक्टिव है कि बच्चे घंटों तक इसे बिना रुके देख लेते हैं। हम सोचते हैं कि रंग-बिरंगे कार्टून देखकर अगर बच्चे झूम रहे हैं तो गलत ही क्या है? लेकिन कब देखते-देखते उन्हें इसकी लत लग जाती है, हमें पता ही नहीं लगता। इस वजह से उन्हें ब्रेन रॉट (दिमाग सुस्त होना) होने लगता है। बच्चों में ऐसे कार्टून शोज़ की लत से दुनियाभर के पैरंट्स परेशान हैं। इस पर रिसर्च भी हुई कि आखिर इनमें क्या अलग है जो बच्चे इसके मोहजाल में फंस जाते हैं? नतीजे में पता लगा कि इनकी टीम दिन-रात इसी काम में जुटी है कि कैसे बच्चे का एक-एक सेकंड का ध्यान अपनी ओर लगाकर रखें। इसके लिए बकायदा बच्चों पर एक्सपेरिमेंट होते हैं। यह हाल तो सिर्फ एक कार्टून शो का है। आमतौर पर बच्चों के कॉन्टेंट का मकसद यही होता है कि कैसे बच्चों का पूरा फोकस उन पर ही रहे।

इसके असर पर भी नज़र डाल लेते हैं:

केस 1
बीते दिनों एक विडियो वायरल हुआ जिसमें कोई बच्चा मक्खियों से घिरा होने के बावजूद भी मोबाइल फोन देखने में बिज़ी था। इसी विडियो में एक दूसरा बच्चा सोते-सोते भी हरकतें कुछ कर रहा था।

केस 2
दिल्ली के एक अस्पताल में 9 साल का बच्चा पहुंचा जो अब मोबाइल फोन के बिना स्कूल तक नहीं जाता। जब पैरंट्स ने उसे ऐसा करने से रोका तो उसने पैरंट्स पर ही हाथ उठा दिया।

केस 3
पिछले दिनों अस्पताल में 3 साल का एक बच्चा पहुंचा जो स्क्रीन टाइम ज्यादा होने की वजह से वर्चुअल ऑटिज़म का शिकार हो गया था। 3 साल का यह बच्चा अब तक बोल भी नहीं पाता।

केस 4
कुछ समय पहले एक डॉक्टर के पास 8 साल का ऐसा बच्चा इलाज के लिए पहुंचा जिसे लगातार मोबाइल फोन के इस्तेमाल की वजह से सर्वाइकल पेन की परेशानी हो गई थी।

बच्चों में बढ़ते स्क्रीन टाइम का असर कितना खतरनाक हो सकता है, यह असल ज़िंदगी के इन उदाहरणों से समझा जा सकता है। डॉक्टरों के मुताबिक, 5 साल से ऊपर के बच्चों में अब इसका असर सामने आने लगा है। इस वजह से उनमें कई मानसिक और शारीरिक समस्याएं हो रही हैं। पिछले साल 'ब्रेन रॉट' शब्द काफी चर्चा में रहा था जो बढ़ते स्क्रीन टाइम का असर बताता है। डॉक्टर बताते हैं कि जब से मोबाइल फोन में बच्चों का कॉन्टेंट आने लगा है, तबसे यह समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। इससे भी ज्यादा चिंता वाली बात यह है कि ज्यादा स्क्रीनटाइम का असर बचपन में पता ही नहीं लगता और जब तक इसका अहसास होता है, तब तक काफी देर हो चुकी होती है। यही हाल रहा तो 10-15 साल बाद बच्चे को पूरी ज़िंदगी पर असर पड़ेगा।

यह बच्चे की नहीं, घरवालों की गलती है

मोबाइल या टीवी देखकर खाना खा रहे किसी बच्चे के पैरंट्स से पूछें तो यही जवाब मिलता है कि बच्चा बहुत जिद्दी हो गया है, बिना कार्टून देखें खाना खाता ही नहीं...

कई बार यह कहा जाता है कि आजकल के बच्चे कहां मानते हैं, बिना मोबाइल के कुछ करते ही नहीं। हालांकि इसके कई पहलू हैं। 3 साल के हरीश का स्क्रीनटाइम रोज लगभग 4 से 5 घंटा है। मां सनी बताती हैं कि बिना मोबाइल के बेटा खाना नहीं खाता है। वह कहती हैं, 'मैं हाउसवाइफ हूं लेकिन घर के तमाम काम होते हैं जिन्हें करते हुए बच्चों को लेकर नही बैठ सकते। ऐसे में उसे मोबाइल देना ही पड़ता है।' हालांकि वह मानती हैं कि इसी वजह से बच्चा खुद ऐक्टिविटीज करना नहीं सीख पाया। वहीं 2 साल के बेटे की मां कविता बताती हैं कि हम अपने बच्चे को डांटकर मोबाइल वापस ले लेते हैं मगर टीवी दिखाना कई बार

ज़रूरी हो जाता है। इसकी एक वजह तो ये है कि हम दोनों वर्किंग हैं तो घर पर ऑफिस मीटिंग, कॉल्स, काम की वजह से फ्री टाइम की ज़रूरत होती है। ऐसा कई बार हुआ है कि जब मैं और बेटा खेलने लगे तो ऑफिस की कॉल आ गई। फिर मुझे उसे छोड़कर दूसरे कमरे में जाना पड़ता है। फिर खाली बैठा बच्चा टीवी ही देखने लगता है।

हालांकि इसी बातचीत में पैरंट्स ने यह भी माना कि वे रोज बच्चे के साथ 2-3 घंटे का भी क्वॉलिटी टाइम नही बिता पाते।

बच्चों में दिख रहीं ऐसी परेशानियां

- अटेंशन डिफिसिट हाइपरऐक्टिविटी डिसॉर्डर (ADHD): इसमें बच्चों को किसी चीज पर फोकस करने में समस्या आती है।
- वर्चुअल ऑटिज़्म : इसमें बच्चों को सामाजिक रूप से घुलने-मिलने में परेशानी होती है। छोटा बच्चा देर से बोलता है।
- ज्यादा स्क्रीन टाइम की वजह से एंग्जायटी और डिप्रेशन के मामले बढ़ रहे हैं।
- बच्चों का सोने-जागने का पैटर्न बिगड़ रहा है।
- सिरदर्द की समस्या आम होती जा रही है। माइग्रेन भी बढ़ रहा है।
- गर्दन-पीठ में दर्द की समस्या बढ़ रही है। बच्चों में सर्वाइकल दर्द के केस आ रहे हैं।
- फिजिकल ऐक्टिविटी कम होने की वजह से बच्चों में मोटापा भी बढ़ रहा है।
- इमोशनल स्तर पर बच्चे कमज़ोर हो रहे हैं।
- बच्चों में पैरासोम्निया यानी नींद में हरकतें करने की समस्या भी बढ़ रही है।

रिझाने के लिए चटख रंग, तेजी से बदलते सीन

बच्चे को शुरुआत में टाइम पास के लिए टीवी के सामने कार्टून चलाकर बिठाया जाता है। फिर वह टाइमपास आदत बन जाता। पैरंटिंग एक्सपर्ट गीतांजलि शर्मा कहती हैं कि बच्चों का जो कॉन्टेंट तैयार होता है, वह ऐसा होता है कि लत लग जाए। चटकीले रंगों का इस्तेमाल किया जाता है, ऐसा दिलचस्प कॉन्टेंट होता है कि बच्चा उसकी ओर खींचा रहता है। इस बारे में एनिमेशन कंपनी कॉसमॉस माया में डायरेक्टर-प्रोड्यूसर धीरज बेरी (जो मोटू पतलू, टीटू, बिट्टू बहानेबाज और ईना मीना डीका जैसे पॉपुलर शो बना चुके हैं) कहते हैं, 'बच्चे वाइब्रेंट कलर्स की ओर आकर्षित होते हैं, कुछ रंग ऐसे होते हैं जो उनके दिमाग में जल्दी बैठ जाते हैं जैसे लाल या पीला। कैरेक्टर की शेप भी बहुत मायने रखती है। ज्यादातर कार्टून में आसान शेप का इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि ऐसी शेप को बच्चे आसानी से समझते हैं। बच्चे म्यूज़िक से बहुत जल्दी कनेक्ट करते हैं। म्यूज़िक अच्छा है तो बच्चा बिना बोर हुए उस चीज़ को दिन में कई बार देख सकता है। ध्यान रखा जाता है कि म्यूज़िक बहुत कैची हो, मेलडी अच्छी हो, मूड पर पूरी तरह सेट हो रहा हो।' क्या बच्चों का कॉन्टेंट जानबूझकर ऐसे तैयार किया जाता है कि उसकी लत लग जाए? वह कहते हैं, 'जब हम कोई शो तैयार कर रहे होते हैं तो साथ में चाइल्ड स्पेशलिस्ट और साइकोलॉजिस्ट भी होते हैं जो हमें गाइड करते हैं कि इस कॉन्टेंट का बच्चों पर क्या असर पड़ सकता है। हम हमेशा मनोरंजन के साथ पॉजिटिव मेसेज देते हैं, जैसे सुबह जल्दी उठना चाहिए, गलत काम नहीं करना चाहिए वगैरह।

सर्वाइकल, माइग्रेन, टेक-नेक भी बच्चों में

जब स्क्रीन टाइम की बात आती है तो ज्यादातर मेंटल हेल्थ की बात होती है। लेकिन एक्सपर्ट बताते हैं कि इस वजह से बच्चों की फिजिकल हेल्थ भी खराब हो रही है।

बच्चों में इन वजहों से टेक-नेक (गर्दन में दर्द) की समस्या बढ़ रही है, जो बड़ों में देखी जाती थी। बच्चों की पीठ और गर्दन में अकड़न की वजह से दर्द होने लगा है। इसके अलावा बच्चे गलत पोजिशन में घंटों बैठकर मोबाइल-टीवी देखते हैं तो शरीर के दूसरे हिस्सों पर भी असर पड़ता है। इसके अलावा चूंकि स्क्रीन टाइम फिजिकल ऐक्टिविटी को कम कर देता है तो बच्चों में मोटापे की समस्या आम होती जा रही है। इस वजह से कम उम्र में ही ब्लड प्रेशर बढ़ने लगता है जो उम्र बढ़ने के साथ-साथ दिल की सेहत पर भी असर डालता है। बढ़ते स्क्रीन टाइम की वजह से बच्चों को सिरदर्द भी होने लगा है। वही कुछ बच्चों में माइग्रेन की शिकायत भी पाई जा रही है। मेकयोर हॉस्पिटल के पीडियाट्रिशियन डॉ. संजय जैन बताते हैं कि कुछ केस ऐसे भी आए हैं कि बच्चे दीवार में सिर मारने लगे हैं। यहां तक के मेरे पास 8 साल के बच्चे में सर्वाइकल का केस भी आया है जो कि स्क्रीन टाइम की वजह से हुआ था। इसके अलावा बच्चों की आंख में सूखापन हो रहा है और चश्मा भी लग रहा है।

यूं ही एडिक्ट नहीं बन जाते बच्चे...

बड़ों से अलग बच्चों के लिए खासतौर पर बनाए एनिमेशन आदि के दौरान कई चीजों का रखा जाता है खास ध्यान:

- आसान शेप वाली चीजों को दिखाया जाता है जैसे कि राउंड शेप वाला चेहरा।
- उन रंगों का इस्तेमाल किया जाता है जिनसे बच्चे अट्रैक्ट हों, जैसे लाल, पीला, हरा, गुलाबी वगैरह।
- बच्चों का फोकस बना रहे इसके लिए बैकग्राउंड और कैरेक्टर के डिजाइन अलग-अलग होते हैं।
- कार्टून के पेस (यानी कितनी तेजी से सीन बदल रहे हैं, घटनाएं हो रही हैं, कैरेक्टर रिएक्ट कर रहे हैं, शो में कितनी एनर्जी झलक रही है वगैरह) का भी ध्यान रखा जाता है।
- इस बात का खास ख्याल रखा जाता है कि उस कार्टून में ऐसी चीज़ें न हों जिनसे बच्चों का ध्यान उससे हटकर किसी दूसरी ओर चला जाए।
- बच्चों को म्यूज़िक अट्रैक्ट करता है, इसलिए म्यूज़िक का खास इस्तेमाल किया जाता है। म्यूज़िक बच्चों के दिमाग में बैठ जाता है, ऐसे में इससे कार्टून की रिकॉल वैल्यू भी बनती है। उसे बच्चे बार-बार देखना चाहते हैं।
- गाने और स्क्रिप्ट के लिए बाकायदा गाइडलाइंस होती हैं, जिनमें कुछ आसान शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है।

एनिमेशन बनाने के बाद होती है रिसर्च

- कोई भी कार्टून शो तैयार करने के बाद बच्चों पर रिसर्च की जाती है।
- देश में अलग-अलग जगह पर बच्चों को वह कार्टून दिखाया जाता है। इन दर्शकों में अलग-अलग उम्र के लड़के-लड़कियां शामिल होते हैं।
- इस दौरान उनके साथ एक टीम बैठती है जो यह नोटिस करती है कि बच्चों का किस सीन पर क्या रिएक्शन रहा, कहां पर बच्चे चौंके, कहां उन्होंने कितना एन्जॉय किया।
- यह भी ध्यान रखा जाता है कि बच्चों का ध्यान कहां भटक रहा है और कहां पर सबका फोकस है। अगर किसी सीन पर एक भी बच्चे का ध्यान भटक रहा है तो उस सीन पर दोबारा काम किया जाता है।
- इस दौरान बच्चों की उम्मीदों का भी ध्यान रखा जाता है कि शो या कैरेक्टर से बच्चों को क्या उम्मीदें हैं और वह शो उस उम्मीद को पूरा कर रहा है या नहीं।
- इस दौरान चाइल्ड बिहेवियर एक्सपर्ट और साइकॉलजिस्ट-सायकायट्रिस्ट से भी सलाह ली जाती है कि बच्चों के बीच क्या ट्रेंड है, उन्हें क्या पसंद आ रहा है, उनकी सोच किस तरह बदल रही है वगैरह।
- इन सबको ध्यान में रखते हुए कार्टून में बदलाव किए जाते हैं।

रिश्ते भी हो रहे खराब

जब बच्चा स्कूल जाना शुरू करता है और पढ़ाई व दूसरी ऐक्टिविटी में परफॉर्मेंस पिछड़ जाती है तो पैरंट्स को लगता है कि वह जानबूझकर पढ़ाई नहीं कर रहा। बच्चा ज्यादा स्क्रीन देखता है तो उसका मन न पढ़ाई में लगता है और न ही खेलकूद में। सोने-जागने का पैटर्न भी बिगड़ जाता है। पैरंट्स समझते हैं कि वह मनमानी करने लगा है। वे बच्चे पर सख्ती करते हैं, इससे घर में तनाव बढ़ता है। पैरंट्स और बच्चों के बीच दूरियां बढ़ जाती हैं। इसका असर पूरी ज़िंदगी पर पड़ता है।

जल्दी संभलें

गीतांजलि शर्मा कहती हैं कि अगर समय रहते बच्चों को स्क्रीन से दूर करके मीनिंगफुल ऐक्टिविटीज़ में लगाया जाए तो उसके प्रभावों को ठीक किया जा सकता है। वहीं डॉ. परमजीत कहते हैं कि कई मामलों में इन समस्याओं का इलाज हो सकता है लेकिन एक बार स्क्रीन टाइम बढ़ने के बाद स्क्रीन टाइम कम करना आसान नहीं होता। कम मामलों में पैरंट्स ऐसा कर पाते हैं। डिवेलपिंग ब्रेन में ये समस्याएं बनी रहें तो परमानेंट हो सकती हैं।

स्क्रीन की लत से ADHD, ऑटिज़म, डिवेलपमेंट डिसॉर्डर के बढ़ रहे मामले

बच्चों के लिए बने खास तरह के कॉन्टेंट से जो लत लगती है वह बहुत नुकसान करती है। सीनियर सायकायट्रिस्ट विपुल रस्तोगी कहते हैं, 'ज्यादा स्क्रीन टाइम की वजह से आजकल बच्चों की दिलचस्पी खेलकूद या दूसरी ऐक्टिविटीज़ में नहीं दिख रही। बचपन में जो एडिक्शन कार्टून से शुरू हो रहा है, वह आजकल उस हद तक जा रहा है कि बच्चे वह सब भी देखते हैं जो उनके लिए नहीं है क्योंकि उन्हें स्क्रीन की लत लग चुकी है। हमारे पास ऐसे कई केस आते हैं कि बच्चा फोकस नहीं कर पाता। इस वजह से अटेंशन, एंग्जायटी जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं और दूसरी क्षमताएं कमज़ोर हो रही हैं। चिड़चिड़ापन, ज़िद्दी होना, नींद न आना, एनर्जी में कमी जैसी चीजें भी इसी वजह से बढ़ रही हैं। बात डिप्रेशन तक जा रही है।' गीतांजलि शर्मा कहती हैं, 'बहुत ज्यादा मोबाइल या टीवी देखने से ब्रेन रॉट की समस्या हो रही है यानी दिमाग फ्रेश नहीं बल्कि थका-थका महसूस करता है। इस वजह से बच्चों में आजकल ADHD, वर्चुअल ऑटिज़्म, न्यूरो डिवलपमेंट डिसॉर्डर, सोशल स्किल्स न पनपना जैसी समस्याएं हो रही हैं। इस वजह से बच्चे असल दुनिया को स्वीकार नहीं कर रहे और यह असर बड़े बच्चों में भी दिख रहा है। वे कार्टून की तरह ही हंसते-रोते भी हैं।' पीएसआरआई अस्पताल के सायकायट्रिस्ट डॉ. परमजीत सिंह कहते हैं कि इस वजह से बच्चों में गुस्सैल प्रवृत्ति बढ़ रही है और इमोशंस के स्तर पर कमजोर हो रहे हैं। ऐसे भी बच्चे आ रहे हैं जिनका कोई दोस्त तक नहीं है। रात में सोने-दिन में जागने का टाइम बिगड़ गया है तो बायलॉजिकल रिद्म डिस्टर्ब हो रही है।'

ज्यादा स्क्रीन देखने की वजह से छोटे बच्चे असल दुनिया को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। यह असर बड़े बच्चों में भी दिख रहा है। अब वे हंसते-रोते भी कार्टून की तरह ही हैं। इस से बच्चों में गुस्सैल प्रवृत्ति भी बढ़ रही है।

स्क्रीन से ऐसे पा सकते हैं छुटकारा

अगर आप अपने बच्चे को स्क्रीन से दूर कर रहे हैं तो उसे इसके बदले कुछ विकल्प भी दें जिसमें उसकी दिलचस्पी हो, जैसे कि क्रिएटिव आर्ट, स्विमिंग, स्पोर्ट्स वगैरह। बच्चों को दिलचस्प विकल्प नहीं मिलेगा तो वे दोबारा मोबाइल-टीवी की तरफ जाएंगे। कुछ ऐसी चीज़ें करें:

- बच्चों का दिमाग कल्पनाशील होता है। ऐसे में बच्चों को कहानियां सुनाएं ताकि वे अपनी कल्पना की ज़रूरत पूरी कर सकें।
- बच्चों को कलरफुल ऐक्टिविटी जैसे कलर करना या ड्रॉइंग बनाना या कलरफुल बुक्स देखने में बिजी कर सकते हैं।
- उनकी ज़िंदगी से पूरी तरह स्क्रीन खत्म कर देना आज के जमाने में संभव नही। इसे मिनिमाइज़ यानी कम से कम करने के उपाय ढूंढें।
- इसे फैमिली प्रॉब्लम की तरह देखें। पहले आप खुद मोबाइल से दूर होने की कोशिश करें। वरना, बच्चे को कैसे दूर होने के लिए कहेंगे।

- बच्चों से बात करें कि क्यों उनका मोबाइल का वक्त कम किया जा रहा है ताकि वे उन चीजों को समझें और आपके दुश्मन न बन बैठें।
- यह भी न सोचें कि एक-दो बार कहने से स्क्रीन टाइम कम हो जाएगा। इसके लिए समय-समय पर उन्हें समझाना होगा।
- बच्चे को अपना क्वॉलिटी टाइम देना होगा। साथ ही घर पर खुद भी फोन से दूरी बनाकर रखनी होगी। इससे बच्चे को सही मेसेज मिलेगा।
- बच्चा कंट्रोल में नहीं आ रहा है और स्थिति हाथ से बाहर जा रही है तो काउंसलर से मदद ले सकते हैं।

आर.एन.आई. नं. DELHIN/2004/13707© सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद तथा प्लॉट नंबर 407। फोन : 43505400-04, फैक्सः 43505363, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु.प्रति कापी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु. ; रविवार : नेपाली 6 रु.
स्थानीय सम्पादक* (दिल्ली) : नमिता जोशी (*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

एक्सपर्ट पैनल

डॉ. यतीश अग्रवाल, सीनियर जनरल फिजिशन

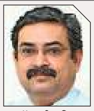
डॉ. मनीष सिंह, मेडिकल डायरेक्टर, पुष्पांजलि हॉस्पिटल

ईशी खोसला, सीनियर डाइटिशन

डॉ. आनन्द पांडेय, मुख्य चिकित्सक, गंगा आयुर्वेदिक चिकित्सालय

डॉ. रोशन दीक्षित, हेमेटॉलजिस्ट, एशियन हॉस्पिटल

एनीमिया ऐसे करें दूर

रगों में खून दौड़ना ही चाहिए, लेकिन खून ही कम हो तो कमज़ोरी आना भी लाज़मी है। आजकल खून (हीमोग्लोबिन-Hb) की कमी यानी एनीमिया काफी बढ़ रहा है। बच्चों, बड़ों समेत देश की आधी से ज्यादा महिलाएं इससे जूझ रही हैं। खून की कमी कैसे दूर करें? इसका असर फैमिली लाइफ पर भी किस तरह पड़ता है? लोकेश के. भारती की रिपोर्ट

हमारे देश में एनीमिया के ज्यादातर (90 फीसदी या इससे भी ज्यादा) मामलों में इसकी वजह सही डाइट का न होना है। हर दिन के भोजन में अगर प्रोटीन, फैट, कार्बोहाइड्रेट्स, मिनरल्स, विटामिन्स, फाइबर्स आदि की मौजूदगी सही मात्रा में हो तो मुमकिन है कि इस परेशानी से काफी हद तक बचे रहेंगे। लेकिन सवाल ये है कि हीमोग्लोबिन की कमी दूर करने के लिए आयरन सप्लिमेंट्स की कितनी ज़रूरत होती है? क्या इसे सभी को खाना चाहिए? शरीर में हीमोग्लोबिन के किस लेवल तक आयरन सप्लिमेंट्स लेने चाहिए, जानते हैं इनके जवाबः

Photos : Adobe Stock

एनीमिया की 3 स्टेज

1. माइल्डः खून में हीमोग्लोबिन 10-11 g/dL के आसपास हो तो यह माइल्ड स्टेज है। इसमें ज्यादा कमजोरी नहीं होती, लेकिन जल्दी थकावट हो सकती है। हेल्दी और बैलंस्ड डाइट के साथ इसे दुरुस्त किया जा सकता है। हां, कुछ मामलों में सप्लिमेंट्स की ज़रूरत भी हो सकती है।

2. मॉडरेटः जब हीमोग्लोबिन 8-9 g/dL हो जाए तो यह मॉडरेट स्टेज है। इसमें कमजोरी के साथ दूसरे लक्षण भी उभर सकते हैं। इसमें अच्छी डाइट के साथ सप्लिमेंट देना ज़रूरी हो जाता है। कुछ मामलों में आयरन के इंजेक्शन की जरूरत भी हो सकती है। कुछ बीमारियों में मॉडरेट एनीमिया के लक्षण देखे जा सकते हैं। मसलनः क्रॉनिक किडनी डिजीज में जब तक डायलिसिस शुरू न हुई हो, पीलिया के कुछ मामलों में, आदि।

3. सीवियरः हीमोग्लोबिन अगर 8 g/dL से कम होकर 7, 6, 5... तक आ जाए तो यह एनीमिया की सीवियर स्टेज है। इसमें मरीज की स्थिति अच्छी नहीं रहती। अस्पताल में भर्ती कराना पड़ सकता है। कुछ लोगों को तो बात करने में भी परेशानी हो सकती है। इसलिए कई बार खून चढ़ाने की स्थिति भी बन जाती है।

2-3 मुट्ठी अंकुरित काले चने हर दिन खाने से एनीमिया में काफी फायदा होता है। अगर किसी को शुगर न हो तो साथ ही एक टुकड़ा गुड़ भी शामिल कर लें।

6 सबसे खास बातें

- हर दिन के खाने में करीब आधा हिस्सा सब्ज़ियों, सलाद और फलों का होना चाहिए।
- आयरन से भरपूर डाइट लेने के साथ जज्ब करने की क्षमता भी बढ़ाना बेहद ज़रूरी है।
- खाने में विविधता हो। सब्ज़ियां और फल तरह-तरह के खाएं। अनाज में गेहूं, चावल के साथ मिलेट्स भी ज़रूर लें।
- विटामिन-C वाले फल (नीबू, संतरा, अमरूद, आंवला, अनानास, पपीता आदि) खाने से शरीर में आयरन जज्ब करने की क्षमता बढ़ती है।
- खाने से 1 घंटा पहले और 1 घंटा बाद तक चाय या कॉफी न पिएं। इससे शरीर आयरन को ज़ज्ब नहीं कर पाता।
- हमारे खून की गुणवत्ता कम होती है हीमोग्लोबिन का लेवल कम होने से। इसकी वजह है शरीर में आयरन, प्रोटीन, B9, B12 फूड सोर्स की कमी।

शरीर में खून की औसत मात्रा

शख्स	खून की मात्रा	लीटर में
पुरुष	7-8%	5-6 लीटर
महिला	6-7%	4-5 लीटर
नवजात	10%	80-90ml/kg

खून में हीमोग्लोबिन आखिर है क्या?

जब बात खून की होती है तो वह सिर्फ लाल वाले हिस्से (हीमोग्लोबिन) की नहीं होती। खून में कई दूसरे ज़रूरी सेल्स भी हैं- इसमें लाल रक्त कोशिकाएं (RBCs), सफेद रक्त कोशिकाएं (WBCs), प्लैटलेट्स और प्लाज्मा आदि शामिल हैं। सीधे कहें तो हीमोग्लोबिन को पूरा ब्लड समझ लेना सही नहीं है। हीमोग्लोबिन असल में एक प्रोटीन है जो RBC (लाल रक्त कोशिकाओं) के अंदर पाया जाता है। यह फेफड़ों से ऑक्सीजन लेकर शरीर के हर हिस्से यानी हर कोशिकाओं तक पहुंचाता है और वापस कार्बन डाइऑक्साइड को बाहर निकालने में मदद करता है। इसलिए हीमोग्लोबिन को खून का ऑक्सीजन-करियर कहा जाता है। अगर हीमोग्लोबिन का लेवल कम हो जाए तो इसका मतलब यह नहीं कि खून की मात्रा कम हो गई है बल्कि उसकी ऑक्सीजन ढोने की क्षमता घट गई है। इसे ही एनीमिया कहा जाता है। ऐसे में कमजोरी, चक्कर आना, थकान, सांस फूलना और चेहरा पीला पड़ना जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

हमें इतना आयरन हर दिन चाहिए

किसी महिला के लिए ज़रूरी	15-18mg
बच्चे के लिए ज़रूरी	7-10mg
पुरुष के लिए ज़रूरी	8-10mg

ओवरवेट का मतलब ज्यादा खून नहीं

ज्यादा वज़न होने का यह मतलब नहीं है कि उस शख्स के शरीर में खून या हीमोग्लोबिन की मात्रा सही या कुछ ज्यादा है। मोटापा ज्यादा फैट जमा होने से होता है बल्कि इससे एनीमिया की आशंका बढ़ जाती है।

चने, सब्जी-सलाद फायदेमंद, खूब खाएं

भुने चनेः आयरन और प्रोटीन को बाइंड करने में मददगार। साथ ही प्रोटीन का भी बेहतरीन सोर्स है। साथ में किशमिश या मुनक्का भी खा सकते हैं।

गुड़, काले अंकुरित चने, खजूर और किशमिशः सर्दियों में खाना फायदेमंद है। अगर शुगर न हो तो 50 ग्राम तक गुड़ और अपनी मुट्ठी से नापकर 2 मुट्ठी अंकुरित चने खाने से आयरन का लेवल सही रहता है। वहीं, खजूर और किशमिश भी आयरन के अच्छे सोर्स हैं।

हर दिन फलः अगर शुगर है तो हर दिन एक मौसमी फल और शुगर नहीं है तो 2 फल भी खा सकते हैं। इसमें अनार एक अच्छा विकल्प है। यह आयरन और विटामिन-C दोनों का अच्छा स्रोत है। अनार का जूस खून बढ़ाने के लिए बहुत असरदार माना जाता है।

नीबू या विटामिन-C वाले फलः आधा नीबू और एक संतरा हर दिन। नीबू नहीं हो तो एक आंवला भी चलेगा।

हरी पत्तेदार सब्जियांः हर दिन 2 कटोरी मौसमी हरी सब्जी या साग या फिर दोनों। इसमें पालक, मेथी, सरसों और चौलाई साग आयरन के बेहतरीन स्रोत हैं।

चुकंदर, गाजर और शकरकंदः चुकंदर आयरन, फोलेट और फाइबर से भरपूर होता है जो खून में हीमोग्लोबिन के स्तर को तेज़ी से बढ़ाता है। इसका जूस नियमित रूप से पीना बहुत फायदेमंद है। वहीं, गाजर और शकरकंद में विटामिन-A और विटामिन-C की भरपूर मात्रा होती है।

दालेंः हर दिन 2 कटोरी दाल। मूंग, मसूर आदि दाल खाएं।

इनके अलावा सेब, केला, खट्टे फल (संतरा, नीबू), पपीता और अमरूद भी एनीमिया में फायदेमंद हैं। खट्टे फल विटामिन-C देते हैं जो आयरन को जज्ब करने में मददगार हैं। इन्हें हर दिन न सही, हफ्ते में 3 से 4 दिन खाने से भी काफी फर्क पड़ेगा।

लोहे की कड़ाहीः सब्जी बनाने के लिए लोहे की कड़ाही का इस्तेमाल करना चाहिए। इससे भोजन में आयरन की मात्रा बढ़ती है।

बाजराः हफ्ते में 3 से 4 दिन खाएं। बाजरा आयरन का और रागी कैल्शियम का बेहतरीन सोर्स है। इसलिए जब भी इनसे बनी चीजें खाएं तो कोशिश करें कि ऊपर से थोड़ा घी भी डाला जाए।

एनीमिया किन वजहों से होता है?

खानपान की वजह सेः ज्यादातर मामले इसी वजह से सामने आते हैं और सही डाइट से हीमोग्लोबिन का स्तर बेहतर हो जाता है।

पेट में कीड़े होने सेः साल में एक बार कीड़े मारने वाली दवा खाने से इसका खतरा कम हो जाता है। बच्चों के मामले में ऐसा ज़रूर कर लेना चाहिए।

विटामिन की कमी सेः यह भी डाइट से जुड़ी बात है, पर विटामिन-B9 यानी फोलेट और B12 को मेंटेन करने से भी हीमोग्लोबिन का स्तर सही रहता है। वहीं, विटामिन-D की कमी से भी खून की कमी हो सकती है।

खून बह जाने सेः कई बार चोट लगने से भी शरीर से काफी खून का नुकसान हो जाता है।

बीमार होने सेः ज्यादातर बीमारियों में शरीर में खून की कमी हो सकती है। लेकिन छोटी-छोटी परेशानियों में शरीर इसे फिर से दुरुस्त कर लेता है। लेकिन गंभीर मामलों में कई बार ऐसा करना मुमकिन नहीं होता।

ऑटो इम्यून बीमारियों सेः कुछ बीमारियों में शरीर में RBC अपनी पूरी ज़िंदगी नहीं जी पाते।

इसकी वजह लिवर सिरोसिस, कैंसर, किडनी फेल होना जैसी गंभीर बीमारियां भी हैं।

खून की कमी के ये हैं लक्षण

थकान और कमजोरीः ज़रा-सी मेहनत में ही थकान का महसूस होना। मांसपेशियों में ताकत महसूस न होना।

चेहरा पीला पड़नाः होंठ, हथेलियां, नाखून या चेहरा आदि पीला दिखना। आंखों के अंदर का हिस्सा गुलाबी न होकर फीका दिखना।

सांस फूलनाः सीढ़ियां चढ़ते या थोड़ा तेज़ चलने पर सांस फूलना।

दिल की धड़कनें तेज़ होनाः अक्सर सीढ़ियां चढ़ते हुए हार्ट बीट तेज़ होना। चक्कर आना।

हाथ-पैर ठंडे रहनाः शरीर का तापमान सामान्य रहते हुए भी हथेलियां/पैर ठंडे रहना।

बाल झड़नाः बाल पतले हो जाना और टूटना। यही हाल नाखूनों का भी हो सकता है। नाखून चम्मच की तरह मुड़ जाना।

मूड बदलना/चिड़चिड़ापनः मानसिक थकान या फोकस करने में मुश्किल महसूस होना।

भूख में कमीः यह भी एनीमिया का एक अहम लक्षण है, खासकर बच्चों में।

नोटः ये लक्षण किसी दूसरी बीमारी के भी हो सकते हैं। सही फैसला डॉक्टर ब्लड टेस्ट से करते हैं।

सिर्फ हीमोग्लोबिन देखना काफी नहीं

यह सच है कि शरीर में होने वाली ज्यादातर बीमारी के पीछे एनीमिया यानी खून की कमी ही वजह है। इसलिए होम्योपैथ को इस बात का ध्यान रखकर ही इलाज करना चाहिए। चाहे हम शुगर, बीपी जैसी लाइफस्टाइल से जुड़ी परेशानी की बात करें या फिर किसी दूसरी खतरनाक बीमारी की। जिन लोगों के शरीर में हीमोग्लोबिन लेवल, आयरन लेवल या आयरन बाइडिंग कैपिसिटी सही होती है, उनमें अमूमन इस तरह की परेशानी कम ही देखी गई है।

देश में ज्यादातर महिलाएं एनीमिया का शिकार होती हैं। उनके शरीर में हीमोग्लोबिन का सामान्य स्तर 10 से भी कम होता है। इसके साथ ही आयरन लेवल और फेरिटिन (Ferritin) का लेवल भी रेंज में रहना ज़रूरी है। कई बार ऐसी स्थिति हो सकती है कि हीमोग्लोबिन सही हो, लेकिन प्रोटीन से आयरन के जुड़ने की कैपिसिटी में कमी से परेशानी हो। इसलिए इसका ध्यान रखना ज़रूरी है। जब भी हीमोग्लोबिन का टेस्ट कराते हैं तो साल में कम से एक या दो बार TIBC (Total Iron-Binding Capacity) और Ferritin Level ज़रूर जांच करवा लें।

महिलाओं में एनीमिया इस वजह से भी

हर महीने में अमूमन 3 से 7 दिन का दौर होता है जब महिलाओं को पीरियड्स से गुज़रना पड़ता है। इस दौरान जहां ब्लड लॉस होता है, वहीं मूड स्विंग जैसी परेशानी भी होने लगती है। यह हार्मोन लेवल में बदलाव की वजह से होता है। शुरुआत के पहले दो दिनों तक ज्यादा ब्लड लॉस होता है। एक पीरियड में एक महिला का 80ml तक खून शरीर से बाहर चला जाता है। 80 से 170ml हेवी मेंस्ट्रुल ब्लीडिंग (HMB) में गिना जाता है, लेकिन यह काफी हद तक उम्र और शरीर पर निर्भर करता है। 30 साल के बाद एक पीरियड में 5-7 दिनों तक 170ml ब्लड लॉस को भी सामान्य ही माना जाता है। इससे ज्यादा होने पर गाइनी डॉक्टर से मिलना चाहिए। कई बार पीरियड्स में ज्यादा ब्लड लॉस के बाद भी अलर्ट नहीं होती।

इसका असर पारिवारिक रिश्तों पर

जब कोई फीमेल रिप्रोडक्टिव फेज़ यानी मिनार्की (करीब 12-13 साल की उम्र जब पहला पीरियड आता है) से मेनोपॉज (45 साल के करीब जब आखिरी पीरियड्स आते हैं) के बीच होती है तो पीरियड्स के 4-5 दिनों में ब्लड लॉस सामान्य बात है। लेकिन एक सेहतमंद फीमेल में पीरियड्स के दौरान भी हीमोग्लोबिन का सामान्य स्तर बरकरार रहना चाहिए या फिर कुछ ही कम होना चाहिए। जब किसी महिला में खून की कमी होती है तो स्वाभाविक तौर पर उनमें एनर्जी भी कम हो जाती है। जब हीमोग्लोबिन कम होता है तो शरीर की कोशिकाओं तक ऑक्सिजन की सही मात्रा नहीं पहुंचती। ऐसे में शरीर को सही ढंग से चलाने के लिए एनर्जी पैदा नहीं होती। नतीजा, सुबह से ही थकान, हमेशा तनाव में रहना, कई बार डिप्रेशन की स्थिति, दूसरे हॉर्मोस की ऐक्टिविटी भी कम होते जाना जैसी परेशानियां सामने आती हैं। अगर महिला जॉब करती है तो बेहतर परफॉर्म करने, बच्चों को पालने, परिवार का ध्यान रखने और कुकिंग की जिम्मेदारी भी उठाती है। लेकिन खून की कमी हो तो बिना एनर्जी के कामकाज मुश्किल हो जाता है।

वहीं, इस वजह से एस्ट्रोजन, प्रोजेस्ट्रॉन, ऑक्सिटोसिन जैसे हॉर्मोन भी पूरी तरह काम नहीं करते, इससे महिला की सेक्शुअल लाइफ भी डिस्टर्ब होने लगती है। महिला कामकाज से ही इतना थक जाती है कि तुरंत सोना चाहती है। वहीं, पार्टनर को लगता है कि वह बहाना कर रही है।

विटामिन-C और आयरन का रिश्ता है बेहद खास

आयरन को शरीर में जज्ब कराने में विटामिन-C का अहम रोल है। इसे ऐसे भी समझ सकते हैं कि जिस तरह शरीर में खून बनाने में आयरन का सबसे अहम रोल है और सबसे ज़रूरी भी है, उसी तरह विटामिन-C उस आयरन को शरीर में अच्छी तरह जज्ब कराने, घुलने-मिलने और उपयोग लायक बनाने में सबसे अहम है। यही वजह है कि डॉक्टर अक्सर आयरन की दवा, आयरन रिच फूड के साथ विटामिन-C सप्लिमेंट या फूड लेने की सलाह देते हैं। यहां इस बात का ध्यान रखना भी ज़रूरी है कि विटामिन-C के ज्यादा सप्लिमेंट लेने से परेशानी न हो जाए। **हमें आयरन दो तरह के सोर्स से मिलता हैः वेज (नॉन-हीम आयरन) और नॉनवेज (हीम आयरन)। इसमें नॉनवेज सोर्स (मछली, चिकन, अंडा आदि) यानी हीम आयरन सोर्स को शरीर आसानी से जज्ब कर लेता है। इसके लिए अमूमन विटामिन-C की ज़रूरत नहीं होती, लेकिन नॉन-हीम यानी वेज सोर्स (चुकंदर, अनार, पालक आदि) से मिलने वाले आयरन को शरीर में जज्ब कराने के लिए विटामिन-C की बहुत ज़रूरत होती है।** विटामिन-C नॉन-हीम आयरन को उस रूप में बदल देता है, जिसे आंतों (इंटेस्टाइन) की कोशिकाएं आसानी से जज्ब कर सकें। इसलिए अगर कोई पालक, चना, राजमा, बाजरा या कोई भी आयरन वाला खाना खा रहा है और उसके साथ आधा नीबू निचोड़ ले या आंवला खा ले तो आयरन का अवशोषण 2-3 गुना तक बढ़ सकता है।

...इसलिए भी आती है ज्यादा नींद

जब शरीर में एनर्जी का स्तर कम हो और लगातार काम करना पड़े तो दीवार का सहारा मिलते ही या टेबल, चेयर पर बैठे-बैठे ही नींद आने लगती है। यह सेहतमंद नींद नहीं होती। यह कमज़ोरी, खून की कमी, विटामिन की कमी वाली नींद होती है। कई बार ऐसा देखा जाता है कि घर में महिलाएं किचन में बैठते ही सोने लगती हैं। कई बार इसके लिए उनका मज़ाक भी बनाया जाता है। लेकिन इस तरह सोना उनकी आदत नहीं है, उसके शरीर की ज़रूरत है। करीब 45 साल की उम्र के आसपास जब मेनोपॉज (आखिरी पीरियड) का दौर शुरू होता है तो उनके हीमोग्लोबिन की स्थिति कुछ बेहतर हो जाती है। लेकिन सही खानपान न होने की वजह से फिर कमी होने लगती है।

कब लें आयरन सप्लिमेंट?

सबसे पहले ब्लड टेस्ट CBC (कंप्लीट ब्लड काउंट) करवा लें। यह टेस्ट 100 से 200 रुपये में हो जाता है। वैसे तो एनीमिया का पता लक्षणों से चल जाता है लेकिन टेस्ट करना ज़रूरी है। फिर डॉक्टर की सलाह से ही सप्लिमेंट ले सकते हैं। डॉक्टर की सलाह इसलिए ज़रूरी है क्योंकि वही समझ सकते हैं कि खून की कमी आयरन की कमी से है या दूसरी वजह से।

आयुर्वेद में एनीमिया दूर करने के उपाय

आयुर्वेद में खून की कमी यानी एनीमिया को पांडु रोग कहते हैं। इसके लिए कई उपाय बताए गए हैं। इनमें से डाइट वाली कई चीज़ें पहले ही बताई जा चुकी हैं। यहां कुछ औषधियों के बारे में बताया जा रहा है, जिन्हें किसी जानकार आयुर्वेदिक चिकित्सक की राय से ले सकते हैं।

- अगर एनीमिया के साथ शरीर में सूजन है तो पुनर्नवा मंडूर+सूत शेखर रस का सेवन कर सकते हैं।
- अगर एनीमिया के साथ पीलिया के भी लक्षण हैं तो नवायस लौह+फलत्रिकादि काढ़ा+रोहितक लौह का सेवन सही रहता है।
- अगर एनीमिया खूनी बवासीर की वजह से है तो उसका भी इलाज साथ में करना पड़ता है। इसके लिए इन्द्रजौ+शुंठी का क्षीरपाक, नवायस लौहइन्द्रजौ+शुंठी का क्षीरपाक, नवायस लौह का सेवन करना सही रहता है।

> अभी निर्वाचन आयोग के आंकड़े नहीं आए है। हमारे पास भी आंकड़े नहीं आये आखिर मुख्यमंत्री को कैसे पता चल गया कि चार करोड़ वोट कट गये है। सुनने में आ रहा है कि भाजपा के नेता और विधायक रात में निजी कम्पनियों के साथ बैठकर चार करोड़ वोट बराबर करने को कह रहे हैं। –अखिलेश यादव

विचार एक्सप्रेस

बिक्रम मजीठिया को नहीं मिली राहत...

आय से अधिक संपत्ति मामले में फंसे शिरोमणि अकाली दल के वरिष्ठ नेता बिक्रम सिंह मजीठिया को सुप्रीम कोर्ट से फिलहाल कोई बड़ी राहत नहीं मिली है। शीर्ष अदालत ने उनकी याचिका पर सुनवाई करने की मंजूरी जरूर दी है, लेकिन अंतरिम जमानत देने से...

पढ़ें पेज 12 पर...

जन एक्सप्रेस

सम्पादकीय

मोदी के ओमान दौरे का बड़ा असर, खाड़ी में रणनीतिक बढ़त हासिल कर भारत ने जमाई अपनी धाक

बहरहाल, प्रधानमंत्री मोदी का यह दौरा एक और संदेश देता है कि भारत अब अपनी प्रवासी भारतीय आबादी को केवल भावनात्मक पूंजी नहीं, बल्कि कूटनीतिक शक्ति मानता है। ओमान में बसे भारतीय दशकों से दोनों देशों के बीच सेतु का काम कर रहे हैं और मोदी सरकार ने इस सेतु को नीति का हिस्सा बनाया है। कुल मिलाकर, ओमान में मिला सम्मान, ष्श्वक्क पर हस्ताक्षर और रणनीतिक संवाद, तीनों मिलकर यह साबित करते हैं कि भारत अब वैश्विक मंच पर अनुगामी नहीं, निर्णायक भूमिका में है। यह कूटनीति दिखावे की नहीं, परिणाम देने वाली है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ओमान की राजधानी मस्कट में उस समय ऐतिहासिक सम्मान मिला, जब सुल्तान हैथम बिन तारिक ने उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ऑर्डर ऑफ ओमान' से अलंकृत किया। यह केवल एक सम्मान नहीं, बल्कि भारत की बढ़ती वैश्विक हैसियत पर मुहर थी। हम आपको बता दें कि पीएम मोदी यह सम्मान पाने वाले दुनिया के उन गिने-चुने नेताओं में शामिल हो गए हैं, जिनमें महारानी एलिज़ाबेथ, नेल्सन मंडेला और जापान के सम्राट अकिहितो जैसे नाम शामिल हैं। यह सम्मान ऐसे समय मिला है जब भारत और ओमान अपने कूटनीतिक संबंधों के 70 वर्ष पूरे कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी की यह यात्रा उनके तीन देशों के दौरे यानि जॉर्डन, इथियोपिया और ओमान की अंतिम कड़ी थी, लेकिन महत्व के लिहाज से शायद यह यात्रा सबसे भारी थी। मस्कट पहुंचने पर प्रधानमंत्री को औपचारिक गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया, जो भारत के प्रति ओमान के सम्मान और भरोसे को साफ दर्शाता है। इस दौरे की सबसे बड़ी उपलब्धि रही भारत-ओमान व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (ष्श्वक्क), जिसने द्विपक्षीय संबंधों को एक नई ऊंचाई दी। यह समझौता इसलिए भी ऐतिहासिक है क्योंकि इसमें पहली बार भारत की पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों यानि् ङ्कस्न को औपचारिक रूप से शामिल किया गया है। ओमान ने आयुष सेवाओं और उत्पादों के लिए अपने बाजार के दरवाज़े खोल दिए हैं, जिससे खाड़ी क्षेत्र में भारत की सॉफ्ट पावर को जबरदस्त बल मिलेगा। इसके अलावा, दोनों देशों ने संयुक्त दृष्टि दस्तावेज़ को अपनाया और समुद्री विरासत, वैज्ञानिक अनुसंधान, कौशल विकास, कृषि, नवाचार और व्यापार जैसे क्षेत्रों में कई समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए। 'मैत्री पर्व' कार्यक्रम में प्रवासी भारतीयों और छात्रों को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने भारत को 'तेज़ फैसले लेने वाला, समयबद्ध परिणाम देने वाला और वैश्विक मॉडल बनता देश' बताया। देखा जाये तो प्रधानमंत्री मोदी को मिला 'ऑर्डर ऑफ ओमान' सिर्फ एक व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, यह उस नए भारत की अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति है जो अब झिझकता नहीं, बल्कि शर्तें तय करता है। बीते एक दशक में मोदी सरकार ने विदेश नीति को औपचारिकताओं से निकालकर रणनीति, व्यापार और सामरिक हितों की ठोस जमीन पर उतारा है। ओमान इसका ताज़ा उदाहरण है। हम आपको बता दें कि ओमान भले ही आकार में छोटा देश हो, लेकिन उसका सामरिक महत्व विशाल है। अरब सागर और हिंद महासागर के संगम पर स्थित ओमान, हॉर्मुज जलडमरूमध्य के पास है, जहां से दुनिया के एक बड़े हिस्से का तेल व्यापार गुजरता है। ऐसे में भारत और ओमान के रिश्ते केवल व्यापारिक नहीं, बल्कि गहरे सामरिक और सुरक्षा आयाम रखते हैं। इसके अलावा, ज़रिये भारत ने साफ संकेत दिया है कि वह खाड़ी क्षेत्र में केवल ऊर्जा का उपभोक्ता बनकर नहीं रहना चाहता, बल्कि निवेश, स्वास्थ्य, तकनीक और नवाचार का भागीदार बनना चाहता है। आयुष को समझौते में शामिल करना भारत की सभ्यतागत ताकत का प्रदर्शन है। यह संदेश है कि भारत अब केवल दवाइयाँ नहीं, जीवनशैली भी निर्यात करेगा। इसके अलावा, रक्षा और समुद्री सुरक्षा के मोर्चे पर ओमान भारत का भरोसेमंद साथी रहा है। भारतीय नौसेना को ओमान के बंदरगाहों तक रणनीतिक पहुंच, हिंद महासागर में भारत की निगरानी क्षमता को कई गुना बढ़ाती है।

एक्सप्रेस आलेख

वायु प्रदूषण एक सामूहिक अपराध बन गया है जिसमें अपराधी कम और पीड़ित अधिक हैं। अब यह वक्त है जब विकास की परिभाषा में स्वच्छ हवा और सुरक्षित वातावरण को सबसे ऊपर रखा जाए। सरकारें यदि सचमुच राष्ट्र की समृद्धि चाहती हैं, नया भारत-विकसित भारत बनाना चाहती है तो उन्हें सांसों की सुरक्षा को प्राथमिकता देनी होगी। अमीर तबके को भी यह समझना होगा कि जिस हवा को वे अपने निवेशों से दूषित कर रहे हैं, वह अंततः उन्हीं की अगली पीढ़ियों की सांसों को रोक देगी। वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण को लेकर किसी किस्म की उदासीनता देश और मानवता के साथ अन्याय होगा।

अमीरी की जीवनशैली, प्रदूषण का बोझ और गरीब की त्रासदी

ललित गर्ग

अब समय है कि इस संकट को केवल पर्यावरणीय मुद्दा न मानकर एक सामाजिक और नैतिक चुनौती के रूप में देखा जाए। हवा का अधिकार हर नागरिक का मौलिक अधिकार है, लेकिन यह अधिकार धीरे-धीरे छिनता जा रहा है। अमीरों को अपनी जीवनशैली पर संयम लाना होगा, अपने निवेशों को स्वच्छ ऊर्जा की ओर मोड़ना होगा, और प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों से दूरी बनानी होगी।

देश की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली आज जिस घातक पर्यावरण संकट से गुजर रही है, वह केवल एक शहर की समस्या नहीं, बल्कि पूरे देश के लिये चेतावनी है। विडंबना यह है कि इस संकट के नाम पर जो तात्कालिक उपाय लागू किए जाते हैं, उनका सबसे बड़ा खामियाजा वही तबका भुगतता है, जिसकी इसमें सबसे कम भूमिका होती है-गरीब और श्रमिक वर्ग। इसी पीड़ा को शब्द देते हुए सुप्रीम कोर्ट को कहना पड़ा कि अमीरों की जीवनशैली से पैदा हुई मुश्किलों का सामना गरीबों को करना पड़ता है। यह टिप्पणी न केवल कानूनी दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक और नैतिक चेतना को झकझोरने वाली भी है। दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते प्रदूषण से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस विपुल एम. पंचोली की पीठ ने यह मर्मस्पर्शी टिप्पणी की। वरिष्ठ अधिवक्ता और न्यायमित्र अपराजिता सिंह की दलीलों पर गौर करते हुए अदालत ने स्पष्ट कहा कि ग्रैप-4 जैसी सख्त पाबंदियों का सबसे ज्यादा असर गरीबों पर पड़ता है। निर्माण कार्य रुकते हैं, दिहाड़ी मजदूरों की रोजी-रोटी ठप हो जाती है, जबकि प्रदूषण पैदा करने वाली जीवनशैली में शामिल संपन्न तबके पर अपेक्षित प्रभाव नहीं पड़ता। मुख्य न्यायाधीश ने साफ शब्दों में कहा कि समस्या की जड़ अमीरों की जीवनशैली है और समाधान भी वहीं से शुरू होना चाहिए। उन्होंने भरोसा दिलाया कि अदालत ऐसे प्रभावी और लागू करने योग्य आदेश पारित करेगी, जिन्हें जरूरत पड़ने पर सख्ती से लागू भी किया जा सकेगा। जस्टिस सूर्यकांत का कहना था कि महानगरों में लोगों की अपनी अलग जीवनशैली होती है, जिन्हें वे बदलना नहीं चाहते। यही वजह है कि समस्या अमीरी की वजह से होती है, लेकिन झेलना गरीब को पड़ता है। दरअसल, अदालत की सोच रही है कि हमारा परिवेश-पर्यावरण साफ-सुथरा रहे, इसके लिये हम सबको अपने कुछ सुखों का त्याग करना होगा, अपने जीवन को पर्यावरण के अनुकूल ढालना होगा एवं प्रकृति-एवं पर्यावरण के प्रति सकारात्मक रवैया अपना होगा। यह जानते हुए कि पर्यावरण पर आने वाले संकट व प्रदूषित हवा का अमीर-गरीब पर समान असर पड़ता है फिर भी अमीर लोग इससे बेपरवाह रहते हैं। निस्संदेह, शीर्ष अदालत ने समाज की दुखती रग पर हाथ रखा है। चौड़ी होती सड़कें, नए फ्लाईओवर और हाईवे बनने के बावजूद जाम और प्रदूषण कम नहीं हो रहे। कारण साफ है निजी वाहनों का बेहिसाब इस्तेमाल। एक व्यक्ति, एक कार का चलन न केवल सड़क की जगह घेरता है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन को भी कई गुना बढ़ाता है। कभी ऑड-इवन जैसी योजनाओं पर चर्चा हुई, कार-पूलिंग की बात चली, लेकिन सार्वजनिक परिवहन को सस्ता, सुगम और भरोसेमंद बनाने की इच्छाशक्ति लगातार कमजोर रही। आज एसी, कूलर और अन्य वातानुकूलन साधनों का बढ़ता उपयोग भी पर्यावरण संकट को

सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी और सोच हमें यही संदेश देती है कि स्वच्छ पर्यावरण के लिये कुछ सुखों का त्याग अनिवार्य है। यदि आज हमने अपनी आदतें नहीं बदलीं, तो आने वाली पीढ़ियों को हम केवल प्रदूषित हवा, सूखते जलस्रोत और असमानता की विरासत ही सौंप पाएंगे।

गहराता जा रहा है। इससे बिजली की खपत बढ़ती है, तापमान में वृद्धि होती है और अप्रत्यक्ष रूप से प्रदूषण का दायरा फैलता है। उद्योगों में भी पर्यावरणीय नियमों का ईमानदार पालन नहीं होता। जल संकट इसका एक और क्रूर उदाहरण है-जहां झुग्गी-बस्तियों में पीने के पानी की किल्लत है, वहीं पॉश कॉलोनियों में लॉन सींचे जाते हैं, कारें धुलती हैं और स्विमिंग पूल भरे रहते हैं। कुदरत ने हवा, पानी और संसाधन सभी के लिये दिए हैं, लेकिन अमीरी के असमान दखल ने इनके वितरण को अन्यायपूर्ण बना दिया है। राजनीतिक दल एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप तो करते हैं, लेकिन ठोस और दीर्घकालिक समाधान सामने नहीं आते। अब समय आ गया है कि सरकार और जनता-दोनों अपनी भूमिका ईमानदारी से निभाएं। सरकार को सार्वजनिक परिवहन को मजबूत, सस्ता और आकर्षक बनाना होगा, उद्योगों पर पर्यावरणीय नियमों का कड़ाई से पालन कराना होगा और शहरी विकास की नीतियों को पर्यावरण-संवेदनशील बनाना होगा। वहीं जनता को भी अपनी जीवनशैली पर पुनर्विचार करना होगा-अनावश्यक वाहन उपयोग से बचना, ऊर्जा की खपत कम करना, एसी और अन्य सुविधाओं का संयमित इस्तेमाल करना और साझा संसाधनों के प्रति जिम्मेदार व्यवहार अपनाना होगा। विडंबना यह है कि सत्ताधीशों ने दिल्ली में सार्वजनिक ट्रांसपोर्ट को सशक्त करने को प्राथमिकता नहीं दी। यदि सार्वजनिक परिवहन सस्ता व सहज उपलब्ध होता तो शायद सड़कों पर कारों का दबाव कम होता। हाल के दिनों में संपन्न व मध्यम वर्ग में एसी व अन्य वातानुकूलन उपायों के उपयोग का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। इससे जहां प्रदूषण बढ़ाने वाली बिजली की खपत बढ़ी है, वहीं बाहर का तापमान व कार्बन उत्सर्जन भी बढ़ा है। इसी तरह तमाम अमीरों द्वारा संचालित उद्योगों में उन उपायों का ईमानदारी से पालन नहीं किया गया जो पर्यावरण में प्रदूषण कम करने में सहायक होते हैं। सरकारों की नीतिगत विफलता इस बढ़ते वायु प्रदूषण की त्रासदी का बड़ा कारण है। प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए योजनाएं तो बनती हैं, पर उनमें न तो स्थायित्व होता है, न गंभीरता। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं, निगरानी तंत्र कमजोर है, और प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों पर कार्रवाई नगण्य है। केंद्र और राज्य सरकारों के बीच जिम्मेदारी का बंटवारा अस्पष्ट है। हर साल सर्दियों में दिल्ली और उत्तर भारत के अन्य शहरों की हवा जहरीली हो जाती है, तब कुछ दिन के लिए 'आपात कदम' उठाए जाते हैं, पर जैसे ही धुंध छंटती है, सब कुछ फिर पहले जैसा हो जाता है। नीतियों में पारदर्शिता का अभाव और उद्योगपतियों का दबाव भी एक गहरी समस्या है। कोयला आधारित उद्योगों, पेट्रोलियम कंपनियों और निर्माण व्यवसाय से जुड़ी लॉबी सरकारों पर ऐसा प्रभाव बनाए रखती हैं कि कठोर कदम उठाना राजनीतिक दृष्टि से असुविधाजनक बन जाता है। स्वच्छ ऊर्जा की ओर संक्रमण को हमेशा 'महंगा विकल्प' बताकर टाला जाता है, जबकि वास्तव में यह निवेश मानव जीवन और पर्यावरण की सुरक्षा में है। वायु प्रदूषण का संकट केवल वातावरण में धूल और धुएं का मामला नहीं है, यह आर्थिक अन्याय, राजनीतिक असंवेदनशीलता और सामाजिक उदासीनता का प्रतीक बन चुका है। जो सरकारें जनजीवन सुधारने का वादा करती हैं, वे हवा की गुणवत्ता सुधारने में विफल रही हैं। आंकड़े बताते हैं कि वायु प्रदूषण से भारत की अर्थव्यवस्था को हर साल सकल घरेलू उत्पाद का लगभग दस प्रतिशत तक का नुकसान हो रहा है। यह नुकसान केवल पैसों में नहीं, बल्कि मानव संसाधन की हानि, स्वास्थ्य पर बोझ और जीवन की गुणवत्ता में गिरावट के रूप में भी दिखाई देता है।

आज का पंचांग

किसी भी शुभ कार्य को करने के लिए सही मुहूर्त, सही समय, और सही नक्षत्र का होना जरुरी होता है, आज हम आपको आज के दिन का सही समय जो की सही कार्य करने का है, और आज कब कौन सी दशा कौन से टाइम में चल रही है उसका समुचित विवरण हिन्दू कैलेंडर और हिन्दू पंचांग के अनुसार दे रहे है, आज आपका दिन मंगलमयी रहे, यही शुभकामना है। आज का दिन शुभ कार्य के लिए सही कार्य है या नहीं आज के चौघड़िया के अनुसार जानें। अगर आप आज वाहन खरीदने का विचार कर रहे है या आज कोई नया व्यापार आरंभ करने जा रहे है, गृह प्रवेश कर रहे है, गृह निर्माण कर रहे है, प्रॉपर्टी खरीद रहे हैं, या कोई अन्य शुभ कार्य करने के लिए सोच रहे है तो पहले यहाँ सही समय देख ले, आपका कार्य शुभ और सफल होगा, यही हमारी ओर से शुभ मंगल कामना है।

तिथिः	अमावस्या 07:13 तक
नक्षत्रः	मूल 25:21 तक
पक्षः	कृष्ण
वारः	शनिवार
योगः	गण्ड, 16:16
सूर्योदयः	07:09
सूर्यास्तः	17:27
चंद्रमाः	धनु राशि में
राहुकालः	09:44-11:01
विक्रमी संवत्:	2082
शक सम्वतः	1947
मासः	पौष
शुभ मुहूर्तः	11:58-12:39

जन एक्सप्रेस

ना लगाओ आग !

हर तरफ़ है शांति ।
ना लगाओ आग ।।
जो हैं असली मुद्दे ।
रहे क्यों उससे भाग ।।
बेमतलब, बेवजह ।
आप रहे कुरेद ।।
देखकर जनमानस ये ।
करता व्यक्त खेद ।।
छोड़कर तकरार अब ।
राह सही अपनाओ ।।
ऊब गए हैं लोग ।
अब ना भय दिखाओ ।।
हो सही सलाह ।
लाओ ये बदलाव ।।
होगा तभी दूर ।
दिखता जो अभाव ।।

- कृष्णेन्द्र राय

एक्सप्रेस स्वास्थ्य

प्रेग्नेंसी में हर महिला को करनी चाहिए तेज वॉक

प्रेग्नेंसी के दौरान अगर महिला को बेड रेस्ट के लिए नहीं बोला गया है, तो उन्हें नियमित रूप से एक्सरसाइज करनी चाहिए। इससे सेहत में सुधार होता है और ब्लड फ्लो बेहतर होता है, जो कि गर्भ में पल रहे शिशु के विकास के लिए भी फायदेमंद है। हालांकि, प्रेग्नेंसी में कई महिलाएं हैवी वर्कआउट करने से बचती हैं। ऐसे में उनके लिए तेज चहलकदमी (ब्रिस्क वॉक) करना अच्छा विकल्प है।

कॉम्प्लीकेशन में कमी: तेज वॉक करने को आप 'ब्रिस्क वॉक' भी कह सकते हैं। प्रेग्नेंसी में तेज चलने से जेस्टेशनल डायबिटीज का रिस्क कम होता है और ब्लड प्रेशर संतुलित रहता है। कई अध्ययनों से पुष्टि हुई है कि नियमित वॉक करने से डिलीवरी के समय होने वाली जटिलताओं में भी कमी आती है।

स्वास्थ्य समस्याओं में कमी: प्रेग्नेंसी के दौरान महिलाओं को कमर दर्द, कब्ज और पैरों में सूजन जैसी परेशानियां बनी रहती हैं। नियमित ब्रिस्क वॉक करने से ब्लड सर्कुलेशन बढ़ता है, जिससे इम्यूनिटी बूस्ट होती है और मांसपेशियों को मजबूती मिलती है।

बेहतर मूडः हार्मोनल बदलाव के कारण मूड स्विंग्स और तनाव होना सामान्य है। तेज वॉक करने से शरीर में एंडोर्फिन रिलीज होता है। यह 'फील-गुड' हार्मोन मूड को बेहतर बनाता है और स्ट्रेस मैनेजमेंट में मदद करता है।

वजन संतुलनः प्रेग्नेंसी में वजन बढ़ना स्वाभाविक है, लेकिन इसे नियंत्रित रखना जरूरी है। रेगुलर फास्ट वॉक करने से हेल्दी वेट मेंटेन करने में मदद मिलती है। यही नहीं, यह पोस्टपार्टम यानी डिलीवरी के बाद वजन घटाने में भी काफी कारगर साबित होती है।

बेहतर स्टेमिनाः प्रेग्नेंसी के दौरान थकान बनी रहती है। रेगुलर फास्ट वॉक करने से फेफड़ों और हृदय की क्षमता में सुधार होता है। यह स्टेमिना बढ़ाने और लेबर पेन (प्रसव पीड़ा) के दौरान शारीरिक चुनौतियों का सामना करने में मदद करता है।

निष्कर्षः प्रेग्नेंसी के दौरान महिलाओं को डॉक्टर की सलाह पर रेगुलर फास्ट वॉक जरूर करनी चाहिए। इससे स्टेमिना, इम्यूनिटी और शिशु के विकास में मदद मिलती है। हालांकि, अगर डॉक्टर ने 'कंप्लीट बेड रेस्ट' के लिए कहा है, तो एक्सरसाइज न करें। चलते समय आरामदायक जूते पहनें और खुद को हाइड्रेटेड रखें।

एक्सप्रेस विशेष

बेहतर प्रदर्शन से विधानसभा चुनावों में खुलेगी राह!

उमेश चतुर्वेदी

बीजेपी के पक्ष में माहौल बनाने की मदद की हो, लेकिन सवाल यह भी उठता है कि आखिर शशि थरूर को मनाने की कोशिश क्यों नहीं हुई। वैसे जीत के चाहे जो भी कारण रहे हों, अंततः सम्मान विजेता का ही होता है।

विधानसभा चुनावों के ठीक पहले राज्य के स्थानीय निकाय चुनावों के नतीजों ने पार्टी को भारी जीत भले ही न दिलाई हो, लेकिन उत्साहजनक जरूर हैं। ये नतीजे पार्टी के लिए आने वाले दिनों की सफलताओं की बुनियाद हो सकते हैं। हालांकि कांग्रेस समर्थकों की ओर से तिरुअनंतपुरम् की जीत के लिए बीजेपी की बजाय कांग्रेस के नाराज चल रहे सांसद शशि थरूर को दिया जा रहा है।

केंद्रीय सत्ता पर ग्यारह वर्षों से लगातार काबिज भारतीय जनता पार्टी के लिए दक्षिण भारत के चार राज्य प्रश्न प्रदेश रहे हैं। कर्नाटक में उसकी सत्ता आती-जाती रही है। आंध्र प्रदेश में अकेलेदम उसके सांसद और विधायक जीतते भी रहे हैं। तमिलनाडु में डीएमके और अन्नाद्रमुक के साथ दो बार चार सांसद लोकसभा पहुंचाने में भी कामयाब रही। लेकिन उसके लिए सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण केरल रहा है। लेकिन लगता है कि अब दक्षिण के इस दुर्ग में भी अहम सेंध लगाने में राष्ट्रवादी पार्टी कामयाब हो चुकी है। वामपंथ के गढ़ राज्य की राजधानी तिरुअनंतपुरम् नगर निगम पर कब्जे के साथ भाजपा ने ना सिर्फ इतिहास रच दिया है, बल्कि खुद की उम्मीदें भी बढ़ा दी हैं। सुरम्य वादियों और साफ-सफ्फाक समुद्री तटों के साथ हरियाली के चलते केरल को 'भगवान का अपना देश' भी कहा जाता है। इस केरल की 54 प्रतिशत जनसंख्या हिंदू है, जबकि करीब साढ़े फीसद आबादी मुसलमान है। बाकी करीब 19 प्रतिशत ईसाई हैं। भगवान के अपने देश और जनसांख्यिकी आंकड़ों के लिहाज से केरल भारतीय जनता पार्टी के लिए मुफीद भूमि रहा है। लेकिन यहां भारतीय जनता पार्टी अब तक बड़ी करामात नहीं दिखा पाई है। बेशकर राष्ट्रीयय स्वयंसेवक संघ यहां काफी सक्रिय है। फिर भी यहां की राजनीति दो ध्रुवीय रही है। एक तरह मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी-सीपीएम की अगुआई वाला वाम लोकतांत्रिक मोर्चा है तो दूसरी तरफ कांग्रेस की अगुआई वाला संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा। भाजपा यहां तीसरा कोण बनाने की कोशिश अरसे से करती रही है। लेकिन उसे पहली बार सफलता साल 2016 के विधानसभा चुनावों में मिली। तब पार्टी के वरिष्ठ नेता ओ राजगोपाल तिरुअनंतपुरम् सीट से चुने गए। तब पार्टी को करीब दस फीसद वोट मिला, लेकिन अगले यानी 2021 के चुनावों में पार्टी को मायूसी हाथ लगी। लेकिन वोट बढ़कर करीब बारह फीसद हो गए। 2024 के लोकसभा चुनावों में पार्टी की उम्मीद जगी, जब लोकप्रिय मलयाली अभिनेता सुरेश गोपी त्रिशूर सीट से पार्टी के टिकट पर विजयी हुए। गोपी इन दिनों केंद्र सरकार में राज्य मंत्री का दायित्व निभा रहे हैं। बेशक पार्टी को केरल में लोकसभा चुनाव में सिर्फ एक सीट मिली, लेकिन पार्टी की वोट हिस्सेदारी बढ़कर 16 हो गई। लोकतांत्रिक राजनीति में सोलह प्रतिशत वोट मामूली बात नहीं होती। कह सकते हैं कि इसके बाद ही पार्टी की उम्मीदों को परवान चढ़ना शुरू हुआ। राज्य में बीजेपी की कमान राजीव चंद्रशेखर के हाथ है। केरल में हुए स्थानीय निकाय चुनावों के लिए उनकी अगुआई में पार्टी ने जमकर पसीना बहाया। इसका नतीजा राजधानी तिरुअनंतपुरम् नगर निगम पर पार्टी का तकरीबन कब्जे के रूप में सामने आया है। तिरुअनंतपुरम् नगर निगम में 101 वार्ड हैं, जिनमें से 50 पर पार्टी के पार्षद जीते हैं। पैंतालिस सालों से इस निगम पर जिस वाममोर्चे का कब्जा रहा, उसे महज 29 सीटें मिलीं हैं, जबकि कांग्रेस की अगुआई वाले मोर्चे को 19 सीटें मिली हैं। बाकी दो सीटों पर निर्दलीयों ने बाजी मारी है। केरल की राजनीति की जिसे समझ है, उन्हें पता है कि यहां वाममोर्चा और कांग्रेस साथ नहीं आ सकते। ऐसे में निर्दलीयों के समर्थन से बीजेपी का मेयर चुना जाना तकरीबन तय है। पार्टी ने कोझिकोड और कन्नूर जैसे वामपंथी गढ़ों में भी सेंध लगाने में कामयाब हुई है। यहां पार्टी ने क्रमशः 13 और 4 सीटें जीतीं हैं। पिछली बार पलक्कड़ नगर पालिका पर उसका कब्जा हुआ था और उस पर उसने अपना नियंत्रण बरकरार रखा है। साथ ही उसने त्रिपुनिथुरा नगर पालिका को भी वाममोर्चे से छीन लिया है। हालांकि पिछली बार जीती पंडालम नगर पालिका को वाममोर्चा ने उससे छीन लिया है। बीजेपी को इस बार कुल पंद्रह फीसद से ज्यादा मत मिले हैं, जबकि उसके साथी दलों का मत प्रतिशत मिला दिया जाए तो राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को बीस फीसद वोट हासिल हुआ है। राज्य में 941 ग्राम पंचायतें हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशकः अरुण कुमार त्रिपाठी द्वारा ए0वी0बी0 रेप्रोग्राफिक्स, ए-59, इंडस्ट्रियल एस्टेट, ताल कटोरा, लखनऊ से मुद्रित तथा अय्यूब कॉम्प्लेक्स, 82/68, गुरु गोविन्द सिंह मार्ग, लखनऊ पिन-226004, उ0प्र0 से प्रकाशित। संपादकः अरुण कुमार त्रिपाठी, (प्रबन्ध संपादक- मनोज तिवारी, सह-संपादकः इमरान खान, राज्य ब्यूरो प्रमुख- सन्तोष कुमार दीक्षित) आर.एन.आई. पंजीयन संख्या : UPHIN/2009/30003, फोन नं.: 0522-4330955 मोबाइल नं. 8933805555, (नोटः सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ स्थित न्यायालय होगा।)

लोहिया दर्पण | सम्पादकीय

चूक से हादसे : जिम्मेदार व्यवहार रोकेगा रोड एक्सीडेंट

लोकसभा में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी का वह बयान तार्किक ही है जिसमें उन्होंने कहा था कि भारत में अधिकतर सड़क दुर्घटनाएं मानवीय व्यवहार से जुड़ी हैं। निश्चय ही यदि वाहन चालकों को सड़क व्यवहार के प्रति जागरूक किया जाए और हम जिम्मेदारी-सावधानी से वाहन चलाएं तो हर साल हजारों जिंदगियां बचायी जा सकती हैं। भारत में दुनिया के विकसित देशों के मुकाबले कम वाहन सड़कों पर दौड़ते हैं, लेकिन सड़क हादसों के मामले में हम अव्वल हैं। विडंबना देखिए कि एक साल में देश के भीतर करीब पांच लाख सड़क हादसे दर्ज किए जाते हैं। बड़ी संख्या उन हादसों की भी है जो छोटे शहरों व भीतरी इलाकों में होते तो हैं, लेकिन दर्ज नहीं होते। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि देश में हर साल करीब 1.8 लाख लोग इन हादसों में मारे जाते हैं। लाखों लोग इन हादसों में घायल होते हैं। हजारों लोग ऐसे भी होते हैं जो हादसों के बाद जीवनपर्यंत सामान्य जीवन नहीं जी पाते हैं। दुखद स्थिति यह भी है कि मरने वालों में सर्वाधिक संख्या युवाओं की होती है। एक आंकड़े के अनुसार मरने वालों में 66 फीसदी लोग 18 से 34 साल के बीच होते हैं। जो अपने परिवार के कमाने वाले व्यक्ति होते हैं। फलत- हादसे के बाद कई परिवार गरीबी के दलदल में धंस जाते हैं। दरअसल, सड़क दुर्घटनाओं का मुख्य कारण तेज गति से वाहन चलाना भी है। सड़क परिवहन मंत्रालय की रिपोर्ट बताती है कि ओवर स्पीडिंग से 68 फीसदी से अधिक सड़क दुर्घटनाएं होती हैं। वहीं निर्धारित स्पीड से अधिक तेजी से वाहन चलाने से होने वाली दुर्घटनाओं के चलते ही 68 फीसदी मौतें भी होती हैं। निश्चित रूप से ये हादसे व मौतें मानवीय व्यवहार की कमजोरी से जुड़े हैं। जहां देश में राष्ट्रीय राजमार्गों व एक्सप्रेस-वे का तेजी से विस्तार हुआ है तो बेहतर सड़कों में वाहन चालकों की गति अनियंत्रित हो चली है। जो कालांतर सड़क हादसों की वजह बनती है। यह विडंबना है कि हम अकसर सुरक्षा नियमों की अनदेखी करते हैं। आज की युवा पीढ़ी हेलमेट पहनने से परहेज करती है। यह जानते हुए कि हादसों में सिर की चोट जानलेवा बन जाती है। सड़क परिवहन मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2023 में हेलमेट न लगाने के कारण 54,568 लोगों की मौत हुई। वहीं सीट बेल्ट न लगाने से 16 हजार से अधिक यात्रियों की जान गई। इन हादसों की एक बड़ी वजह ऐसे अकुशल चालकों का होना भी था, जिनके पास ड्राइविंग लाइसेंस तक नहीं था। आंकड़ों के अनुसार दुर्घटनाओं के लिये जिम्मेदार चालकों में 33,827 ऐसे थे जिनके पास लाइसेंस नहीं थे। देश में बड़ी संख्या ऐसे चालकों की होती है, जो मेडिकली फिट नहीं होते। इसके अलावा जुगाड़ से ले-देकर लाइसेंस बनाने वालों की भी कमी नहीं है। वे वाहन चलाने की पर्याप्त योग्यता व अनुभव के बिना ही चालक बन बैठते हैं। हाल के वर्षों में नशे की हालात में वाहन चलाने का फैशन भी बना है। कई हादसों के बाद खुलासा हुआ कि फलां चालक नशे में धुत था। हालांकि, महानगरों व शहरों में नाका लगाकर शराब पीकर वाहन चलाने वालों की पकड़-धकड़ की जाती है। लेकिन राष्ट्रीय राजमार्गों व एक्सप्रेस-वे पर ऐसी जांच बड़े पैमाने पर होती नजर नहीं आती। वहीं ऐसे चालकों की भी कमी नहीं है, जो फोन पर बात करते हुए वाहन चलाते हैं। जिससे लगातार दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। निश्चित रूप से फोन पर बातचीत करता व्यक्ति भावावेश में उद्वेलित हो सकता है, जिससे वाहन चलाने की गुणवत्ता बाधित होती है। वाहन को सुरक्षित ढंग से चलाना भी एक कला है। चालक का मानसिक रूप से शांत होना भी जरूरी है। हाल के दिनों में सड़कों की बेहतर स्थितियों में लोगों में रात में सफर करने का रुझान बढ़ा है। गाहे-बगाहे चालक को झपकी लगने पर दुर्घटना होने के समाचार अकसर सुनने में आते हैं। निश्चित रूप से सड़क हादसों के मूल में तकनीकी कारण और सड़कों के डिजाइन व गुणवत्ता की भी भूमिका होती है। लेकिन हमारी नियंत्रित गति, सावधानी व सजगता दुर्घटनाएं टाल भी सकती है।

बेलगाम बांग्लादेश की अशांति भारत के लिये खतरा

> युवा छात्र नेता शरीफ उस्मान हादी की हत्या के बाद जिस तरह ढाका सहित कई शहरों में हिंसा भड़की, उसने यह उजागर कर दिया कि मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार न तो कानून का शासन स्थापित कर पा रही है और न ही समाज को उन्माद व कट्टरता से बचाने में सक्षम दिखाई देती है। सड़कों पर उग्र भीड़, अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर हमले, हिन्दू धर्म-स्थलों को ध्वस्त करना, मीडिया संस्थानों के दफ्तरों में आगजनी, पत्रकारों पर हमले और असहमति की आवाजों को दबाने की कोशिशें यह संकेत देती हैं कि बांग्लादेश तेजी से अराजकता के दलदल में धंसता जा रहा है। यह स्थिति लोकतंत्र के भविष्य के लिए जितनी भयावह है, उतनी ही खतरनाक क्षेत्रीय शांति के लिए भी है।

बांग्लादेश में बीते कुछ समय से जो घटनाक्रम सामने आ रहे हैं, वे किसी एक देश की आंतरिक समस्या भर नहीं रह गए हैं, बल्कि दक्षिण एशिया की समूची भू-राजनीतिक स्थिरता के लिए एक गंभीर चेतावनी बनते जा रहे हैं। युवा छात्र नेता शरीफ उस्मान हादी की हत्या के बाद जिस तरह ढाका सहित कई शहरों में हिंसा भड़की, उसने यह उजागर कर दिया कि मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार न तो कानून का शासन स्थापित कर पा रही है और न ही समाज को उन्माद व कट्टरता से बचाने में सक्षम दिखाई देती है। सड़कों पर उग्र भीड़, अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर हमले, हिन्दू धर्म-स्थलों को ध्वस्त करना, मीडिया संस्थानों के दफ्तरों में आगजनी, पत्रकारों पर हमले और असहमति की आवाजों को दबाने की कोशिशें यह संकेत देती हैं कि बांग्लादेश तेजी से अराजकता के दलदल में धंसता जा रहा है। यह स्थिति लोकतंत्र के भविष्य के लिए जितनी भयावह है, उतनी ही खतरनाक क्षेत्रीय शांति के लिए भी है।

इस पूरे परिदृश्य का सबसे चिंताजनक एवं त्रासद पहलू 'भारत विरोधी नैरेटिव' का सुनियोजित एवं षड़यंत्रपूर्ण निर्माण है। शरीफ उस्मान हादी की हत्या के लिए बिना किसी ठोस जांच के भारत पर आरोप मढ़ना और उसके बाद भारतीय मिशनों को निशाना बनाने की कोशिशें यह बताती हैं कि हिंसा केवल स्वत:स्फूर्त जनाक्रोश नहीं, बल्कि एक सुविचारित राजनीतिक और वैचारिक साजिश का हिस्सा है। इतिहास गवाह है कि जब भी बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ती है, कुछ कट्टरपंथी ताकतें भारत विरोध को एक आसान औजार की तरह इस्तेमाल करती हैं। इससे न केवल भीड़ को भड़काया जाता है, बल्कि आंतरिक विफलताओं से ध्यान हटाने का रास्ता भी मिल जाता है। अंतरिम सरकार की निष्क्रियता या मौन सहमति इस आशंका को और मजबूत करती है कि वह या तो इन ताकतों पर नियंत्रण खो चुकी है या फिर उनसे समझौता कर चुकी है। इसमें सबसे घातक है पाकिस्तान का साजिशपूर्ण तरीके से भारत विरोध को हवा देना। भारत द्वारा अपने वीजा केंद्रों को अस्थायी रूप से बंद करना और बांग्लादेशी उच्चायुक्त को तलब करना इस पृष्ठभूमि में एक आवश्यक और संतुलित कूटनीतिक कदम कहा जा सकता है। किसी भी संप्रभु राष्ट्र की यह जिम्मेदारी होती है कि वह विदेशी राजनयिकों और मिशनों की सुरक्षा सुनिश्चित करे। ढाका में भारतीय प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने की कोशिशें और वहां प्रशासन की ढुलमुल प्रतिक्रिया यह दर्शाती हैं कि अंतरिम सरकार इस बुनियादी दायित्व को निभाने में विफल रही है। कूटनीति केवल सौहार्द की भाषा नहीं होती, बल्कि यह स्पष्ट संदेश देने का माध्यम भी होती है कि भारत अपने हितों और नागरिकों की सुरक्षा के प्रश्न पर किसी तरह की उदासीनता स्वीकार नहीं कर सकता। इस अशांति का सबसे दर्दनाक और संवेदनशील पक्ष बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों, विशेषकर हिंदुओं की बिगड़ती स्थिति है। कथित ईशनिंदा के आरोपों में एक हिंदू युवक की पीट-पीटकर हत्या इस बात का प्रमाण है कि कट्टरपंथी तत्वों को अब प्रशासन का कोई भय नहीं रह गया है। जब न्याय भीड़ के हाथों में चला जाए और सरकार अल्पसंख्यक अधिकारों पर केवल औपचारिक बयान जारी करती रहे, तो यह लोकतांत्रिक राज्य की आत्मा पर सीधा प्रहार होता है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चुप्पी भी इस संदर्भ में कई सवाल खड़े करती है। मानवाधिकारों और अल्पसंख्यक संरक्षण की दुहाई देने वाले वैश्विक मंच तब मौन क्यों हो जाते हैं, जब यह उल्लंघन रणनीतिक या राजनीतिक समीकरणों के भीतर घटित होते हैं। अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के पुत्र और सलाहकार साजीब वाजेद जॉय का यह कथन कि बांग्लादेश की आग से भारत अछूता नहीं रह सकता, केवल एक राजनीतिक बयान नहीं, बल्कि एक कड़वी सच्चाई है। भारत और बांग्लादेश के बीच हजारों किलोमीटर की साझा सीमा, सांस्कृतिक-सामाजिक रिश्ते और आर्थिक निर्भरता ऐसी है कि ढाका की अस्थिरता का असर स्वाभाविक रूप से भारत के सीमावर्ती राज्यों पर पड़ेगा। अवैध घुसपैठ, कट्टरपंथी

नेटवर्कों की सक्रियता और सीमा पार अपराधों का खतरा इस अस्थिरता के साथ बढ़ता ही जाएगा। आगामी फरवरी में प्रस्तावित आम चुनाव बांग्लादेश के लिए एक अवसर हो सकते थे, जिससे वह लोकतांत्रिक प्रक्रिया के जरिए स्थिरता की ओर लौट सके। लेकिन मौजूदा हालात में चुनाव की पारदर्शिता और शांति पर गंभीर प्रश्नचिह्न लग चुके हैं। कट्टरपंथी ताकतें जनभावनाओं को भड़काकर हिंसा का माहौल बनाए रखने में जुटी हैं, ताकि सत्ता का संतुलन अपने पक्ष में मोड़ा जा सके। अंतरिम सरकार का यह दायित्व है कि वह निष्पक्ष और भयमुक्त चुनाव सुनिश्चित करे, लेकिन अब तक के संकेत बताते हैं कि वह इस चुनौती के सामने कमजोर साबित हो रही है। इस पूरे परिदृश्य में पाकिस्तान की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। दक्षिण एशिया में अस्थिरता फैलाना और भारत के पड़ोस में अशांति, हिंसा एवं आतंक के बीज बोना पाकिस्तान की पुरानी रणनीति रही है। बांग्लादेश में कट्टरपंथी संगठनों और भारत विरोधी तत्वों को वैचारिक, नैतिक और कभी-कभी परोक्ष समर्थन मिलना कोई नई बात नहीं है। पाकिस्तान के लिए यह एक अवसर की तरह है, जहां वह बांग्लादेश की आंतरिक कमजोरियों का फायदा उठाकर भारत के खिलाफ एक और मोर्चा खोल सकता है। सोशल मीडिया अभियानों से लेकर दुष्प्रचार तक, कई संकेत इस ओर इशारा करते हैं कि बांग्लादेश में फैलाई जा रही भारत विरोधी भावना के पीछे पाक की सोच भी सक्रिय है। यह वही रणनीति है, जिसे पाकिस्तान ने अफगानिस्तान और अपने ही देश में अपनाकर पूरे क्षेत्र को अस्थिरता के गर्त में धकेल दिया। भारत का रुख हमेशा से एक स्थिर, समृद्ध और लोकतांत्रिक बांग्लादेश के पक्ष में रहा है। आर्थिक सहयोग, बुनियादी ढांचे के विकास और मानवीय सहायता के माध्यम से भारत ने यह साबित किया है कि वह अपने पड़ोसी के साथ सहयोगात्मक संबंध चाहता है, न कि वर्चस्ववादी। लेकिन यदि ढाका की अंतरिम सरकार अपनी जमीन का इस्तेमाल भारत विरोधी गतिविधियों और सांप्रदायिक हिंसा के लिए होने देती है, तो द्विपक्षीय संबंधों में आई दरार को भरना बेहद कठिन हो जाएगा। यह केवल कूटनीति का प्रश्न नहीं, बल्कि विश्वास और साझी सुरक्षा का भी मुद्दा है। अंतरिम सरकार के सामने अब दो ही रास्ते हैं। पहला, वह कठोर कार्रवाई कर यह साबित करे कि वह किसी कट्टरपंथी विचारधारा की बंधक नहीं है और कानून का शासन बहाल करने के लिए प्रतिबद्ध है। दूसरा, वह निष्क्रियता और तुष्टीकरण के रास्ते पर चलते हुए देश को और गहरे संकट में धकेल दे। इतिहास बताता है कि दूसरा रास्ता अंतत: लोकतंत्र, अर्थव्यवस्था और सामाजिक ताने-बाने तीनों को नष्ट कर देता है। बांग्लादेश एक ऐसे समय अराजकता में डूबा है, जब वहां चुनाव सन्निकट है। अब इन चुनावों का सही एवं लोकतांत्रिक तरीके से होना संदिग्ध है। इन चुनावों में शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग को भाग लेने से रोकना एवं पाकिस्तानपरस्त जमाते इस्लामी समेत अन्य कट्टरपंथी ताकतों को भी चुनाव लड़ने की छूट देना, अंतरिम युनूस सरकार की कुचेष्टा है। सबसे बड़ी चिन्ता की बात यह है कि चुनाव के बाद वहां इस्लामिक कट्टरपंथियों के वर्चस्व वाली ऐसी सरकार अस्तित्व में आ सकती है, जो भारत के खिलाफ खुलकर काम करते हुए अल्पसंख्यकों के संहार को अंजाम देगी। भारत के लिए इसीलिये भी यह समय केवल चिंता व्यक्त करने का नहीं, बल्कि सतर्क और सक्रिय कूटनीति अपनाने का है। सीमा सुरक्षा को मजबूत करते हुए वैश्विक मंचों पर बांग्लादेश की ताजा घटनाओं को स्पष्टता और तथ्यों के साथ उठाना आवश्यक है। पड़ोस में लगी यह आग यदि समय रहते नहीं बुझाई गई, तो इसकी तपिश केवल बांग्लादेश तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया को झुलसा सकती है। स्थिरता, लोकतंत्र और सह-अस्तित्व की रक्षा के लिए यह अनिवार्य है कि बांग्लादेश की मौजूदा अराजकता को एक चेतावनी की तरह लिया जाए, न कि एक क्षणिक राजनीतिक उथल-पुथल के रूप में।

ललित गर्ग

... दुनियाभर में बढ़ रही है ध्यान योग की स्वीकार्यता!

21 दिसंबर विश्व ध्यान दिवस पर

> पतंजलि के योगसूत्र से लेकर गीता के उपदेश तक हर जगह ध्यान को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है।अभी तक कुछ लोग योग आसनों को ही ध्यान समझते रहे हैं, लेकिन देश दुनिया मे राजयोग के माध्यम से स्वयं को देहभान से परे कर आत्मस्वरूप में रहकर परमात्मा के प्रति ध्यान लगाने की विधि को ब्रह्माकुमारीज़ संस्था ने ही पहुंचाया है ।शारिरिक आसन के द्वारा हम अपने शरीर को मजबूत करने के साथ ही रोग मुक्त बना सकते हैं, ताकि ध्यान लगाकर हम एक साथ तन-मन को लाभ पहुंचा सकते है। हमारा शरीर एक जगह पर स्थिर हो और ध्यान की प्रक्रिया आसानी से हो सके इसके लिए श्रीमद् भगवद् गीता में ध्यान को लेकर महत्वपूर्ण बातें बताई गई हैं, और साथ ही इससे होने वाले लाभ का भी गीता में उल्लेख किया गया है।

पतंजलि के योगसूत्र से लेकर गीता के उपदेश तक हर जगह ध्यान को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है ।अभी तक कुछ लोग योग आसनों को ही ध्यान समझते रहे हैं, लेकिन देश दुनिया मे राजयोग के माध्यम से स्वयं को देहभान से परे कर आत्मस्वरूप में रहकर परमात्मा के प्रति ध्यान लगाने की विधि को ब्रह्माकुमारीज़ संस्था ने ही पहुंचाया है ।शारिरिक आसन के द्वारा हम अपने शरीर को मजबूत करने के साथ ही रोग मुक्त बना सकते हैं, ताकि ध्यान लगाकर हम एक साथ तन-मन को लाभ पहुंचा सकते है। हमारा शरीर एक जगह पर स्थिर हो और ध्यान की प्रक्रिया आसानी से हो सके इसके लिए श्रीमद् भगवद् गीता में ध्यान को लेकर महत्वपूर्ण बातें बताई गई हैं, और साथ ही इससे होने वाले लाभ का भी गीता में उल्लेख किया गया है। भगवद् गीता में ध्यान को एक योगक्रिया माना गया है। जो आपको आत्म अनुशासन की ओर ले जाता है। निरंतर इसका अभ्यास करने से एकाग्रता बढ़ती है, तनाव से मुक्ति मिलती है। मानसिक स्थिरता और संतुलन भी ध्यान करने से प्राप्त होता है। विकारों से मुक्ति

पाने और मन की निर्मलता के लिए भी ध्यान किया जाता है। ध्यान जब गहन होने लगता है तो व्यक्ति को समाधि की प्राप्त होने लगती है। ध्यान के जरिए आत्मा का परमात्मा से मिलन ही ब्रह्माकुमारीज़ का राजयोग है। यानि ध्यान वह योग प्रक्रिया है जिसके जरिये हम स्वयं पर सिद्धि प्राप्त करते हैं। ध्यान करने वाले व्यक्ति का मन नियंत्रित रहता है और वो वर्तमान में जीता है। मानसिक और शारीरिक स्थिरता को ही ध्यान कहा जा जाता है। गीता के पंचम और षष्ठम अध्याय में योग करने की सही विधि की जानकारी हमको मिलती है।श्रीकृष्ण ने परमात्म निमित्त बन अर्जुन को महाभारत के युद्ध के समय बताया है कि, कैसे मन और इंद्रियों को वश में करने के लिए ध्यान क्रिया की जानी चाहिए। गीता के अनुसार, ध्यान करने के लिए सबसे पहले किसी शुद्ध स्थान पर आसन बिछाकर बैठना चाहिए। हालांकि इस बात का ध्यान रखें कि, ना ही स्थान बहुत ऊंचा हो और ना ही बहुत नीचे। आसन पर बैठने के बाद अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करनी चाहिए और इंद्रियों और मन को नियंत्रिण में लाने का अभ्यास करना चाहिए। ध्यान करने के लिए सिर व गले को समान और अचल रखते हुए सुखासन में योगी को बैठना चाहिए। बाहरी चीजों से ध्यान को हटाकर नासिका के अग्र भाग यानि दोनों भौहों के बीच जहां आत्मा निवास करती है,के प्रति ध्यान केंद्रित करना चाहिए। तत्पश्चात सभी प्रकार के विषयों से मन को हटाकर नेत्रों को भृकुटी के मध्य में स्थिर करने का प्रयास करना चाहिए। इसके बाद प्राण और अपान वायु को सम करना चाहिए। इसके बाद मन के सभी विकारों से दूर होकर, उत्तेजनारहित और शांति के साथ ध्यान और ईश्वर के चिंतन में बैठे रहना चाहिए। इस तरह से निर्मल और निर्विकार व्यक्ति परमतत्व का ध्यान करते हुए आनंद की अंतिम सीमा को प्राप्त करता है और उसे शांति मिलती है। गीता के अनुसार, ध्यान उसका ही सिद्ध होता है, जो न अधिक खाता है और ना ही अधिक भूखा रहता है। अधिक जगाने या सोने वाले को भी ध्यान की सिद्धि प्राप्त नहीं होती। सुख में अत्यधिक खुश और दुख में ज्यादा दुखी होने वाला व्यक्ति भी ध्यान को सिद्ध नहीं कर पाता। गीता में बताया गया है कि, जो व्यक्ति उचित आहार-विहार करता है, उसी को ध्यान-योग में सिद्धि प्राप्त होती है। गीता में बताई गई इन शिक्षाओं को जीवन में आजमाकर हम ध्यान कर सकते हैं और मानसिक शांति पा सकते हैं। ध्यान करने से हमको न केवल मानसिक शक्ति मिलती है, बल्कि अपने लक्ष्यों को भी हम पा सकते हैं। ध्यान हमारी एकाग्रता को बढ़ाता है और हम अपना शतप्रतिशत अपने लक्ष्य को दे पाते हैं। इसके साथ ही एक आदर्श और व्यवस्थित समाज भी ध्यान के जरिए हम स्थापित कर सकते हैं। ध्यान मानसिक और शारीरिक विकारों को दूर करता है, यानि स्वस्थ जीवन जीने के लिए भी ध्यान करना अति आवश्यक है। इस वर्ष विश्व ध्यान दिवस की थीम आंतरिक शांति, वैश्विक सद्भाव है। पतंजलि के योगसूत्र से लेकर गीता के उपदेश तक हर जगह ध्यान को बहुत महत्वपूर्ण बताया गया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में कोर समूह के अन्य देशों के साथ मिल कर भारत ने 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस के रूप में घोषित करने के प्रस्ताव को स्वीकार किया है ।वास्तव में ध्यान मानसिक तथा शारीरिक विकारों को दूर करने में कारगर होने के साथ ही यह स्वस्थ जीवन जीने के लिए भी प्रेरित करता है ।विश्व ध्यान दिवस को एक अंतरराष्ट्रीय उत्सव भी हम कह सकते है, जिसमें शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक कल्याण के लिए ध्यान का अभ्यास करने का संकल्प लिया गया है ।भारत के साथ श्रीलंका, नेपाल, मैक्सिको, लिकटेंस्टीन और अंडोरा जैसे 193 सदस्यीय देशो ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में विश्व ध्यान दिवस के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित करने में अहम भूमिका निभाई ।जिसे आत्मसात करने के लिए 140 देशो की अंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक संस्था ब्रह्माकुमारीज़ ने एक सार्थक पहल की है ।ब्रह्माकुमारीज़ का उद्देश्य दुनिया मे शांति को बहाल करना है। इसके लिए, यह संस्था लोगों को सहज राजयोग की विधि सिखाती है ।साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ के ज़रिए लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान भी दिया जाता है ।इसी ईश्वरीय ज्ञान के जरिए युग परिवर्तन होना अवश्यसम्भावी है।

डॉ श्रीगोपाल नारसन

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी : ऐसो को उदार हिन्दी जग माहीं..

87वी पुण्यतिथि पर विशेष

> बोलियों में बंटी हिंदी भाषा को परिमार्जित करके भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा प्रारंभ किए आधुनिक खड़ी बोली हिंदी आंदोलन को सफलता के शिखर पर स्थापित करने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। अपनी अथक मेहनत के बल पर उन्होंने हिंदी खड़ी बोली में कई संपादक लेखक कवि तैयार किए।आचार्य द्विवेदी को भाषा और व्याकरण में किसी भी तरह की भाषाई अशुद्धि और व्याकरण की अराजकता अस्वीकार थी।

बोलियों में बंटी हिंदी भाषा को परिमार्जित करके भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा प्रारंभ किए आधुनिक खड़ी बोली हिंदी आंदोलन को सफलता के शिखर पर स्थापित करने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। अपनी अथक मेहनत के बल पर उन्होंने हिंदी खड़ी बोली में कई संपादक लेखक कवि तैयार किए।आचार्य द्विवेदी को भाषा और व्याकरण में किसी भी तरह की भाषाई अशुद्धि और व्याकरण की अराजकता अस्वीकार थी। हिंदी की इस प्रतिष्ठा के लिए ही अपने समय के प्रतिष्ठित साहित्यकारों से आचार्य द्विवेदी का वाद-विवाद और प्रतिवाद होता रहा। कुछ विवाद तो आधुनिक हिंदी साहित्य में आज भी अमिट हैं। बालमुकुंद गुप्त से अस्थिरता और अनस्थिरता शब्द पर वर्षों चला विवाद हो या नागरी प्रचारिणी सभा की खोजपूर्ण रिपोर्ट को लेकर बाबू श्यामसुंदर दास से हुआ मतभेद या सरस्वती में लेख न छपने पर बीएन शर्मा से हुई लट्ठमलट्ठ। आमतौर पर उनकी छवि आमतौर पर कलहप्रिय, क्रोधी, घमंडी और तुनक मिजाज के तौर पर स्थापित करने की समय- समय पर कोशिशें की गईं लेकिन इन विवादों के अंत सौहार्दपूर्ण एवं सौजन्यता के साथ ही हुए। बालमुकुंद गुप्त से चले विवाद का अंत आचार्य के चरणों में सिर रखने से हुआ। आचार्य द्विवेदी ने भी उन्हें गले लगा कर सहृदयता दिखाई। नागरी प्रचारिणी सभा के काम की आलोचना खोजपूर्ण रिपोर्ट छपने पर बाबू श्यामसुंदर दास से पैदा हुए मतभेद के बाद सभा ने सरस्वती से अपने संबंध समाप्त कर लिए। आचार्य द्विवेदी ने %अनुमोदन का अंत% शीर्षक से लेख लिखा तो सभा के कार्य से बाहर गए पं. केदारनाथ पाठक बहुत नाराज हुए और लौटने पर सीधे कानपुर आचार्य द्विवेदी के पास पहुंचकर अपनी नाराजगी प्रकट की। कोमल हृदय आचार्य द्विवेदी ने उन्हें ससम्मान आसन दिया और घर के अंदर से मिठाई-जल लेकर आए और साथ में एक लाठी भी। शिष्टाचार के बाद उन्होंने पं. पाठक को प्रतिवाद पूरा करने के लिए लाठी देते हुए कहा- %आपकी लाठी और मेरा सर..%। इस पर पं. पाठक बहुत लज्जित हुए और वह हमेशा के लिए आचार्य जी के भक्त हो गए। इस विवाद का अंत भी श्यामसुंदर दास द्वारा %भारत मित्र% में द्विवेदी जी की उदारता पर लिखे गए लेख के साथ हुआ। सौजन्यता का इससे बड़ा उदाहरण और क्या होगा कि बाबू श्याम सुंदर दास द्वारा स्थापित नागरी प्रचारिणी सभा ने आचार्य द्विवेदी के सम्मान में 1933 में %अभिनंदन ग्रंथ% प्रस्तुत किया और आचार्य द्विवेदी ने अपने संपादन से जुड़ी महत्वपूर्ण सामग्री और लाइब्रेरी की हजारों पुस्तकें सभा को ही दान में दीं। भाषा एवं व्याकरण सुधार के आंदोलन में ऐसे अनेक विवादों के दृष्टांत आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में दर्ज हैं, जिनका पटाक्षेप सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुआ। यह इसलिए संभव हुआ कि आचार्य द्विवेदी और संबंधित पक्ष के बीच विवाद के कारण हिंदी भाषा की शुद्धता थी न कि व्यक्तिगत। अपना लेख सरस्वती में न छपने पर बीएन शर्मा ने अवश्य आलोचनापूर्ण लेख में आचार्य द्विवेदी पर व्यक्तिगत आक्षेप किए लेकिन क्षमा प्रार्थना के बाद आचार्य द्विवेदी ने इस विवाद का भी अंत सौजन्यता के साथ कर दिया। ऐसा ही एक प्रकरण महामना पं. मदन मोहन मालवीय के अनुज कृष्णकांत मालवीय के साथ भी हिंदी साहित्य में दर्ज है। रेलवे की ?200 प्रति माह की नौकरी छोड़कर ?50 प्रति माह में %सरस्वती% का संपादन स्वीकार करने वाले आचार्य द्विवेदी का इंडियन प्रेस के संस्थापक बाबू चिंतामणि घोष से प्रथम परिचय उनके ही प्रेस से प्रकाशित हिंदी रीडर की कड़ी आलोचना के साथ हुआ था लेकिन फिर भी घोष बाबू ने आचार्य द्विवेदी को सरस्वती का संपादक नियुक्त करना तय किया। उनके संपादक नियुक्त होने पर कुछ साहित्यकारों ने घोष बाबू से कहा कि यह मनुष्य बहुत घमंडी है। तुनुक मिजाज है। इसे संपादक बनाकर बड़ी भूल कर रहे हो। उससे एक दिन भी नहीं पटेगी लेकिन उन्होंने किसी भी आलोचना को कान न देकर आचार्य द्विवेदी को संपादन का दायित्व सौंपा। 18 वर्षों तक सरस्वती के संपादन कार्यकाल में आचार्य द्विवेदी और घोष बाबू में घड़ी भर की अनबन नहीं हुई। सरस्वती के प्रकाशक और सेवक संपादक के बीच के सरस संबंध आज भी मुद्रक-प्रकाशक एवं संपादक के बीच सरस संबंधों का आदर्श उदाहरण है। बात नवंबर 1905 की है। छतरपुर के राजा ने आचार्य द्विवेदी जी से कहा कि आप प्रतिवर्ष एक अच्छे अंग्रेजी ग्रंथ का अनुवाद किया कीजिए। पारिश्रमिक के रूप में मैं आपको ?500 दिया करूंगा। उन्होंने 1907 में हर्बर्ट स्पेंसर की %एजुकेशन% पुस्तक का अनुवाद %शिक्षा% के नाम से किया और राजा को पत्र लिखा। अपनी बात से मुकरते हुए राजा ने पारिश्रमिक के रूप में केवल ?25 ही देने की बात कही। इस पर नाराज हुए आचार्य द्विवेदी ने राजा को कड़ा पत्र लिखकर अपनी आपत्ति प्रकट करने से परहेज नहीं किया। जन्म ग्राम दौलतपुर (रायबरेली) की पाठशाला के एक शिक्षक एक पद का गलत अर्थ बता रहे थे। बालक द्विवेदी ने शिक्षक को टोका और सही अर्थ बताया लेकिन शिक्षक अपनी गलती स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। द्विवेदी जी के प्रतिवाद करने पर वह पंडितराज संजीवन के अर्थ को प्रमाणिक मानने को तैयार हुए। तब द्विवेदी जी पंडितराज के घर गए और सही अर्थ लिखाकर लाए। उन्होंने भी द्विवेदी जी के ही अर्थ का समर्थन किया। फिर शिक्षक को बालक द्विवेदी के सामने अपनी गलती स्वीकार ही करनी पड़ी।

दरअसल, बचपन से ही स्वाध्यायी आचार्य द्विवेदी का गलत को गलत कहने का स्वभाव था। गलत को गलत कहने में तनिक भी हिचक न होने का यह स्वभाव आचार्य द्विवेदी में अंतिम समय तक विद्यमान रहा। किसी के आगे झुकना उन्होंने स्वीकार नहीं किया। सामने वाला कोई भी हो या कितना भी बड़ा हो। इसी स्वभाव के बल पर वह आधुनिक हिंदी खड़ी बोली को गद्य और पद्य दोनों की भाषा बनाने में सफल हो सके।

- गौरव अवस्थी

संयोजक, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी स्मृति संरक्षण अभियान

Support me by Joining my Private channel

I DON'T RUN ANY PUBLIC CHANNELS, I DON'T ASK FOR MONTHLY SUBSCRIPTION, IF YOU HAVE EITHER OF THEM THAT'S NOT MY CHANNEL

Indian Newspapers:

1) Times of India
2) Hindustan Times
3) Business line
4) The Indian Express
5) Economic Times
6) The Hindu
7) Live Mint
8) Financial Express
9) Business standard

+All Editorial PDFs

Uploding starts from 5AM

Access to all this In Just 19 Rupees [lifetime Validity]

Click below to

Join

International Newspapers Channel

Magazine Channel (National & International)

सफलता, निष्पक्ष और विश्वसनीयता के
आपके लिए, आपके साथ
dainiknavajyoti.com
दैनिक नवज्योति
जोधपुर, रविवार, 21 दिसंबर, 2025

रविवारीय

देश के अंदर सामाजिक गतिरोध और विधायी विवाद

विधायी संशोधनों जैसे वक्फ (संशोधन) अधिनियम के कारण देश में प्रदर्शनों और सामाजिक असंतोष ने चुनौतीपूर्ण माहौल बनाया। सरकार इस चुनौती से निपटने के लिए संवाद और नीतिगत स्पष्टीकरण बढ़ाया ताकि विवादित विषयों पर अपेक्षित संवैधानिक रूप से संतुलित प्रतिक्रिया दी जा सके। बावजूद इसके कई जगहों पर शांति व्यवस्था कायम रखने में भारी परेशानी महसूस की गई। प्रशासनिक उपायों और स्थानीय कानून-व्यवस्था प्रणालियों के जरिये फिर भी इस तरह के विवादों और प्रतिरोधों पर अंततः काबू पाया गया। पर यह सब आसानी से नहीं हुआ, बहुत मशक्कत करनी पड़ी।

2025 की सबसे बड़ी चुनौतियां

भारत जिनसे दो-चार हुआ

2025 भारत के लिए चुनौतियों का एक गहन, बहुआयामी और निर्णायक वर्ष रहा। इस साल आर्थिक, पर्यावरणीय, राजनीतिक और सुरक्षा-संबंधी दबावों ने नीति और प्रशासन को गंभीर रूप से प्रभावित किया। दर्जनों दूसरी चुनौतियों के बीच से चार ऐसी महत्वपूर्ण चुनौतियों के बारे में हम यहां बात कर रहे हैं, जिनका असर पूरे साल दिखा।

आर्थिक मंदी और वैश्विक अनिश्चितता

2025 में भारत की अर्थव्यवस्था यूं तो दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक रही, लेकिन इस स्थिति में रहते हुए भी उसे कई तरह के दबावों और कई तरह की समस्याओं से दोचार होना पड़ा। वैश्विक अनिश्चितता, व्यापार युद्धों व अमेरिकी टैरिफ नीतियों से भारतीय अर्थव्यवस्था सीधे प्रभावित हुई। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप यूं तो बार-बार यह कहते रहे कि प्रधानमंत्री मोदी उनके अजीज दोस्त हैं, लेकिन राष्ट्रपति बनने के बाद उन्होंने अपने बहुचर्चित नारे अमेरिकन फर्स्ट पर अमल करते हुए जब दूसरे देशों पर मनमर्जी टैरिफ लगाना शुरू किया, तब शुरू में किसी को आशंका नहीं थी कि वह भारत पर 50 फीसदी का टैरिफ लगा देंगे। भारत के विरुद्ध 25 टैक्स और 25 फीसदी पैनल्टी इस बिना पर लगा दी कि भारत रूस से तेल खरीदकर रूस-यूक्रेन जंग को फाइनेंस कर रहा है। भारत को शुरू में लगा कि अमेरिका के इस रवैय्ये से भारतीय अर्थव्यवस्था की पांव उखड़ जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। 2025-26 की क्वाटर्ली रिपोर्टों से पता चलता है कि यह असर बहुत ज्यादा नहीं होगा। बमुश्किल आधे से पौने प्रतिशत तक ही भारत को आर्थिक व्यापार घाटा सहना पड़ेगा।

एफडीआई-एफपीआई से संबंधित जोखिम और विदेशी मुद्रा भंडार पर भी इस साल लगातार तलवार लटकती रही। इन स्थितियों से निपटने के लिए सरकार ने बुनियादी ढांचे, निर्माण और सेवाओं पर पूंजीगत व्यय किया ताकि निवेश में गति आए तथा रोजगार सृजन को बढ़ावा मिले। वित्तीय सुधार और कर नीतियों में सरलता की दिशा की तरफ बढ़ा गया, जिससे जीएसटी सुधार की स्थितियां बनीं और निवेशकों व उद्योगों को गतियां मिली। वैश्विक मंदी के बावजूद भारत की आर्थिक विकास दर 6.5 से 7 फीसदी के आसपास रही।

मौसम भयानक और पर्यावरणीय तनाव बरकरार

2025 में भारत ने गंभीर हीट वेव और भारी बाढ़ जैसी जलवायु संबंधी चुनौतियों का सामना किया। पंजाब को भयानक बाढ़ का सामना करना पड़ा। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को इससे भारी नुकसान हुआ। जलवायु अनुकूल नीतियों जैसे सतत कृषि, बाढ़-नियंत्रण ढांचे और हीटवेव चेतावनी प्रणालियों को विकसित करने पर इस बार विशेष जोर दिया गया, पर साल के आखिर तक इस क्षेत्र में कोई बड़ी उपलब्धि हासिल नहीं हुई। हरित ऊर्जा योजनाओं जैसे सौर ऊर्जा और अन्य नवीकरणीय ऊर्जा मिशनों में निवेश बढ़ाया गया है।

पूरे साल जारी रहा सामरिक तनाव

भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव तब अचानक बढ़ गया जब पाक समर्थित आतंकवादियों ने अप्रैल में पहलगाम में पर्यटकों के साथ वीभत्स आतंकी कार्यवाई की, जो बहुत ही जल्दी भारत-पाकिस्तान के बीच सामरिक जोर अजमाइश का कारण बन गया।

भारत ने पाकिस्तान में आतंकवादियों के ठिकानों को निशाना बनाया, जिस पर पाकिस्तान का दावा है कि उसने हमारे कई सैन्य विमानों को नष्ट कर दिया। हालांकि इसकी साक्ष्य के तौरपर कोई पुष्टि नहीं हुई। फिर भी चीन से लेकर अमेरिका तक का यह मानना है कि इस संघर्ष में भारत को अपने कई लड़ाकू विमान शायद गंवाने पड़े हैं। वहीं भारत इस मसले पर बहुत सतर्क रहा। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर जरूरी अपडेट प्रेस कांफ्रेंस के जरिए दी जाती रही। भारत का रवैया भी शुरू से एकदम स्पष्ट ही रहा कि हम चलाकर युद्ध नहीं चाहते हैं और हमारे निशाने पर सिर्फ आतंकवादी हैं। पूरी दुनिया की नजरें ऑपरेशन सिंदूर पर बनी रहीं।

लाबुबू से लौवर तक

2025 में इंटरनेट ने क्या-क्या खोजा

इंटरनेट का सर्च इंजन हमारी सामूहिक जिज्ञासाओं का आईना भी है, जानिए हमारी सामूहिक पसंद को...

लाबुबू क्या है? यह प्रश्न सोशल मीडिया पर इतनी बार पूछा गया कि यह 2025 का सबसे ज्यादा पूछा जाने वाला सवाल बन गया। दरअसल लाबुबू शब्द का कोई अर्थ नहीं है। यह हांगकांग के कलाकार कासिंग लुंग द्वारा द मॉन्स्टर्स पुस्तक श्रृंखला के लिए बनाये गये एक शरारती राक्षस चरित्र का नाम है, जो अपने बड़े कानों, तीखे दांतों और अराजकता पैदा करने के बावजूद अपने अच्छे स्वभाव के लिए जाना जाता है। पॉप मार्ट के जरिये अब यह एक वायरल संग्रहणीय खिलौना बन गया है, विशेषकर इसलिए कि ब्लैकपिंक की लिसा जैसी मशहूर हस्तियां इसके बैग के साथ घूम रही हैं।

खाने और मेले

भारतीय व्यंजन दुनियाभर में पसंद किए जा रहे हैं। सर्च बार पर इडली से लेकर मोदक तक ने तूफान ला दिया। क्लासिक इडली सूची के टॉप पर रही, जबकि रेसिपी ट्रेंड में सांस्कृतिक रेसिपीज ने बाजी मारी, उत्सवों में हलचल मचाने वाले ठेकुवा से लेकर स्वादिष्ट उकादिचे मोदक ने। इस संदर्भ में टॉप सर्च इस प्रकार रहा- इडली, पोमस्टर मार्टिनी, उकादिचे मोदक, ठेकुवा, उगाडी पचाडी, बीटरूट कांजी, थिरुवाथिरै कलि और यॉर्कशायर पुडिंग।

इस साल प्रयागराज में महाकुंभ मेले का आयोजन हुआ था, इसलिए ट्रेवल ट्रेंड्स में इसका टॉप पर रहना स्वाभाविक था। लेकिन फु कुओक (वियतनाम का सबसे बड़ा द्वीप, जिसे पर्ल आइलैंड भी कहते हैं) भी बहुत तेजी से ऊपर उठा। टॉप ट्रेवल ट्रेंड सर्च इस तरह रहे- महाकुंभ मेला, फिलीपींस, जॉर्जिया, मॉरिशस, कश्मीर, फु कुओक, फुकेट, मालदीव्स, सोमनाथ और पुडुचेरी।

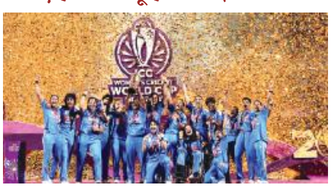

हमारी दिलचस्पी फिल्म और क्रिकेट में

भारतीयों की सबसे ज्यादा दिलचस्पी फिल्म और क्रिकेट में रही। सैफ अली खान पर हुए हमले की चर्चा महीनों तक जारी रही। साल का अंत करीब आने लगा तो जानी मानी फिल्मी हस्तियों के निधन की खबरें आने लगीं जैसे सतीश शाह, असरानी, कामनी कौशल आदि। लेकिन जब 24 नवम्बर 2025 को ही-मैन धर्मेंद्र ने इस दुनिया को हमेशा के लिए अलविदा कहा, तो भारत ने बहुत प्यार से उनके जीवन व कार्य को मुड़कर देखा और वे टॉप 10 सर्च में शामिल हुए।

जहां तक फिल्मों की बात है तो 2025 में सबसे ज्यादा सर्च फिल्म सैयारा, उसके किरदारों और उसके गीत को किया गया। उसके बाद कांतारा-2 छाई रही। अंतरराष्ट्रीय फिल्मों में फाइनल डेस्टिनेशन को सबसे ज्यादा सर्च किया गया।

इस साल हमारी महिला क्रिकेटरों ने पहली बार ओडीआई विश्व कप जीता, जिसका आयोजन भारत व श्रीलंका में संयुक्त रूप से किया गया था, इसलिए क्रिकेट के दीवाने देश में इस सफलता को तो टॉप ट्रेंड रहना ही था। हालांकि स्मृति मंधना की अनिश्चित काल के लिए स्थगित हुई शादी की भी खूब चर्चा रही, लेकिन अधिकतम सर्च की जाने वाली टॉप महिला पर्सनेलिटी जेमिमा रोड्रिग्स रहीं। स्मृति व शेफाली वर्मा जैसे सितारे भी टॉप सर्च में शामिल रहे।

सही उच्चारण के लिए

न्यूयॉर्क के मेयर चुने गये जोहरान ममदानी से लेकर दुनिया में सबसे अधिक विजिट किये जाने वाले म्यूजियम लौवर (सही उच्चारण है लूव) को सही से बोलना चुनौतीपूर्ण रहा, विशेषकर अमेरिका व यूरोप में, इसलिए इनके सही उच्चारण को नेट पर सबसे ज्यादा सर्च किया गया।

खिलौनों से सुरक्षा तक बदलती दुनिया

न्यूरल नेटवर्क और मशीन लर्निंग पर टिकी कृत्रिम बुद्धिमत्ता विज्ञान की वह ताकत है, जो नौकरी, सुरक्षा, पर्यावरण और बचपन तक को नए सिरे से गढ़ रही है। एआई के सामाजिक प्रभावों, संभावनाओं और चुनौतियों पर एक नजर...

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे वर्तमान का सबसे प्रभावशाली सच बन चुकी है। मोबाइल फोन, सोशल मीडिया, ऑनलाइन खरीदारी, बैंकिंग, चिकित्सा, इन सबके बीच एआई चुपचाप हमारी जिंदगी के हर कोने में दाखिल हो चुकी है। अब सवाल यह नहीं रह गया कि एआई किन-किन क्षेत्रों में और दाखिल होगा, बल्कि सवाल अब यह है कि किस क्षेत्र पर इसका कितना असर पड़ेगा और इंसान इसके साथ कैसे तालमेल बैठाएगा।

नौकरियां: खतरा भी, संभावना भी

सबसे ज्यादा फिक्र तो रोजगार को लेकर है। पिछली औद्योगिक क्रांतियों में जिस तरह से फिजिकल वर्क करने वालों को चुनौतियों का सामना करना पड़ा था, अब एआई युग में वही चुनौतियां अब सोच-विचार से जुड़े या विश्लेषण से जुड़े काम कर रहे लोगों के सामने आई हैं। डेटा एंट्री, कॉल सेंटर, अकाउंटिंग, ट्रांसलेशन, बेसिक रिपोर्टिंग जैसे कई काम एआई कर लेगी। इससे लाखों पारंपरिक नौकरियां खत्म होने का खतरा है। हालांकि नई तरह की नौकरियां भी पैदा होंगी, जैसे एआई ट्रेनर, डेटा साइंटिस्ट, प्रॉम्प्ट इंजीनियर, साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ।

जंगल और पर्यावरण का संरक्षक

एआई का असर सिर्फ शहरों तक सीमित नहीं है। जंगल और वन्यजीव संरक्षण में भी इसका उपयोग तेजी से बढ़ा है। सैटेलाइट इमेज और ड्रोन के जरिये जंगलों की कटाई पर नजर रखी जा रही है। एआई यह अनुमान लगा सकती है कि कहां आग लगने का खतरा है या कहां अवैध शिकार हो रहा है। वन्यजीवों की गिनती, उनकी आवाजों की पहचान और उनके मूवमेंट पैटर्न समझने में एआई बेहद कारगर साबित हो रही है। हालांकि चिंता यह भी है कि अत्यधिक तकनीकी हस्तक्षेप से प्राकृतिक संतुलन और स्थानीय समुदायों की भूमिका कमजोर न हो जाए।

खिलौने और बचपन होंगे स्मार्ट या संवेदनहीन?

एआई-आधारित स्मार्ट टॉयज आ गए हैं, जो बच्चों से बात करते हैं, सवाल पूछते हैं और उनके व्यवहार को समझते हैं। इससे बच्चों की सीखने की क्षमता बढ़ सकती है, लेकिन खतरा यह है कि कहीं बचपन स्क्रीन और मशीनों के हवाले न हो जाए। विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे हैं कि एआई खिलौनों से बच्चों की निजता भी खतरे में पड़ सकती है, क्योंकि ये खिलौने डेटा इकट्ठा करते हैं।

सुरक्षा: ताकत और खतरे का दोहरा चेहरा

फेस रिकग्निशन, सीसीटीवी एनालिटिक्स, साइबर फ्रॉड डिटेक्शन और बॉर्डर सर्विलांस में एआई अहम भूमिका निभा रही है। अपराध रोकने और आपदा प्रबंधन में यह बेहद उपयोगी है। लेकिन दूसरी ओर, यही एआई डीपफेक, साइबर अटैक जैसी चिंताओं को भी जन्म दे रही है। बिना सहमति चेहरे पहचानना, फेक वीडियो से छवि खराब करना, ये नए दौर के खतरे हैं। इसलिए सुरक्षा के साथ-साथ नैतिक और कानूनी सीमाएं तय करना जरूरी हो गया है। *-उमा*

लीगल जोन

■ प्रभाकांत कश्यप

बरतें सावधानियां

ताकि न्यू ईयर के जश्न में खलल न पड़े

नया साल खुशी और उम्मीदों का मौका होता है। लेकिन हमारी एक छोटी सी लापरवाही जश्न को तनाव और कानूनी पचड़े में फंसा सकती है। 31 दिसंबर की रात शहरों में बढ़ी हुई पुलिस निगरानी, ट्रैफिक चेकिंग और सुरक्षा नियमों के बीच थोड़ी समझदारी अपनाकर हम अपना 31 दिसंबर बेफिक्र, सुरक्षित और यादगार बना सकते हैं।

- **ड्रिंक करें तो ड्राइव नहीं:** ड्रिंक-ड्राइव एक साथ करेंगे तो मोटर व्हीकल एक्ट सेक्शन 185 के तहत दंडनीय अपराध के भागीदार बन जाएंगे। चेकिंग चैकियों पर ब्रेथ एनालाइजर टेस्ट से गुजरना पड़ सकता है।
- **सार्वजनिक स्थानों पर ड्रिंक नहीं:** ओपन पब्लिक प्लेस में शराब पीना देश के ज्यादातर राज्यों में दंडनीय अपराध है। इसके लिए लाइसेंस प्राप्त परिसर होते हैं।
- **शोर की सीमा का ध्यान रखें:** रात 10 बजे के बाद ऊंची आवाज में डीजे या लाउडस्पीकर न बजाएं वर्ना नॉयस पॉल्यूशन रूल्स 2000 के तहत दंडनीय अपराध के दायरे में आ जाएंगे। अनुमति लेकर ही संगीत चलाएं, वॉल्यूम नियंत्रित रखें।

- **अनुशासन जरूरी:** रैश ड्राइविंग, स्टंट, हूटर बजाना या तेज गति से बाइक दौड़ाना, ये सब हरकतें आईपीसी के सेक्शन 279 और सेक्शन 184 एमवीए के तहत मुसीबत का सबब बन सकती हैं। ट्रैफिक नियमों का पालन करें और अनुशासन में रहें।
- **महिलाओं की सुरक्षा का ध्यान रखें:** भीड़ में धक्का-मुक्की, अनुचित टिप्पणी या स्पर्श जैसी हरकतें आईपीसी की धारा 354 और 509 के तहत दंडनीय अपराध है। शिष्ट व्यवहार करें। असहज स्थिति को तुरंत सुरक्षाकर्मियों को बताएं।
- **सोच-समझकर पोस्ट करें:** दूसरों की फोटो और वीडियोज को उनकी अनुमति के बिना सोशल मीडिया में पोस्ट न करें, नहीं तो प्राइवेसी कानून और आईटी एक्ट की धाराओं के तहत दोषी साबित हो सकते हैं।
- **मामूली विवादों से बचें:** नये साल की रात भीड़, शोर और नशा की स्थितियों का ध्यान रखें और सावधानी बरतें कि किसी भी वजह से किसी के साथ बहस में न उलझें।

सप्ताहिक राशिफल

राशिफल चंद्र राशि पर आधारित है। जन्म की राशि और वर्तमान नाम राशि अलग हों तो वर्तमान नाम राशि से दैनिक कार्यकलाप प्रभावित होते हैं।

आचार्या कीर्ति शर्मा, 9950570978

मेष संतान पक्ष से शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। पूरा सप्ताह धर्म-कर्म में व्यतीत होगा। परिवार के सदस्यों के साथ घूमने के अवसर मिलेंगे। कार्यक्षेत्र में भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे।

मिथुन रुका हुआ धन प्राप्त होने से मन प्रसन्न रहेगा। मध्य सप्ताह में पराक्रम में वृद्धि होगी। उच्च अधिकारियों से प्रशंसा मिलेगी। घर में मेहमानों का आगमन रहेगा। शुभ कार्यों में धन व्यय होगा। कोई पुराना रोग भी उभर सकता है।

सिंह सप्ताह के प्रारंभ में किसी पुराने साथी से मुलाकात हो सकती है। मध्य सप्ताह में स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। सिरदर्द की समस्या परेशान कर सकती है। लंबे समय से अटका कोई कार्य पूर्ण हो सकता है।

तुला सप्ताह के प्रारंभ में किसी धार्मिक कार्य में सम्मिलित होने का योग है। कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की संभावना बन रही है। स्वास्थ्य को लेकर लापरवाही न बरतें, अन्यथा परेशानी बढ़ सकती है। माता-पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

धनु सप्ताह के प्रारंभ में जीवनसाथी के साथ समय सुखद रहेगा। यात्रा के योग भी बन रहे हैं। किसी बड़े कार्य में सफलता मिलने से मन प्रसन्न रहेगा। घर के किसी वृद्ध व्यक्ति से धन प्राप्ति हो सकती है।

कुंभ सप्ताह के प्रारंभ में सिरदर्द तथा पैरों के दर्द की पुरानी समस्या उभर सकती है। जीवनसाथी से संबंध प्रगाढ़ होंगे। स्वास्थ्य के कारण पराक्रम में कमी महसूस होगी। दिव्यांग व्यक्तियों को पुराने वस्त्र या जूते-चप्पल दान करें।

वृषभ सप्ताह की शुरुआत में धन की प्राप्ति होगी, परंतु सुख की कमी महसूस हो सकती है। माताजी के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें, अन्यथा नुकसान हो सकता है।

कर्क किसी धार्मिक स्थल की यात्रा के योग बन रहे हैं। मध्य सप्ताह में मन में विचलन महसूस होगा, क्रोध पर नियंत्रण आवश्यक है। सप्ताहांत में स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। रुका हुआ धन मिलने की संभावना है। मन थोड़ा अशांत रहेगा।

कन्या सप्ताह के प्रारंभ में पैतृक संपत्ति से धन प्राप्ति के योग हैं। मौज-शौक में समय व्यतीत होगा। सप्ताहांत में धर्म-कर्म में धन व्यय करेंगे, जिससे मन को सुख मिलेगा। वाहन चलाने में सावधानी बरतें।

वृश्चिक वाहन चलाते समय विशेष सावधानी रखें। मन में असंतोष का भाव बढ़ सकता है। मध्य सप्ताह में निकट किसी स्थान की यात्रा होगी। आध्यात्मिक उन्नति की भावना प्रबल होगी। संतान को लेकर चिंता रह सकती है।

मकर सप्ताह के प्रारंभ में जीवनसाथी से संबंध मजबूत होंगे। अविवाहित जातकों के विवाह संबंध तय हो सकते हैं। स्वयं के बारे में अधिक सोचकर स्वार्थी बनने से बचें। मध्य सप्ताह में स्थिति में सुधार होगा।

मीन सप्ताह के प्रारंभ में संतान के प्रति लापरवाही न बरतें और उनकी संगत पर ध्यान दें। मध्य सप्ताह में माता से मुलाकात हो सकती है। माता से संपत्ति भी प्राप्त हो सकती है। शेयर या लॉटरी से धन लाभ के योग हैं।

टोरी खोरी

टोरी: एक्स और एक्सरे में क्या अंतर है?

खोरी: दोनों आपके अंदर की असलियत जानते हैं। अंतर इतना ही है कि एक्स पर पहले सोचा जाता है, फिर लिखा जाता है। वहीं एक्सरे पहले करवाना होता है, फिर सोचा जाता है।

तूं तूं करता तूं भया, मुझ मैं रही न हूं।
वारी फेरी बलि गई, जित देखौं तित तूं॥

कबीर दास कहते है, मन कह रहा है कि 'तू है' 'तू है'। यह कहते-कहते मेरा अहंकार समाप्त हो गया। इस तरह भगवान पर न्योछावर होते-होते मैं पूरी तरह समर्पित हो गया। अब तो जिधर देखता हूं, उधर तू ही दिखाई देता है।

लोक मंगल का उपकरण थी प्राचीन भारतीय राजनीति

अभिलाषाएं अनंत हैं। सबसे बड़ी अभिलाषा आनंद प्राप्ति है, लेकिन संसार दुखमय है। मनुष्य प्राचीन काल से ही सुखी देश में रहना चाहता है। वेदों में आदर्श राष्ट्र की सुंदर अभिलाषाएं हैं। आधुनिक राजनीति निंदित क्षेत्र है। संसदीय राजनीति का भाषा शास्त्र ही कर्कश और बहुधा अश्लील है। यहां आरोप हैं, प्रत्यारोप हैं, जाति, क्षेत्र, मजहब, पंथ के उन्माद हैं, लेकिन प्राचीन भारतीय राजनीति लोक मंगल का उपकरण थी। कुछेक विद्वान लोकतंत्र को यूरोपीय परंपरा की देन मानते हैं। यूरोपीय जनतंत्र और संसद की कल्पनाएं 13वीं सदी के बाद की हैं, लेकिन भारत में राजधर्म और नीतिशास्त्र का विकास ईसा पूर्व कम से कम 6-7 हजार वर्ष पहले ही शुरू हो गया था। कौटिल्य का अर्थशास्त्र ईसापूर्व लगभग 340 वर्ष में माना जाता है। मौर्यकाल और कौटिल्य ज्ञात इतिहास में हैं। 'अर्थशास्त्र' के रचनाकाल में राजनीति पर ढेर सारे विचार प्रचलित थे। कौटिल्य के अर्थशास्त्र (वाचस्पति गौरौला के भाष्य) में बृहस्पति, शुक्राचार्य, भारद्वाज, पाराशर, चारायण, नारद आदि पूर्ववत विचारकों का उल्लेख किया गया है। शुक्र नीति में राज्य व्यवस्था का खूबसूरत विवरण है। मसलन 'राजा बहुमत के अनुसार कार्य करे- कुर्याद् बहुसंमतम्' (अध्याय 1) शुक्र नीति में योग्यता को ही नियुक्ति का आधार माना गया है, 'कर्मियों की नियुक्ति, पदोन्नति योग्यता और काम के आधार पर करे, जाति या कुल के आधार पर नहीं।'

शुक्र नीति में मोहित करने वाली राजनीतिक संरचना है। यहां सेना के अंगों, पदों के भी नाम व विवरण हैं। प्रधानमंत्री, मंत्री, सचिव, अमात्य व पुरोहित के वेतन सुस्पष्ट रखने के निर्देश हैं।' (अध्याय 2) राजा को निर्देश है कि वृक्षारोपण की चिंता करे। गांव में गांव के लिए उपयोगी वृक्ष और वनों में जंगली वृक्ष लगाए। (अध्याय 4) राजा को प्रतिदिन के चैबीस घंटों का समय विभाजन करना चाहिए। आय-व्यय की प्रतिदिन जांच जरूरी है। राजा स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करे। (अध्याय 1) अधिकारियों को एक ही स्थान पर न रखने और स्थानांतरण के भी निर्देश हैं। (अध्याय 2)

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की शुरुआत में ही शुक्राचार्य व बृहस्पति को नमस्कार किया है। उन्होंने वाद-विवाद के अवसर के लिए शुक्राचार्य के मत का उल्लेख किया है। शुक्र नीति ऐतिहासिक रचना है। गुस्ताव ओपर्ट ने इस ग्रंथ पर काफी श्रम किया है। उनके विवेचन में यह ईसा पूर्व की रचना है। मूलभूत विषय है, राजनीति की विषय वस्तु और लोकतंत्र। इस विषय सामग्री का आधार कौटिल्य हैं। शुक्राचार्य हैं। यथार्थवादी दर्शन है। यहां समग्र लोक को मधुमय बनाने वाली राजनीति थी।

> ऋग्वेद (9.113.10 तथा 9.113.11) में प्रार्थना है, 'जहां सारी कामनाएं पूरी होती हों- यत्र सत्यस्य परमं निधानं तत्र मा सोमामृतं कृधि। यत्र स्थिरं सुखं चास्ति तत्र मा अमृतं कृधि। जहां तृप्ति दायक अन्न हो। हे देवों आप वही स्थायित्व दें। अमृतत्व दें। जहां आनंद, मोद, मुद व प्रमोद हैं। यत्रा नंदास च मोदाश्च मुद प्रमोद आसते। जहां कामनाएं तृप्त होती हैं। आप वहां अमृत दें। इस सबके लिए एक आदर्श राज्य व्यवस्था चाहिए। आदर्श राज्य व्यवस्था के अभाव में राष्ट्र सुखी नहीं होते।

ऋग्वेद (9.113.10 तथा 9.113.11) में प्रार्थना है, 'जहां सारी कामनाएं पूरी होती हों- यत्र सत्यस्य परमं निधानं तत्र मा सोमामृतं कृधि। यत्र स्थिरं सुखं चास्ति तत्र मा अमृतं कृधि। जहां तृप्ति दायक अन्न हो। हे देवों आप वही स्थायित्व दें। अमृतत्व दें। जहां आनंद, मोद, मुद व प्रमोद हैं। यत्रा नंदास च मोदाश्च मुद प्रमोद आसते। जहां कामनाएं तृप्त होती हैं। आप वहां अमृत दें। इस सबके लिए एक आदर्श राज्य व्यवस्था चाहिए। आदर्श राज्य व्यवस्था के अभाव में राष्ट्र सुखी नहीं होते। इसी प्रार्थना में कहते हैं, 'जहां विवस्वान का पुत्र राजा है। जहां विशाल नदियां बहती हैं। जहां आनंद का द्वार है। आप हमें वहां स्थायित्व दें।' स्तुति है, 'जहां सुखं का अखंड तेज प्राप्त होता है, उसी क्षेत्र में मुझे अमृतत्व दें।' सारी कामनाएं स्वाभाविक हैं, भौतिक हैं, लेकिन एक सुंदर राजव्यवस्था की आवश्यकता की बात महत्वपूर्ण है।

आदिम काल में न राजा था और न ही राज्य। अथर्ववेद में राज्य व्यवस्था के जन्म और विकास की सुंदर यात्रा है, 'पहले राज्यरहित राजा के विकास का सुंदर उल्लेख है, 'पहले राज्य रहित राजा की दशा थी फिर विकास हुआ। परिवार संस्था आई। फिर विकास हुआ और आह्वनीय दशा आई। इसके बाद विचार-विमर्श बढ़े। फिर दक्षिणाग्नि दशा आई। यहां दक्ष विशेषज्ञ दशा का अर्थ है, कुशल लोगों का नेतृत्व मिलना। विकास होता रहा। इसी के विकास से समिति बनी। यह राजा को पदासीन करती थी और पद से हटाती भी थी। वेदों में उल्लेख है, 'राजा समिति में जाता है।' अर्थात राजा निरंकुश नहीं है। वह समिति के प्रति उत्तरदाई है।

हृदय नारायण दीक्षित
पूर्व विधानसभा अध्यक्ष उत्तर प्रदेश

आधुनिक काल में ज्यादातर राजव्यवस्थाएं किसी न किसी रूप में लोकतांत्रिक हो गई हैं। अमेरिकी राज्य व्यवस्था में राष्ट्रपति की प्रभुता है। रूस में राष्ट्रपति का वर्चस्व है। ब्रिटेन में संसद की प्रभुता है। भारत में संविधान की सर्वोपरिता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदान का बहुत महत्व है। विचार आधारित पार्टियां चुनाव के दौरान अपने पक्ष में वातावरण बनाती हैं। राजनीतिक दल चुनाव में अपने प्रत्याशी खड़े करते हैं। किसी भी राजनीतिक दल के लिए संगठन बनाना जरूरी है। कार्यकर्ता आधारित संगठन पार्टी के पक्ष में लोकमत बनाते हैं। सारी दुनिया में राष्ट्रवादी संगठन हैं।

भारत का स्वाधीनता संग्राम भी राष्ट्रवादी था। आज कथित सेकुलरवादी संगठन और व्यक्ति हिंदुत्व को सांप्रदायिक बताते हैं, लेकिन स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख योद्धा महात्मा गांधी ने लिखा था कि मुझसे हिंदुत्व निकाल दो, तो मेरे पास कुछ नहीं बचेगा।' स्वाधीनता संग्राम के आगे पीछे कांग्रेस राष्ट्रवादी संगठन भी थी। संगठन अपरिहार्य है। वामपंथी भी संगठन की महत्ता जानते थे। स्वाधीनता के बाद सांप्रदायिकता चरम पर थी। भारत विभाजन हो चुका था। पाकिस्तान सांप्रदायिक आधार पर बंट गया था। धीरे-धीरे संगठन का तेज घटा। पंडित नेहरू के नेतृत्व में सरकार तो थी, लेकिन संगठन नहीं था।

1951 में भारतीय जनसंघ का जन्म हुआ। इसका सांगठनिक ढांचा धीरे-धीरे मजबूत हो रहा था। संगठन के चुनाव होते थे। संगठन आंतरिक लोकतंत्र से समृद्ध था। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अनावश्यक रूप से आपातकाल (1975) लगाया। जनसंघ सहित सभी दलों के कार्यकर्ता जेलों में भेज दिए गए। आपातकाल हटाने के बाद 1977 में संगठन कांग्रेस, सोशलिस्ट और लोकदल तथा भारतीय जनसंघ ने मिलकर जनता पार्टी बनाई। उच्च उद्देश्यों से सशक्त होने के बावजूद जनता पार्टी के पास संगठन का ढांचा नहीं था। जनसंघ घटक के लोगों पर दोहरी सदस्यता के आरोप लगे। जनता पार्टी टूट गई।

कांग्रेस कई दफा टूटी। पहली टूट में एक धड़ा कांग्रेस (ओ) और दूसरा कांग्रेस (आई) कहलाया। कांग्रेस की टूट से ही तृणमूल कांग्रेस बंगाल में व राष्ट्रवादी कांग्रेस महाराष्ट्र में बनी। जनता दल बेमेल संगठन टूटा। एक धड़ा जनता दल एस व एक धड़ा जनता दल यू हो गया। अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी बनी। भाजपा के संगठन पर कई विदेशी भारतीय विद्वानों ने शोध किया है और आश्चर्य व्यक्त किया है कि भारत जैसे विशाल देश में ऐसा मजबूत संगठन विचारणीय है।

पिछले सप्ताह भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव संपन्न हुआ है। बिहार के नितिन नवीन निर्विरोध राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष चुने गए हैं। इसी प्रकार देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में संगठन के प्रदेश अध्यक्ष का निर्वाचन संपन्न हुआ। पंकज चौधरी को प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। साधारण प्रकृति के असाधारण राजनेता पंकज चौधरी ने एक आदर्श सांसद की भूमिका का निर्वाहन भी किया है। चौधरी सात बार के सांसद हैं। एक ही पार्टी के टिकट पर बिना क्षेत्र बदले सात बार सांसद होना आश्चर्यजनक है।

निवेशकों को सुरक्षा देगा सेबी का नया प्रस्ताव

लॉकडाउन के दौरान लोगों का रुझान शेयर बाजार, म्युचुअल फंड और अन्य निवेश साधनों की ओर तेजी से बढ़ा। इसी बढ़ते रुझान का फायदा उठाते हुए अनगिनत संख्या में गैर-पंजीकृत लोग खुद को निवेश सलाहकार बताकर सोशल मीडिया पर सक्रिय हो गए और निवेशकों से मोटी फीस वसूलने लगे। जाने-अनजाने लाखों की संख्या में निवेशक ऐसे लोगों के झांसे में आकर अपनी मेहनत की कमाई निवेश कर देते हैं। बाद में अपनी समस्त पूंजी गंवा बैठते हैं। कई मामलों में निवेशकों को न तो सही जानकारी मिलती है और न ही नुकसान होने पर कोई कानूनी सहारा मिलता है। ऐसे में सेबी का यह कदम निवेशकों के हित में एक जरूरी पहल माना जा रहा है।

धनीश शर्मा
लेखक

सेबी एक्ट, 1992 के तहत निवेशकों की सुरक्षा और बाजार में पारदर्शिता बनाए रखने का अधिकार सेबी को प्राप्त है। इसी कानून के तहत सेबी समय-समय पर ऐसे कदम उठाती है, जिससे निवेशकों के हितों की रक्षा की जा सके और पूंजी बाजार को सुरक्षित बनाया जा सके। सोशल मीडिया पर निवेशकों को सलाह देते नजर आ रहे सलाहकारों पर अब सेबी जल्द ही शिकंजा कसने जा रही है। इसके तहत सेबी ने प्रस्ताव दिया है कि उसके नियंत्रण में आने वाली सभी संस्थाएं और उनके एजेंट, अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के होम पेज पर अपना पंजीकृत नाम और पंजीकरण संख्या स्पष्ट रूप से दिखाएं, जिससे निवेशकों में किसी तरह का भ्रम न फैले। इसके अलावा हर वीडियो या कंटेंट के साथ भी यह जानकारी निवेशकों के साथ साझा करनी होगी।

> सोशल मीडिया पर निवेशकों को सलाह देते नजर आ रहे सलाहकारों पर सेबी जल्द ही शिकंजा कसने वाली है। सेबी ने कहा है कि उसके नियंत्रण में आने वाली सभी संस्थाएं और उनके एजेंट, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपना पंजीकृत नाम और पंजीकरण संख्या स्पष्ट रूप से दिखाएं।

सेबी का यह प्रस्ताव इसलिए भी अहम है, क्योंकि सोशल मीडिया पर नियमित और गैर-पंजीकृत लोगों का निवेश से जुड़ा कंटेंट बड़ी संख्या में मौजूद है, जिसे देखकर निवेशक आसानी से गुमराह हो रहे हैं। सोशल मीडिया की आड़ में अनगिनत गैर-पंजीकृत लोग तरह-तरह के वीडियो बनाकर निवेशकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं, जिनमें कई फिनफ्लुएंसर भी शामिल हैं। फिनफ्लुएंसर वे लोग हैं, जो सोशल मीडिया पर निवेश, शेयर बाजार, म्युचुअल फंड और अन्य वित्तीय साधनों के बारे में सलाह देते हैं। कुछ फिनफ्लुएंसर वैध और पंजीकृत होते हैं, लेकिन कई गैर-पंजीकृत और भ्रामक जानकारी देने वाले लोग झूठे मुनाफे का लालच देकर निवेशकों को गुमराह कर रहे हैं। इन लुभावने वीडियो के जरिये निवेशकों को फंसाया जाता है और वे आसानी से इनके मकड़जाल में आ जाते हैं।

सोशल मीडिया पर सक्रिय सलाहकारों के बीच गैर-पंजीकृत लोगों की बढ़ती मौजूदगी निवेशकों के लिए बड़ा खतरा बनती जा रही है। सेबी का उद्देश्य सोशल मीडिया पर उन गैर-पंजीकृत लोगों को रोकना है, जो भ्रामक जानकारी निवेशकों के सामने परोसकर उन्हें गुमराह करते हैं, हालांकि यह भी कहा जा सकता है कि सेबी को यह कदम काफी पहले ही उठा लेना चाहिए था, लेकिन देर आयद दुरुस्त आयद वाली कहावत यहां पूरी तरह चरितार्थ होती है।

खर मास पौष में करें भगवान की स्तुति

खर मास के दौरान प्रायः पौष मास पड़ता है। कथा है कि भगवान सूर्य के अश्वों (घोड़ों) को प्यास लगी थी, वे पानी पीना चाहते थे। भगवान सूर्य नारायण की अनुमति से पृथ्वी पर आकर सभी घोड़े एक माह तक पानी पीते रहे। इस अवधि में घोड़ों की जगह खर (गर्दभ/गधे) पर सूर्य भगवान बैठ गए। एक माह बाद जब घोड़े लौटे तब पुनः सूर्य भगवान गर्दभ से अश्व पर आरूढ़ हुए, इसीलिए एक माह खर मास कहा जाता है। इस अवधि में सूर्य की गति धीमी हो जाती है और दिन छोटा तथा रात बड़ी हो जाती है। इस अवधि में मांगलिक कार्यक्रम नहीं होते।

जिन महीनों में मांगलिक कार्यक्रमों का निषेध किया गया, उसमें खर मास और पुरुषोत्तम मास (मल मास) कहते हैं। चूंकि मांगलिक कार्यक्रम इन महीनों में नहीं होते, इसलिए इस अवधि में धर्म ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए, खासकर श्रीमद् भागवत महापुराण का अध्ययन जरूर करना चाहिए। इस पुराण में श्री हरि की स्तुति, विभिन्न देवी-देवताओं, राजाओं के क्रियाकलापों के साथ ऋषियों-मुनियों का संवाद शामिल है। चूंकि यह सर्वश्रेष्ठ पुराण है, इसलिए इसका वाचन एवं श्रवण मनुष्य को सार्थक स्वरूप प्रदान करता है। मनुष्य को अपने मन को वश में करने के लिए इस माह में योग-प्राणायाम करना चाहिए।

सलिल पांडेय
मिर्जापुर

श्रीमद् भागवत महापुराण के चतुर्थ स्कंध के 13 से लेकर 15वें अध्याय तक में ध्रुव वंश से लेकर राजा पृथु का वर्णन किया गया है। राजा अंग एवं पत्नी सुनीथा से वेन नामक पुत्र हुआ, जिसके अत्याचार के चलते पिता राजा अंग दुःखित रहा करते थे। उन्हें नींद नहीं आती थी। एक रात गृहस्थ जीवन से विरक्त होकर राजा अंग जंगल चले गए। अंग के वन चले जाने के कारण भृगु आदि मुनियों ने देखा कि पृथ्वी पर रहने वालों की रक्षा करने वाला कोई नहीं है, तब वेन को राजपद पर बिठा दिया गया। राजा का पद पाकर वेन और भी अत्याचारी हो गया। उसने पूजा-पाठ, ऋषियों के दान-दक्षिणा देने पर रोक लगा दी। ऋषियों-मुनियों ने उसे सदाचार पथ पर ले चलने का प्रयास किया, लेकिन राजा वेन पर कोई असर जब नहीं पड़ा तब विदुर जैसे महात्मा ने राजा वेन को मार डालने का आदेश दिया।

वेन की मृत्यु के पश्चात उसकी मां सुनीथा पुत्र वेन के शव की सुरक्षा करने लगी। वेन की मृत्यु के उपरांत ऋषियों ने देखा राजा विहीन शासन में दुष्टों का उपद्रव बढ़ गया है। ऋषियों ने वेन के शव की जांघ को मथा तब उसमें से एक बौना और कुरूप पुरुष उत्पन्न हुआ, जो शासन चलाने योग्य नहीं था। उसने अपने पिता के पापों को अपने ऊपर ले लिया। ऋषियों ने उसे नगर छोड़कर वन और पर्वत पर रहने का आदेश दिया।

इसके बाद पुत्रहीन वेन की भुजाओं का मंथन किया, जिससे एक स्त्री-पुरुष का जोड़ा प्रकट हुआ। इसे भगवान विष्णु एवं माता लक्ष्मी की कृपा मानकर ऋषियों ने पुरुष को पृथु नाम दिया तथा स्त्री को पृथु की पत्नी बनने का आशीर्वाद दिया एवं पृथु को विष्णु जी का अवतार मानकर संसार के पालन का दायित्व दिया, जिसका निर्वहन पृथु ने किया। इसकी रीति-नीति से प्रसन्न होकर प्रजा तथा ऋषि-मुनि गुणगान करने लगे।

महाभियोग की राजनीति व न्यायपालिका

भारत के संविधान ने संसद को अनेक शक्तियां दी हैं, पर उनमें सबसे गंभीर, सबसे असाधारण और सबसे संवेदनशील शक्ति है, किसी न्यायाधीश के विरुद्ध महाभियोग प्रस्ताव लाने की शक्ति। यह कोई सामान्य राजनीतिक हथियार नहीं है, न ही यह न्यायिक निर्णयों से असहमति दर्ज कराने का मंच है। यह शक्ति केवल एक ही उद्देश्य के लिए बनाई गई है, न्यायपालिका की शुचिता की रक्षा, और वह भी केवल तब, जब किसी न्यायाधीश के विरुद्ध सिद्ध कदाचार या असमर्थता का ठोस प्रामाणिक आधार उपलब्ध हो।

> मद्रास हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति जस्टिस जीआर स्वामीनाथन के विरुद्ध लाया गया महाभियोग प्रस्ताव गंभीर संवैधानिक चिंता पैदा करता है। जस्टिस ने एक मंदिर के भक्तों की याचिका सुनी और राज्य सरकार की असहमति के बावजूद मंदिर स्तंभ पर दीप जलाने का आदेश दे दिया।

इसी पृष्ठभूमि में मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति जस्टिस जीआर स्वामीनाथन के विरुद्ध लाया गया महाभियोग प्रस्ताव एक गंभीर संवैधानिक चिंता पैदा करता है। जस्टिस स्वामीनाथन ने एक मंदिर के भक्तों की याचिका सुनी और राज्य सरकार की असहमति के बावजूद मंदिर स्तंभ पर दीप जलाने का आदेश दे दिया। तमिलनाडु सरकार ने धार्मिक सौहार्द तथा कानून व्यवस्था बिगड़ने के अपने तर्कों के आधार पर आदेश का पालन नहीं किया, तब जस्टिस स्वामीनाथन ने सीआईएसएफ की निगरानी में दीप जलाने का आदेश दे दिया। यही बात राजनेताओं को खटक गई। हालांकि प्रशासन ने सेना को भी उस क्षेत्र में घुसने नहीं दिया और मंदिर का दीप नहीं जल सका। सरकार इस बात से इतनी विचलित और क्रोधित हो गई कि जस्टिस स्वामीनाथन के विरुद्ध महाभियोग प्रस्ताव ले आई।

आलोक तिवारी
वरिष्ठ पत्रकार

यह बहस इस बात की नहीं है कि कोई उनके निर्णय से सहमत है या असहमत। असली प्रश्न यह है कि क्या संसद का सबसे कठोर दंडात्मक औजार केवल किसी निर्णय या न्यायिक व्याख्या से असहमति के आधार पर सक्रिय किया जा सकता है? संविधान के अनुच्छेद 124(4) और 217 जानबूझकर कठोर भाषा में लिखे गए हैं। न्यायाधीश को हटाने की प्रक्रिया कठिन इसलिए रखी गई, ताकि वह राजनीतिक दबाव, जनभावना या सत्तागत असंतोष से सुरक्षित रह सके। महाभियोग कोई राजनीतिक वक्तव्य नहीं, बल्कि एक प्रकार का संवैधानिक अभियोजन है। जस्टिस स्वामीनाथन पर भ्रष्टाचार का आरोप नहीं है। वित्तीय अनियमितता नहीं है। पद के दुरुपयोग का ठोस प्रमाण नहीं है और उनकी असमर्थता का कोई आधार नहीं है, तो ऐसे प्रस्ताव को राजनीतिक उद्देश्य से प्रस्तुत करना न्यायिक तंत्र एवं जजों को डराने एवं धमकाने कि श्रेणी में आता है!

यह तर्क अक्सर दिया जाता है कि सांसदों को अनुच्छेद 105 और 194 के अंतर्गत विशेषाधिकार प्राप्त हैं। किंतु यह तर्क अधूरा है। संसदीय विशेषाधिकार निरंकुश नहीं होते, वे कार्यात्मक होते हैं। उनका उद्देश्य विधायिका को उसके संवैधानिक कर्तव्यों के निर्वहन में सक्षम बनाना है, न कि किसी अन्य संवैधानिक संस्था, विशेषकर न्यायपालिका को डराना या भयभीत करना। जब विशेषाधिकार का प्रयोग दबाव के औजार के रूप में किया जाए, तब वह विशेषाधिकार नहीं, बल्कि संवैधानिक अतिक्रमण बन जाता है।

भारतीय संवैधानिक इतिहास इस खतरे की चेतावनी देता है। आज जस्टिस स्वामीनाथन के विरुद्ध प्रस्तावित महाभियोग, उसी चिंताजनक परंपरा का आधुनिक रूप प्रतीत होता है, जहां न्यायिक निर्णयों को संवैधानिक तर्क के बजाय राजनीतिक स्वीकार्यता की कसौटी पर परखा जाने लगता है। यदि यह प्रवृत्ति सामान्य बन गई, तो हर संवेदनशील मामले में न्यायाधीश के सामने कानून नहीं, बल्कि संभावित राजनीतिक प्रतिक्रिया खड़ी होगी।

यहां लोकसभा अध्यक्ष की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। Judges (Inquiry) Act, 1968, उन्हें यह विवेकाधिकार देता है कि वे आवश्यक हस्ताक्षरों के बावजूद महाभियोग प्रस्ताव को स्वीकार या अस्वीकार कर सकते हैं। यह कोई औपचारिक मुहर नहीं, बल्कि संविधान द्वारा निर्मित एक अंतिम सुरक्षा-दीवार है। यदि प्रस्ताव में भ्रष्टाचार, वित्तीय अनियमितता, पद के दुरुपयोग या असमर्थता का कोई प्रथमदृष्टया आधार नहीं है, तो उसे प्रारंभिक स्तर पर ही रोका जाना चाहिए।

देश के न्यायाधीश अपनी शपथ और भारत के संविधान के प्रति उत्तरदायी हैं, न कि किसी पक्षपातपूर्ण राजनीतिक दबावों या वैचारिक धमकियों के प्रति। आज एक जज निशाने पर है, कल पूरी न्यायपालिका इनके निशाने पर होगी। अंततः यह प्रश्न शक्ति का नहीं, संवैधानिक संयम का है। असहमति का स्थान अपील में है, बहस में है, आलोचना में है, महाभियोग में नहीं।

आर्थिक और सामाजिक दबावों के बीच रिश्ते बचाने की जद्दोजहद

तेज़-रफ्तार और निरंतर बदलती दुनिया में शादी को संतुलित रखना पहले से कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया है। तेज़ी से बदलती जीवन शैली, इंटरनेट और सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव, एक-दूसरे से उभरती अपेक्षाएं, काम और परिवार का दबाव, आर्थिक अनिश्चितता और बदलते सामाजिक मानदंड, इन सबके बीच रिश्ते को स्थिर और स्वस्थ बनाए रखना सचमुच एक नाजुक कला है। इस कला की नींव तीन आधारभूत स्तंभों पर टिकी होती है- संवाद, सम्मान और समझदारी। चुनौतियां सीमाएं स्पष्ट नहीं होतीं, तो छोटी-छोटी बातें भी अनजाने में विवाद का कारण बन सकती हैं।

डॉ. मुकुल शर्मा
मोटिवेशनल स्पीकर

संतुलन न हो तो यह हस्तक्षेप रिश्ते की शांति और स्थिरता को प्रभावित करता है। निकटता (Intimacy) की कमी की भागदौड़, मानसिक थकान और तनाव धीरे-धीरे शारीरिक और भावनात्मक निकटता को कम कर देते हैं। इंटिमेसी के स्तर में गिरावट रिश्ते में दूरी और असुरक्षा ला सकती है। पैरेंटिंग में मतभेद तकरार को जन्म देता है, यदि इन्हें समझदारी से न संभाला जाए। शादीशुदा जीवन हो या जीवनशैली के दिखावे, रिश्ते में असंतोष, अपेक्षाओं का दबाव और कमी की भावना पैदा कर सकती है। बढ़ने के लिए नियमित देखभाल चाहिए, वैसे ही शादी को भी समझ, संवाद और संवेदनशीलता की निरंतरता चाहिए।

जीवन की व्यस्तताओं, चुनौतियों और दबावों के बीच रिश्ते को मजबूत बनाए रखना एक सजग प्रयास है और यही प्रयास शादी को खूबसूरत बनाता है। नीचे कुछ व्यावहारिक और प्रभावी उपाय दिए गए हैं, जो दंपति को अधिक संतुलित, शांत और सहयोगी संबंध बनाने में मदद करते हैं। गलतफहमियां पैदा न हों। अपेक्षाएं रिश्ते में टकराव कम करती हैं और सामंजस्य बढ़ाती हैं। उनकी समीक्षा करें। जरूरी है जिम्मेदारियां बराबर बांटी जाएं। जिम्मेदारियों को साझा करें। पैरेंटिंग को टीमवर्क समझें, टकराव नहीं। असंतोष, जलन और अपेक्षाओं का दबाव कम होता है, जिससे रिश्ता और मजबूत बनता है। आपस में अपेक्षाओं और भविष्य की योजनाओं पर खुलकर चर्चा करनी चाहिए। इससे रिश्ते संवारने में आसानी होती है।

आत्म-चेतना और आत्म-साक्षात्कार का माध्यम है ध्यान

ध्यान का उद्गम प्राचीन भारत से हुआ। वेदों और उपनिषदों में ध्यान का गहन उल्लेख मिलता है। महात्मा बुद्ध ने ध्यान को अपने जीवन का केंद्रीय अंग बनाया था और इसे आत्म-ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम बताया था। ध्यान आत्मा और मन के संतुलन को प्राप्त करने का एक प्राचीन विज्ञान है। यह आत्मचिंतन और मानसिक शुद्धता की ऐसी प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को आंतरिक शांति और स्फूर्ति प्रदान करती है। ध्यान का अर्थ है मानसिक एकाग्रता और चेतना का उच्चतम स्तर। यह एक ऐसी स्थिति है, जिसमें मनुष्य अपनी आंतरिक ऊर्जा के स्रोत से जुड़ता है और बाहरी दुनिया के तनावों से मुक्त होता है। यह केवल एक धार्मिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक उपचार का माध्यम भी है। ध्यान की प्रक्रिया व्यक्ति को वर्तमान क्षण में जीने और अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में केंद्रित करने का मार्ग दिखाती है। वैदिक साहित्य में ध्यान को आत्मा को ब्रह्मांडीय ऊर्जा से जोड़ने का माध्यम माना गया है। बुद्ध धर्म और जैन धर्म में ध्यान को आत्मज्ञान और मोक्ष प्राप्ति का साधन बताया गया है।

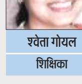

श्वेता गोयल
शिक्षिका

प्राचीन भारतीय परंपरा में ध्यान को 'मेडिटेशन' के नाम से जाना जाता है, जो अब केवल भारत तक ही सीमित नहीं रह गया है। यह एक ऐसा अभ्यास है, जो मनुष्य को अपने भीतर झांकने, अपने विचारों को नियंत्रित करने और आत्म-चेतना प्राप्त करने में मदद करता है। ध्यान केवल धार्मिक अथवा आध्यात्मिक अभ्यास नहीं है बल्कि यह एक विज्ञान है, जो मनुष्य के मस्तिष्क और शरीर पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। आधुनिक युग में ध्यान ने न केवल आध्यात्मिक बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अपनी उपयोगिता सिद्ध की है।

विभिन्न अनुसंधानों से सिद्ध हुआ है कि ध्यान मस्तिष्क की संरचना और कार्यप्रणाली में सकारात्मक परिवर्तन लाता है। यह न्यूरोप्लास्टिसिटी को बढ़ावा देता है, जिससे मस्तिष्क नए अनुभवों और परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल सकता है। ध्यान मस्तिष्क के 'प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स', जो एकाग्रता और निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार होता है, को सक्रिय करता है। यह एमिगडाला, जो तनाव और भय के लिए जिम्मेदार होता है, की गतिविधियों को कम करता है। ध्यान के अभ्यास से कोर्टिसोल (तनाव हार्मोन) का स्तर घटता है और सेरोटोनिन (खुशी का हार्मोन) का स्तर बढ़ता है, जिससे व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक राहत मिलती है।

ध्यान आत्म-चेतना और आत्म-साक्षात्कार का माध्यम है, जो मनुष्य को अपने स्वभाव को समझने और शांति प्राप्त करने में मदद करता है। ध्यान से व्यक्ति के व्यवहार में सकारात्मक बदलाव आता है, जिससे समाज में शांति और सद्भावना का माहौल बनता है। ध्यान से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। इससे मस्तिष्क में सेरोटोनिन और डोपामाइन जैसे हार्मोनों का स्तर बढ़ता है, जिससे तनाव और अवसाद में कमी आती है। यह मस्तिष्क को शांत करता है और नकारात्मक विचारों को सकारात्मकता में परिवर्तित करता है। नियमित ध्यान से स्मरण शक्ति और एकाग्रता में सुधार होता है और इससे नींद की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। नियमित ध्यान से हृदय गति नियंत्रित रहती है, रक्तचाप सामान्य होता है और इम्यून सिस्टम मजबूत होता है। ध्यान का अभ्यास व्यक्ति को सहिष्णु और संवेदनशील बनाता है, जिससे दूसरों के प्रति सहानुभूति और समझ विकसित होती है, जो संबंधों को मजबूत बनाती है।

ध्यान के विभिन्न प्रकार हैं, जो व्यक्ति की जरूरत और रुचि के अनुसार चुने जा सकते हैं। इनमें सांसों पर ध्यान, प्रेरणा ध्यान, मंत्र ध्यान, प्रकृति ध्यान इत्यादि प्रमुख हैं। ध्यान का सरल और प्रभावी तरीका है सांसों पर ध्यान, जिसमें व्यक्ति अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित करता है। प्रेरणा ध्यान में एक मार्गदर्शक अथवा प्रशिक्षक की मदद से ध्यान किया जाता है। मंत्र ध्यान में किसी मंत्र का उच्चारण करते हुए ध्यान किया जाता है, जो मन को स्थिरता और गहराई प्रदान करता है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिनाथ शुक्ला द्वारा 25/16-ए, जाप्लिंग रोड, लखनऊ-226001 (उ.प्र.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं.-42, निकट बद्री नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित। संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- अनिल त्रिगुणायत* 0522-4008111 (कार्यालय), ईमेल-editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-50986/1989 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।)

जब हम शिक्षा क्षेत्र की बात करते हैं तो ये लगता होगा कि विकास सामान्य और सतत प्रक्रिया होती है। ऐसा क्या कारण था कि 20वीं शताब्दी के अंत तक सिर्फ एक ही एम्स भारत में था, मैं बड़े गौरव के साथ कहता हूँ कि प्रधानमंत्री @narendramodi के नेतृत्व में 23 एम्स भारत में हैं।

-जेपी नड्डा

विधि एवं न्याय मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। आपकी समर्पित कार्यशैली और सेवाभाव अत्यंत प्रेरणादायक है। प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने में आपका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

-रेखा गुप्ता

संपादकीय

भारत-बांग्लादेश बिगड़ते संबंध

बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के पतन के बाद से दोनों देशों के संबंध लगातार बिगड़ते जा रहे हैं। अंतरिम सरकार के मुखिया मोहम्मद यूनुस की अगुवाई में वहां भारत विरोधी गतिविधियां लगातार परवान चढ़ती जा रही हैं। पिछले साल बांग्लादेश में हुए उपद्रव में अल्पसंख्यक हिंदुओं और उनके धार्मिक स्थलों को बड़े पैमाने पर निशाना बनाया गया था। हालांकि भारत सरकार के सख्त ऐतराज के बाद हालात जल्द ही नियंत्रण में आ गए थे और युनूस सरकार ने आश्वासन दिया था कि वह अल्पसंख्यकों की जान-माल सुरक्षा और धार्मिक स्वतंत्रता को संरक्षण देती रहेगी। लेकिन साल भर बाद ही वहां एक बार फिर से भारत विरोधी गतिविधियां तेज हो गई हैं और अल्पसंख्यक हिंदुओं को निशाना बनाया जा रहा है। छात्र नेता शरीफ उस्मान हादी, जिनकी सिंगापुर में इलाज के दौरान मौत हो गई। उसके बाद राजधानी ढाका के कई इलाकों में पिछले गुरुवार से हिंसा भड़की हुई है। बेकाबू भीड़ सड़कों पर उतरकर देश के कई महत्वपूर्ण इलाकों में हिंसा पर उतारू है। तीन बड़े अखबारों के दफ्तर जला दिए गए। एक हिंदू युवक पर ईश निंदा का आरोप लगाकर उसकी पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। हिंदू समुदाय को लगातार निशाना बनाया जा रहा है। जिससे वहां एक बार हालात तेजी से बिगड़ रहे हैं। जिसको लेकर भारत ने फिर से अपनी चिंता जाहिर कर दी है। यद्यपि युनूस सरकार लोगों से शांति और संयम बनाए रखने की अपील कर रही है। लेकिन जब उपद्रवी संगठनों के साथ ही राजनीतिक दलों का एजेंडा भी भारत विरोधी हो गया हो तो यह बेहद चिंता की बात है। उपद्रवियों ने चटगांव में भारतीय सहायक उच्चायोग पर हमला किया। कट्टरपंथी लगातार भारत के खिलाफ आग उगल रहे हैं। ढाका में सैकड़ो कट्टरपंथियों ने भारतीय उच्चायोग का घेराव किया और अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना जो कि भारत में शरण लिए हुई हैं,उन्हें बांग्लादेश को सौपने की मांग की। इससे पूरे देश में भारत विरोधी माहौल गरमाता जा रहा है। फिलहाल भारत ने अपनी तरफ से अभी तक कोई उकसाने वाली कार्रवाई नहीं की है। लेकिन बांग्लादेश हालात बिगाड़ने पर आमादा दिख रहा है।जिससे कड़वाहट लगातार बढ़ती जा रही है। वहां अगले 12 फरवरी को आम चुनाव होने हैं। जिसमें भारत विरोध एक अहम मुद्दा हो गया है। सभी राजनैतिक दलों में भारत विरोधी बयानबाजी की होड़ लग गई है। लगता है कि भारत विरोध ही चुनावी हार-जीत का पैमाना हो गया है। एक राजनीतिक दल ने तो यहां तक कह दिया है कि वह भारत विरोधी उग्रवादी संगठनों को खुलेआम संरक्षण देगा। क्योंकि भारत हमारा दुश्मन है। हालांकि इन घटनाओं पर भारत की कड़ी नजर है। बीते बुधवार को भारतीय विदेश मंत्रालय ने नईदिल्ली में बांग्लादेश के उच्चायुक्त को तलब कर अपना औपचारिक विरोध दर्ज करा दिया और कहा कि ढाका में भारतीय मिशन और वीजा केंद्र को सुरक्षा देना बांग्लादेश की जिम्मेदारी है। कट्टरपंथी समूहों द्वारा फैलाए जा रहे झूठे अफवाहों को लेकर भारत ने कहा कि बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने घटनाओं की न तो पूरी जांच की और न ही भारत के साथ कोई ठोस सबूत ही साझा किया। जिसके चलते दोनों देशों के संबंध और खराब होते जा रहे हैं। ढाका में भारत ने अपने वीजा केंद्र बंद कर दिया है। भारत पूरा संयम बरत रहा है ताकि देश दुनिया में भारत को लेकर गलत न फैलाया जा सके। लेकिन बांग्लादेश में भारत विरोधी उग्रवादी तत्वों को जिस तरह राजनैतिक दल खुलेआम संरक्षण व प्रोत्साहन दे रहे हैं,वह दोनों देशों के हितों और संबंधों के लिए ठीक नहीं है। बांग्लादेश आरोप लगा रहा है कि भारत उसकी संप्रभुता की अनदेखी करके उसके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहा है। यह गंभीर आरोप है,जिसका भारत खंडन कर चुका है। लेकिन इसके चलते हालात और बिगड़ने का अंदेशा बढ़ता जा रहा है। भारत के संयम को बांग्लादेश शायद उसकी कमजोरी मान रहा है। लेकिन समय है कि उसे अपनी यह गलतफहमी दूर कर लेनी चाहिए। अन्यथा भारत की प्रतिक्रिया उसे बहुत भारी पड़ सकती है और उसका भौगोलिक मानचित्र भी बदल सकता है। अब यह बांग्लादेश पर निर्भर करता है कि वह अपना मौजूदा रवैया बदलता है या भारत विरोधी गतिविधि जारी रखता है।

राष्ट्रबोध और समाजबोध: व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला

डॉ अर्पिता स्नेह

युवा किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं। यदि युवाओं में राष्ट्रबोध और समाजबोध प्रबल हो, तो राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित और उज्ज्वल होता है। युवा जब सामाजिक सेवा, स्वच्छता अभियान, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्र निर्माण के कार्यों में भाग लेते हैं, तो उनका व्यक्तित्व निखरता है। राष्ट्रबोध से युक्त युवा नकारात्मक प्रवृत्तियों से दूर रहते हैं। रचनात्मक और सकारात्मक सोच अपनाते हैं। समाज और राष्ट्र के लिए नेतृत्व करते हैं।

मनुष्य केवल जैविक अस्तित्व नहीं है, बल्कि वह एक सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक प्राणी है। उसका व्यक्तित्व केवल जन्मजात गुणों से नहीं बनता, बल्कि परिवार, समाज, शिक्षा, संस्कृति और राष्ट्र की चेतना से निरंतर गढ़ता रहता है। जब व्यक्ति अपने चारों ओर के समाज और उस समाज से जुड़े राष्ट्र को समझता है, उसके प्रति संवेदना और उत्तरदायित्व का अनुभव करता है, तभी उसमें एक संतुलित, सशक्त और मूल्यनिष्ठ व्यक्तित्व का विकास होता है। इसी चेतना को राष्ट्रबोध और समाजबोध कहा जाता है।

राष्ट्रबोध और समाजबोध व्यक्ति को केवल अपने हित तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे व्यापक दृष्टि प्रदान करते हैं। ये दोनों मिलकर व्यक्ति के चरित्र, आचरण, विचार और कर्म को दिशा देते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि राष्ट्रबोध और समाजबोध ही व्यक्तित्व निर्माण की सच्ची आधारशिला हैं।

राष्ट्रबोध का अर्थ और स्वरूप

राष्ट्रबोध का अर्थ केवल देशभक्ति के नारों या प्रतीकों तक सीमित नहीं है। यह अपने राष्ट्र के इतिहास, संस्कृति, परंपराओं, मूल्यों, संघर्षों और उपलब्धियों को समझने तथा उनके प्रति सम्मान और उत्तरदायित्व की भावना रखने से जुड़ा है। राष्ट्रबोध व्यक्ति को यह सिखाता है कि वह केवल अपने लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र के व्यापक हित के लिए भी सोचें और कार्य करें।

राष्ट्रबोध के अंतर्गत:

राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना

संविधान, कानून और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति सम्मान

देश की सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार करना

राष्ट्र की प्रगति में योगदान देने की इच्छा

जब व्यक्ति में राष्ट्रबोध विकसित होता है, तो उसका व्यक्तित्व स्वार्थ से ऊपर उठकर कर्तव्यनिष्ठ, अनुशासित और जिम्मेदार बनता है।

समाजबोध का अर्थ और महत्व: समाजबोध का तात्पर्य है— अपने आसपास के समाज की समस्याओं, आवश्यकताओं, संवेदनाओं और मूल्यों को समझना तथा समाज के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वहन करना। मनुष्य समाज में रहकर ही अपना अस्तित्व पाता है। इसलिए समाज के प्रति सजगता और संवेदनशीलता व्यक्ति के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

समाजबोध व्यक्ति को सहानुभूति और करुणा का भाव सिखाता है। सहयोग और सामूहिकता की भावना विकसित करता है। सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूक बनाता है। समानता, न्याय और मानव गरिमा के मूल्य सिखाता है। समाजबोध से युक्त व्यक्ति केवल अपने सुख-दुख तक सीमित नहीं रहता, बल्कि दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करता है।

व्यक्तित्व निर्माण: एक सतत प्रक्रिया: व्यक्तित्व निर्माण कोई एक दिन में होने वाली प्रक्रिया नहीं है। यह जीवन भर चलने वाली निरंतर प्रक्रिया है, जिसमें विचार, व्यवहार, संस्कार और अनुभव मिलकर व्यक्ति का स्वरूप गढ़ते हैं। राष्ट्रबोध और समाजबोध इस प्रक्रिया को नैतिक और सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं।

जब व्यक्ति में राष्ट्र और समाज के प्रति चेतना होती है, तो:

उसके निर्णय अधिक जिम्मेदार होते हैं

उसका आचरण अनुशासित और नैतिक होता है

उसका दृष्टिकोण व्यापक और संतुलित बनता है

इस प्रकार व्यक्तित्व केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय कल्याण से जुड़ जाता है।

राष्ट्रबोध, समाजबोध और नैतिक मूल्यों का संबंध

नैतिक मूल्य किसी भी व्यक्तित्व की आत्मा होते हैं। ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, त्याग, सेवा, सहिष्णुता और न्याय जैसे मूल्य राष्ट्रबोध और समाजबोध से ही विकसित होते हैं। जब व्यक्ति अपने राष्ट्र और समाज को अपनी पहचान का हिस्सा मानता है, तो वह अनैतिक आचरण से बचने का प्रयास करता है।

राष्ट्रबोध व्यक्ति को यह सिखाता है कि:

भ्रष्टाचार और अनैतिकता राष्ट्र को कमजोर करती है

कर्तव्य पालन ही सच्ची देशभक्ति है

वहीं समाजबोध व्यक्ति को यह समझाता है कि:

दूसरों के अधिकारों का सम्मान आवश्यक है

सामाजिक न्याय और समरसता के बिना विकास अधूरा है

इस प्रकार ये दोनों मिलकर व्यक्ति को नैतिक रूप से सुदृढ़ बनाते हैं।

शिक्षा में राष्ट्रबोध और समाजबोध की भूमिका

शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण का सबसे प्रभावी माध्यम है। यदि शिक्षा केवल परीक्षा और रोजगार तक सीमित रह जाए, तो वह अधूरी है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य राष्ट्रबोध और समाजबोध से युक्त नागरिकों का निर्माण करना है।

विद्यालय और विश्वविद्यालय: इतिहास, संविधान और नागरिक शास्त्र के माध्यम से राष्ट्रबोध विकसित करते हैं। सामाजिक सेवा, एनएसएस, एनसीसी जैसे कार्यक्रमों से समाजबोध को मजबूत करते हैं। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से नेतृत्व और सहयोग की भावना जगाते हैं। इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति को केवल शिक्षित नहीं, बल्कि संस्कारवान नागरिक बनाती है।

परिवार और समाज की भूमिका

व्यक्तित्व निर्माण की पहली पाठशाला परिवार होता है। परिवार में मिलने वाले संस्कार ही आगे चलकर राष्ट्रबोध और समाजबोध का आधार बनते हैं। माता-पिता और बुजुर्गों का आचरण बच्चों के लिए आदर्श बनता है।

परिवार और समाज मिलकर सेवा और त्याग के संस्कार देते हैं। सामाजिक नियमों और मूल्यों की समझ विकसित करते हैं। राष्ट्र के प्रति सम्मान और गर्व की भावना उत्पन्न करते हैं। यदि परिवार और समाज सजग हों, तो व्यक्ति का चरित्र स्वतः ही सुदृढ़ बनता है।

युवा वर्ग और राष्ट्र–समाज चेतना

युवा किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं। यदि युवाओं में राष्ट्रबोध और समाजबोध प्रबल हो, तो राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित और उज्ज्वल होता है। युवा जब सामाजिक सेवा, स्वच्छता अभियान, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्र निर्माण के कार्यों में भाग लेते हैं, तो उनका व्यक्तित्व निखरता है।

राष्ट्रबोध से युक्त युवा नकारात्मक प्रवृत्तियों से दूर रहते हैं। रचनात्मक और सकारात्मक सोच अपनाते हैं। समाज और राष्ट्र के लिए नेतृत्व करते हैं।

वर्तमान समय में राष्ट्रबोध और समाजबोध की आवश्यकता

आधुनिक युग में भौतिकता, प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत लाभ की दौड़ ने व्यक्ति को आत्मकेंद्रित बना दिया है। ऐसे समय में राष्ट्रबोध और समाजबोध की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। ये मूल्य व्यक्ति को संतुलन सिखाते हैं और उसे यह याद दिलाते हैं कि उसका अस्तित्व समाज और राष्ट्र से जुड़ा हुआ है।

राष्ट्र और समाज के प्रति चेतना सामाजिक विघटन को रोकती है। राष्ट्रीय एकता को मजबूत करती है । स्वस्थ और जिम्मेदार नागरिक तैयार करती है ।

अंततः यह स्पष्ट है कि राष्ट्रबोध और समाजबोध व्यक्तित्व निर्माण की सशक्त और अनिवार्य आधारशिला हैं। इनके बिना व्यक्तित्व अधूरा, स्वार्थी और दिशाहीन हो सकता है। राष्ट्रबोध व्यक्ति को कर्तव्यनिष्ठ, अनुशासित और जिम्मेदार नागरिक बनाता है, जबकि समाजबोध उसे संवेदनशील, सहयोगी और मानवीय बनाता है।

जब व्यक्ति अपने राष्ट्र और समाज को केवल बाहरी इकाई नहीं, बल्कि अपनी पहचान का अभिन्न अंग मानता है, तभी उसका चरित्र सुदृढ़, संतुलित और मूल्यनिष्ठ बनता है। ऐसे व्यक्तित्व ही स्वस्थ समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा, परिवार और समाज मिलकर राष्ट्रबोध और समाजबोध को प्रोत्साहित करें, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ न केवल सफल व्यक्ति बनें, बल्कि जिम्मेदार नागरिक और सच्चे राष्ट्रनिर्माता भी बन सकें। यही राष्ट्र की वास्तविक प्रगति और मानवता का सच्चा पथ है।

(लेखिका, मीडिया एंड कम्युनिकेशन एक्सपर्ट हैं।)

टैरिफ के दबाव में भी मजबूत होता भारतीय निर्यात

गिरीश्वर मिश्र

नवंबर 2025 में स्पेन को भारत का निर्यात 181.3 प्रतिशत बढ़ा, फ्रांस को 65.7 प्रतिशत, वियतनाम को 36 प्रतिशत, हांगकांग को 35.5 प्रतिशत, बेल्जियम को 30.9 प्रतिशत, जर्मनी को 24.9 प्रतिशत, ब्राजील को 21.3 प्रतिशत, ऑस्ट्रेलिया को 19 प्रतिशत, ब्रिटेन को 15.4 प्रतिशत, संयुक्त अरब अमीरात को 13.2 प्रतिशत और इटली को 8.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई। आश्चर्यजनक रूप से चीन को भारत का निर्यात भी 90.1 प्रतिशत बढ़ा।

27 अगस्त 2025 को अमेरिका के ट्रम्प प्रशासन द्वारा भारत से अमेरिका को निर्यात होने वाले विभिन्न उत्पादों पर कुल 50 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया गया। इसमें 25 प्रतिशत जवाबी टैरिफ और 25 प्रतिशत अतिरिक्त सेकेंडरी टैरिफ शामिल था, जो रूस से कच्चा तेल खरीदने के कारण भारत पर लगाया गया। इस निर्णय के बाद यह व्यापक आकलन किया जा रहा था कि भारत से अमेरिका को होने वाला निर्यात बुरी तरह प्रभावित होगा और भारतीय अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान उठाना पड़ेगा। लेकिन भारत ने इस दबाव का जवाब संतुलित कूटनीति और व्यावहारिक रणनीति से आज दे दिया है। उल्लेखनीय तथ्य यह रहा कि इस पूरे घटनाक्रम के दौरान भारत के किसी भी जिम्मेदार मंत्री या अधिकारी ने सार्वजनिक मंचों पर अमेरिका के विरुद्ध कोई तीखी प्रतिक्रिया नहीं दी। इसके बजाय सरकार ने शांतिपूर्वक अपने विकल्पों पर काम किया और मित्र देशों के साथ निर्यात तथा व्यापारिक संबंधों को सुदृढ़ करने की दिशा में गंभीर प्रयास किए। जिन वस्तुओं का निर्यात अमेरिका को प्रभावित हो रहा था, उन्हें अन्य मित्र देशों के बाजारों की ओर मोड़ने की रणनीति अपनाई गई। इस रणनीति का सकारात्मक असर नवंबर 2025 में जारी हुए निर्यात आंकड़ों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। नवंबर 2025 में भारत के कुल निर्यात में 19.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो यह दर्शाती है कि अमेरिकी टैरिफ का अनुमानित नकारात्मक प्रभाव उतना गंभीर नहीं रहा, जितना प्रारंभ में माना जा रहा था। हालांकि अगस्त 2025 में टैरिफ का असर आंशिक रूप से दिखा था। जुलाई 2025 में भारत के कुल निर्यात में 13.3 प्रतिशत और अमेरिका को निर्यात में 27.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी, जो अगस्त में घटकर क्रमशः 5.8 प्रतिशत और 6.7 प्रतिशत रह गई। सितंबर 2025 में अमेरिका को निर्यात की वृद्धि दर नकारात्मक होकर 11.9 प्रतिशत रही और अक्टूबर में यह 8.6 प्रतिशत नकारात्मक रही। इसके बावजूद नवंबर 2025 में स्थिति में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला और अमेरिका को निर्यात में 22.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। यह आंकड़ा इस प्रश्न को स्वतः जन्म देता है कि 50 प्रतिशत टैरिफ का वह प्रभाव कहां गया, जिसकी आशंका व्यक्त की जा रही थी। वस्तुतः, भारत ने निर्यात के विविधीकरण और नए बाजारों की ओर तेज़ी से कदम बढ़ाकर इस झटके को काफी हद तक संतुलित कर लिया। अमेरिका द्वारा बनाए जा रहे दबाव के इस दौर में कई देशों ने भारत से आयात को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाकर अप्रत्यक्ष रूप से भारत की स्थिति को मजबूत किया। नवंबर 2025 में स्पेन को भारत का निर्यात 181.3 प्रतिशत बढ़ा, फ्रांस को 65.7 प्रतिशत, वियतनाम को 36 प्रतिशत, हांगकांग को 35.5 प्रतिशत, बेल्जियम को 30.9 प्रतिशत, जर्मनी को 24.9 प्रतिशत, ब्राजील को 21.3 प्रतिशत, ऑस्ट्रेलिया को 19 प्रतिशत, ब्रिटेन को 15.4 प्रतिशत, संयुक्त अरब अमीरात को 13.2 प्रतिशत और इटली को 8.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई। आश्चर्यजनक रूप से चीन को भारत का निर्यात भी 90.1 प्रतिशत बढ़ा। केवल नवंबर माह ही नहीं, बल्कि अप्रैल 2025 से नवंबर 2025 की आठ माह की अवधि में भी कई देशों को भारत का निर्यात तेज़ी से बढ़ा। इस अवधि में स्पेन को निर्यात 54.5 प्रतिशत, चीन को 32.9 प्रतिशत, हांगकांग को 22.4 प्रतिशत, वियतनाम को 14.7 प्रतिशत, अमेरिका को 11.4 प्रतिशत, जर्मनी को 9.3 प्रतिशत, संयुक्त अरब अमीरात को 6.7 प्रतिशत, ब्राजील को 5.1 प्रतिशत और बेल्जियम को 5 प्रतिशत बढ़ा, जबकि इसी अवधि में भारत का कुल निर्यात केवल 2.6 प्रतिशत बढ़ा। यह आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि वैश्विक अर्थव्यवस्थाएं भारत को एक भरोसेमंद व्यापारिक साझेदार के रूप में देख रही हैं।

कविता

स्त्रियां विमर्श नहीं होतीं

वह सुबह सबसे पहले उठती
रात सबसे बाद में सोती
उसके जागने और सोने के बीच
पूरा घर साँस लेता ।
समय उसके इशारे से चलता
रोटी पकाते हुए
वह भविष्य के लिए धैर्य गूँथती
उसकी चुप्पी में
बहुत सी बातें सुरक्षित रहती ,
वह जब मौन होती
तो समाज थोड़ा और ठिठक जाता ,
उसके हाथों में
केवल काम नहीं होता,
उनमें भरोसा, स्मृति
और टूटने से पहले की
आख़िरी उम्मीद होती ।
वह माँ बनकर
भूख से पहले बच्चे को देखती
बेटी बनकर
ख़ुद से पहले घर को सींचती
वह पत्नी होकर
किसी का नाम रोशन करती,
पर कई बिखरे नाम
अपने भीतर जोड़ लेती ,
उसके आँसू
अख़बार की सुर्ख़ियां
नहीं बनतीं,
पर उन्हीं से
सभ्यताओं के कई
आकाश खड़े होते,
समाज से
बराबरी नहीं माँगती,
बस इतना चाहती
कि उसे भी
इंसान समझा जाए
जब वह आगे बढ़ती
तो अकेली नहीं चलती,
अपने साथ
पूरी पीढ़ी को अग्रसर करती ।

संजीव ठाकुर

आपका मत

लंबे कद और प्रभावशाली व्यक्तित्व के लिए प्रख्यात हुए भारतीय राजनीति के कद्दावर चेहरे

भारतीय राजनीति में कद का तात्पर्य सिर्फ शारीरिक ऊंचाई से नहीं होता. राजनेताओं के विचार, फैसले, संघर्ष और जनता के मन में बनी उनकी छवि, उनके कद को असल मायने में बयान करती है। हालांकि इसमें भी कोई दो राय नहीं कि जब कोई नेता मंच पर खड़ा होता है, तो उसकी लंबी कद-काठी, सधा हुआ आत्मविश्वास और दमदार उपस्थिति पहली नज़र में ही लोगों का ध्यान खींच लेती है। भारतीय लोकतंत्र ने ऐसे कई कदावर नेताओं को देखा है, जिनकी शारीरिक ऊँचाई उनके वैचारिक और राजनीतिक कद का प्रतीक बन गई है। ये नेता सिर्फ अपनी लम्बाई के लिए नहीं, बल्कि दृढ़ निश्चयी, साहसी और दूरदर्शी सोच के लिए भी पहचाने गए या पहचाने जा रहे हैं। इस कड़ी में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी से लेकर युवा और चर्चित चिराग पासवान जैसे कई नाम शामिल हैं।आधुनिक भारत का सपना देखने वाले पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की लंबी हाइट और आकर्षक व्यक्तित्व उन्हें युवा भारत का प्रतीक बनाता था। पायलट से प्रधानमंत्री बने राजीव ने टेलीकॉम व आईटी क्रांति की नींव रखी। सबसे युवा पीएम के रूप में आधुनिकीकरण पर जोर दिया। उनकी सहज उपस्थिति जनता से कनेक्ट करती थी। राजीव का योगदान आज भी भारत की प्रगति में जीवंत है। इस कड़ी में दूसरा नाम पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धार्थ शंकर राय का है जिन्हे पश्चिम बंगाल की राजनीति में लंबी कद-काठी के लिए याद किया जाता है। उन्होंने कांग्रेस के दिग्गज के रूप में नक्सलवाद जैसी चुनौतियों का सामना किया। पंजाब गवर्नर रहते उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। वहीं दो बार लोकसभा स्पीकर रहने का रिकॉर्ड रखने वाले डॉ॰ बलराम जाखड़ अपनी करीब 6.5 फीट ऊंचाई से राजनीति में टावरिंग फिगर कहलाते थे। जाट समुदाय के दिग्गज नेता के रूप में उन्होंने किसान मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया। कृषि मंत्री के रूप में ग्रामीण विकास पर उनका योगदान यादगार है। झाकड़ का सफर बताता है कि ऊंचाई काम से और प्रभावशाली होती है। राजनाथ सिंह भारतीय राजनीति के उन वरिष्ठ नेताओं में हैं, जिनकी पहचान शोर, आक्रामकता या तीखे भाषणों से नहीं, बल्कि शांत स्वभाव, संतुलित सोच और दृढ़ निर्णय क्षमता से बनी है। उनकी लंबी कद-काठी, सधी हुई चाल और संयमित बॉडी लैंग्वेज मंच पर खड़े होते ही एक अनुभवी, स्थिर और जिम्मेदार नेतृत्व का एहसास कराती है। **डॉ अतुल मलिकराम**

लोकसत्य

आप अपना मत व लेख हमें इस ई-मेल भेज सकते है।

loksatyaedit01@gmail.com

उस्मान हादी की हत्या, बहाना और बांग्लादेश में हिंदुओं पर टूटती हिंसा

Blogger

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उस्मान हादी की हत्या और इस हिंदू युवक की हत्या के बीच क्या संबंध है। उत्तर स्पष्ट है कि कोई संबंध नहीं है। किंतु राजनीति और कट्टरपंथ का गठजोड़ अक्सर तर्क नहीं अवसर देखता है। उस्मान हादी एक विवादास्पद, भारत विरोधी और कट्टर जिहादी नेता था। जो पूर्वोत्तर भारत (नॉर्थ-ईस्ट) में 'सेवन सिस्टर्स' (असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा) और सिक्किम को बांग लादेश में एक दिन जबरन शामिल कर लेने की बात बार-बार कहता था।

बांग्लादेश एक बार फिर अराजकता, हिंसा और भय के दौर में फिसलता दिखाई दे रहा है। राजनीतिक अस्थिरता, सत्ता संघर्ष और कट्टरपंथी समूहों की सक्रियता ने हालात को इतना विस्फोटक बना दिया है कि उसका सबसे आसान और सबसे असुरक्षित निशाना फिर वही बन रहा है जो हर बार बनता है। अल्पसंख्यक, विशेषकर हिंदू समुदाय। हालिया घटनाक्रम में इंकलाब मंच के नेता उस्मान हादी की हत्या ने इस आग में घी का काम किया है, जबकि इस हत्या से हिंदुओं का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कोई लेना-देना नहीं है।

मयमनसिंह जिले के भालुका उपजिला में एक हिंदू युवक दीपू चंद्र दास की नृशंस हत्या और उसके शव को सार्वजनिक रूप से जलाया जाना इस बात का प्रमाण है कि बांग्लादेश में कट्टरपंथी भीड़ को हिंसा के लिए किसी ठोस प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। केवल एक आरोप या अफवाह ही पर्याप्त होती है। जिस युवक पर इस्लाम के अपमान का आरोप लगाया गया, उसे न तो कानून के हवाले किया गया और न ही जांच की प्रतीक्षा की गई। भीड़ ने स्वयं जज, जूरी और जल्लाद बनकर हत्या की और फिर शव जलाकर अपने भयावह संदेश को सार्वजनिक सड़कों तक पहुंचाया कि यहां गैर मुसलमान विशेषकर हिन्दू इसी तरह से प्रताड़ति कर मार दिए जाएंगे, रोक सको तो रोक लो!

यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उस्मान हादी की हत्या और इस हिंदू युवक की हत्या के बीच क्या संबंध है। उत्तर स्पष्ट है कि कोई संबंध नहीं है। किंतु राजनीति और कट्टरपंथ का गठजोड़ अक्सर तर्क नहीं अवसर देखता है। उस्मान हादी एक विवादास्पद, भारत विरोधी और कट्टर जिहादी नेता था। जो पूर्वोत्तर भारत (नॉर्थ-ईस्ट) में 'सेवन सिस्टर्स' (असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा) और सिक्किम को बांग्लादेश में एक दिन जबरन शामिल कर लेने की बात बार-बार कहता था। वस्तुतः उसकी हत्या के बाद जिस प्रकार का माहौल बनाया गया, उसमें दोष भारत, शेख हसीना और अंततः हिंदुओं पर मढ़ने की कोशिश की गई। यहीं से एक राजनीतिक हत्या को सांप्रदायिक हिंसा में बदल दिया गया।

देखा जाए तो यह कोई नई रणनीति नहीं है। पाकिस्तान में भी दशकों से यही पैटर्न देखने को मिलता है। कभी ईशनिंदा के नाम पर, कभी राष्ट्रविरोध के आरोप में, कभी धर्मांतरण से इनकार करने पर तमाम आरोप लगा दिए जाते हैं, भीड़ इकट्ठा होती है और कानून पीछे छूट जाता है। बांग्लादेश जोकि अपने गठन के समय अपेक्षाकृत उदार और धर्मनिरपेक्ष पहचान रखता था, आज उसी रास्ते पर बढ़ता दिखाई देता है जिस पर पाकिस्तान कट्टर इस्लामिक जिहादी सोच पर पहले से चल रहा है। दोनों देशों में समस्या मजहबी है और दोनों ही ओर इस्लाम के नाम पर राजनीति और हिंसा करने वाले कट्टरपंथी तत्व हैं।

उस्मान हादी की हत्या को लेकर अनेक सिद्धांत सामने आ रहे हैं। कहीं यूनुस सरकार पर संदेह जताया जा रहा है, कहीं पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई की भूमिका की चर्चा है, तो कहीं इसे सत्ता संघर्ष का परिणाम बताया जा रहा है। इन तमाम अटकलों के बीच एक तथ्य अडिग है कि हिंदू समुदाय न तो इस हत्या का कारण है और न ही उसका लाभार्थी। इसके बावजूद हिंसा की दिशा उन्हीं की ओर मोड़ दी गई है। यह दर्शाता है कि अल्पसंख्यक समुदाय यहां केवल एक आसान निशाना है, जिस पर गुस्से और असंतोष की भड़ास निकाली जा सकती है।

इस पूरे घटनाक्रम का सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि भीड़ को यह विश्वास हो चुका है कि वह कानून से ऊपर है, इसलिए ही आज हिन्दुओं की हत्या कर उनके शवों को सड़कों पर जलाया जा रहा है, राजमार्ग जाम किए जा रहे हैं और खुलेआम नारेबाजी हो रही है, जैसे यहां कानून का राज ही नहीं है। ऐसे में भारत के लिए यह स्थिति सिर्फ पड़ोसी देश की समस्या नहीं है।

भारत में भी चुनौतियां कम नहीं हैं। समय-समय पर कट्टरपंथी नेटवर्क सामने आते हैं, कभी बम धमाकों की साजिशों में, कभी लव जिहाद जैसे संगठित अपराधों में, तो कभी ऑनलाइन कट्टरपंथ फैलाने में। अंतर केवल इतना है कि भारत का संविधान, न्यायपालिका और सुरक्षा तंत्र अभी भी ऐसी ताकतों से लड़ने की क्षमता और इच्छाशक्ति रखते हैं। फिर भी आत्मसंतोष की कोई गुंजाइश नहीं है।

बांग्लादेश और पाकिस्तान का अनुभव यही सिखाता है कि यदि कट्टरपंथ को समय रहते नहीं रोका गया तो वह धीरे-धीरे पूरे समाज को बंधक बना लेता है। वहां सबसे पहले अल्पसंख्यक निशाने पर आते हैं, फिर उदार मुस्लिम और अंत में स्वयं राज्य।

जनसंपादकीय

हिन्दी का एक उदार मनीषी

गौरव अवस्थी

बोलियों में बंटी हिंदी भाषा को परिमार्जित कर- के भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा प्रारंभ किए आधुनिक खड़ी बोली हिंदी आंदोलन को सफलता के शिखर पर स्थापित करने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। अपनी अथक मेहनत के बल पर उन्होंने हिंदी खड़ी बोली में कई संपादक लेखक कवि तैयार किए।आचार्य द्विवेदी को भाषा और व्याकरण में किसी भी तरह की भाषाई अशुद्धि और व्याकरण की अराजकता अस्वीकार थी। हिंदी की इस प्रतिष्ठा के लिए ही अपने समय के प्रतिष्ठित साहित्यकारों से आचार्य द्विवेदी का वाद-विवाद और प्रतिवाद होता रहा। कुछ विवाद तो आधुनिक हिंदी साहित्य में आज भी अमिट हैं।

बालमुकुंद गुप्त से अस्थिरता और अनस्थिरता शब्द पर वर्षों चला विवाद हो या नागरी प्रचारिणी सभा की खोजपूर्ण रिपोर्ट को लेकर बाबू श्यामसुंदर दास से हुआ मतभेद या सरस्वती में लेख न छपने पर बीएन शर्मा से हुई लट्ठमलट्ठ। आमतौर पर उनकी छवि आमतौर पर कलहप्रिय, क्रोधी, घमंडी और तुनक मिजाज के तौर पर स्थापित करने की समय- समय पर कोशिशें की गईं लेकिन इन विवादों के अंत सौहार्दपूर्ण एवं सौजन्यता के साथ ही हुए। बालमुकुंद गुप्त से चले विवाद का अंत आचार्य के चरणों में सिर रखने से हुआ। आचार्य द्विवेदी ने भी उन्हें गले लगा कर सहृदयता दिखाई।

नागरी प्रचारिणी सभा के काम की आलोचना खोजपूर्ण रिपोर्ट छपने पर बाबू श्यामसुंदर दास से पैदा हुए मतभेद के बाद सभा ने सरस्वती से अपने संबंध समाप्त कर लिए। आचार्य द्विवेदी ने 'अनुमोदन का अंत' शीर्षक से लेख लिखा तो सभा के कार्य से बाहर गए पं. केदारनाथ पाठक बहुत नाराज हुए और लौटने पर सीधे कानपुर आचार्य द्विवेदी के पास पहुंचकर अपनी नाराजगी प्रकट की। कोमल हृदय आचार्य द्विवेदी ने उन्हें ससम्मान आसन दिया और घर के अंदर से मिठाई-जल लेकर आए और साथ में एक लाठी भी। शिष्टाचार के बाद उन्होंने पं. पाठक को प्रतिवाद पूरा करने के लिए लाठी देते हुए कहा- 'आपकी लाठी और मेरा सर..'। इस पर पं. पाठक बहुत लज्जित हुए और वह हमेशा के लिए आचार्य जी के भक्त हो गए। इस विवाद का अंत भी श्यामसुंदर दास द्वारा 'भारत मित्र' में द्विवेदी जी की उदारता पर लिखे गए लेख के साथ हुआ। सौजन्यता का इससे बड़ा उदाहरण और क्या होगा कि बाबू श्याम सुंदर दास द्वारा स्थापित नागरी प्रचारिणी सभा ने आचार्य द्विवेदी के सम्मान में 1933 में 'अभिनंदन ग्रंथ' प्रस्तुत किया और आचार्य द्विवेदी ने अपने संपादन से जुड़ी महत्वपूर्ण सामग्री और लाइब्रेरी की हजारों पुस्तकें सभा को ही दान में दीं।

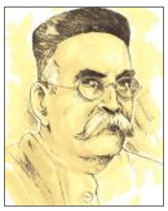

छतरपुर के राजा ने आचार्य द्विवेदी जी से कहा कि आप प्रतिवर्ष एक अच्छे अंग्रेजी ग्रंथ का अनुवाद किया कीजिए। पारिश्रमिक के रूप में मैं आपको ?500 दिया करूंगा। उन्होंने 1907 में हर्बर्ट स्पेंसर की 'एजुकेशन' पुस्तक का अनुवाद 'शिक्षा' के नाम से किया और राजा को पत्र लिखा।

भाषा एवं व्याकरण सुधार के आंदोलन में ऐसे अनेक विवादों के दृष्टांत आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में दर्ज हैं, जिनका पटाक्षेप सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुआ। यह इसलिए संभव हुआ कि आचार्य द्विवेदी और संबंधित पक्ष के बीच विवाद के कारण हिंदी भाषा की शुद्धता थी न कि व्यक्तिगत। अपना लेख सरस्वती में न छपने पर बीएन शर्मा ने अवश्य आलोचनापूर्ण लेख में आचार्य द्विवेदी पर व्यक्तिगत आक्षेप किए लेकिन क्षमा प्रार्थना के बाद आचार्य द्विवेदी ने इस विवाद का भी अंत सौजन्यता के साथ कर दिया। ऐसा ही एक प्रकरण महामना पं. मदन मोहन मालवीय के अनुज कृष्णकांत मालवीय के साथ भी हिंदी साहित्य में दर्ज है। रेलवे की ?200 प्रति माह की नौकरी छोड़कर ?50 प्रति माह में 'सरस्वती' का संपादन स्वीकार करने वाले आचार्य द्विवेदी का इंडियन प्रेस के संस्थापक बाबू चिंतामणि घोष से प्रथम परिचय उनके ही प्रेस से प्रकाशित हिंदी रीडर की कड़ी आलोचना के साथ हुआ था लेकिन फिर भी घोष बाबू ने आचार्य द्विवेदी को सरस्वती का संपादक नियुक्त करना तय किया। उनके संपादक नियुक्त होने पर कुछ साहित्यकारों ने घोष बाबू से कहा कि यह मनुष्य बहुत घमंडी है। तुनुक मिजाज है। इसे संपादक बनाकर बड़ी भूल कर रहे हो। उससे एक दिन भी नहीं पटेगी लेकिन उन्होंने किसी भी आलोचना को कान न देकर आचार्य द्विवेदी को संपादन का दायित्व सौंपा। 18 वर्षों तक सरस्वती के संपादन कार्यकाल में आचार्य द्विवेदी और घोष बाबू में घड़ी भर की अनबन नहीं हुई। सरस्वती के प्रकाशक और सेवक संपादक के बीच के सरस संबंध आज भी मुद्रक-प्रकाशक एवं संपादक के बीच सरस संबंधों का आदर्श उदाहरण है।

बात नवंबर 1905 की है। छतरपुर के राजा ने आचार्य द्विवेदी जी से कहा कि आप प्रतिवर्ष एक अच्छे अंग्रेजी ग्रंथ का अनुवाद किया कीजिए। पारिश्रमिक के रूप में मैं आपको ?500 दिया करूंगा। उन्होंने 1907 में हर्बर्ट स्पेंसर की 'एजुकेशन' पुस्तक का अनुवाद 'शिक्षा' के नाम से किया और राजा को पत्र लिखा। अपनी बात से मुकरते हुए राजा ने पारिश्रमिक के रूप में केवल ?25 ही देने की बात कही। इस पर नाराज हुए आचार्य द्विवेदी ने राजा को कड़ा पत्र लिखकर अपनी आपत्ति प्रकट करने से परहेज नहीं किया।

जन्म ग्राम दौलतपुर (रायबरेली) की पाठशाला के एक शिक्षक एक पद का गलत अर्थ बता रहे थे। बालक द्विवेदी ने शिक्षक को टोका और सही अर्थ बताया लेकिन शिक्षक अपनी गलती स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। द्विवेदी जी के प्रतिवाद करने पर वह पंडितराज संजीवन के अर्थ को प्रमाणिक मानने को तैयार हुए। तब द्विवेदी जी पंडितराज के घर गए और सही अर्थ लिखाकर लाए। उन्होंने भी द्विवेदी जी के ही अर्थ का समर्थन किया। फिर शिक्षक को बालक द्विवेदी के सामने अपनी गलती स्वीकार ही करनी पड़ी। दरअसल, बचपन से ही स्वाध्यायी आचार्य द्विवेदी का गलत को गलत कहने का स्वभाव था। गलत को गलत कहने में तनिक भी हिचक न होने का यह स्वभाव आचार्य द्विवेदी में अंतिम समय तक विद्यमान रहा। किसी के आगे झुकना उन्होंने स्वीकार नहीं किया। सामने वाला कोई भी हो या कितना भी बड़ा हो। इसी स्वभाव के बल पर वह आधुनिक हिंदी खड़ी बोली को गद्य और पद्य दोनों की भाषा बनाने में सफल हो सके।

(संयोजक, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी स्मृति संरक्षण अभियान, मो. 9415034340)

(दिल्ली के प्रदूषण को समझने के लिए सबसे पहले यह स्वीकार करना होगा कि इसका कोई एक कारण नहीं है। यह कई स्रोतों से पैदा हुआ एक सम्मिलित संकट है। वाहनों की बात करें तो दिल्ली-एनसीआर में पंजीकृत वाहनों की संख्या 1.2 करोड़ से अधिक है। इनमें से बड़ी संख्या डीजल आधारित है, जो पीएम 2.5 और नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसे घातक प्रदूषक छोड़ती है। इसके अलावा रोजाना लगभग 10-12 लाख वाहन दिल्ली में बाहर से प्रवेश करते हैं। यह संख्या किसी भी महानगर के लिए असामान्य है और यही वजह है कि सड़क परिवहन दिल्ली के कुल प्रदूषण में लगभग 30 प्रतिशत तक योगदान देता है।)

देश के दिल पर प्रदूषण की मार

सामयिकी

नीलम महेन्द्र

दिल्ली की हवा अब केवल प्रदूषित नहीं है, वह हमारे समय की सबसे बड़ी चुपचाप फैलती हुई आपदा बन चुकी है। यह संकट अचानक नहीं आया, बल्कि वर्षों की लापरवाही, गलत प्राथमिकताओं और आधे-अधूरे समाधानों का नतीजा है। हर सर्दी में जब स्मॉग की मोटी परत राजधानी को ढक लेती है, तब हम कुछ दिनों के लिए चिंतित होते हैं, फिर हालात सामान्य दिखने लगते हैं और हम मान लेते हैं कि समस्या टल गई। लेकिन सच यह है कि समस्या कहीं नहीं जाती, वह हमारे फेफड़ों में जमा होती रहती है।

दिल्ली के प्रदूषण को समझने के लिए सबसे पहले यह स्वीकार करना होगा कि इसका कोई एक कारण नहीं है। यह कई स्रोतों से पैदा हुआ एक सम्मिलित संकट है। वाहनों की बात करें तो दिल्ली-एनसीआर में पंजीकृत वाहनों की संख्या 1.2 करोड़ से अधिक है। इनमें से बड़ी संख्या डीजल आधारित है, जो पीएम 2.5 और नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसे घातक प्रदूषक छोड़ती है। इसके अलावा रोजाना लगभग 10-12 लाख वाहन दिल्ली में बाहर से प्रवेश करते हैं। यह संख्या किसी भी महानगर के लिए असामान्य है और यही वजह है कि सड़क परिवहन दिल्ली के कुल प्रदूषण में लगभग 30 प्रतिशत तक योगदान देता है।

निर्माण गतिविधियां दूसरा बड़ा कारण हैं। दिल्ली एक ऐसा शहर बन चुका है जो लगातार खुद को तोड़कर फिर से बना रहा होता है। फ्लाईओवर, मेट्रो विस्तार, हाउसिंग प्रोजेक्ट्स और व्यावसायिक परिसरों के कारण उड़ने वाली धूल पीएम10 का प्रमुख स्रोत है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, शहरी धूल दिल्ली के प्रदूषण में लगभग 15-20 प्रतिशत तक योगदान देती है। नियमों के बावजूद अधिकांश निर्माण स्थल खुले रहते हैं, जहां न तो पानी का छिड़काव नियमित होता है और न ही धूल रोकने की आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल।

इस क्रम में औद्योगिक प्रदूषण को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में हजारों छोटी औद्योगिक इकाइयां हैं, जो कोयला, फर्नेस ऑयल और अन्य प्रदूषणकारी ईंधनों का उपयोग करती हैं। ईंट भट्टे, प्लास्टिक जलाना, अवैध फैक्ट्रियां और कचरे का खुले में दहन—ये सब मिलकर हवा को और जहरीला बनाते हैं। विभिन्न अध्ययनों में यह पाया गया है कि उद्योग और ऊर्जा उत्पादन से जुड़े स्रोत दिल्ली के प्रदूषण में लगभग 15 प्रतिशत तक हिस्सेदारी रखते हैं।

इन सबके बीच पराली जलाने का मुद्दा हर साल चर्चा के केंद्र में आता है। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार, अक्टूबर-नवंबर के दौरान दिल्ली के प्रदूषण में पराली का योगदान औसतन 20 से 35 प्रतिशत के बीच रहता है। कुछ चरम दिनों में, जब हवा की दिशा प्रतिकूल होती है, यह योगदान 40 प्रतिशत तक भी पहुंच जाता है। लेकिन यह भी उतना ही बड़ा सच है कि साल के बाकी महीनों में, जब पराली नहीं जलाई जाती, तब भी दिल्ली की हवा खराब ही रहती है। इससे साफ है कि पराली एक अहम कारण है, लेकिन उसे ही पूरे संकट का दोषी ठहराना एक आसान, लेकिन अधूरा तर्क है। इन तमाम कारणों का नतीजा यह है कि दिल्ली दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों की सूची में लगातार शीर्ष पर बनी हुई है।

नवंबर 2024 में तो दिल्ली के कुछ इलाकों का ़ 1000 के पार चला गया था जबकि इसका सामान्य मानक शून्य से 50 के बीच होता है। यह कोई नजरंदाज करने वाला तथ्य नहीं है, बल्कि यह इस बात का संकेत है कि राजधानी की हवा विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों से कई गुना ज्यादा जहरीली हो चुकी है। डब्लू एच ओ के अनुसार पीएम 2.5 का सुरक्षित स्तर 5 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर है, जबकि दिल्ली में सर्दियों के दौरान यह स्तर 150 से 300 तक पहुंच जाता है। यानी सुरक्षित सीमा से 30 से 60 गुना अधिक।

इस प्रदूषण का असर अब आंकड़ों से आगे बढ़कर इंसानी शरीर पर साफ दिखने लगा है। दिल्ली में हर साल लाखों लोग सांस संबंधी बीमारियों के लिए इलाज करवाते हैं। हार्ट अटैक और स्ट्रोक के मामलों में भी प्रदूषण की भूमिका को अब वैज्ञानिक रूप से स्वीकार किया जा चुका है। लेकिन सबसे भयावह असर बच्चों पर पड़ रहा है। हालिया मेडिकल रिसर्च में यह सामने आया है कि दिल्ली के कई बच्चों के फेफड़ों में ऐसे पैच देखे गए हैं, जो कोविड के बाद दिखाई देने वाले फेफड़ों के नुकसान से मिलते-जुलते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि यहां कारण संक्रमण नहीं, बल्कि लगातार जहरीली हवा में सांस लेना है।

बच्चों के शरीर पर इसका असर इसलिए भी ज्यादा गंभीर है क्योंकि उनके फेफड़े और प्रतिरक्षा तंत्र अभी विकसित हो रहे होते हैं। शोध बताते हैं कि प्रदूषित हवा में पले-बढ़े बच्चों की फेफड़ों की क्षमता सामान्य बच्चों की तुलना में 10-20 प्रतिशत तक कम हो सकती है। इसका असर केवल उनके स्वास्थ्य पर नहीं, बल्कि उनकी सीखने की क्षमता, शारीरिक विकास और भविष्य की उत्पादकता पर भी पड़ता है। यह एक ऐसा नुकसान है जिसकी भरपाई वर्षों बाद भी मुश्किल होती है।

ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि शोध आधारित वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक उपायों से इस गम्भीर संकट का सामना किया जाए।

हालांकि दिल्ली सरकार ने प्रदूषण रोकने के लिए कई कदम उठाए हैं। ग्रैप के तहत आपातकालीन प्रतिबंध, ऑड-ईवन योजना, स्कूलों का अस्थायी बंद होना, निर्माण कार्यों पर रोक और इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा—ये सभी कदम दिखाते हैं कि समस्या को स्वीकार किया गया है। लेकिन सवाल यह है कि क्या ये उपाय पर्याप्त हैं। सच तो यह है कि ये अधिकतर प्रतिक्रियात्मक कदम हैं, न कि निवारक क्योंकि सालों से दिल्ली में प्रदूषण की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है।

इन परिस्थितियों में हमें दुनिया के उन शहरों से सीखने की जरूरत है जिन्होंने कभी ऐसे ही संकट का सामना किया था। लंदन का 'ग्रेट स्मॉग' (1952) एक ऐतिहासिक उदाहरण है, जिसने वहां की सरकार को 'क्लीन एयर एक्ट' लाने पर मजबूर किया। आज लंदन की हवा दिल्ली से कहीं बेहतर है क्योंकि वहां निजी वाहनों पर भारी 'कंजेशन चार्ज' लगाया गया और सार्वजनिक परिवहन को विश्व स्तरीय बनाया गया। इसी तरह, बीजिंग ने पिछले एक दशक में अपने प्रदूषण स्तर को 40% तक कम किया है। उन्होंने कोयले से चलने वाले बिजली संयंत्रों को शहर से बाहर किया, इलेक्ट्रिक वाहनों को अनिवार्य स्तर तक बढ़ावा दिया और 'रीयल-टाइम' सख्त निगरानी प्रणाली लागू की। दिल्ली भी इन उपायों पर काम करके प्रदूषण की समस्या से निजात पा सकती है। इसके साथ ही, शहरी हरित क्षेत्र भी बढ़ाने होंगे। रिसर्च यह बताती है कि यदि किसी शहर के कुल क्षेत्रफल का 20-25 प्रतिशत हिस्सा हरित क्षेत्र हो, तो प्रदूषण के स्तर में उल्लेखनीय गिरावट आ सकती है। दिल्ली इस मानक से काफी पीछे है।

निर्माण और उद्योग के क्षेत्र में तकनीक आधारित सख्त निगरानी की जरूरत है। रियल-टाइम मॉनिटरिंग, स्वचालित जुमार्ना प्रणाली और पारदर्शी डेटा सार्वजनिक करना ऐसे कदम हैं, जो केवल कागजों में नहीं, बल्कि जमीन पर असर दिखा सकते हैं। पराली के मामले में भी किसानों को दोषी ठहराने के बजाय पराली को ऊर्जा में परिवर्तित करके उसे समाधान का हिस्सा बनाना होगा। अनेक वैज्ञानिक विकल्प मौजूद हैं, लेकिन जब तक उन्हें व्यवहारिक रूप से अपनाया नहीं जाएगा, तब तक समस्या बनी रहेगी।

इस संकट की गंभीरता को जनसंख्या के संदर्भ में भी देखना जरूरी है। क्योंकि दिल्ली-एनसीआर की आबादी लगभग 4 से 5 करोड़ है, जो भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 3 से 4 प्रतिशत हिस्सा है। यानी देश का हर पच्चीसवां नागरिक इस क्षेत्र में रहता है। यदि इतनी बड़ी आबादी लंबे समय तक जहरीली हवा में सांस लेती रहे, तो इसका असर केवल स्थानीय नहीं रहेगा। यह देश की स्वास्थ्य प्रणाली पर दबाव डालेगा, कार्यबल की उत्पादकता घटाएगा और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को कमजोर करेगा।

इन परिस्थितियों में दिल्ली का प्रदूषण अब मात्र पर्यावरण का मुद्दा नहीं रह गया है, बल्कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिरता का भी सवाल बन चुका है। यह उस बच्चे की पीड़ा बन चुका है जो मास्क पहनकर स्कूल जाता है, उस बुजुर्ग की बेबसी बन चुका है जो सुबह की सैर छोड़ने के लिए मजबूर है, और उस परिवार की मजबूरी बन चुका है जो खिड़कियां बंद करके भी साफ हवा नहीं पा सकता। अगर आज भी हम इसे केवल मौसमी समस्या मानते रहे, तो इतिहास हमें उस पीढ़ी के रूप में याद रखेगा जिसने सब कुछ देखा, सब कुछ जाना, लेकिन फिर भी कुछ नहीं बदला।

(लेखिका पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय में हिंदी सलाहकार समिति की सदस्य हैं।)

बच्चों के शरीर पर इसका असर इसलिए भी ज्यादा गंभीर है क्योंकि उनके फेफड़े और प्रतिरक्षा तंत्र अभी विकसित हो रहे होते हैं। शोध बताते हैं कि प्रदूषित हवा में पले-बढ़े बच्चों की फेफड़ों की क्षमता सामान्य बच्चों की तुलना में 10झ20 प्रतिशत तक कम हो सकती है। इसका असर केवल उनके स्वास्थ्य पर नहीं, बल्कि उनकी सीखने की क्षमता, शारीरिक विकास और भविष्य की उत्पादकता पर भी पड़ता है। यह एक ऐसा नुकसान है जिसकी भरपाई वर्षों बाद भी मुश्किल होती है।

राजनीति में नैतिकता और योग्यता के मानक

प्रसंगवश

हृदयनारायण दीक्षित

अभिलाषाएं अनंत हैं। सबसे बड़ी अभिलाषा आनंद प्राप्ति है, लेकिन संसार दुखमय है। मनुष्य प्राचीन काल से ही सुखी देश में रहना चाहता है। वेदों में आदर्श राष्ट्र की सुंदर अभिलाषाएं हैं। आधुनिक राजनीति निन्दित क्षेत्र है। संसदीय राजनीति का भाषाशास्त्र ही कर्कश और बहुधा अश्लील है। यहां आरोप हैं, प्रत्यारोप हैं, जाति, क्षेत्र, मजहब, पंथ के उन्माद हैं। लेकिन प्राचीन भारतीय राजनीति लोकमंगल का उपकरण थी। कुछेक विद्वान लोकतंत्र को यूरोपीय परम्परा की देन मानते हैं। यूरोपीय जनतंत्र और संसद की कल्पनाएं 13वीं सदी के बाद की हैं। लेकिन भारत में राजधर्म और नीतिशास्त्र का विकास ईसा पूर्व कम से कम 6-7 हजार वर्ष पहले ही शुरू हो गया था। कौटिल्य का अर्थशास्त्र ईसापूर्व लगभग 340 वर्ष में माना जाता है। मौर्यकाल और कौटिल्य ज्ञात इतिहास में हैं। ह्यअर्थशास्त्रह्न के रचनाकाल में राजनीति पर ढेर सारे विचार प्रचलित थे। कौटिल्य के अर्थशास्त्र (वाचस्पति गौरौला के भाष्य) में वृहस्पति, शुक्राचार्य, भारद्वाज, पाराशर, चारायण, नारद आदि पूर्ववर्त विचारकों का उल्लेख किया गया है। शुक्रनीति में राज्यव्यवस्था का खूबसूरत विवरण है। मसलन ह्नराजा बहुमत के अनुसार कार्य करे-कुर्याद् बहुसंमतम्ह्न (अध्याय 1) शुक्रनीति में योग्यता को ही नियुक्ति का आधार माना गया है ह्नकर्मियों की नियुक्ति, पदोन्नति योग्यता और काम के आधार पर करे, जाति या कुल के आधार पर नहीं।'

शुक्रनीति में मोहित करने वाली राजनैतिक संरचना है। यहां सेना के अंगो पदों के भी नाम व विवरण हैं। प्रधानमंत्री, मंत्री, सचिव, अमात्य व पुरोहित के वेतन सुस्पष्ट रखने के निर्देश हैं।ह्न (अध्याय 2) राजा को निर्देश है कि वृक्षारोपण की चिन्ता करे। गांव में गांव के लिए उपयोगी वृक्ष और वनों में जंगली वृक्ष लगाए। (अध्याय 4) राजा को प्रतिदिन के चैबीस घंटो का समय विभाजन करना चाहिए। आय-व्यय की प्रतिदिन जांच जरूरी है। राजा स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करे। (अध्याय 1) अधिकारियों को एक ही स्थान पर न रखने और स्थानान्तरण के भी निर्देश हैं। (अध्याय 2)

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की शुरूवात में ही शुक्राचार्य व वृहस्पति को नमस्कार किया है। उन्होंने वाद विवाद के अवसर के लिए शुक्रचार्य के मत का उल्लेख किया है। शुक्रनीति ऐतिहासिक रचना है। गुस्ताव ओपर्ट ने इस ग्रन्थ पर काफी श्रम किया है। उनके विवेचन में यह ईसापूर्व की रचना है। मूलभूत विषय है राजनीति की विषय वस्तु और लोकतंत्र। इस विषय सामग्री का आधार कौटिल्य हैं। शुक्राचार्य हैं। यथार्थवादी दर्शन है। यहां समग्र लोक को मधुमय बनाने वाली राजनीति थी।

ऋग्वेद (9.113.10 तथा 9.113.11) में प्रार्थना है, ह्नजहां सारी कामनाएं पूरी होती हों-यत्र सत्यस्य परमं निधानं तत्र मा सोमामृतं कृधि। यत्र स्थिरं सुखं चास्ति तत्र मा अमृतं कृधि। जहां तृप्ति दायक अन्न हो। हे देवों आप वही स्थायित्व दें। अमृतत्व दें। जहां आनंद, मोद, मुद व प्रमोद हैं। यत्रा नंदास च मोदाश्च मुद प्रमोद आसते। जहां कामनाएं तृप्त होती हैं। आप वहां अमृत दें। इस सबके लिए एक आदर्श राज्य व्यवस्था चाहिए। आदर्श राजव्यवस्था के अभाव में राष्ट्र सुखी नहीं होते। इसी प्रार्थना में कहते हैं, ह्नजहां विवश्वान का पुत्र राजा है। जहां विशाल नदियां बहती हैं। जहां आनंद का द्वार है। आप हमें वहां स्थायित्व दें।ह्न स्तुति है, ह्नजहां सूर्य का अखण्ड तेज प्राप्त होता है, उसी क्षेत्र में मुझे अमृतत्व दें।ह्न सारी कामनाएं स्वाभाविक हैं, भौतिक हैं, लेकिन एक सुंदर राजव्यवस्था की आवश्यकता की बात महत्वपूर्ण है।

आदिम काल में न राजा था और न ही राज्य। अथर्ववेद में राज्यव्यवस्था के जन्म और विकास की सुंदर यात्रा है, ह्नपहले राज्यरहित राजा के विकास का सुंदर उल्लेख है, ह्नपहले राज्य रहित राजा की दशा थी फिर विकास हुआ। परिवार संस्था आई। फिर विकास हुआ और आह्वनीय दशा आई। इसके बाद विचार विमर्श बढ़े। फिर दक्षिणाग्नि दशा आई। यहां दक्ष विशेषज्ञ दशा का अर्थ है कुशल लोगों का नेतृत्व मिलना। विकास होता रहा। इसी के विकास से समिति बनी। यह राजा को पदासीन करती थी और पद से हटाती भी थी। वेदों में उल्लेख है, ह्नराजा समिति में जाता है।ह्न अर्थात राजा निरंकुश नहीं है। वह समिति के प्रति उत्तरदाई है।

आधुनिक काल में ज्यादातर राज व्यवस्थाएं किसी न किसी रूप में लोकतांत्रिक हो गई हैं। अमेरिकी राज्यव्यवस्था में राष्ट्रपति की प्रभुता है। रूस में राष्ट्रपति का वर्चस्व है। ब्रिटेन में संसद की प्रभुता है। भारत में संविधान की सर्वोपरिता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदान का बहुत महत्व है। विचार आधारित पार्टियां चुनाव के दौरान अपने पक्ष में वातावरण बनाती हैं। राजनैतिक दल चुनाव में अपने प्रत्याशी खड़े करते हैं। किसी भी राजनीतिक दल के लिए संगठन बनाना जरूरी है। कार्यकर्ता आधारित संगठन पार्टी के पक्ष में लोकमत बनाते हैं। सारी दुनिया में राष्ट्रवादी संगठन हैं। भारत का स्वाधीनता संग्राम भी राष्ट्रवादी था। आज कथित सेकुलरवादी संगठन और व्यक्ति हिंदुत्व को सांप्रदायिक बताते हैं। लेकिन स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख योद्धा महात्मा गांधी ने लिखा था कि, मुझसे हिंदुत्व निकाल दो, तो मेरे पास कुछ नहीं बचेगा।' स्वाधीनता संग्राम के आगे पीछे कांग्रेस राष्ट्रवादी संगठन भी थी। संगठन अपरिहार्य है। वामपंथी भी संगठन की महत्ता जानते थे। स्वाधीनता के बाद सांप्रदायिकता चरम पर थी। भारत विभाजन हो चुका था। पाकिस्तान सांप्रदायिक आधार पर बंट गया था। धीरे-धीरे संगठन का तेज घटा। पंडित नेहरू के नेतृत्व में सरकार तो थी, लेकिन संगठन नहीं था।

1951 में भारतीय जनसंघ का जन्म हुआ। इसका सांगठनिक ढांचा धीरे-धीरे मजबूत हो रहा था। संगठन के चुनाव होते थे। संगठन आंतरिक लोकतंत्र से समृद्ध था। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अनावश्यक रूप से आपातकाल (1975) लगाया। जनसंघ सहित सभी दलों के कार्यकर्ता जेलों में भेज दिए गए। आपातकाल हटाने के बाद 1977 में संगठन कांग्रेस, सोशलिस्ट और लोकदल तथा भारतीय जनसंघ ने मिलकर जनता पार्टी बनाई। उच्च उद्देश्यों से सशक्त होने के बावजूद जनता पार्टी के पास संगठन का ढांचा नहीं था। जनसंघ घटक के लोगों पर दोहरी सदस्यता के आरोप लगे। जनता पार्टी टूट गई। कांग्रेस कई दफा टूटी। पहली टूट में एक धड़ा कांग्रेस (ओ) और दूसरा कांग्रेस (आई) कहलाया। कांग्रेस की टूट से ही तृणमूल कांग्रेस बंगाल में व राष्ट्रवादी कांग्रेस महाराष्ट्र में बनी। जनता दल बेमेल संगठन टूटा। एक धड़ा जनता दल एस व एक धड़ा जनता दल यू हो गया। पंडित अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी बनी। भाजपा के संगठन पर कई विदेशी भारतीय विद्वानों ने शोध किया है और आश्चर्य व्यक्त किया है कि भारत जैसे विशाल देश में ऐसा मजबूत संगठन विचारणीय है।

पिछले सप्ताह भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव संपन्न हुआ है। बिहार के नितिन नवीन निर्विरोध राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष चुने गए हैं। इसी प्रकार देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में संगठन के प्रदेश अध्यक्ष का निर्वाचन संपन्न हुआ। पंकज चौधरी को प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। साधारण प्रकृति के असाधारण राजनेता श्री पंकज चौधरी ने एक आदर्श सांसद की भूमिका का निर्वाहन भी किया है। चौधरी सात बार के सांसद हैं। एक ही पार्टी के टिकट पर बिना क्षेत्र बदले सात बार सांसद होना आश्चर्यजनक है। चौधरी लोकप्रिय हैं, संसदीय परिपाटी के निर्वाहनकर्ता श्री चौधरी की प्रशंसा पूरे देश में होती है। यूपी के भाजपा विरोधी दल सदमे में हैं और भाजपा के कार्यकर्ता उल्लासित।

(लेखक उप्र विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं)

हमारे जीवन में कुत्तों का खलल

व्यंग्य

ब्रजेश कानूनगो

अक्सर वीकेंड पर साधुरामजी और मैं लांग ड्राइव के लिए निकल जाते हैं। इससे मेरी पुरानी कार भी हमारे साथ थोड़ी सी ताजगी प्राप्त कर लेती है। साधुरामजी के साथ देश दुनिया की खट्टी मीठी खबरों की चर्चा करके हम भी नई ताजगी से भर जाते हैं। बड़ा आनंद आता है।

'इन दिनों हमारे यहां कुत्तों ने बड़ा आतंक मचाया हुआ है बंधु!' साधुरामजी ने कार में बैठते ही चर्चा के विषय को आगे बढ़ाया।

'हां,बिलकुल! अभी हाल ही में एक बच्चे को लिफ्ट में पालतू कुत्ते ने काट लिया। थोड़े दिन पहले एक सुरक्षा गार्ड को घायल कर दिया। हर कहीं लोग कुत्तों के इस खतरनाक व्यवहार से चिंतित हैं। हमारे जीवन में इनका अवांछित अतिक्रमण सबको परेशान कर रहा है।' मैने कार स्टार्ट करते हुए कहा।

'कुछ न कुछ इनका करना ही पड़ेगा!' साधुरामजी बोले।

तभी एक पिल्ले ने मेरी कार के सामने आकर खुदकुशी करने का विचार बनाया। मैं कह नहीं सकता किस वजह से उसने मेरी ही कार को आत्महत्या का माध्यम बनाया होगा।

'कुत्ता कहीं का, इसे मेरी ही कार मिली मरने के लिए!' घबराहट में मेरे मुंह से उसके लिए कुत्ते की ही गाली निकली। मुझे गुस्से के साथ साथ एतराज भी था कि वह इंसानों के लिए बनाई गई सड़क पर आया ही क्यों!'

'तुम्हारा मतलब है कि जब कुत्ते के पिल्ले कोई सड़क पार करें तब उन्हे इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि वह उनके बाप दादा की जागीर नही है कि यहाँ वहाँ ताकते हुए उस पर आराम से चहल कदमी करते फिरें। सड़क सरकार मनुष्य के लिए बनाती है। यह सरकार की मर्जी पर है कि उस पर भ्रमण करने की इजाजत वह किसे दे और किसे नही दे। कुत्ते और अन्य प्राणियों के पिल्ले कोई टैक्स नही चुकाते कि वे भी उसका उपयोग करें और फ्री-फोकट में हमारी गाड़ियों के सामने आकर हमारी जान को मुसीबत में डालें।' साधुरामजी चुहुल के मूड में आकर मजे लेने लगे।

'और नहीं तो क्या! न कुत्ते का बच्चा सड़क का साझेदार बनने की कोशिश करता न वह हमारी गाड़ी के रास्ते में रुकावट बन पाता। स्वयं की गलती का खामियाजा तो उसको भुगतना ही पडेगा साधुरामजी।' अब थोड़ा मूड मेरा भी बनने लगा था।

'जब हम बडे आराम से कैलाश खैर के सूफियाना प्रेम गीतों के रस में सराबोर होते हुए सफर का मजा ले रहे थे कि साले इस कम्बख्त कुत्ते के पिल्ले ने सारा मजा किरकिरा करके रख दिया। यह तो अच्छा हुआ कि सामने कुत्ते का पिल्ला ही आया, खुदा ना खास्ता कोई आदमी का बच्चा आ गया होता तो...!' साधुरामजी पूरे मूड में आ गए।

हम कहां पीछे रहने वाले थे थोड़े दार्शनिक अंदाज में कहने लगे-'यों देखा जाए तो यह बात केवल डामर और सीमेंट से बनाई गई सड़कों तक ही सीमित नही है मित्र, जहाँ अनाधिकृत जीवों का आना-जाना बना रहता है...देश में कई प्रकार की अन्य सड़कें भी हैं और उन पर कई प्रकार की गाड़ियां दौड लगा रहीं हैं।' 'जैसे? जरा स्पष्ट तो करो...' साधुरामजी ने मेरी तरफ ताकते हुए कहा।

'मसलन राजनीति को ही लें। यह भी सत्ता तक पहुंचने की एक सड़क ही है। अनेक पार्टियाँ अपनी अपनी विचारधाराओं के रंगों और रणनीति के दुपट्टे टोपियां डाले, विभिन्न तकनीकों से लेस होकर, सत्ता प्राप्ति का महान लक्ष्य लिए प्रजातंत्र की सड़क पर दौड़ लगा रही हैं। अब इस दौड़ में यदि कोई अवांछित आपके राजनीतिक हितों की राह में आकर बाधक बन जाए तो उसका तो कुत्ते के पिल्ले की तरह कुचल जाना निश्चित ही है।' मैंने साधुरामजी की कमजोर नस को दबाया।

'तो भैया, इस बात को तो अब यहीं खत्म करो और जरा इन बेलगाम पिल्लों के आतंक पर अंकुश लगाने का उपाय करो वरना ये इसी तरह हमारे जीवन की खुशनुमा राह में आकर हमें मुश्किल में डालते रहेंगे।' कहते हुए साधुरामजी ने प्रसंग का लगभग पटाक्षेप ही कर दिया।

(लेखक वरिष्ठ व्यंग्यकार हैं)

दैनिक सवेरा टाइम्स

नई दिल्ली, रविवार, 21 दिसम्बर 2025

यदि आप अपने सपने पूरे नहीं करेंगे तो कोई दूसरा अपने सपने पूरे करने के लिए आपके सपने खरीद लेगा। –धीरूभाई अम्बानी

बांग्लादेश में भड़की हिंसा और उपद्रवियों का भारत विरोधी तेवर

भारत के प्रति बांग्लादेश का रुख उस समय पूरी तरह बदल गया था जब निवार्सित प्रधानमंत्री शेख हसीना को बांग्लादेश से जान बचाकर निकलने के उपरांत नई दिल्ली ने अपने यहां शरण दी थी। दंगों और विद्रोह के माहौल में बांग्लादेश में देखरेख सरकार का गठन किया गया जिसका नेतृत्व नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस को सौंपा गया। यूनुस की नीतियां पाकिस्तान के प्रति अधिक नर्म रहीं जबकि भारत के प्रति पूरा बांग्लादेश विरोध के रंग में रंग गया। बांग्लादेश की एक कथित अदालत ने शेख हसीना को मृत्युदंड की सजा सुनाई और भारत ने उन्हें बांग्लादेश को सौंपने से इंकार कर दिया, इस पर बांग्लादेश की त्यौरियां पूरी तरह भारत के खिलाफ चढ़ गईं। द्विपक्षीय संबंध रसातल में पहुंच गए।

यह परवाह भी नहीं की गई कि भारत के साथ बांग्लादेश का जो विदेशी व्यापार हो रहा है, वह उनकी आर्थिकता का बड़ा सहारा है। लेकिन सवाल यहां आर्थिक मूल्यों का नहीं, धार्मिक सांप्रदायिकता का है। शेख हसीना को सत्ताच्युत करने वाले छात्र आंदोलन में उभरे एक छात्र नेता शरीफ उस्मान हादी ने पिछले दिनों ग्रेटर बांग्लादेश का एक नक्शा प्रदर्शित किया जिसमें भारतीय इलाकों को भी बांग्लादेश का हिस्सा दिखाया गया था। इसके कुछ देर बाद 12 दिसम्बर को हादी को दो हमलावरों ने गोली मार दी। हादी के सिर में गोली लगने से उनकी हालत गंभीर थी, उन्हें इलाज के लिए सिंगापुर ले जाया गया था। शुक्रवार को जैसे ही उस्मान हादी की मौत का समाचार फैला, बांग्लादेश में हिंसक प्रदर्शन शुरू हो गए।

शेख हसीना विरोधी हादी की हत्या के बाद कुछ शरारती और उपद्रवी तत्वों ने यह बात फैलाने में कोई कसर नहीं रखी कि हादी का हत्यारा भारत भाग गया है। हालांकि उसकी पहचान फैसल करीम के रूप में की गई है लेकिन फिलहाल वह गिरफ्त से बाहर है। हिंसक विरोध जताते हुए हादी समर्थकों ने बंगबंधु शेख मुजीबुर्रहमान के निवास और शेख हसीना की पार्टी आवामी लीग के दफ्तरों पर तोड़फोड़ की। बांग्लादेश के दो बड़े अखबारों डेली स्टार और प्रोथोम आलो के दफ्तरों में आग लगा दी जिसके कारण अखबार की सेवाएं ठप्प होकर रह गईं।

उपद्रवियों ने ढाका यूनिवर्सिटी में शेख मुजीबुर्रमान हॉल का नाम बदलकर शहीद उस्मान हादी हॉल कर दिया और इसके पोस्टर जारी कर दिए। भीड़ ने एक हिंदू युवक को पीट-पीटकर मार डाला और उसके नग्न शव को फांसी पर लटकाकर जला दिया। हिंसा के बीच एक पत्रकार को भी गोली मार दी गई। कई दुकानों को जला दिया गया और सांस्कृतिक भवनों पर भी हमले किए गए। बड़े पैमाने पर तोड़फोड़ के बीच मोहम्मद यूनुस का खानापूर्ति बयान आया कि बांग्लादेश में हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है। उन्होंने हिंदू युवक की हत्या की निंदा भी की। लेकिन शुक्रवार शाम को हिंसा उस समय और भी अधिक भड़क गई जब उस्मान हादी का शव बांग्लादेश पहुंचा। ढाका में जगह-जगह आगजनी शुरू हो गई।

हादी की हत्या में भारत का हाथ होने की अफवाह फैलाने वालों ने उन्मादी लोगों को भारत विरोधी तेवर मुहैया करवा दिया है। स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि भारतीय सीमा पर सेना को अलर्ट कर दिया गया। सोचा यह जा रहा था कि फरवरी में बांग्लादेश में चुनावों के मद्देनजर माहौल सकारात्मक होगा और प्रजातांत्रिक सरकार की स्थापना होने से भारत और बांग्लादेश के संबंध पटरी पर आ सकते हैं लेकिन स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत हो गई है। बांग्लादेश की राजनीति इस समय उग्र तत्वों के हाथों में चली गई है। कट्टरपंथी यहां तक कहने लगे हैं कि भारत ने बांग्लादेशियों को प्रजातंत्र उपहार के रूप में नहीं दिया बल्कि पाकिस्तान के साथ अपनी दुश्मनी निभाने के लिए उसके दो टुकड़े कर दिए। इस समय बांग्लादेश में जो स्थिति बन रही है, वह भारत के लिए सहज नहीं है। हिंदुओं की एक बड़ी संख्या बांग्लादेश में रहती है। उनकी सुरक्षा की चिंता भी भारत सरकार को करनी होगी। फिलहाल तो बांग्लादेश की सरकार को पहले वहां हिंसा पर लगाम लगानी होगी। **–शीतल विज**

आवारा कुत्तों की समस्या पर सुप्रीम कोर्ट का रुख

वैसे तो इस समय भारत के उभरते संवरते नागरिक जीवन में बहुत सी समस्याएं व्यवधान पैदा कर रही हैं लेकिन आज हम भारत के महानगरों के चौक-चौराहों पर खड़े भिखारियों के झुंड की बात नहीं कर रहे। चर्चा आवारा कुत्तों और लावारिस पशुओं के बारे में हो रही है जिन्होंने देश का आम जनजीवन मुहाल कर रखा है। आए दिन कुत्तों के काटने से मौत की खबरें मिलती रहती हैं और लावारिस पशुओं के कारण वाहन दुर्घटनाएं घटती नजर आती हैं।

हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने पहले ही यह निर्णय दिया था कि आवारा कुत्तों को सार्वजनिक स्थानों पर भोजन देना बंद किया जाए। अगर कोई पशु प्रेमी चाहे तो उन्हें अपने घर में रखकर जरूर पाल सकता है लेकिन लोगों की जान खतरे में नहीं डाली जानी चाहिए। उधर सरकार का पक्ष है कि सभी आवारा कुत्तों का बंध्याकरण कर दिया जाए। बाद में उन्हें उसी जगह न छोड़ा जाए जहां से उनको पकड़ा गया था बल्कि इसके लिए शहरों और गांवों में उचित आश्रय स्थल बनाए जाएं। इस जिम्मेदारी को पूरा नहीं किया गया, इसलिए देश और राज्यों में आवारा कुत्तों और लावारिस पशुओं की संख्या बढ़ती जा रही है। पशु प्रेमी लॉबी मानवता के नाम पर पशुओं पर किसी भी तरह के अत्याचार का विरोध कर रही है।

इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट में दायर एक याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि पशु प्राणियों का जीवन सुरक्षित रखे जाने में किसी को एतराज नहीं है लेकिन जब लावारिस पशु और आवारा कुत्ते सड़कों पर घूमते हुए आम आदमी की जिंदगी का काल बन जाते हैं तो समस्या का समाधान करना आवश्यक हो जाता है। जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की खंडपीठ के सामने प्रस्तुत याचिका पर सुनवाई के दौरान कपिल सिब्बल ने भी कहा कि बेजुबान जानवरों का जोर-जबरदस्ती से निष्कासन मानवता के विपरीत है।

असल में दिक्कत यह है कि पशु सेवा की मानवीय पुकार तो बहुत है लेकिन लावारिस और खूंखार हो रहे प्राणियों के लिए पर्याप्त आश्रय स्थल नहीं है। इस समस्या को लंबे समय तक गंभीर रूप से नहीं लिया गया। हमारा विचार यह है कि चाहे चौकों पर खड़े भिखारी हों या सड़कों पर घूमते लावारिस पशु, उनके लिए एक वैकल्पिक और सुविधाजनक आश्रय का प्रबंध पहले होना चाहिए, कानूनी कार्रवाई का डंडा बाद में। **–शीतल विज**

Email: letter2editor@dainiksaveratimes.net

परनीत सचदेव

अपने मूल्यों के विरुद्ध कार्य करने से कैसे आत्मा टूटकर बिखर जाती है

विश्व स्वास्थ्य संगठन बार-बार चेता चुका है कि कभी दुर्लभ मानी जाने वाली नैतिक चोट अब एक शांत महामारी बन चुकी है

अमरीका के मिनसोटा प्रांत के मिनियापोलिस शहर में 25 मई 2020 को 46 वर्षीय अश्वेत नागरिक जॉर्ज फ्लॉयड को 44 साल के श्वेत पुलिस अफसर डेरेक चॉविन ने मार डाला था। फ्लॉयड को एक स्टोर के क्लर्क4 की इस शिकायत पर पकड़ा गया था कि उसने 20 डॉलर के एक जाली नोट का इस्तेमाल कर खरीदारी की। चॉविन ने फ्लॉयड की गर्दन को 9 मिनट तक अपने घुटने से दबाए रखा, जबकि इस दौरान फ्लॉयड के हथकड़ियां लगी हुई थीं और वह सड़क पर मुंह के बल लेटा हुआ था। जमीन पर मुंह के बल लेटाए जाने से पहले फ्लॉयड ने घबराहट के संकेत दिखाए थे और यह शिकायत की थी कि उसे बंद जगह से डर लगता है और वह सांस नहीं ले पा रहा है। नियंत्रित किए जाने के बाद वह और अधिक परेशान हो गया, अभी भी सांस लेने में दिक्कत की शिकायत कर रहा था, पुलिस अफसर का घुटना उसकी गर्दन को दाबे हुए था और आसन्न मौत का डर था। कुछ मिनटों के बाद फ्लॉयड ने बोलना बंद कर दिया।

वहां मौजूद एक दूसरा पुलिस अफसर बहुत ही गहरी नैतिक दुविधा में फंस गया। उस समय उस अफसर की नैतिकता उसे कचोट रही थी लेकिन उसने कहा कुछ नहीं। उसे एक अनकहे नियम को तोड़ने का भय था। एक साल बाद साक्षात्कारों में उसने स्वीकार किया कि उसने एक हजार बार उस दृश्य की दुबारा कल्पना की और वह अपनी उस चुप्पी पर शर्मिंदा था जिसने उसने बोलने नहीं दिया। उस अफसर ने उस समय अन्याय को रोकने के लिए कुछ नहीं किया जबकि वह ऐसा कर सकता था।

अर्जुन को श्रीकृष्ण ने कहा था कि व्यक्ति को दबाव के दौरान भी अपना नैतिक कर्त्तव्य नहीं छोड़ना है:

अंतर्यात्रा

'दूसरे के धर्म का अनुसरण करने के बजाय स्व धर्म को निभाते हुए नष्ट होना श्रेष्ठतर है। दूसरे के मार्ग का अनुसरण करना बड़े संकट की ओर ले जाता है।' –भगवद्गीता 3:35

यह श्लोक स्थापित करता है कि नैतिक सत्यनिष्ठा कोई विकल्प नहीं है, बल्कि आंतरिक समरसता की नींव है।

जब हम अपनी नैतिक प्रकृति के विरुद्ध कार्य करते हैं तो हमारे भीतर चुपचाप ऐसे घाव उगते हैं। *इस प्रकार की पीड़ा, जिसे आज मनोवैज्ञानिक* ***'मोरल इंजरी'*** *या* ***नैतिक चोट*** *कहते हैं, आंतरिक पीड़ा के सबसे गहन रूपों में से एक है।*

येल विश्वविद्यालय की डायना डिवेचा और रॉबिन स्टर्न एक ऐसी आठ वर्षीय बच्ची का वर्णन करती हैं जो स्कूली दबंगों के साथ जुड़ने के बाद व्यथित होकर घर लौटी। उसने किसी को प्रताड़ित नहीं किया था, लेकिन जब ये दबंग दूसरों को परेशान कर रहे थे, तब वह हंसी थी। पहले वह स्वयं उनकी दादागीरी की शिकार रही थी; अब उसने उस नाजुक रोमांच का स्वाद चखा जो निर्दयता से उपजा था। उसका छोटा-सा शरीर मतली, कंपकंपी और शर्म से विद्रोह कर उठा। *यह इस बात का प्रमाण था कि उसका नैतिक कम्पास थरथराकर अपनी धुरी से हट गया था।*

विज्ञान यह पुष्टि करता है कि बच्चे नैतिक रूप से खाली नहीं होते। येल के एक ऐतिहासिक अध्ययन में पाया गया कि छह महीने के शिशु भी न्यायप्रिय और सहायक पात्रों को हानिकारक पात्रों की तुलना में लगातार प्राथमिकता देते हैं, *जो जन्म से ही प्रारंभिक नैतिक संज्ञान की उपस्थिति का संकेत देता है* (हैमलिन एवं अन्य, नेचर, 2007)। न्यूरोसाईंटिफिक शोध दर्शाता है कि करुणा मस्तिष्क के पुरस्कार मार्गों को सक्रिय करती है और पैरासिम्पेथेटिक टोन अर्थात कल्याण के जैविक संकेत को बढ़ाती है। वहीं अनैतिक कार्य उच्च स्तर के कॉर्टिसोल और सूजन प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न करते हैं। जब हम अपनी अंतर्निहित नैतिक संरचना से बाहर कदम रखते हैं, तो हम शरीर, मन और आत्मा में सचमुच पीड़ित होते हैं।

'मनुष्य स्वयं द्वारा स्वयं को उठाए; स्वयं को नीचा न करे। क्योंकि आत्मा ही आत्मा का मित्र है, और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है।'– भगवद्गीता 6:5

यह आंतरिक नैतिकता पर गीता का सबसे स्पष्ट कथन है; यह विचार कि मुक्ति या दुख की शुरुआत मनुष्य के अपनी पसंदगियों से होती है।

आहत अंतरात्मा का मनोविज्ञान

नैतिक चोट डर-आधारित आघात से बिल्कुल

अलग होती है। किसी दर्दनाक घटना का अनुभव करने या उसे देखने से उत्पन्न होने वाली मानसिक स्थिति पीटीएसडी (पोस्ट ट्रॉमैटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर) खतरे और असहायता से उत्पन्न होती है; नैतिक चोट अपराधबोध, शर्म, नैतिक क्रोध या किसी गलत काम को देखने से पैदा होती है जिसे रोका नहीं जा सका।

यह विचार पहली बार चिकित्सीय साहित्य में तब आया जब वियतनाम, इराक और अफगानिस्तान के सैनिकों ने बताया कि उनकी पीड़ा मुख्य रूप से डर से नहीं बल्कि उन कार्यों या चूकों से था जिन्हें वे अपनी गहरी मान्यताओं का उल्लंघन मानते थे। एक अग्रणी अमेरिकी मनोचिकित्सक जोनाथन शाय ने देखा कि उनका दर्द तब पैदा हुआ जब उनका 'नैतिक क्षितिज ढह गया'।

नैतिक चोट का वैश्वीकरण: छाया महामारी

कोविड महामारी के दूसरे साल में ब्राजील के शहर साओ पाउलो की एक प्राइमरी स्कूल शिक्षक को निर्देश दिया गया कि अगर बच्चों के परिवारों के पास टिकाऊ इंटरनैट नहीं है और वे ऑनलाइन क्लास में शामिल नहीं हो सकते तो उन्हें गैर-हाजिर दर्ज किया जाए। इस निर्देश का पालन करना गरीबों को दंड देने जैसा लगा, लेकिन उसने ऐसा किया, क्योंकि उसे डर था कि ऐसा न करने पर उसकी नौकरी चली जाएगी। जब एक मां ने रोते हुए फोन किया और बताया कि उसने अपने पति को खो दिया है और वह अपने फोन के लिए डेटा का खर्च नहीं उठा सकती, तो टीचर को *'नैतिक पतन'* महसूस हुआ, जैसा कि उसने बाद में शोधकर्ताओं को बताया (यूनेस्को-डब्लूएचओ साझा रिपोर्ट, 2021)। महीनों तक वह उस नियम को लागू करने का बोझ ढोती रही जिसे वह अन्यायपूर्ण मानती थी। उसने कहा, *'मैं एक शिक्षिक के तौर पर असफल नहीं हुई।' 'मैंने खुद को असफल कर दिया।'* यह एक चुपचाप क्रियाकलाप था, लेकिन इसकी आध्यात्मिक कीमत बहुत ज्यादा थी।

कोविड-19 के बाद के सालों में, नैतिक चोट सैन्य संदर्भों से आम जीवन में खतरनाक गति से फैल गई है, जिसे अब कुछ शोधकर्ता *छाया महामारी* कहते हैं।

2020 के वसंत में, इटली में कोविड-19 की पहली लहर के चरम पर, बर्गमो में एक युवा नर्स को एक बड़ी नैतिक चोट का सामना करना पड़ा। वेंटिलेटर की कमी के कारण उसे एक तेजी से बिगड़ते हुए बुजुर्ग आदमी के बजाय एक युवा मरीज को प्राथमिकता देने का निर्देश दिया गया। उसने इसका पालन किया, क्योंकि प्रोटोकॉल यही कहता था। लेकिन उसने बाद में शोधकर्ताओं को बताया कि उसके अंदर कुछ 'टूट गया'। उसने उस बुजुर्ग आदमी का हाथ पकड़ा जब वह दुनिया से जा रहा था, और फुसफुसाकर माफी मांग रही थी जिसे वह अब सुन नहीं सकता था। हफ्तों तक वह सो नहीं पाई, उसे यकीन था कि उसने अपनी इंसानियत का उल्लंघन किया है। उसने कहा, 'यह सही फैसला था, लेकिन मेरी आत्मा के लिए नहीं' (ग्रीनबर्ग एट अल., ऑक्यूपेशनल मेडिसिन, 2020)। उस पल में, उसका दुख बाहर के वायरस से नहीं, बल्कि अंदर की शांत टूटन से पैदा हुआ था।

मानवीय आपदाओं को कवर करने वाले पत्रकारों ने बुरे सपने, आत्म-संदेह और नैतिक सुन्नता को रिपोर्ट किया है। शिक्षक, पुलिस अधिकारी, देखभाल करने वाले और यहां तक कि कॉर्पोरेट कर्मचारी भी अब इसी तरह के लक्षणों का वर्णन करते हैं क्योंकि वे अपनी नौकरी बचाने के लिए अन्याय को नजरअंदाज करते हैं। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता इसे *'संस्थागत नैतिक चोट'* कहते हैं, जो नौकरशाही दबाव और घटते सार्वजनिक विश्वास के कारण एक बढ़ती हुई वैश्विक घटना है।

यही कारण है कि *विश्व स्वास्थ्य संगठन* ने बार-बार चेतावनी दी है कि *नैतिक चोट*, जिसे कभी दुर्लभ माना जाता था, अब एक खामोश महामारी है।

प्राचीन ज्ञान और मानवीय विवेक

ग्रीक लेखकों ने *'मियास्मा'* का वर्णन किया है, एक नैतिक प्रदूषण है जो आत्मा को ढक लेता है। हिंदू दर्शन *अधर्म* की बात करता है। बुद्ध की अंतर्दृष्टि भी उतनी ही गहरी है:

'मनुष्य स्वयं ही खुद को दूषित करता है; और स्वयं ही खुद को शुद्ध करता है।'

(धम्मपद, 165)।

महाभारत शुरू होने से पहले अर्जुन की मनोव्यथा नैतिक भ्रम से उत्पन्न होती है। कृष्ण कहते हैं:

'मनुष्य को स्वयं ही अपना उद्धार करना चाहिए; उसे स्वयं को नीचा नहीं दिखाना चाहिए। क्योंकि आत्मा ही आत्मा का मित्र है, और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है।'

(भगवद गीता 6:5)।

हम कैसे ठीक होते हैं: नैतिक सुधार

नैतिक चोट को ठीक करना न तो महज क्षमायाचना है, न ही खुद को दंड देना। नैतिक सुधार खुद को धीरे-धीरे वापस अपना दोस्त बनाने की प्रक्रिया है।

शोध से पता चलता है कि खुद से नफरत किए बिना गलती का सामना करने से उदासी और शर्म के लक्षण कम होते हैं। चाहे क्षमा मांगकर हो, व्यवहार बदलकर या सेवा करके हो, सुधार के कार्य नैतिक बोझ को कम करते हैं, जिसे मनोवैज्ञानिक *'नैतिक घाव का बोझ'* कहते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है:

'नानक, हर दिल के अंदर दिव्य प्रकाश चमकता है।'

–(गुरु ग्रंथ साहिब)

संदेश स्पष्ट है, गलत काम रोशनी को धुंधला कर सकते हैं, लेकिन उसे बुझा नहीं सकते।

आध्यात्मिक परंपराएं सुधार से आगे बढ़कर बदलाव की बात करती हैं। सेवा के साफ तौर पर मनोवैज्ञानिक लाभ हैं। कार्नेगी मेलन यूनिवर्सिटी के शोध से पता चलता है कि परोपकार सूजन के निशानों को कम करता है और भावनात्मक लचीलेपन को बेहतर बनाता है। खुद को माफ करना भी जैविक रूप से ठीक करने वाला है; यह अतिशय सोचने को कम करता है, कोर्टिसोल कम करता है और दिल की धड़कन की गति में बदलाव को बेहतर बनाता है।

आध्यात्मिकता जो अनोखी चीज देती है, वह है नैतिक श्रेष्ठता की संभावना:

यह वादा कि किसी का सबसे बुरा पल उसकी पहचान नहीं बनना चाहिए।

यह मदर टेरेसा से अक्सर जुड़ी इन पंक्तियों के पीछे की गहरी भावना है, जो कोलकाता में उनके अनाथालयों की दीवारों पर लिखी हैं:

'आज आप जो अच्छा करेंगे, वह अक्सर भुला दिया जाएगा। फिर भी अच्छा करते रहें... आखिर में, यह आपके और भगवान के बीच है। यह कभी भी आपके और उनके बीच नहीं था।'

(आलेख में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं।)

परनीत सचदेव (आई.आर.एस.) रीयल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी (रेरा) के चेयरमैन एवं प्रख्यात लेखक हैं।

parneetsachdev@gmail.com

विकसित भारत जी राम जी: 125 दिन के रोजगार की गारंटी

शिवराज सिंह चौहान
केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार

भारत गांवों का देश है। पूज्य बापू ने भी कहा था कि असली भारत गांवों में बसता है। गांव को विकसित बनाए बिना विकसित भारत का संकल्प साकार नहीं हो सकता। आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में गांवों को विकसित, आत्मनिर्भर, सशक्त और संपन्न बनाने के लिए कई योजनाएं चल रही हैं। हाल ही में संसद में पारित 'विकसित भारत-जी राम जी' बिल इसी दिशा में ऐतिहासिक कदम है।

पिछले कई दशकों से देश में कई सरकारें आईं और सभी ने ग्रामीण रोजगार की गारंटी देने के लिए कई प्रयास किए हैं। मनरेगा भी उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। लेकिन जमीनी हकीकत यह रही कि कागजों पर तो योजनाएं बहुत अच्छी लगती थीं, मगर गांवों में, खेतों-खलिहानों में, मेरे गरीब भाइयों-बहनों को वह हक नहीं मिल पाता था जिसका वादा किया गया था। फाइलों में काम दिखता था, पर जमीन पर मजदूर भूखा सोता था। कहीं भ्रष्टाचार था, कहीं व्यवस्था की कमजोरी, कहीं समय पर भुगतान नहीं होता था। और यह हमारी पीड़ा रही है।

आज जब विकसित भारत जी राम जी बिल की बात हो रही है, तो स्वाभाविक रूप से कुछ साथियों के मन में सवाल उठते हैं। वे पूछते हैं कि यह पुरानी व्यवस्था को कमजोर तो नहीं करेगा? क्या गरीब मजदूरों के अधिकार छिन तो नहीं जाएंगे? मैं इन चिंताओं का सम्मान करता हूं। किसी भी बड़े सुधार पर बहस होनी चाहिए, सवाल उठने चाहिए। यही लोकतंत्र की ताकत है। लेकिन साथ ही मैं आपसे निवेदन करूंगा कि इस नए विधेयक को खुले मन से, बिना किसी पूर्वाग्रह के पढ़िए और समझिए।

यह हर ग्रामीण परिवार को साल में 125 दिन के रोजगार की पक्की कानूनी गारंटी देता है। सिर्फ 100 दिन नहीं, बल्कि 125 दिन। और अगर 15 दिन के अंदर काम नहीं मिला, तो बेरोजगारी भत्ता मिलेगा। मनरेगा के जमाने में जो दिक्कतें थीं, जिनकी वजह से लोगों को उनका हक नहीं मिल पाता था, उन्हें हटा दिया गया है।

गांव का विकास सिर्फ रोजगार देने से नहीं होता, बल्कि गांव में ऐसी अधोसंरचना बनाने से होता है जो आने वाली पीढ़ियों के काम आएं। पानी के तालाब, सड़कें, सिंचाई की व्यवस्था, बाढ़-सूखे से बचाव के काम - ये सब जब मजदूरी के साथ-साथ होंगे, तो गांव खुद-ब-खुद मजबूत होगा। यही तो स्थायी विकास है। कुछ लोग कहते हैं कि वीबी-जी राम जी मांग-आधारित रोजगार को कमजोर करता है। लेकिन इस विधेयक को ध्यान से पढ़िए, हर धारा को समझिए।

धारा 5(1) साफ-साफ कहती है कि हर उस ग्रामीण परिवार के पात्र वयस्क सदस्य को कम से कम 125 दिन का गारंटीकृत रोजगार मिलेगा। यह बिल मांग के अधिकार को कमजोर नहीं करता, बल्कि इसे और मजबूत करता है। कुछ साथी कहते हैं कि यह योजना रोजगार की जगह संपत्ति बनाने को ज्यादा अहमियत देती है। यह सोच ही गलत है। रोजगार और गांव का विकास-ये दोनों एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। विधेयक साफ तौर पर आजीविका की कानूनी गारंटी देता है, और साथ ही उस रोजगार को ऐसे कामों से जोड़ता है जो गांव को मजबूत बनाएं, जो स्थायी हों, जो आने वाली पीढ़ियों के काम आएं।

धारा 4(2) और अनुसूची में चार मुख्य क्षेत्र बताए गए हैं - पानी की सुरक्षा, बुनियादी ग्रामीण ढांचा, आजीविका से जुड़ा ढांचा, और प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के काम। सोचिए, जब गांव में तालाब बनेगा तो मजदूर को मजदूरी भी मिलेगी और गांव को पानी भी मिलेगा। जब सड़क बनेगी तो रोजगार भी मिलेगा और गांव शहर से जुड़ेगा भी।

कुछ लोग भ्रम फैला रहे हैं कि यह योजना सारी शक्ति केंद्र में ले आएगी, गांव का अधिकार छीन लेगी। यह पूरी तरह से गलत है। धारा 4(1) से 4(3) एकदम साफ कहती है कि सारे काम गांव के स्तर पर तय होंगे, ग्राम सभा से मंजूरी लेनी होगी। ग्राम सभा -जहां गांव का हर व्यक्ति बैठता है, जहां गांव के लोग मिलकर

फैसला लेते हैं - वही तय करेगी कि उनके गांव में क्या काम होना चाहिए, किस चीज की जरूरत है।

विधेयक ने पुरानी व्यवस्था की एक बड़ी कमी को दूर किया है -बिखराव को। पहले एक विभाग अपना काम करता था, दूसरा विभाग अपना काम करता था, दोनों के मध्य कोई तालमेल नहीं था। अब सारे काम विकसित भारत राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना स्टैक में जोड़े जाएंगे, ताकि एक साथ मिलकर योजना बने, एक साथ काम हो, और पूरी व्यवस्था स्पष्ट दिखाई दे। इससे न तो भ्रष्टाचार होगा, न दोहराव होगा, न पैसों की बर्बादी होगी। यह ऊपर से थोपा गया केंद्रीकरण नहीं है, बल्कि मिलकर काम करने का तरीका है।

धारा 16, 17, 18 और 19 पंचायतों को, कार्यक्रम अधिकारियों को, जिला प्राधिकारियों को योजना बनाने, लागू करने और निगरानी का अधिकार देती हैं। एक बहुत महत्वपूर्ण सवाल उठाया गया है - खेती के व्यस्त मौसम में अगर सारे मजदूर सरकारी कामों में लग गए, तो किसान की फसल कौन काटेगा? यह सवाल बिल्कुल सही है, और विधेयक में इसका भी जवाब दिया गया है। धारा 6 राज्य सरकारों को अधिकार देती है कि वे साल में कुल साठ दिनों के लिए - जिसमें बुवाई और कटाई का समय आता है - पहले से ही घोषणा कर दें कि इन दिनों इस योजना के तहत काम नहीं होगा। इससे किसान को मजदूर मिलेंगे, फसल समय पर बोई जाएगी, समय पर कटेगी। और सबसे अच्छी बात यह है कि धारा 6(3) राज्यों को यह छूट देती है कि वे जिला, ब्लॉक या ग्राम पंचायत स्तर पर अलग-अलग घोषणा कर सकें। क्योंकि हर इलाके की खेती-किसानी अलग होती है। कहीं धान की बुवाई जून में होती है, कहीं जुलाई में। कहीं गेहूं की कटाई अप्रैल में, कहीं मई में। यह लचीलापन यह पक्का करता है कि बढ़ी हुई रोजगार गारंटी खेती में रुकावट नहीं, बल्कि सहयोगी बने। कुछ आलोचक पैसों की कमी की आशंका जताते हैं। वे कहते हैं कि राज्यों को कम पैसा मिलेगा।

बिल की धारा 4(5) और धारा 22(4) साफ कहती हैं कि राज्यों के लिए बजट तय, पारदर्शी मापदंडों के आधार पर बांटा जाएगा। कोई मनमानी और भेदभाव नहीं होगा। जिस राज्य को जितनी जरूरत होगी, जहां जितना काम होगा, वहां उतना पैसा जाएगा। साथ ही, यह व्यवस्था राज्यों को महज काम करने वाली एजेंसी नहीं, बल्कि विकास का साझेदार मानती है। तकनीक से बाहर किए जाने की आशंकाएं भी जताई गई हैं। कहा जाता है कि बायोमैट्रिक, मोबाइल ऐप - ये सब गरीब मजदूर के लिए मुश्किल होंगे। तकनीक का इस्तेमाल किसी को बाहर करने के लिए नहीं, बल्कि व्यवस्था को पारदर्शी बनाने के लिए किया जा रहा है। धारा 23 और 24 बायोमैट्रिक, जियो-टैग किए गए काम, रीयल-टाइम डैशबोर्ड और नियमित सार्वजनिक जानकारी को अनिवार्य बनाती हैं।

इससे क्या फायदा होगा? फर्जी हाजिरी नहीं होगी, फर्जी लोगों के नाम पर पैसा नहीं खाया जाएगा, झूठे रिकॉर्ड नहीं बनेंगे। जो ईमानदार मजदूर मेहनत करेगा, उसका पैसा सीधे उसके खाते में आएगा। बिचौलिए नहीं रहेंगे, भ्रष्टाचार नहीं रहेगा। यहां तकनीक को सख्त दरबान के रूप में नहीं, बल्कि मददगार के रूप में देखा गया है। अपवाद को संभालना, जिनके पास मोबाइल नहीं है उनकी मदद करना - यह सब इसके मूल डिजाइन में शामिल है। धारा 20 ग्राम सभा द्वारा सामाजिक व्यवस्था को मजबूत करती है, जिससे समुदाय की निगरानी और बढ़ती है। गांव के लोग खुद देखेंगे, जांचेंगे कि काम ठीक से हो रहा है या नहीं। तकनीक जवाबदेही को कमजोर नहीं करती, बल्कि मजबूत आधार देती है। यह गरीब का दुश्मन नहीं, बल्कि भ्रष्टाचार का दुश्मन है।

यह ग्रामीण भारत के मेरे भाइयो-बहनों को सच्चा सशक्तिकरण देने की दिशा में एक ठोस और विश्वास से भरा कदम है। यह गांव के विकास का नया संकल्प है। यह उस भारत की नींव रखने का प्रयास है जहां हर गांव समृद्ध हो, हर हाथ को काम मिले, हर परिवार खुशहाल हो, और हर गरीब सम्मान के साथ जी सके। विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा जब हमारे गांव विकसित होंगे। और वीबी जी राम जी उसी दिशा में एक मजबूत, विश्वासभरा और ईमानदार कदम है।

नैतिकता का सारा भार स्त्री के कंधे पर ही क्यों

आए दिन खबर पढ़ने और सुनने में आती है कि नशे में धुत युवतियों ने शॉपिंग मॉल, पब या रेस्टोरेंट में बाहर मारपीट मचा दी। इंदौर के विजय नगर, भंवरकुआं क्षेत्र में ऐसी खबरें ज्यादा सुनने में आती हैं। बाकी के शहरों में भी ऐसी खबरें आती होंगी। ऐसी छोटी-मोटी बाल खींचने की घटना यदि युवकों में हो जाए तो कोई खबर भी नहीं बनती है किंतु युवतियों में बाल खींचने और लात मुक्के मारने की घटना ही बड़ी खराब बन जाती है और बदस्तूर अखबारों में जगह मिलती है और वह खबर चाव से पढ़ी भी जाती है।

कुछ आठवीं कक्षा ग्रेस के अंकों से पास होने वाले लोग ऐसी खबरों में कली फुन्दे जोड़कर बताते हैं कि पापा की परियों ने धुत होकर मारपीट की और थाने पर

यक्ष प्रश्न/ शादाब सलीम

हंगामा किया। हम सारी नैतिकता का भार स्त्री के कंधे क्यों डालते हैं? लोग इतने पक्षपाती क्यों हैं? हमारे लड़के कोई कम कहर कर रहे हैं। मारपीट किसी की भी हो सकती है और शराब खुलेआम दुकानों पर बेची जाती है। जिसकी मर्जी होगी, खरीदेगा पिएगा लेकिन नैतिकता का बोझ महिलाओं के कंधे पर क्यों हैं? वह बेचारी पीकर कोने में चुप बैठ जाए और युवक विवाद होने पर चाकू तक फंसा दे।

जैसे एक युवक बदमाश हो सकता है, ऐसे ही एक युवती भी तो कुछ ऐसी ही हो सकती है। बदमाशों में हो जाते हैं झगड़े। फिर लड़कियां तो कम से कम पिस्तौल चाकू से नहीं लड़तीं लेकिन उन पर नैतिकता का बोझ है। पुराने जमाने की महिलाएं शराब, हुक्का, मारपीट, चोरी, डकैती सब करती थीं और आज भी ग्रामीण इलाकों की महिलाएं बीड़ी धुनकती मिल जाएगी और मौका आने पर लठ उठा लेती हैं। लोकतंत्र आने के बाद हम सुधरे नहीं बल्कि और ज्यादा महिला विरोधी हो गए हैं. नैतिकता का सारा बोझ स्त्री के कंधे पर और युवक सांड की तरह घूमें। जो बुरा है वह सभी के लिए बुरा है, क्या स्त्री क्या पुरुष। भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) में स्त्री पुरुष दोनों के लिए एक समान दंड का प्रावधान है।

हमारी श्रेष्ठा

कंटक पथ अपनाना सीखें जियों देश के लिए।
देश हित तिल-तिल कर मर जाना सीखें।।

गुरु जी

हमें अपने मातृ-समाज को एक बार पुनः संयुक्त, संगठित, जागरूक तथा राष्ट्रीय चेतना एवं ऐक्स की प्रचंड भावना से पुनरुत्थानशील कर मूल रोग का उन्मूलन करने का निश्चय करना है। इस हेतु हमें इस भूमि के प्रत्येक पुत्र के पास एक संगठित राष्ट्रत्व का संदेश लेकर पहुंचना चाहिए और उन्हें परस्पर प्रेम तथा अनुशासन के बंधनों से बांधते हुए एक सामर्थ्यशाली संगठित शक्ति अभिन्न रूप में निर्मित करनी चाहिए ऐसा एक सतर्क, संगठित तथा अजेय शक्तिशाली राष्ट्रजीवन ही युद्ध द्वारा जर्जर संसार के वर्तमान संक्षोभ में अपना मस्तक सीथा करके खड़े रहने की आशा कर सकता है।

हम कभी घर के लिए व्याकुल लोगों में से नहीं थेष। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' उद्घोष के साथ हमारे संत-महात्माओं ने संसार के चारों कोनों में भ्रमण किया। हमारा कल्याणकारी प्रभाव पृथ्वी के विशाल खंडों में फैला हुआ था और हमारी पताका अनेक देशों में फहराती थी। दूर देशों से यात्री हमारे वैभव का दर्शन प्राप्त करने आया करते थे। उन दिनों की हमारी जाति की सांस्कृतिक-विजय क्षमता की साक्ष्य देनेवाले मंदिर एवं मूर्तियां, चित्रकला एवं नक्काशी, भाषा एवं आचार-व्यवहार, महाकाव्य तथा लोकगीत, साहित्य एवं कला के अगणित जीवंत एवं भव्य प्रमाण उन सब देशों में खड़े हुए हैं।

मुसलमानों का 'अर्द्धचंद्र और तारा' हमारे ओंकार- 'ॐ' का ही एक अंश है। यह सत्य नहीं है कि हमारे पूर्वजों ने केवल बुद्ध के जन्म के बाद ही अपने देश से बाहर जाना प्रारंभ किया था। हमारे धर्म-विस्तारक इससे पूर्व भी अमरीका पहुंच चुके थे। बौद्ध भिक्षुओं ने तो केवल उस परंपरा का अनुसरण किया था। घर में और विदेशों में भी हमने एक प्रतापी और साथ ही साथ एक उदार जाति के रूप में श्रेष्ठता प्राप्त की थी।

एक घोषणा प्रेमी देश के बाशिंदों के खाली हाथ

सुरेश सेठ

इस देश में जब-जब जो-जो होना है, तब-तब वह नहीं हो पाता। इस बार अगर मौसम वैज्ञानिकों ने यह घोषणा की थी, कि इस वर्ष बारिश सामान्य या थोड़ी-सी उससे अधिक होगी, तो बारिश समय से पहले चली आई, और इतनी अधिक हो गई कि जल-थल हो गया। आसमान में बादल घुमड़े नहीं फटे। नदी नालों में पानी आया नहीं अपितु प्रलयंकर बाढ़ें आईं। उनमें लोगों का जमा जत्था नहीं बहा, जानें ही नहीं गईं, बल्कि खेतों में खड़ी फसलें भी अपना रूप गुण बिगाड़ बैठीं, या बेमौसमी भीग कर किसानों के सपनों को रुदन राग हो गईं।

यहां दावों और घोषणाओं की बारात सजती है, लेकिन उनकी पूर्ति एक मिथ्या आंकड़ा बन कर पेश होती है। हम कहते हैं, देश ने महंगाई पर नियंत्रण कर लिया, लेकिन जब इससे उत्साहित होकर बाजारों में क्रेता बन कर अपनी मांग की तालिका ले कर जाओ, तो लालबुझक्कड़ सिद्ध हो जाते हैं। पता चलता है यहां बाजार का सच और कीमत सूचकांकों का सच अलग-अलग हो गया है।

खुदरा की दुकानों में कमी का मनोविज्ञान पैदा करने वाले चतुर सुजान मिलते हैं। फिर चोर बाजारियों और जरूरत के अनुसार दाम बढ़ाने वालों की कमी नहीं। थोक कीमतों के शून्य से नीचे होने की घोषणा हो गई है, लेकिन खुदरा कीमतों को उनके साथ गिरने की आदत नहीं है। शून्य से कहीं ऊपर बनी रहती है, और मंडी के मिजाज के मुताबिक कीमतें उगाह ली जाती हैं। सूचकांक की कीमतें मुंह बिसूरती रहती हैं, और व्यापारी अपनी

नश्तर की मुस्कान

चोर कीमतों पर व्यापार करते हैं। जीएसटी घटा कीमतें कम करके मंदी को बनवास देने, और खरीददारी का तूफान पैदा करके मांग को अधिक रखने का प्रयास सरकार ने किया।

उसके आंकड़े भी कहते हैं, कि मांग कम नहीं हुई, मंदी का तूफान हमने टाल दिया, लेकिन दुकानों में विक्रेता मक्खियां मारते नजर आए। कीमतों की गिरावट चार दिन की चांदनी साबित होती है, क्योंकि मूल्य सूचकांक खाद्य वस्तुओं की कीमतों पर निर्भर करता है। मौसम परिवर्तन के साथ जब उनकी आपूर्ति बढ़ती है, तो इन कीमतों के गिरते ही सूचकांकों में कीमतें सस्ती हो जाती हैं, थोक मंडियां इसका कुछ रुख भी दिखा दें, लेकिन खुदरा व्यापारी उसे अपनी अपनी मंडी में लाते हुए, इसे लाने की लागत के नाम पर कीमतों को कम करने का नाम नहीं लेते। इस बीच आपूर्ति गड़बड़ाने से अगर थोक मंडियों की स्थिति बदल जाए, तो परचून मंडियां और भी शेर हो जाती हैं, लेकिन मूल्य सूचकांक वह उतार-चढ़ाव नहीं दिखाता, वह उसी सस्ते रूप पर ठिठका रहता है।

यहां वहां आपको चंद लोग अपने राजनीतिक आकाओं के निर्देश पर महंगाई नियंत्रण का उत्सव मनाते नजर आ जाते हैं। पूरा देश उत्सवधर्मी हो गया है, और उनका प्रिय काम है किसी भी आर्थिक सफलता की घोषणा पर रसलिल्लाह हो जाना, और फिर उस सफलता को अपने जीवन में तलाश करने की असफलता के बाद उसे अपने जीवन में न पा उसे अपना दुर्भाग्य मान लेना या पिछले जन्मों के पापों का फल।

'भारत प्राकृतिक रूप से और अन्यथा भी एक अमीर देश है लेकिन इसमें अधिकांश गरीब बसते हैं' हमारे अध्यापक पचास साल पहले भी कक्षाओं में पढ़ाते थे, आज भी यही पंक्ति पढ़ाते हैं, और देश के समाजवादी हो जाने का नारा मंद पड़ता जा रहा है।

(शिरोमणि साहित्यकार एवं वरिष्ठ पत्रकार सुरेश सेठ का प्रखर राजनीतिक व्यंग्य)

दैनिक सवेरा टाइम्स

सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक शीतल कुमार विज के स्वामित्व में, दैनिक सवेरा न्यूज एंड मीडिया नेटवर्क, एस.-9, इंडस्ट्रियल एरिया जालंधर से मुद्रित एवं डी.-55, प्रीत विहार, नई दिल्ली से प्रकाशित किया।

DELHIN/2013/53563

पोस्टल रजि. नं. PB-JL-058/25-27

फोन 0181-2370100, 4625005, 4626006, 4629009

समाचार (फैक्स) 0181-2224455

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी तथा उनसे उत्पन्न समस्त विवाद जालंधर न्यायालय के अधीन होंगे।

बढांगा

टिप्पणियां

अमानवीयता के बीच मनुष्य होने की कहानी

डा. अशोक गौतम
मो.-9418070089

डा. संदीप शर्मा की कहानी बढांगा देश की सबसे भयंकर त्रासदी देश विभाजन में दोनों ओर से हुए रक्तपात को व्यक्त करती है। देश विभाजन के समय देश में क्या-क्या नहीं हुआ था, सब जानते हैं। दोनों धर्मों के लोग किस तरह आदमी से पशु हो एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए थे, कहानी की कथावस्तु इसी आदमी से पशु होने की मानवीय विकृतियों के विभिन्न कोणों के बीच की अंगीठी सी धधकती कहानी है। कहानीकार ने कहानी को हर तरह से आंचलिक बनाने का जो प्रयास किया है वह स्तुत्य है। देश विभाजन ने किस तरह आदमी को आदमी न होने पर मजबूर कर दिया था, इस कहानी में हमीरपुर के संदर्भ में भी बेहतरी से समझा जा सकता है। कहानी का मुख्य पात्र मैहर दूसरे धर्म के लोगों द्वारा जान की भीख मांगे जाने पर जब उन्हें बचाने से डरते हुए भी उन्हें बचाने की कोशिश करता है, पर सफल नहीं हो पाता। आखिर दूसरे धर्म के लोग मारे जाते हैं, पर एक बच्चा बच जाता है और मैहर मारकाट में बचे बच्चे को उनमें से एक मरते हुए के वचन पर उसे अपने घर ले आता है। वह बच्चे को सबसे झूठ बोलकर अपने घर रख लेता है, क्योंकि उसके पास दो बेटियां हैं, ऐसे में वह बेटे का मोह संवरण नहीं कर पाता। उसे पता है कि यह बच्चा उसके किसी रिश्तेदार का नहीं। किसी की अमानत है उसके पास सौंपी हुई। ...और एक दिन वह मन कड़ा कर हाजियां गांव के दीन मौहम्मद को खोजने निकल पड़ता है जिसके पास उससे किसी ने बच्चे को छोड़ने का वचन लिया था। वह मन ही मन सोचता है, काश! उस गांव में कोई न बचा हो और बच्चा उसके पास ही रहे। ऐसा होता भी है। गांव खाली है। लेकिन जैसे ही वह अपने घर पहुंचता है तो जिसके पास छोड़ने को वे उसके पास अमानत छोड़ गए थे, वह अपनी अमानत लेने उसके घर पहुंचा होता है। यहीं नाटकीयता के साथ कहानी खत्म हो जाती है।

धार्मिक हिंसा बनाम मानवता की भावनात्मक पड़ताल

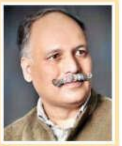

डा. कुंवर दिनेश सिंह
मो.-9418626090

डा. संदीप शर्मा की कहानी 'बढांगा' भारत के विभाजन के दौरान धर्म के नाम पर हुए नरसंहार की भयावहता को उजागर करती है। कुछ अनजान लोग, दो पुरुष और दो महिलाएं (जिनमें से एक बच्चे को अपनी बांहों में उठाए थी), मैहर के घर शरण लेने आते हैं, जिन्हें वह अपने घर शरण न देकर खातरियों में छिपने की सलाह देता है। कट्टरपंथियों के हमले में वे लोग मारे गए, जिसके विषय में रात भर चिंता करते हुए मैहर का सर भारी हो उठा। तड़के ही वह स्वयं खातरियों तक जा पहुंचा और वहां उसने रक्त से सने शवों के ढेर में से एक जीवित बच्चे को देखा। शवों के ढेर में एक व्यक्ति ने, जो आखिरी सांसें ले रहा था, उससे कहा कि वह बच्चे को पास के गांव में दीन मोहम्मद तक पहुंचा दे या फिर खुद पाले। मैहर बच्चे को घर ले गया, जहां उसकी पत्नी उसे अपनी बेटी के साथ पालने लगती है। उसने दीन मोहम्मद की तलाश की, लेकिन वह नहीं मिला। कहानी में एक उत्परिवर्तन होता है जब दीन मोहम्मद आश्चर्यजनक रूप से मैहर के आंगन में उसकी प्रतीक्षा में बैठा मिलता है, जिससे मैहर और उसकी पत्नी निर्विकल्प हो जाते हैं। इस अंत के मार्मिक घटनाक्रम ने पाठक के हृदय को छू लिया है। कहानी अपने चरित्रों के आंतरिक द्वंद्व, हिंसा और मानवता के संघर्ष को शब्दसंगठन और स्थानीय मुहावरे द्वारा प्रभावी ढंग से चित्रित करती है। कहानी के वर्णन में भावनाओं की गहराई तथा अप्रत्याशित अंत इसे यादगार बनाते हैं। कहानी का शिल्प और संवेदनशील प्रस्तुति इसे विशिष्ट बनाते हैं।

मानवीय संवेदनाओं की पड़ताल करती कहानी

विजय उपाध्याय
मो.-9418466571

कहानियां सिर्फ कथाएं ही नहीं, बल्कि देश, समाज और तात्कालिक समय का दस्तावेज भी होती हैं। लेखक-पाठक के मन में गहन पीड़ा, दुख-संताप, मनोरंजन के साथ-साथ अनुभव भी देती है। प्रस्तुत कहानी का शीर्षक बढांगा हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश की स्थानीय बोली से लिया गया है जिसका मतलब मारकाट उभर कर आता है। कहानी में और भी स्थानीय बोली की भरमार है, खातरियां बाहर के लोगों के लिए नया शब्द है। कहानी का परिदृश्य विभाजन के समय का रहा होगा जब कानून व्यवस्था ढह चुकी थी, पलायन जारी था। लेखक उसी कालखंड की एक हृदय विदारक और मर्मस्पर्शी कहानी पहाड़ी परिवेश से लाए हैं जिससे तात्कालिक समय का एक बड़ा द्रवित और मार्मिक दृश्य गोचर होता है। कहानी मानवीय संवेदनाओं की गहरी पड़ताल करते हुए उस समय घटित दृश्यों का सजीव और रुह को झकझोर देने वाला चित्रण करती है। यह कहानी मानवीय संवेदनाओं का वह पुंज है जो विपरीत परिस्थितियों में भी मानवता को बचाए रखती हैं। कहानी पाठक को भीतर तक हिला कर व्यथित करती है। साथ ही अंत तक दुख और क्षोभ के बीच उत्सुकता बनाए रखती है। यही लेखक की मेहनत और तीक्ष्ण दृष्टि की परिचायक है। लेखक अपने भाषायी कौशल से कहानी को समृद्ध करते हुए अच्छी रचना देने में कामयाब हुए हैं। एक अच्छी कहानी देने के लिए लेखक, संपादक और प्रकाशक को साधुवाद।

सृजन प्रक्रिया

बढांगा कहानी का सृजन मेरे बचपन की उस चर्चा से शुरू होता है जिसमें मैं बचपन में अपने गांव में दादाजी व गांव के अन्य बुजुर्गों के साथ आग सेंकते हुए बढांगे की घटना की चर्चा सुन रहा था। उस चर्चा की कुछ स्मृति को मैंने बढांगा कहानी के रूप में प्रस्तुत किया। कहानी में भारत विभाजन के बाद की हुई त्रासदी के हिमाचल के कुछ क्षेत्रों में पड़ने वाले प्रभाव को यथार्थ रूपांतरण में प्रस्तुत करने की एक कोशिश रही है...

कहानी की तलाश में हिमाचल

यहां कहानी पलकें खोलकर मुस्कराना चाहती है। इसकी पाजेब में बजते घुंघरू, कई मौन-कई सन्नाटे तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। कई घरौंदे, कई समाज और कई शिकवे-शिकायतों का हुजूम। कभी किसी दूब पर दूर से आती छटा, शब्दों को भावों में पिरोती हवा। एक स्पर्श कहीं दीप में बुझती बाती को सहला रहा, तो कहीं क्रंदन किसी महफिल के रोमांच में अनसुना रह गया। हिमाचल का कहानीकार, समाज के रंगमंच पर वर्षों से श्रम साधना करता हुआ, अभिव्यक्ति के नजराने पेश कर रहा। 'हिमाचली हिंदी कहानी - विकास यात्रा' की 106 किस्तों के बाद कहानी अपने शृंगार में सीधे पाठकों तक। हर कहानी की पृष्ठभूमि, उसकी संरचना, कथानक, विषय, पात्र, उद्देश्य, भाषा और शैली के साथ एक पूरा रचना संसार शिरकत कर रहा है। एक अपनापन या अपनों से रूठा मन, पहाड़ की गवाहियों में खड़े उदास मंजर या किसी झरने के पास प्यासी नदी का स्पंदन। जीवन की तलाश में कहानी का सफर कहां पहुंचा, इसी बिंदु पर विवेचन की परंपरा के हिमाचली हस्ताक्षर खोज कर ला रहे हैं, प्रसिद्ध साहित्यकार राजेंद्र राजन। पेश है आज 29वीं किस्त :

कहानी/भाग-1

डा. संदीप शर्मा
मो.-9418178176

पूरे देश में बढांगा शुरू हो गया है, बस इतना ही पता था गांव वालों को। शाम को मैहर के घर में अंगीठी पर कुछ लोग हाथ सेंक रहे थे, तो बस यही बातें चल रही थीं। अभी कोई नौ बज रहे होंगे कि ध्यान चंद अपना बड़ा सा बैग उठाए एकदम अंगीठी पर आ गया, वह अभी जालंधर से ही आया था।

पानी के दो गिलास पीने के बाद बढांगे की खबरें सुनाने लग पड़ा, "बस मैहर जी! क्या बताएं? बहुत बुरा हाल है! शहरों में लोग चुन-चुन कर मार रहे हैं, दूसरी बिरादरी वालों को, नहरों में मिल रहे हैं शव। पुलिस के हाथ भी खड़े हो गए हैं। मोहल्ले के मोहल्ले खाली हो गए हैं। कोई कहां भागा तो कोई कहां? किसी को कुछ नहीं समझ आ रहा है।"

ध्यान चंद ने फिर दो-चार लंबी सांसें लीं और फिर बोलना शुरू कर दिया, "ट्रेनें भर-भर कर आ रही हैं लाशों की, और यहां से भी जा रही उस तरफ।"

गांव का भगत राम बीच में बोल पड़ा, 'सुना है कि हमारी बिरादरी के लोग पंजाब से आ रहे हैं हमारी ओर और कांगड़ा में उन्होंने कइयों को मार डाला है। लोग रात को दूसरी बिरादरी वालों को अपने अनाज के पेड़ुओं में छुपा रहे हैं, तब जान बच रही है कइयों की।' बस इस बात के बाद सबके चेहरों पर खौफ और दुख, आग की लपटों की रोशनी में साफ देखा जा सकता था। फिर बड़ी देर तक इसी तरह की बातें चलती रहीं।

गांव का श्यामू बोला, "मैं हमीरपुर गया था परसों तो बस अड्डे पर एक व्यक्ति ने मुझे बताया कि शहर के पास के एक दूसरी बिरादरी के गांव के लोग भी भाग गए हैं कहीं दूर अपने रिश्तेदारों के पास।" हर कोई खौफ समझने की कोशिश करता और फिर कुछ खौफ को साथ लेकर अपने-अपने घर की ओर निकल गया।

मैहर का घर गांव में पहला है और तीन-चार गांवों से रास्ते घर के सामने ही मिलते हैं। घर के सामने लंबा-चौड़ा आंगन है और आंगन के बाहर झाड़ियों की बाड़ है, पर आते-जाते लोग दिख ही जाते हैं। सर्दियों का समय था। मैहर ने भी अंगीठी की बची हुई आग को राख में दबाया और मन ही मन ईश्वर को याद किया। वह जैसे ही सीधा हुआ और बाहर बरामदे में बिस्तर की ओर चला कि किसी के दौड़ने की आवाज उसके कानों तक आ पहुंची। कोई घर के सामने वाले रास्ते से भागा आ रहा था। मैहर चिल्लाया, 'कौन है भई? इतनी रात को क्यों भागा जा रहा है?'

दो आदमी और दो औरतें एकदम अंगीठी पर आ गए, 'असां जो बचाई लिया भाई लोको! तिना मारी देने असां! सह दौड़ुदे असां दे पीछे मारने वास्ते।' मैहर को एकदम से कुछ न सूझा। उसके चेहरे पर एक नए खौफ ने एकदम से ही दस्तक दे दी। अगर इधर अपने घर में छुपाता तो भी वो ढूंढ ही लेते और पूरी बिरादरी उसके पीछे पड़ जाती। उसको एकदम से खातरियों का ख्याल आया। मैहर बोला, "छुप सको तो वहीं खातरियों में बच सकते हो या फिर आगे निकल जाओ, भाइयो। मेरे भी छोटे बच्चे हन।" मैहर ने उन्हें खातरियों का रास्ता बताना शुरू कर दिया, "आगे दो कोस पर इसी रास्ते पर आम के बड़े पेड़ से आगे सप्पड़ ही सप्पड़ आएंगे। वहीं दायीं ओर सप्पड़ों के एक टीले पर दो खातरियां हैं। वहीं छुपना ठीक रहेगा। सुबह मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकूंगा। आप समझ गए होंगे कि मेरी भी मजबूरी है।"

मैहर को लगा कि एक औरत ने अपनी गोद में एक बच्चा भी उठाया है और उसे मोटे कंबल में छिपाया है, लेकिन जब तक मैहर कुछ और आगे सोचता और बोलता, वो लोग निकल गए। वो तो चले गए, लेकिन मैहर का चैन भी साथ में ले गए।

मैहर के दिमाग में एकदम से आया-"अरे! यह मैंने क्या कर दिया, मैंने तो बहुत बड़ा जुर्म कर दिया है।" उसे लगा कि जैसे उसने उन्हें मौत की ओर धकेल दिया हो। वह बिस्तर पर पड़ तो गया रजाई ओढ़कर, पर नींद तो खातरियों की ओर चली गई थी, उन्हीं लोगों के संग। मैहर के माथे पर पसीना उतर आया था।

उसने सोचा, 'आज बहुत बुरा होने वाला है, मैं क्यों नहीं जल्दी सो गया और क्या मैं ही बचा था उन लोगों को रास्ता दिखाने वाला? क्या पूरा गांव सूना पड़ गया है?' पल-पल बदलते दृश्य मैहर की आंखों के आगे तैरने लगे थे। उसे बस यही लगा कि उसने उन्हें क्यों खातरियों की ओर भेजा है। वह क्या चुप भी नहीं रह सकता था? वह क्या अपना मुंह बंद नहीं रख सकता था? वह चुपचाप हाथ जोड़ कर उन्हें भाग जाने का इशारा भी कर सकता था, या फिर उन लोगों के आने की आवाज पर चुपचाप घर में छिप भी सकता था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ था और अब अगर वे नहीं रहे, तो हत्याओं का दोषी वही होगा। वह एकदम से बिस्तर से उठा और खातरियों की ओर निकलने लगा, उनके पीछे-पीछे। फिर बाहर आंगन पर एकदम से रुक गया। अगर कहीं उन हथियारों ने उसे ही काट दिया, तो फिर मैहरनी का क्या होगा? बड़ी और छोटी लड़की का क्या होगा? उसने तो अभी ढंग से छोटी का चेहरा भी नहीं देखा है। मैहर को एक कदम आगे और एक कदम पीछे की ओर धकेलता रहा बड़ी देर तक। वह पागलों की तरह वहीं ठंडी रात के साए में बाहर आंगन में ही खड़ा रहा बड़ी देर तक। कुछ देर के बाद उसे ठंड महसूस हुई, तो वह फिर से अंगीठी में आग तलाशने लगा।

उसने अंगारे निकाल कर फिर से लकड़ियां लगा दी। ठंडी पड़ी चिलम को फिर से भरा और धीरे-धीरे हुक्का गुड़गुड़ाने लगा। धुएं के छल्ले आग की लपटों में नाचने लगे। मैहर को लगा, जैसे इनसानों को खून में रंग कर कुछ लोग भी उन धुएं के छल्लों की तरह नाच रहे हैं। वह बरामदे में नवार के मंजे पर खंदोलू व रजाई ठीक करके फिर से सोने की कोशिश करने लगा, लेकिन उसका मन विचलित सा हो गया था। उसे लगा कि उसे अंदर सोना चाहिए, लेकिन वह वर्षों से बाहर बरामदे में ही सोता आ रहा है तो फिर अब बढांगे के डर से क्यों सोए अंदर। वैसे भी बढांगा दूसरी बिरादरी वालों के लिए है, उसकी बिरादरी में तो सब उसे जानते हैं। मैहर है वह इस गांव का, पहला घर है गांव में उसका। सैंकड़ों कनाल का मालिक है, पर मन डर को भेज रहा था, मैहर की गर्म रजाई में दुबकने के लिए। मैहर ने सोचा कि शायद वे लोग खातरियां न ढूंढ पाए हों और कहीं आगे निकल गए हों, पर उसे उन लोगों की मौत का डर तरह-तरह के डरावने ख्याल बना रहा था। उसने फिर से चिलम भरी और फिर से हुक्का गुड़गुड़ाने लगा। अभी कोई आधा घंटा ही हुआ होगा कि धड़ाम-धड़ाम की आवाजें करते हुए कुछ लोग उसके आंगन के सामने से निकलते रास्ते पर रुक गए।

शायद उन्होंने मैहर की अभी तक जल रही अंगीठी से निकले धुएं की गंध व मैहर के हुक्के की गंध महसूस कर ली थी। मैहर की सफेद रजाई और उसमें बैठे मैहर पर उनकी नजर पड़ गई। पांच-छह लोग एकदम बरामदे के सामने आंगन में आ गए। मैहर एकदम से चौकन्ना हो गया। बिस्तर पर बैठे-बैठे ही उसने मुंह खोल दिया, 'हां भाइयों! क्या गल है? इतनी रात गए, क्या हो गया?' 'कहां गए वो लोग?' एक रौब से बोला था। "कौन लोग? क्या हो गया?" मैहर बोला। उनमें से कोई बोला, "तुम लोगों ने तो नहीं छुपा लिया उन्हें पेड़ुओं में।" मैहर थोड़ा घबराकर बोला, 'भाइयों पेड़ु तां मक्की से भरे हैं और किसको छिपाना है हमने। इधर तो कोई नहीं आया। क्या बात हो गई! भाइयो।'

एक ने गाली बक दी, 'ये साले! पता नहीं कहां भाग गए? पता नहीं कौन छुपा बैठा है इनको?' मैहर का रंग उड़ता जा रहा था। सभी लोगों के हाथों में दराट और कुल्हाड़ियां थीं और वे इधर के इलाके के नहीं लग रहे थे। दूर प्रदेश के हो सकते हैं। एक सरदार पंजाबी में बोल पड़ा, "ओए उन्हां साडे बंदे बड-बड के सुट्टे हन और तुसीं लोक उन्हां ते रहम करदे फिरदे। शर्म नहीं आंदी तुहानू!"

मैहर ने हाथ जोड़ दिए थे, सरदार के आगे, 'नहीं सरदार जी, मैं बाहर ही सुतया था, मैं नी दिखया कोई जांदा होया। शायद दूसरे रास्ते से गए हों।' मैहर जल्दी से खड़ा होते हुए ही फिर बोल पड़ा, 'आओ जी सारे, मैं अंगीठी बालदा, अग आली भी चला दी।' "ओए नहीं -नहीं ओए! असां अजे उन्हां दा कम करना है", सरदार अपनी तलवार मैहर की ओर करके बोला, "तां ही दिल दी अग बुझणी।" 'तूसां अंदर दिखी सकदे भाई, मैहरनी ते मेरे बच्चे सुते हन अंदर।' मैहर कंपकपाती आवाज में बोला।

"ओए! नहीं -नहीं, ठीक है चलो ओए, आगे बढ़ो। किन्ने के दूर जाणगे वो लोग।" सरदार ने अपना ध्यान बदल लिया था। फिर वे सभी तेज कदमों से आगे निकल गए, उसी रास्ते से जो दूसरे गांव की ओर जाता है और जहां रास्ते से थोड़ा अलग हटकर सप्पड़ों में बनी खातरियां हैं। मैहर की टांगें कांप रही थीं। ये क्या हो गया भगवान! उसका सारा शरीर अचेत सा हुआ जा रहा था। वह बिस्तर पर बैठ तो गया, लेकिन उसका मन उसे आने वाले कत्लेआम की डरावनी छवि बना चुका था। उसका मन उसे कभी खातरियों की ओर ले जा रहा था, तो कभी उन चारों की मौत का मंजर बनाता जा रहा था। कभी उसका मन उसे उन लोगों को बचाकर भगाता दिखाई दे रहा था। उसने इसी उधेड़बुन में काफी समय वहीं बिस्तर पर बिता दिया बैठे-बैठे। क्या-क्या नहीं सोच लिया मैहर ने वहीं पर बैठे-बैठे ही। अब तो उसके मन ने यह मान लिया था कि यह सब कुछ उसी की वजह से हुआ है, न वह बाहर बरामदे में सोता और न ही उससे कोई रास्ता पूछता। लेकिन अब क्या हो सकता है। वह फिर से बिस्तर से उठा और अंगीठी पर बैठ गया। अंगीठी जल रही थी कि नहीं, इस बात का मैहर को कोई असर नहीं हो रहा था। कभी चिलम ठंडी होती तो फिर अंगारों को ढूंढता और एक-दो लकड़ियां लगाता।

उसने अपने पहाड़िया देवता से कोई सौ बार प्रार्थना की, "बस भगवान! आज की रात उनको बचा ले, मेरे सिर पर हत्याओं का दोष मत आने देना, मैं पूरी जिंदगी तेरे को हर फसल चढ़ाऊंगा, बस एक बार बचा ले, मैं आज के बाद कभी बाहर बरामदे में नहीं सोऊंगा, बस मेरे पहाड़िया महाराज!" सुबह के कोई तीन बजे होंगे, लेकिन मैहर अंगीठी से उठ नहीं सका था। वह आग जलाता रहा और न जाने कितने ही मौत के खेल सोचता रहा। कभी खुद को कोसता, तो कभी पहाड़िया को याद करता कि इस बार तो उन लोगों को बचा लिया होगा, जिन्हें उसने अनजाने में खातरियों की ओर भेजा है। मैहर ने सुबह होने की किरणें महसूस की। वह डंडा उठाकर निकल पड़ा खातरियों की ओर। रास्ते में उसका मन अभी भी उसे कई तरह के सब्जबाग दिखाता रहा और साथ में एक डर भी तेज कदमों से उसका पीछा करता रहा। वह डर अब क्या-क्या कर सकता है, ये तो अब मैहर को मालूम होने ही वाला था। उसने खातरियों का कोई चार कोह का रास्ता पलक झपकते ही पूरा कर लिया। उसके कदम खातरियों की ओर ऐसे खिंचे जा रहे थे कि जैसे उसे कोई भूत खींचकर ले जा रहा हो। जैसे ही मैहर सप्पड़ वाले घास के टेले में पहुंचा, मैहर की आंखें फटी की फटी और कलेजा धक सा रह गया। पूरे टेले में खून ही खून था। खातरी के बाहर सप्पड़ खून से रंग गए थे। मैहर खातरी के अंदर झांका तो अंदर चार लोगों की लाशें पड़ी थीं। पूरी खातरी खून से भरी पड़ी थी। कभी अनाज से भरी रहने वाली खातरी अब लाशों से भरी पड़ी थी। खातरी में खून की गंध फैली थी। इस बार इन खातरियों ने जो देखा होगा, जो सहा होगा वह देखने लायक नहीं था। मैहर पूरी तरह कांप रहा था। उसका मन रोने को कर रहा था। उसे कुछ नहीं सूझ रहा था। वह वहीं खातरियों के बाहर बैठ गया। उसके सामने अब हर दृश्य साफ-साफ बन रहा था। वो दूसरी बिरादरी के लोग अभी खातरियों में छिपे ही थे कि कोई आधे घंटे में ही उनकी गंध में भटकते खून के प्यासों ने उन्हें ढूंढ लिया था।

-(शेष भाग अगले अंक में)

पुस्तक समीक्षा

उम्दा कहानी संग्रह है 'कैंथ का पेड़'

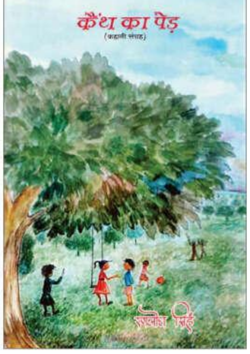

रणजोध सिंह का कहानी संग्रह 'कैंथ का पेड़' एक उम्दा कहानी संग्रह है। इस संग्रह की हर कहानी का केंद्र बिंदु आम आदमी है। पाठक गण इन कहानियों को कैसे लेंगे, यह नहीं कहा जा सकता, लेकिन यह निश्चित है कि प्रत्येक कहानी कहीं न कहीं पाठक के अंतर्मन को स्पर्श करेगी और मनोरंजन के साथ-साथ कोई न कोई प्रश्न भी पैदा करेगी। यह कहानियों का एक बहुत ही सुंदर पुष्प गुच्छ है, जो रणजोध सिंह ने संचित किया है। प्रत्येक कहानी उनके दिल के काफी करीब है और ये नित्यप्रति के जीवन के वास्तविक अनुभवों पर आधारित है जो किसी ने भी अपने जीवन में अनुभव किया हो सकता है। हर कहानी पाठक के दिल में उतरने की क्षमता रखती है। एक टुकड़ा कागज नामक कहानी की अमित और स्नेह का प्रणय संबंध जन्मपत्री जिसे कागज के टुकड़े से ध्वनित किया गया है तथा अंतर्जातीय वर्ण व्यवस्था व्यवधानों से टकराकर चूर-चूर हो जाता है। दो आत्माओं का मिलन सबसे बड़ी तारा मैत्री होती है। सामाजिक रूढ़ियों से बिगड़ते संबंधों की ओर भी लेखक का भावपूर्ण संकेत है। 'और फूल खिलने लगे' कहानी दो मित्रों के संवाद से रमणीय गांव में विकसित रंग-बिरंगे फूलों से शोभायमान वाटिका वर्णन दर्शाया है, जिसके माध्यम से प्रकृति के प्रति जागरूकता का सुखद संदेश है। भेड़ू नामक कहानी में लेखक ने ग्रामीण सुंदर परिवेश को स्वाभाविक शब्द चित्र से चित्रित किया है। डेथ सर्टिफिकेट नामक कहानी कार्यालीय रुग्ण नीच मानसिकता एवं निष्क्रियता की कहानी है। पुरस्कार नामक कहानी में लेखक ने कालेज के पारितोषिक वितरण समारोह का बिंब चित्र उकेरा है। पिघलती बर्फ नामक कहानी के माध्यम से लेखक ने अपने दायित्व और मानवीय मूल्यों का उपहास करने वाले चिकित्सक के व्यवहार एवं कार्य व्यापार की निंदा की है। कैंथ का पेड़ नामक कहानी पाठकों के दिल में सीधे उतरती है। निखिल पब्लिशर्ज एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स आगरा से प्रकाशित यह कहानी संग्रह पाठकों को अवश्य पसंद आएगा, ऐसी आशा है। इसकी कीमत 500 रुपए है।

-फीचर डेस्क

जयंती विशेष

प्रख्यात कवि, नाटककार थे धर्मवीर भारती

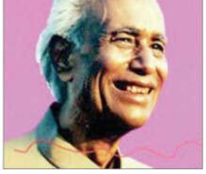

डा. धर्मवीर भारती (जन्म 25 दिसंबर 1926, मृत्यु 4 सितंबर 1997) आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और सामाजिक विचारक थे। वे साप्ताहिक पत्रिका धर्मयुग के प्रधान संपादक भी रहे। डा. धर्मवीर भारती को 1972 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उनका उपन्यास 'गुनाहों का देवता' हिंदी साहित्य के इतिहास में सदाबहार माना जाता है। भारती का जन्म इलाहाबाद के अतरसुइया नामक मोहल्ले में हुआ था। उनके पिता का नाम चिरंजीवलाल वर्मा और माता का नाम चंदादेवी था। भारती के पूर्वज पश्चिमी उत्तर प्रदेश में शाहजहांपुर जिले के खुदागंज नामक कस्बे के जमीदार थे। पेड़, पौधों, फूलों और जानवरों तथा पक्षियों से प्रेम बचपन से लेकर जीवन पर्यन्त रहा। संस्कार देते हुए बड़े लाड़ प्यार से माता पिता अपने दोनों बच्चों धर्मवीर और उनकी छोटी बहन वीरबाला का पालन कर रहे थे कि अचानक उनकी मां सख्त बीमार पड़ गयी। दो साल तक बीमारी चलती रही। बहुत खर्च हुआ और पिता पर कर्ज चढ़ गया। मां की बीमारी और कर्ज से वे मन से टूट से गए और स्वयं भी बीमार पड़ गए। 1939 में उनकी मृत्यु हो गई। इन्हीं दिनों पाठ्य पुस्तकों के अलावा कविता पुस्तकें तथा अंग्रेजी उपन्यास पढ़ने का बेहद शौक जागा। स्कूल खत्म होते ही घर में बस्ता पटक कर वाचनालय में भाग जाते। वहां देर शाम तक किताबें पढ़ते रहते। इंटरमीडियेट में पढ़ रहे थे कि गांधी जी के आह्वान पर पढ़ाई छोड़ दी और आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। सुभाष के प्रशंसक थे, बचपन से ही शस्त्रों के प्रति आकर्षण भी जाग उठा था, सो हर समय हथियार साथ में लेकर चलने लगे और सशस्त्र क्रांतिकारी दल में शामिल होने के सपने मन में संजोने लगे, पर अंततः मामा जी के समझाने बुझाने के बाद एक वर्ष का नुकसान करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय में स्नातक की पढ़ाई के लिए दाखिला लिया। कोर्स की पढ़ाई के साथ साथ उन्हीं दिनों शैली, कीट्स, वर्ड्सवर्थ, टॅनीसन, एमिली डिकिन्सन तथा अनेक अन्य कवियों के अंग्रेजी अनुवाद पढ़े। स्नातक, स्नातकोत्तर की पढ़ाई ट्यूशनों के सहारे चल रही थी। उन्हीं दिनों कुछ समय श्री पद्मकांत मालवीय के साथ अभ्युदय में काम किय। इलाचंद्र जोशी के साथ संगम में काम किया। इन्हीं दोनों से उन्होंने पत्रकारिता के गुर सीखे थे। उन्होंने अनेक किताबें लिखी, कई पुरस्कार प्राप्त किए। आज वह हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन साहित्य में हमेशा अमर रहेंगे।

किताबें मिली

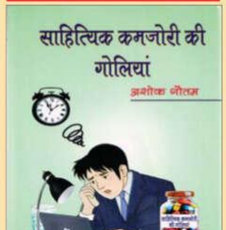

1. व्यंग्य संग्रह : साहित्यिक कमजोरी की गोलियां, लेखक : अशोक गौतम

2. पत्रिका : प्रणाम पर्यटन, संपादक : प्रदीप श्रीवास्तव

कुदरत का खूबसूरत अजूबा विक्टोरिया जलप्रपात

आकर्षक उद्यानों वाले पठार, ऊंची-ऊंची पर्वत श्रेणियां, रोमांचक वन्य जीवन, समुद्र जैसी विशाल झीलें और मनमोहक जलप्रपात, यह सब कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जिनकी वजह से बार-बार अफ्रीका जाने को मन करता है। अफ्रीका की प्राकृतिक खुबसूरती में जो चीज सबसे अधिक हैरान करती है वह है भव्य विक्टोरिया जलप्रपात। इस जलप्रपात को कुदरत का खूबसूरत अजूबा ही कहा जा सकता है।

ऐसा अनुमान है कि प्रति मिनट जैंबेजी नदी का लगभग 55 लाख घन मीटर पानी घाटी में नीचे गिरता रहता है और इस घाटी के सामने के छोर से, जोकि नदी के तट जितना ही ऊंचा है, का आनंद आप ले सकते हैं। इस प्रपात को एक किनारे से दूसरे किनारे तक देखने के लिए आपको कार द्वारा या फिर पैदल पुल पार करके जिम्बाब्वे की सीमा में प्रवेश करना होगा। यह पुल जलप्रपात से 700 मीटर दक्षिण में स्थित है और इस पर खड़े होकर आप इसका पूरा नजारा देख सकते हैं।

विक्टोरिया जलप्रपात के आसपास लोग हजारों साल से रहते आ रहे हैं, लेकिन बाहरी दुनिया को प्रकृति के इस आश्चर्य से परिचित कराने का श्रेय एक स्काटिश मिशनरी डेविड लिविंगस्टन को जाता है। 1855 में एक छोटी सी नाव में बैठ कर वह यहां पहुंचा था। उसी ने उस समय की परंपरा के अनुसार इंग्लैंड की महारानी के नाम पर इसे विक्टोरिया जलप्रपात नाम दिया और उसके नाम पर इस शहर का नाम पड़ा लिविंगस्टन।

इस जलप्रपात का सबसे पुराना नाम शोंगवे था, जो इस क्षेत्र में बसे टोकलेया लोगों ने इसे दिया था। उसके बाद एंडेबेले लोग यहां आकर बसे और उन्होंने इसे बदल कर अमांजा थुंकुआयो कर दिया, जिसका अर्थ हुआ, धुएं में बदलता हुआ पानी। अंत में मकालोलो लोगों ने इसे एक नया नाम दिया मोस औ तुन्या, यानि गरजता हुआ धुआं। स्थानीय लोगों में आज भी यही नाम प्रचलित है। पिछले लगभग साढ़े पांच लाख वर्षों के दौरान यह जलप्रपात अपना स्थान बदलता रहा है। इस प्रक्रिया के दौरान नदी अब तक सात घाटियां पीछे छोड़ कर अपने वर्तमान स्थान पर पहुंची है। यहां आपको पानी तथा कीचड़ में अपने स्थूल शरीर को छिपाने का प्रयास करते हिप्पो भी देखने को मिल जाएंगे।

आसपास के वनों में आपको एक डाल से दूसरी डाल पर कूदते बंदर भी नजर आएंगे साथ ही अनेक प्रकार के पक्षियों का कलरव भी आपका मन मोह लेगा। यहां का विक्टोरिया राष्ट्रीय उद्यान हाथी, अफ्रीकी भैंस, शेर तथा अन्य वन्य पशुओं से भरा पड़ा है। नदी में बड़े-बड़े खतरनाक मगरमच्छ भी हैं इसलिए इसमें नहाना सुरक्षित नहीं है। यहां सूर्योदय तथा सूर्यास्त देखने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से दिसंबर के बीच ही होता है, उस समय नदी में पानी भी ज्यादा नहीं होता और आकाश भी साफ होता है। आधुनिक पर्यटकों के मनोरंजन के लिए यहां पैराशूटिंग और जैंबेजी पुल से बंजी जंपिंग जैसे रोमांचक खेलों की व्यवस्था है। मछली पकड़ने के शौकीनों के लिए कुछ विशेष नौकाएं भी यहां उपलब्ध हैं जो नदी के अंदर ले जाकर आपके इस शौक को पूरा करती हैं। विक्टोरिया जलप्रपात को देखने के बाद आप यह अवश्य ही महसूस करेंगे कि प्रकृति का इससे अधिक रोमांचक, नाटकीय, भव्य तथा विलक्षण रूप शायद ही कहीं अन्यत्र देखने को मिले।

पृथ्वी जैसा एक ग्रह मौजूद है सौर मंडल में

सौरमंडल में अनेक ग्रह, नक्षत्र उपस्थित हैं, इनके बारे में पता लगाने की लगातार कोशिशें चलती रही हैं। हाल ही में अमेरिका के वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के सौरमंडल के बाहर पृथ्वी जैसे ही एक ग्रह की उपस्थिति का पता लगाया है जिसका आकार पृथ्वी जितना ही है। इस ग्रह का द्रव्यमान पृथ्वी के द्रव्यमान का 3 गुना है। वैज्ञानिकों का कहना है कि चूंकि इस ग्रह की बहुत सी विशेषताएं पृथ्वी से मिलती जुलती हैं; इसलिए इस पर जीवन की सम्भावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता।

वैज्ञानिकों ने 'गोल्डीलॉक्स जोन' नामक इस नए ग्रह में पानी होने की सम्भावना भी व्यक्त की है, उनका कहना है कि यह ग्रह जिस तारे की कक्षा में है उससे इसकी दूरी न तो बहुत कम ही है न ही बहुत ज्यादा इसलिए इस ग्रह पर पानी के तरल अवस्था में मौजूद होने की पूरी सम्भावना है। खोजे गए इस नए ग्रह की एक और विशेषता है जो हमारी पृथ्वी से मिलती-जुलती है वह ये कि वातावरण और गुरुत्व के लिए भी यह ग्रह न तो बहुत बड़ा है और न ही बहुत छोटा। पृथ्वी से 20 प्रकाशवर्ष दूर स्थित यह ग्रह 'ग्लीज 581' तारे की कक्षा में चक्कर लगा रहा है। सूर्य का चक्कर लगाने में इसे 37 दिनों का समय लगता है। इस ग्रह के एक भाग में अंधेरा है। इसके 'ग्रे' जोन में जीवन की सम्भावना है। खगोलविद स्टीवन का कहना है कि यदि खोजे गए इस नए ग्रह को अन्य वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकृति मिल गई तो यह पृथ्वी से मिलता जुलता पहला ग्रह होगा।

नए ग्रह की यह खोज हवाई स्थित 'डब्ल्यूएम कैक ऑब्जरवेटरी' में किए 11 साल के अध्ययन का परिणाम है। इस नए ग्रह की खोज के साथ ही हमारे सौरमंडल के बाहर खोजे गए ग्रहों की संख्या 400 से भी अधिक हो गई है। गौरतलब है कि हाल ही में खगोलशास्त्रियों ने एक ऐसे आकाशीय पिंड की पहचान की थी जिसका आकार पृथ्वी से दोगुना था, किन्तु इस ग्रह का अपने तारे के बहुत निकट होने के कारण इस पर जीवन की संभावना नहीं की जा सकी। परन्तु अब इस नए ग्रह की खोज ने अवश्य ही हमारे अलग पृथ्वी बसाने की नई उम्मीदें जगा दी हैं।

रंगोली के रंग

रंगोली धार्मिक और सांस्कृतिक आस्था का प्रतीक है। हमारे यहां त्योहार, व्रत, पूजा, उत्सव, विवाह आदि शुभ अवसरों पर रंगोली बनाने की परंपरा है। इनका उद्देश्य सजावट और सुमंगल है। रंगोली को द्वार की देहरी, आंगन के केंद्र या पूजा स्थल पर बनाया जाता है।

ऐसे हुई शुरुआत

प्राचीन काल में लोगों का विश्वास था कि कलात्मक चित्र बनाने से घर में धन-धान्य में वृद्धि होती है। ग्रामीण अंचलों में घर-आंगन बुहारकर लीपने के बाद रंगोली बनाने का रिवाज आज भी प्रचलित है।

रंगोली की आकृतियां

रंगोली को बनाने में नारियल का चूरा, चावल का आटा, सिंदूर, रोली, हल्दी, सूखा आटा और रंगोली के रंगो का प्रयोग किया जाता है। इसमें साधारण ज्यामितिक आकार हो सकते हैं या फिर देवी देवताओं की आकृतियां। विशेष अवसरों पर बनाई जाने वाली रंगोलियों में कुछ विशेष आकृतियां भी जुड़ जाती हैं, जैसे दिवाली की रंगोली में दीप, गणेश या लक्ष्मी।

आप भी बनाएं रंगोली

यदि आपको रंगोली बनाने की प्रैक्टिस नहीं है, तो भी मन खराब करने की जरूरत नहीं है। आप भी रंगोली से अपने घर के आंगन को सजा सकते हैं। रंगोली बनाने के लिए प्लास्टिक के स्टेंसिल्स का प्रयोग भी किया जाता है। 'रेडिमेड रंगोली स्टिकर' भी बाजार में उपलब्ध हैं, उन्हें साफ जमीन पर चिपका कर उस पर रंगोली का डिजाइन बनाया जा सकता है। रंगोली को झाड़ू या पैरों से नहीं हटाया जाता है, बल्कि इसे पानी से साफ किया जाता है। किसी सुंदर से कांच या क्रिस्टल के बर्तन में पानी डालें। इसमें फूलों की पंखुड़ियां सजाएं और फिर रंग-बिरंगी कैंडल्स को पानी पर छोड़ दें। यह खुशबूदार और जगमगाती रंगोली आपके घर आने वाले मेहमानों को यकीनन बहुत पसंद आएगी।

हसो हसाओ

टीचर (जय से)- बड़े होकर तुम क्या करोगे?
जय- सर, शादी
टीचर- मेरा मतलब है कि क्या बनोगे?
जय- जी, मैं दूल्हा बनूंगा।
टीचर- मेरा कहना चाह रहा हूं कि तुम क्या हासिल करोगे?
जय- दुल्हन।

संता (दुकानदार से)- एक केला कितने का दिया?

दुकानदार- एक रुपए का एक।

संता- यह तो बहुत महंगा है, तुम मुझे 60 पैसे में दोगे क्या?

दुकानदार- इतने कम पैसों में तो सिर्फ केले का छिलका ही मिलेगा।

संता- तो ठीक है न, ये लो 40 पैसे और सिर्फ केला दे दो।

बच्चा होता भगवान स्वरूप

वह तो निश्छल सरल सहज है,
अपना हो या अनजान का।
बच्चा स्वरूप होता भगवान का।।

मक्खन-सी मृदुता कोमलता।
जिज्ञासा अद्भुत चंचलता।
सदाबहार सुमन है यह,
इस शाश्वत उद्यान का।
बच्चा स्वरूप होता भगवान का।।

नैसर्गिक कल-कल किलकारी।
तुतलाती बोली अति प्यारी।
भाव नहीं होता है उसमें,
क्रोध लोभ अभिमान का।
बच्चा स्वरूप होता भगवान का।।

हँसता रोता खिन्न हो जाता।
पल भर में प्रसन्न हो जाता।
प्रबल प्रेरणा-पुंज है यह,
कुटिल-मलिन इंसान का।
बच्चा स्वरूप होता भगवान का।।

मन के सच्चे सरल जो होते।
पाते प्रभुता विरल वो होते।
बच्चा रखवाला मानव की,
आन बान और शान का।
बच्चा स्वरूप होता भगवान का।।

सूर्योदय के बावजूद

क्या उम्मीद रखें
अमावस के दलालों से
जो इच्छा करते हैं
जागने से पूर्व सोने की,
उठने से पूर्व बैठने की,
आरम्भ से पूर्व समाप्ति की;
जो चाहते हैं
ऐशो आराम
बिना मेहनत किये,
मंजिल
बिना चले;
किसी को
चाहे पानी भी न मिले
लेकिन
इन्हें चाहिये
शराब और
न जाने क्या-क्या ?
वासना-विलास में
आकण्ठ डूबे रहना
इनका लक्ष्य है,
भेड़-बकरी, मच्छी-मुर्गे
इनका भक्ष्य है !
ये लोग होते हैं
विलासिता और जड़ता की
अँधेरी कोठरियाँ,
जहाँ
सूर्योदय के बावजूद
प्रकाश की एक किरण भी
नहीं पहुँचती;
प्रकाश के लिए
ये लोग करते-करवाते
काले कोयलों का काला धंधा
और जलाते-जलवाते
शोषण की अंगीठियाँ,
जो प्रकाश तो नहीं देती
मगर
ताप और विषैला धुआँ
उगलती है;
उस घुटन में
ऐसे लोगों का जीवन
उदय से पूर्व
अस्त हो जाता है,
आरम्भ से पूर्व
समाप्त हो जाता है।

- डॉ. दिलीप धींग

नवग्रह

वो केतु की तरह
सब कुछ जानते हैं
मैं राहु की तरह भ्रम
फिर भी फैलाता हूं।

वो बुद्ध की तरह
बुद्धि का तर्क लगाते हैं
मैं मंगल की तरह जिद्दी
जिद कर माँ काली से सब मांगता हूं।

वो शुक्र की तरह
मिथ्या प्रेमपाश में फंसते है
मैं शनि की तरह
कर्म कर सब भाग्य में लिखता हूं।

वो चाँद की तरह
सबको मोहक लगते हैं
मैं सूर्य की तरह जलकर
योग अग्नि में तपता हूँ।

- राजीव डोगरा
कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

चाँद नहीं, सूरज होना है

अँधेरों के सहारे नहीं जीना,

अपनी रोशनी खुद ही बनना।

क्यों उधार की चमक होना?

मुझे चाँद नहीं, सूरज होना है।

न रात की ठंडी चुप्पी में थमना,

सुबह की गर्माहट को छूना है,

मुझसे ही रोशन होगीं मंजिलें,

मुझे चाँद नहीं, सूरज होना है।

नहीं किसी की तरह घटकर बढ़ना,

क्यों आधा-अधूरा रहना?

जलकर भी पूर्णता को पाना है,

मुझे चाँद नहीं, सूरज होना है।

अपनी किरणों को ऐसे फैलाना है,

आसमान खुद का रोशन करना है।

अपने होने को उजागर करना है,

मुझे चाँद नहीं, सूरज होना है।

- अनुपमा अनुपम
जोधपुर।

जवाब दो तो मानें...

इस बार हम लाए हैं कुछ और भी रोचक सवाल, देखते हैं उनके जवाब आपको ज्ञात हैं या नहीं!... नहीं पता तो जान जाएंगे। आखिर नीचे ही तो दिए गए हैं इन प्रश्नों के उत्तर।

1. मुगलों की राजकीय भाषा कौन-सी थी?
2. भारत का पहला डाक टिकट कब प्रारंभ हुआ?
3. चंदेल वंश के संस्थापक कौन थे?
4. गेंहू के उत्पादन में प्रथम स्थान किस देश का है?
5. एशिया क्रिकेट कप 2012 का विजेता कौन है?
6. एक किलोबाइट (kb) में कितनी बाइट होती हैं?
7. यदि किसी वस्तु का वजन धरती पर 6 किलो है तो उसका वजन चांद पर कितना होगा?
8. किस उपकरण से हवा की शक्ति व गति मापी जाती है?

9. राष्ट्रीय खेल दिवस कब मनाया जाता है?
10. देवधर ट्रॉफी किस खेल से सम्बन्धित है?
11. सबसे बड़ी छिपकली का खिताब किसे मिला है?
12. साइक्लामेन क्या होता है?
13. कौन-सा प्राणी खड़े-खड़े नींद ले सकता है?
14. सफेद हाथियों का गढ़ किस जगह को कहा जाता है?

उत्तर- (1.) फारसी (2.) 1852 (3.) ननुक (4.) चीन (5.) पाकिस्तान (6.) 1024 (7.) 1 किलो (8.) अनिमोमीटर (9.) 29 अगस्त (10.) क्रिकेट (11.) कोमोडो ड्रैगन (12.) एक पेड़ का नाम है (13.) घोड़ा (14.) थाईलैंड

बूढ़े माता-पिता की खामोशियाँ

लघुकथा

घर भरा हुआ था, फिर भी आँगन में एक अजीब-सी चुप्पी पसरी रहती थी। पिता रोज़ अख़बार लेकर वही पुरानी कुर्सी संभालते, जिसे अब कोई देखता नहीं था। माँ रसोई में धीमे-धीमे काम करती, जैसे आवाज़ भी किसी को परेशान कर देगी। बच्चों और बहुओं के बीच उनकी बातें अक्सर अधूरी रह जातीं।

पिता कभी-कभी पूछते, आज बेटा देर से आएगा क्या?

माँ आँखों से जवाब दे देती—उन्हें पता था, पूछना ही आख़िरी हक़ बचा है।

दोपहर में माँ थाली सजाकर रखती, पर जब सब अपने-अपने समय पर खाते, तो उसकी थाली ठंडी रह जाती। वह बिना शिकायत खा लेती। पिता शाम को दरवाज़े की ओर देखते रहते, जैसे किसी दस्तक का इंतज़ार हो। कोई आता नहीं, पर उम्मीद हर रोज़ लौट आती।

एक दिन बिजली चली गई। मोबाइल, टीवी—सब शांत हो गए। घर पहली बार सच में आमने-सामने बैठा। तब सबने देखा—माँ के हाथ काँपते हैं, पिता की आँखें कमज़ोर हो चुकी हैं। वे चुप इसलिए नहीं थे कि कहने को कुछ नहीं था, बल्कि इसलिए कि सुनने वाला कोई नहीं था।

उस रात माँ ने पहली बार कहा, बस साथ बैठ लिया करो।

पिता मुस्कुराए—शब्दों के बिना।

कभी-कभी बूढ़े माता-पिता की सबसे बड़ी ज़रूरत दवा या पैसा नहीं, बल्कि थोड़ी-सी सुनवाई होती है। उनकी ख़ामोशियाँ शिकायत नहीं—प्यार की आख़िरी पुकार होती हैं।

- सुरभि खीची
जोधपुर

साप्ताहिक चित्र

पार्थवी

समत्व से रहें संयमित

प्रो. हिमांशु राय
निदेशक, आईआईएम इंदौर

लोग अकसर मुझसे पूछते हैं – 'आप इतने उतार-चढ़ाव के बीच भी शांत कैसे रहते हैं? काम में चुनौती हो या कठिनाई, आपकी प्रतिक्रिया इतनी संतुलित कैसे बनी रहती है?'

मेरा उत्तर कोई रहस्यमय सूत्र नहीं होता, न ही कोई भावनात्मक नियंत्रण की तकनीक। मैं मात्र इतना कहता हूँ कि मैंने सदैव इसी बात पर ध्यान केन्द्रित किया है कि हर स्थिति स्थायी नहीं होती, और हर अनुभव 'मुझसे' बड़ा नहीं है। इसी से मैं हर स्थिति में संयमित और शांत, और विशेषकर प्रसन्न होता हूँ।

आध्यात्मिक दृष्टि से यही समझ 'समत्व' का अभ्यास बन जाती है। समत्व कोई विशेष उपलब्धि नहीं, बल्कि जीवन को देखने की दृष्टि है, जो व्यक्ति को सुख और दुःख, लाभ और हानि, प्रशंसा और आलोचना - इन सभी द्वंद्वों के बीच स्थिर रहने की क्षमता देती है। समकालीन जीवन में असंतुलन सबसे बड़ी समस्या बन चुका है। एक दिन सफलता मिलती है तो व्यक्ति स्वयं को अजेय मानने लगता है, और अगले ही दिन छोटी-सी असफलता उसे भीतर से तोड़ देती है। इसका कारण परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि उनसे हमारा अत्यधिक तादात्म्य है। मन हर अनुभव को अपनी पहचान बना लेता है। लाभ हुआ तो "मैं सफल हूँ", हानि हुई तो "मैं असफल हूँ"। यही पहचान का उतावलापन मानसिक अस्थिरता को जन्म देता है। समत्व इसी चक्र को तोड़ता है। वह सिखाता है कि अनुभव घटते हैं, पर अनुभवकर्ता उनसे परिभाषित नहीं होता।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो समत्व का अर्थ है भावनात्मक नियमन। जो व्यक्ति अपनी भावनाओं को बिना दबाए, पर बिना उनसे प्रभावित हुए स्थिति को देख पाता है, वह निर्णय अधिक स्पष्टता से लेता है और दीर्घकालिक संतोष का अनुभव करता है। इसी प्रकार, जो लोग सफलता या विफलता के बाद अत्यधिक भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं देते, उनमें तनाव से जुड़ी बीमारियाँ लगभग तीस से चालीस प्रतिशत तक कम पाई जाती हैं। यह आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि समत्व केवल आध्यात्मिक अवधारणा नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य की आधारशिला भी है।

हालाँकि समत्व का अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति संवेदनहीन हो जाए। यह एक सामान्य भ्रम है। समत्व का वास्तविक अर्थ है संवेदना के साथ स्थिरता। व्यक्ति दुख को अनुभव करता है, पर उसमें डूबता नहीं; सुख को स्वीकार करता है, पर उससे घमंडी नहीं होता। यही संतुलन जीवन को गहराई देता है। जो व्यक्ति मात्र सुख चाहता है, वह भय में जीता है, और जो हर दुःख से भागना चाहता है, वह जीवन से कट जाता है। समत्व इन दोनों प्रवृत्तियों के बीच का मार्ग है।

यह अनुभव से जुड़ने और उससे मुक्त रहने के बीच का संघर्ष भारतीय ज्ञान परंपरा में बहुत स्पष्ट रूप से देखा गया है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं: "समत्वं योग उच्यते।" अर्थात समत्व ही योग है। यहाँ योग का अर्थ किसी शारीरिक अभ्यास से नहीं, बल्कि चेतना की उस स्थिति से है जहाँ मन द्वंद्वों से ऊपर उठकर कर्म करता है। अर्जुन का संघर्ष केवल युद्ध का नहीं था, बल्कि भावनात्मक असंतुलन का था, यानि अपने लोगों को देखकर उत्पन्न हुआ शोक, भय और मोह। समाधान भी वहीं से आया - समत्व की समझ से। इसी प्रकार, युधिष्ठिर समत्व का सजीव उदाहरण हैं। उन्हें जीवन में बार-बार हानि हुई – राज्य छीना गया, वनवास मिला, अपमान सहना पड़ा – पर उन्होंने हर स्थिति में धर्म और विवेक को नहीं छोड़ा। यह उनका भावनात्मक शून्य होना नहीं था, बल्कि आंतरिक संतुलन था। इसके विपरीत, दुर्योधन का जीवन देखें - हर लाभ ने अहंकार बढ़ाया और हर हानि ने क्रोध। परिणाम यह हुआ कि उसके पास सत्ता तो थी, पर शांति नहीं।

आधुनिक जीवन में यह संघर्ष और भी तीव्र हो गया है। सामाजिक तुलना, प्रदर्शन की संस्कृति और निरंतर मूल्यांकन ने मनुष्य को बाहरी परिणामों पर अत्यधिक निर्भर बना दिया है। आज के युवा वर्ग में सभी अपने आत्म-मूल्य को अपने पेशेवर परिणामों से जोड़ते हैं। यही कारण है कि थोड़ी-सी आलोचना भी आत्मविश्वास को गहरे स्तर पर प्रभावित करती है। समत्व यहाँ एक आंतरिक सुरक्षा कवच की तरह कार्य करता है। यह व्यक्ति को यह स्मरण कराता है कि परिणाम महत्वपूर्ण हैं, पर अंतिम सत्य नहीं।

समत्व का अभ्यास किसी एक दिन में नहीं होता। यह रोज़मर्रा के छोटे निर्णयों से विकसित होता है, जैसे जब हम किसी असफल प्रयास को आत्म-आलोचना का कारण नहीं बनाते, जब हम प्रशंसा को अहंकार में परिवर्तित नहीं होने देते, जब हम प्रतीक्षा के क्षणों में अधैर्य नहीं खोते। धीरे-धीरे मन सीखता है कि हर अनुभव एक संदेश है, पहचान नहीं। यही सीख व्यक्ति को भीतर से स्थिर बनाती है। समत्व जीवन से पलायन नहीं सिखाता, बल्कि जीवन में पूर्ण सहभागिता का मार्ग खोलता है। जब मन संतुलित होता है, तब व्यक्ति जोखिम लेने से नहीं डरता, क्योंकि वह जानता है कि परिणाम चाहे जो हों, उसकी आंतरिक स्थिति सुरक्षित है। वह संबंधों में अधिक उदार होता है, क्योंकि वह दूसरों के व्यवहार को अपनी अस्मिता पर आघात नहीं मानता। वह कर्म करता है, पर बंधता नहीं।

इसलिए यदि कोई पूछे कि इस अनिश्चित, तीव्र और दबावपूर्ण समय में स्थिर कैसे रहा जाए, तो उत्तर बहुत जटिल नहीं है। समत्व का अर्थ यह समझ लेना है कि जीवन में सब कुछ घटेगा – सुख भी, दुःख भी – पर दोनों का स्थायी निवासी बनने की आवश्यकता नहीं है। जब यह समझ आ जाता है, तब मन परिस्थितियों के अधीन नहीं रहता, बल्कि परिस्थितियों के बीच भी अपने केंद्र में स्थिर बना रहता है। यही समत्व है, और यही जीवन को भीतर से समृद्ध बनाने की वास्तविक कुंजी।

मुद मोद प्रमोद की अभिलाषा

हृदय नारायण दीक्षित
चिंतक-विश्लेषक व पूर्व विधानसभा अध्यक्ष उप्र

अभिलाषाएं अनंत हैं। सबसे बड़ी अभिलाषा आनंद प्राप्ति है, लेकिन संसार दुखमय है। मनुष्य प्राचीन काल से ही सुखी देश में रहना चाहता है। वेदों में आदर्श राष्ट्र की सुंदर अभिलाषाएं हैं। आधुनिक राजनीति निन्दित क्षेत्र है। संसदीय राजनीति का भाषाशास्त्र ही कर्कश और बहुधा अश्लील है। यहां आरोप हैं, प्रत्यारोप हैं, जाति, क्षेत्र, मजहब, पंथ के उन्माद हैं। लेकिन प्राचीन भारतीय राजनीति लोकमंगल का उपकरण थी। कुछेक विद्वान लोकतंत्र को यूरोपीय परम्परा की देन मानते हैं। यूरोपीय जनतंत्र और संसद की कल्पनाएं 13वीं सदी के बाद की हैं। लेकिन भारत में राजधर्म और नीतिशास्त्र का विकास ईसा पूर्व कम से कम 6-7 हजार वर्ष पहले ही शुरू हो गया था। कौटिल्य का अर्थशास्त्र ईसापूर्व लगभग 340 वर्ष में माना जाता है। मौर्यकाल और कौटिल्य ज्ञात इतिहास में हैं। 'अर्थशास्त्र' के रचनाकाल में राजनीति पर ढेर सारे विचार प्रचलित थे। कौटिल्य के अर्थशास्त्र (वाचस्पति गैरौला के भाष्य) में वृहस्पति, शुक्राचार्य, भारद्वाज, पाराशर, चारायण, नारद आदि पूर्ववत विचारकों का उल्लेख किया गया है। शुक्रनीति में राज्यव्यवस्था का खूबसूरत विवरण है। मसलन "राजा बहुमत के अनुसार कार्य करे-कुर्याद् बहुसंमतम" (अध्याय 1) शुक्रनीति में योग्यता को ही नियुक्ति का आधार माना गया है "कर्मियों की नियुक्ति, पदोन्नति योग्यता और काम के आधार पर करे, जाति या कुल के आधार पर नहीं।"

"शुक्रनीति में मोहित करने वाली राजनैतिक संरचना है। यहां सेना के अंगो पदों के भी नाम व विवरण हैं। प्रधानमंत्री, मंत्री, सचिव, अमात्य व पुरोहित के वेतन सुस्पष्ट रखने के निर्देश हैं।" (अध्याय 2) राजा को निर्देश है कि वृक्षारोपण की चिन्ता करे। गांव में गांव के लिए उपयोगी वृक्ष और वनों में जंगली वृक्ष लगाए। (अध्याय 4) राजा को प्रतिदिन के चैबीस घंटो का समय विभाजन करना चाहिए। आय-व्यय की प्रतिदिन जांच जरूरी है। राजा स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करे। (अध्याय 1) अधिकारियों को एक ही स्थान पर न रखने और स्थानान्तरण के भी निर्देश हैं। (अध्याय 2)

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की शुरूवात में ही शुक्राचार्य व वृहस्पति को नमस्कार किया है। उन्होंने वाद विवाद के अवसर के लिए शुक्रचार्य के मत का उल्लेख किया है। शुक्रनीति ऐतिहासिक रचना है। गुस्ताव ओपर्ट ने इस ग्रन्थ पर काफी श्रम किया है। उनके विवेचन में यह ईसापूर्व की रचना है। मूलभूत विषय है राजनीति की विषय वस्तु और लोकतंत्र। इस विषय सामग्री का आधार कौटिल्य हैं। शुक्राचार्य हैं। यथार्थवादी दर्शन है। यहां समग्र लोक को मधुमय बनाने वाली राजनीति थी।

ऋग्वेद (9.113.10 तथा 9.113.11) में प्रार्थना है, जहां सारी कामनाएं पूरी होती हों-यत्र सत्यस्य परमं निधानं तत्र मा सोमामृतं कृधि। यत्र स्थिरं सुखं चास्ति तत्र मा अमृतं कृधि। जहां तृप्ति दायक अन्न हो। हे देवों आप वही स्थायित्व दें। अमृतत्व दें। जहां आनंद, मोद, मुद व प्रमोद हैं। यत्रा नंदास च मोदाश्च मुद प्रमोद आसते। जहां कामनाएं तृप्त होती हैं। आप वहां अमृत दें। इस सबके लिए एक आदर्श राज्य व्यवस्था चाहिए। आदर्श राजव्यवस्था के अभाव में राष्ट्र सुखी नहीं होते। इसी प्रार्थना में कहते हैं, "जहां विवश्वान का पुत्र राजा है। जहां विशाल नदियां बहती हैं। जहां आनंद का द्वार है। आप हमें वहां स्थायित्व दें।" स्तुति है, "जहां सूर्य का अखण्ड तेज प्राप्त होता है, उसी क्षेत्र में मुझे अमृतत्व दें।" सारी कामनाएं स्वाभाविक हैं, भौतिक हैं, लेकिन एक सुंदर राजव्यवस्था की आवश्यकता की बात महत्वपूर्ण है।

आदिम काल में न राजा था और न ही राज्य। अथर्ववेद में राज्यव्यवस्था के जन्म और विकास की सुंदर यात्रा है, "पहले राज्यरहित राजा के विकास का सुंदर उल्लेख है, "पहले राज्य रहित राजा की दशा थी फिर विकास हुआ। परिवार संस्था आई। फिर विकास हुआ और आह्वनीय दशा आई। इसके बाद विचार विमर्श बढ़े। फिर दक्षिणाग्नि दशा आई। यहां दक्ष विशेषज्ञ दशा का अर्थ है कुशल लोगों का नेतृत्व मिलना। विकास होता रहा। इसी के विकास से समिति बनी। यह राजा को पदासीन करती थी और पद से हटाती भी थी। वेदों में उल्लेख है, "राजा समिति में जाता है।" अर्थात राजा निरंकुश नहीं है। वह समिति के प्रति उत्तरदाई है।

नितिन नवीन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
भाजपा

पंकज चौधरी
उत्तर प्रदेश भाजपा
प्रदेश अध्यक्ष

आधुनिक काल में ज्यादातर राज व्यवस्थाएं किसी न किसी रूप में लोकतांत्रिक हो गई हैं। अमेरिकी राज्यव्यवस्था में राष्ट्रपति की प्रभुता है। रूस में राष्ट्रपति का वर्चस्व है। ब्रिटेन में संसद की प्रभुता है। भारत में संविधान की सर्वोपरिता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदान का बहुत महत्व है। विचार आधारित पार्टियां चुनाव के दौरान अपने पक्ष में वातावरण बनाती हैं। राजनैतिक दल चुनाव में अपने प्रत्याशी खड़े करते हैं। किसी भी राजनीतिक दल के लिए संगठन बनाना जरूरी है। कार्यकर्ता आधारित संगठन पार्टी के पक्ष में लोकमत बनाते हैं। सारी दुनिया में राष्ट्रवादी संगठन हैं। भारत का स्वाधीनता संग्राम भी राष्ट्रवादी था। आज कथित सेकुलरवादी संगठन और व्यक्ति हिंदुत्व को सांप्रदायिक बताते हैं। लेकिन स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख योद्धा महात्मा गांधी ने लिखा था कि, मुझसे हिंदुत्व निकाल दो, तो मेरे पास कुछ नहीं बचेगा।" स्वाधीनता संग्राम के आगे पीछे कांग्रेस राष्ट्रवादी संगठन भी थी। संगठन अपरिहार्य है। वामपंथी भी संगठन की महत्ता जानते थे। स्वाधीनता के बाद सांप्रदायिकता चरम पर थी। भारत विभाजन हो चुका था। पाकिस्तान सांप्रदायिक आधार पर बंट गया था। धीरे-धीरे संगठन का तेज घटा। पंडित नेहरू के नेतृत्व में सरकार तो थी, लेकिन संगठन नहीं था।

1951 में भारतीय जनसंघ का जन्म हुआ। इसका सांगठनिक ढांचा धीरे-धीरे मजबूत हो रहा था। संगठन के चुनाव होते थे। संगठन आंतरिक लोकतंत्र से समृद्ध था। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अनावश्यक रूप से आपातकाल (1975) लगाया। जनसंघ सहित सभी दलों के कार्यकर्ता जेलों में भेज दिए गए। आपातकाल हटाने के बाद 1977 में संगठन कांग्रेस, सोशलिस्ट और लोकदल तथा भारतीय जनसंघ ने मिलकर जनता पार्टी बनाई। उच्च उद्देश्यों से सशक्त होने के बावजूद जनता पार्टी के पास संगठन का ढांचा नहीं था। जनसंघ घटक के लोगों पर दोहरी सदस्यता के आरोप लगे। जनता पार्टी टूट गई। कांग्रेस कई दफा टूटी। पहली टूट में एक धड़ा कांग्रेस (ओ) और दूसरा कांग्रेस (आई) कहलाया। कांग्रेस की टूट से ही तृणमूल कांग्रेस बंगाल में व राष्ट्रवादी कांग्रेस महाराष्ट्र में बनी। जनता दल बेमेल संगठन टूटा। एक धड़ा जनता दल एस व एक धड़ा जनता दल यू हो गया। पंडित अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी बनी। भाजपा के संगठन पर कई विदेशी भारतीय विद्वानों ने शोध किया है और आश्चर्य व्यक्त किया है कि भारत जैसे विशाल देश में ऐसा मजबूत संगठन विचारणीय है।

पिछले सप्ताह भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव संपन्न हुआ है। बिहार के नितिन नवीन निर्विरोध राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष चुने गए हैं। इसी प्रकार देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में संगठन के प्रदेश अध्यक्ष का निर्वाचन संपन्न हुआ। पंकज चौधरी को प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। साधारण प्रकृति के असाधारण राजनेता श्री पंकज चौधरी ने एक आदर्श सांसद की भूमिका का निर्वाहन भी किया है। चैधरी सात बार के सांसद हैं। एक ही पार्टी के टिकट पर बिना क्षेत्र बदले सात बार सांसद होना आश्चर्यजनक है। चौधरी लोकप्रिय हैं, संसदीय परिपाटी के निर्वाहनकर्ता श्री चैधरी की प्रशंसा पूरे देश में होती है। यूपी के भाजपा विरोधी दल सदमे में हैं और भाजपा के कार्यकर्ता उल्लासित।

\वंदेमातरम् और आरएसएस : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साहित्य में वंदेमातरम् की स्पष्ट छाया दिखायी देती है

संघ साहित्य में वंदेमातरम् की गूंज

डॉ. लोकेन्द्र सिंह
समीक्षक, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए 'वंदेमातरम्' केवल एक गीत नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा और राष्ट्र-निर्माण का आधार है, जो भाषा, क्षेत्र से ऊपर उठकर एकता का संदेश देता है। यही कारण है कि संघ के कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रीयता की अलख जगाने के लिए अपने लेखन में वंदेमातरम् का खूब उपयोग किया है। संघ गीतों में वंदेमातरम् की गूंज है, तो वंदेमातरम् पर लेख और पुस्तकों की रचना भी की गई है। जब भी वंदेमातरम् को सांप्रदायिक दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया गया और उसकी अवमानना करने का प्रयास किया गया, तब-तब संघ के स्वयंसेवकों ने मुखरता से वंदेमातरम् के पक्ष में अपनी कलम चलायी है। अगर हम संघ साहित्य का गहनता से अध्ययन करेंगे तो हमें स्पष्ट तौर पर उसमें वंदेमातरम् की छाया दिखायी देगी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के थिंक टैंक रहे, चिंतक-मनीषी श्रद्धेय रंगा हरि जी ने वंदेमातरम् पर अनूठी पुस्तक की रचना की है- 'वंदेमातरम् की आत्मकथा'। यह पुस्तक केवल राष्ट्रगीत के इतिहास का वर्णन नहीं करती, बल्कि इसे एक जीवंत इकाई के रूप में प्रस्तुत करती है, जो राष्ट्र के जन्म और संघर्ष की गाथा स्वयं अपने मुख से सुना रही हो। इस पुस्तक का कई भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। यानी इसके माध्यम से वंदेमातरम् की गौरवगाथा संपूर्ण देश में प्रसारित करने का प्रयास संघ ने किया।

'वंदेमातरम् की आत्मकथा' में श्रद्धेय रंगा हरि जी ने उन राजनीतिक और सांप्रदायिक विवादों का भी बेबाकी से जिक्र है जो इस गीत के साथ जुड़े रहे। इसमें जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस और रवींद्रनाथ टैगोर के बीच हुए पत्र-व्यवहार और विमर्श का विश्लेषण भी शामिल है। उन्होंने यह भी बताया है कि दुनिया के अन्य देशों के राष्ट्रगीत अकसर स्वतंत्रता के बाद या राष्ट्र बनने के बाद लिखे गए, लेकिन 'वंदेमातरम्' संभवतः एकमात्र ऐसा गीत है जिसने राष्ट्र निर्माण से पहले क्रांति को जन्म दिया।

वंदेमातरम् को आधार मानकर और 'वंदेमातरम्' पद को लेकर संघ में कई गीत रचे गए हैं, जो स्वयंसेवकों के मन में राष्ट्रभक्ति की ज्योति को दैदीप्यमान रखते हैं। एक गीत मुझे व्यक्तिगत तौर पर बहुत प्रिय है। देशभक्ति की भावना को जगाने वाले इस गीत की प्रत्येक पंक्ति के आखिर में 'वंदेमातरम्' आता है-

राष्ट्र की जय चेतना का गान वंदे मातरम्,
राष्ट्रभक्ति प्रेरणा का गान वंदे मातरम्।।
वंशी के बहते स्वरों का प्राण वंदे मातरम्,
झल्लरी झनकार झनके नाद वंदे मातरम्,
शंख के संघोष का संदेश वंदे मातरम्।।

इसी तरह, संघ में संस्कृत में एक गीत गाया जाता है- 'वंदे त्वां भूदेवीम् आर्य मातरम्। जयतु जयतु पदयुगलम् ते निरन्तरम्॥ वंदे मातरम्...' इस गीत के आगे के पदों में ठीक उसी तरह भारत की वंदना की गई है, जिस प्रकार बंकिम बाबू ने 'वंदेमातरम' में की है। गीत में कहा गया है कि आप (भारत माता) हिमालय (हिम-नग) से जन्मी हैं (पार्वती स्वरूपा), आप हमें स्वाभिमान और सद्बुद्धि देती हैं। आप अपनी विशाल सेना और अनगिनत भुजाओं से अपने पुत्रों (देशवासियों) का तारण (रक्षा) करती हैं। करोड़ों-करोड़ों कंठ आपकी जय-जयकार करते हैं। आप साक्षात लक्ष्मी (कमला) हैं, आप निर्मल (अमला) और अतुलनीय हैं। आप बल प्रदान करने वाली, शत्रुओं का नाश करने वाली (रिपु-हरणीम्) और उनके घमंड को चूर करने वाली हैं।

'वंदेमातरम्' से पूर्ण विजय तक राष्ट्र की आराधना

एक अन्य गीत को देखिए- 'पूर्ण विजय संकल्प हमारा, अनथक अविरत साधना। निशिदिन प्रतिपल चलती आयी, राष्ट्रधर्म आराधना। वंदे मातृभूमि वंदे, वंदे जगजननी वंदे।।' इस गीत में मातृभूमि की वंदना करते हुए स्वयंसेवक संकल्प व्यक्त करते हैं कि जब तक पूर्ण विजय नहीं हो जाएगी, तब तक हम राष्ट्रधर्म की आराधना करते रहेंगे। यह पूर्ण विजय का संकल्प क्या है? भारत माता को परम वैभव पर सुशोभित करना ही, स्वयंसेवकों का एकमेव संकल्प है। एक अन्य गीत को देखिए- 'वन्दे जननी भारत धरणी शस्य श्यामला प्यारी। नमो नमो सब जग की जननी कोटि कोटि सुतवारी॥' इसमें स्वयंसेवकों ने भारत माता के सौंदर्य का बखान 'वंदेमातरम' की तर्ज पर ही किया है। जैसे स्वयंसेवक कवि ने कल्पना की है कि उन्नत हिमालय मां का मुकुट है, सिंधु भारत माता के पांव पखार रहा है। हरियारी से मां का आंचल है। गंगा-यमुना सहित अन्य नदिया जीवनरस देती हैं। यहां माया, मथुरा और अयोध्या जैसे नगर हैं, जहां स्वयं ईश्वर ने लीलाएं रची हैं। 'भारत वंदे मारतम् जय, भारत वंदे मातरम्।।' गीत के प्रत्येक पद के आखिर में स्वयंसेवक 'वंदेमातरम्' का जयघोष करते हैं। संघ में इस प्रकार के गीतों की एक लंबी श्रृंखला है।

1949 के समाचारपत्र में 'वंदेमातरम्'

स्वयंसेवकों ने समाचारपत्र प्रकाशित किए तो अवसर आने पर वहां भी वंदेमातरम् की प्रतिष्ठा को बढ़ाने का कार्य किया। जालंधर में संघ के स्वयंसेवक 'आकाशवाणी' नामक समाचारपत्र का प्रकाशन करते थे। 11 दिसंबर, 1949 को उस समाचारपत्र में स्वयंसेवकों ने मैडम भीकाजी कामा द्वारा बर्लिन में फहराए गए भारत के पहले राष्ट्रीय ध्वज को प्रकाशित किया। समाचारपत्र में ध्वज के साथ-साथ राष्ट्रगान, जन-गण-मन और राष्ट्रगीत, वंदेमातरम्, दोनों के अखंड स्वरूप को भी प्रकाशित किया था। यह राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति संघ के स्वयंसेवकों की श्रद्धा की अभिव्यक्ति है।

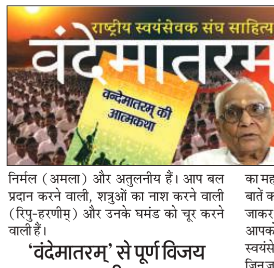

शाखा पर 'वंदेमातरम्'

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं के लिए 'वंदेमातरम्' का महत्व प्रारंभ से है। संघ के बारे में ना समझी पूर्ण बातें करने वाले लोगों को कभी संघ की शाखा पर जाकर देखिए, वंदेमातरम् का जयघोष गूंजता आपको सुनायी देगा। अपने देशी खेल खेलते समय स्वयंसेवक जोश, उत्साह, साहस के संचार के लिए जिन जयघोषों को उच्चारित करते हैं, उनमें वंदेमातरम् प्रमुख है। हम किसी भी शहर में चले जाएं, वहां वंदेमातरम् का पूर्ण गायन करने वाले लोगों में सबसे अधिक संख्या संघ के स्वयंसेवकों की ही मिलेगी क्योंकि संघ के ज्यादातर कार्यक्रमों में वंदेमातरम् का पूर्ण गायन किया जाता है। इसके अलावा, संघ की प्रेरणा से चलने वाले सरस्वती शिशु मंदिर स्कूलों में भी अखंड वंदेमातरम् सिखाया जाता है।

सरकार्यवाह दत्ताजी का आह्वान

अब जबकि संपूर्ण देश अमर रचना 'वंदेमातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने पर आनंदित है और उत्सवों का आयोजन कर रहा है, तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से वक्तव्य आना-वंदेमातरम् और संघ के बीच गहरे संबंधों को प्रकट करता है। सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले ने अपने वक्तव्य में कहा है- 'मातृभूमि की आराधना और संपूर्ण राष्ट्र जीवन में चेतना का संचार करने वाले अद्भुत मन्त्र 'वंदेमातरम' की रचना के 150 वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्रगीत के रचयिता श्रद्धेय बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। 1875 में रचित इस गीत को 1896 में कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन में राष्ट्रकवि श्रद्धेय रविंद्रनाथ ठाकुर ने सस्वर प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया था। तब से यह गीत देशभक्ति का मंत्र ही नहीं अपितु राष्ट्रीय उद्घोष, राष्ट्रीय चेतना तथा राष्ट्र की आत्मा की ध्वनि बन गया। 'वंदेमातरम' राष्ट्र की आत्मा का गान है जो हर किसी को प्रेरणा देता है। आज जब क्षेत्र, भाषा, जाति आदि संकुचितता के आधार पर विभाजन करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, तब 'वंदेमातरम्' वह सूत्र है, जो समाज को एकता के सूत्र में बांधकर रख सकता है। भारत के सभी क्षेत्रों, समाजों एवं भाषाओं में इसकी सहज स्वीकृति है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सभी स्वयंसेवकों सहित सम्पूर्ण समाज से आवाहन करता है कि वंदेमातरम् की प्रेरणा को प्रत्येक हृदय में जागृत करते हुए 'स्व' के आधार पर राष्ट्र निर्माण कार्य हेतु सक्रिय हों और इस अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों को उत्साहपूर्वक भागीदारी करें'।

टीटी-एमएम कल्चर से बचें !

गुरु मंत्र

नागेश्वर सोनकेशरी

आज का समय तेज़ी से बदल रहा है। तकनीक, साधन और सुविधाएँ बढ़ी हैं, लेकिन इंसान के भीतर का जुड़ाव घटा है। जीवन की रफ़्तार इतनी तेज़ हो गई है कि अब किसी के पास किसी और के लिए समय नहीं बचा। "तू तेरा देख, मैं मेरा देखूँगा" यह वाक्य आज की मानसिकता का सटीक चित्र बन गया है। पहले यह संवाद कभी मज़ाक या हल्के मन से कहा जाता था, पर अब यह जीवन का सिद्धांत बनता जा रहा है — स्वार्थ, अलगाव और उदासीनता का प्रतीक।

पहले के समय में समाज "हम" की भावना पर चलता था। गाँव-मोहल्ले के लोग एक-दूसरे के सुख-दुःख में साथ खड़े रहते थे। रिश्ते-मदद, अपनापन और भरोसे पर टिके थे। पर आज का दौर "मैं" तक सीमित है। हर व्यक्ति अपनी सुविधा, लाभ और आराम में इतना उलझ गया है कि उसे दूसरों की चिंता करने की फुर्सत नहीं। यदि कोई पड़ोसी परेशानी में है या कोई मित्र मानसिक तनाव से गुजर रहा है, तो हम बस यही सोचते हैं—"मुझे इससे क्या मतलब ?"

सोशल मीडिया के युग में हम एक-दूसरे से अधिक जुड़े हुए दिखते हैं, पर वास्तव में पहले से अधिक दूर हो गए हैं। हर कोई अपनी सफलता की तस्वीरें साझा करता है, लेकिन किसी की पीड़ा में साथ नहीं देता। यह "तू तेरा देख, मैं मेरा देखूँगा" वाली सोच हमें धीरे-धीरे असंवेदनशील बना रही है।इस प्रवृत्ति का सबसे बड़ा परिणाम यह है कि समाज से सामूहिकता और करुणा गायब हो रही है। रिश्तों में स्वार्थ बढ़ रहा है, परिवारों में संवाद घट रहा है। भाई-भाई, मित्र-मित्र और यहाँ तक कि पति-पत्नी तक "मेरी सीमा, तेरी सीमा" की दीवारें खड़ी कर रहे हैं। ऐसे में प्यार, सहयोग और त्याग जैसे मूल्य खोते जा रहे हैं।

वास्तव में, इंसान का सौंदर्य तभी है जब वह "मैं" से ऊपर उठकर "हम" बन सके। मनुष्य सामाजिक प्राणी है; उसका अस्तित्व दूसरों से जुड़ा हुआ है। यदि हम केवल अपने स्वार्थ तक सीमित रहेंगे, तो यह समाज केवल व्यक्तियों का समूह बन जाएगा, जहाँ कोई किसी का नहीं होगा।आज समय की माँग है कि हम इस सोच को बदलें। "तू तेरा देख, मैं मेरा देखूँगा" के स्थान पर "हम साथ देखें, साथ बढ़ें" का भाव जगाएँ। क्योंकि सच्ची प्रगति तभी संभव है जब सहयोग, संवेदना और सामूहिकता बनी रहे।

जब हम किसी की मदद करते हैं, किसी की बात सुनते हैं, या किसी का दर्द बाँटते हैं ,तभी जीवन अर्थपूर्ण बनता है। यही वह बिंदु है जहाँ "मैं" का दीप "हम" की ज्योति में बदल जाता है। और जब ऐसा होता है, तभी समाज में सच में उजाला होता है।यही मानवता की सच्ची पहचान है।

अनुभव की बात

तेजी से बढ़ती वरिष्ठ नागरिकों की आबादी

विजय मारू
'नेवर से रिटायर्ड' मिशन के प्रणेता

भारत इस समय एक अनोखे जनसांख्यिकीय मोड़ पर खड़ा है। आज दुनिया हमें सबसे बड़ी युवा आबादी वाले देश के रूप में जानती है, लेकिन इसी बीच एक अधिक आयु वाले भारत की नींव भी तेजी से बन रही है। 9 दिसंबर को लोकसभा में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय ने जानकारी दी कि देश में वरिष्ठ नागरिकों की संख्या अभूतपूर्व गति से बढ़ रही है। वर्ष 2011 में 60 वर्ष से ऊपर की आबादी 10.16 करोड़ थी, जो 2036 तक बढ़कर 22.74 करोड़ हो जाएगी। यानी अगले कुछ वर्षों में हमारी जनसंख्या पिरामिड का स्वरूप बहुत बदल जाएगा।

यह परिवर्तन कई अवसरों और चुनौतियों को साथ लाता है। मंत्री ने बताया कि बढ़ती आयु के साथ स्वास्थ्य सेवाओं, सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक निर्भरता, डिजिटल सुविधाओं तक पहुंच और भावनात्मक सहारे जैसी चिंताएं भी तेजी से बढ़ती हैं। सरकार यह भी मानती है कि संयुक्त परिवार की पारंपरिक संरचना और रिश्तों की प्रकृति पहले जैसी नहीं रही। रोजगार की तलाश में दूर शहरों या विदेश जाना, छोटे परिवार, और बदलती जीवनशैली—इन सबने वरिष्ठ नागरिकों को मिलने वाला स्वाभाविक सामाजिक व भावनात्मक सहारा कम कर दिया है।

इन्हीं जरूरतों को देखते हुए सरकार ने 1 अप्रैल 2021 से 'अटल वयो अभ्युदय योजना' लागू की है, जिसके माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों को सहायता और सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। साथ ही, ₹राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक परिषद₹ का गठन किया गया है, जिसकी अध्यक्षता सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार करते हैं। यह परिषद वरिष्ठ जनों से जुड़े विषयों पर विशेषज्ञ सलाह देती है।

इसके बावजूद एक बड़ी सच्चाई यह है कि भारत भले ही आज युवा दिखता हो, लेकिन यह युवा लाभ हमेशा नहीं रहने वाला। विकसित देशों ने पहले से ही वृद्ध आबादी के दबाव को झेला है, और आने वाले दशकों में भारत भी समान परिस्थितियों का सामना करेगा। 2036 तक करीब 15% भारतीय आबादी वरिष्ठ नागरिक होगी—यानी हर सातवां भारतीय वृद्ध होगा।

इस बदलाव का एक स्पष्ट प्रभाव है—अकेले रहने वाले बुजुर्गों की बढ़ती संख्या। कामकाज के कारण बच्चे बाहर चले जाते हैं, और माता-पिता अपनी जड़ों, अपने पड़ोस, अपनी परिचित जीवनशैली से जुड़े रहना पसंद करते हैं। यह दूरी प्रेम की कमी नहीं, बल्कि परिस्थितियों का परिणाम है। विदेशों में अकेलापन अधिक है—जहाँ सैर पर निकले बुजुर्ग को पड़ोसी और दुकानदार सम्मान से अभिवादन करें, ऐसा भारतीय सौहार्द वहां दुर्लभ है। वहीं बच्चों के लंबे कार्य-घंटों के कारण बुजुर्ग दिन भर अकेले पड़ जाते हैं।

इस परिस्थिति ने वरिष्ठ निवासों और वृद्धाश्रमों की मांग बढ़ाई है। जो बात कभी सामाजिक रूप से स्वीकार्य नहीं मानी जाती थी, आज व्यावहारिक समाधान बन चुकी है। अब हर श्रेणी के वरिष्ठ निवास उपलब्ध हैं—बुनियादी देखभाल से लेकर प्रीमियम असिस्टेड-लिविंग सुविधाएं तक। रियल एस्टेट क्षेत्र भी तेजी से इस दिशा में सक्रिय हुआ है।

एक और बड़ा कारण है—बढ़ती दीर्घायु। बेहतर जीवनशैली और जागरूकता के कारण 80 वर्ष पार करना अब आश्चर्य की बात नहीं। कुछ दशक पहले सत्तर वर्ष की आयु को ही पूर्ण जीवन माना जाता था, जबकि आज अस्सी-पचासी वर्ष के सक्रिय लोग सहज मिल जाते हैं। यह प्रगति का प्रतीक है, लेकिन इसके साथ वित्तीय चुनौतियां भी बढ़ गई हैं। सेवानिवृत्ति लाभ और पेंशन महंगाई की गति के आगे कमजोर पड़ जाते हैं। स्वास्थ्य व्यय सबसे बड़ी चिंता बन गया है। गंभीर बीमारियों के बिना भी नियमित दवाइयां, दंत चिकित्सा, फिजियोथेरेपी, नेत्र देखभाल और श्रवण यंत्र जैसे खर्च सीमित संसाधनों पर भारी पड़ते हैं। कई वरिष्ठ नागरिक आवश्यकताओं और इच्छाओं के बीच कठिन चुनाव करने को मजबूर होते हैं।

एक कड़वी सच्चाई यह भी है कि जीवन के अंतिम कुछ सप्ताहों में होने वाला चिकित्सा खर्च अक्सर पूरे जीवन में हुए खर्च के बराबर होता है—कई परिवारों के लिए यह भावनात्मक और आर्थिक बोझ बन जाता है।

इन सभी बातों से एक स्पष्ट संदेश मिलता है—भारत को अपने वृद्ध भविष्य के लिए सामाजिक, आर्थिक, भावनात्मक और संरचनात्मक रूप से तैयार होना ही होगा। लेकिन तैयारी का अर्थ भय नहीं, बल्कि सशक्तिकरण है। हमारे वरिष्ठ नागरिक बोझ नहीं—बल्कि अनुभव, संस्कृति और धैर्य के जीवंत स्रोत हैं। यदि परिवार, समाज और सरकार मिलकर संवेदनशील ढंग से काम करें, तो हम बढ़ती उम्र को सम्मान और सक्रियता का अवसर बना सकते हैं।

और यही वह उद्देश्य है जिसके लिए 'नेवर से रिटायर्ड' जैसी पहलें काम करती हैं। वरिष्ठ नागरिकों को सक्रिय रहने, सीखते रहने, सामाजिक रूप से जुड़े रहने और गरिमा के साथ जीवन जीने के लिए प्रेरित करना—अब विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है। 'नेवर से रिटायर्ड' का मिशन यही याद दिलाना है कि उम्र अंत नहीं, बल्कि नए उद्देश्य और सार्थक योगदान का एक नया अध्याय है।

खाने का स्वाद दोगुना कर देगा गाजर का चटपटा अचार

भारतीय खाने में अचार का महत्व किसी से छिपा नहीं है। दाल-चावल हो, या पराठे, बस थोड़ा-सा अचार मिल जाए तो खाने का मजा दोगुना हो जाता है और जब बात हो गाजर के चटपटे अचार की, तो क्या ही कहने!

गाजर का अचार बाकी अचारों की तुलना में जल्दी तैयार हो जाता है और इसे धूप दिखाने की भी जरूरत नहीं पड़ती। इसे आप एक हफ्ते के अंदर ही खा सकते हैं। यह रेसिपी खासकर उन लोगों के लिए है जो अचार बनाने को मुश्किल समझते हैं। इस बेहतरीन अचार को बनाने की आसान विधि।

गाजर का अचार बनाने के लिए जरूरी सामग्री

- **गाजर:** 500 ग्राम (अच्छी तरह धोकर और छीलकर लंबी पतली पट्टियों में कटी हुई)
- **सरसों का तेल:** 1/2 कप
- **राई दाल (पीली सरसों के दाने):** 2 बड़े चम्मच
- **सौंफ:** 1 बड़ा चम्मच
- **मेथी दाना:** 1/2 छोटा चम्मच
- **हल्दी पाउडर:** 1 छोटा चम्मच
- **लाल मिर्च पाउडर:** 1 छोटा चम्मच (या स्वादानुसार)
- **हींग:** 1/4 छोटा चम्मच
- **सिरका:** 2 बड़े चम्मच (या नींबू का रस)
- **नमक:** 2 छोटा चम्मच (या स्वादानुसार)

ऐसे झटपट बनाएं गाजर का स्वादिष्ट अचार

- सबसे पहले गाजर को धोकर, छीलकर सुखा लें। फिर इसे 1.5 से 2 इंच लंबे और थोड़े मोटे टुकड़ों में काट लें। अब इन टुकड़ों को एक बड़े बर्तन में पानी गरम करके, बस 2-3 मिनट के लिए भाप में उबालें या हल्का नरम होने तक उबाल लें। ध्यान रहे कि गाजर का कुरकुरापन बना रहे। उबालने के बाद, गाजर को तुरंत ठंडे पानी में डालें और फिर अच्छी तरह से सुखा लें। गाजर में बिल्कुल भी पानी नहीं रहना चाहिए।
- एक कड़ाही गरम करें और उसमें राई दाल, सौंफ और मेथी दाने को धीमी आंच पर 1 मिनट तक हल्का भून लें। जब मसालों से खुशबू आने लगे, तो इन्हें ठंडा करके मिक्सी में दरदरा पीस लें। मसाले को बहुत बारीक नहीं पीसना है।
- अब कड़ाही में सरसों का तेल डालकर तेज गरम करें। जब तेल से धुआं निकलने लगे, तो आंच बंद कर दें और तेल को थोड़ा ठंडा होने दें। जब तेल हल्का गरम रह जाए, तो उसमें हींग, हल्दी पाउडर और लाल मिर्च पाउडर डालकर मिलाएं।
- अब एक बड़े कटोरे में कटी हुई सूखी गाजर लें। इसमें भुना और पिसा हुआ मसाला, नमक, और सिरका (या नींबू का रस) मिलाएं। इसके ऊपर तैयार किया हुआ गरम तेल और मसाले का मिश्रण डालें। सारी चीजों को चम्मच से अच्छी तरह मिला लें ताकि गाजर के हर टुकड़े पर मसाला लग जाए।
- इस अचार को एक साफ, सूखे और एयर-टाइट जार में भरकर रखें। आपका चटपटा गाजर का अचार अब लगभग तैयार है। इसे एक दिन बाहर रखने के बाद, आप इसे खा सकते हैं। खास बात है कि यह अचार फ्रिज में एक महीने तक ताजा बना रहता है।

सर्दियों में मूंग दाल हलवा

ऐसे बनाएं हलवाई जैसा लाजवाब स्वाद

सर्दियों में मूंग दाल हलवे का आनंद उठाएं, इस विधि से घर पर बनाएं हलवाई जैसा लाजवाब स्वाद, यह रेसिपी आपको ठंड में एक बेहतरीन मीठे का विकल्प देगी।

सर्दियों के मौसम में कुछ डिशेज खाने का एक अलग ही मजा होता है। ठंड के मौसम में अक्सर कुछ न कुछ मीठा खाने की क्रेविंग जरुर होती है। इसलिए आप घर पर ही टेस्टी डिजर्ट बना सकते हैं। सर्दियों में मूंग दाल हलवा खाने का एक अलग ही मजा आता है। वैसे तो मूंग दाल हलवा बनाने में थोड़ी मेहनत ज्यादा लग जाती है, लेकिन इसका टेस्ट लाजवाब होता है।

-:: सामग्री ::-

- 1/2 कप धुली हुई पीली मूंग दाल।
- 1/2 कप देसी घी।
- 1/2 से 3/4 कप चीनी (स्वादानुसार)।
- 1 कप दूध या दूध और पानी का मिश्रण।
- 1/2 कप मावा/खोया।
- 1/2 छोटा चम्मच इलायची पाउडर।
- कुछ केसर के धागे (गरम दूध में भीगे हुए)।
- 2 बड़े चम्मच कटे हुए मेवे (जैसे काजू, बादाम, पिस्ता)।

कैसे बनाएं मूंग दाल का हलवा

- सबसे पहले आप मूंग दाल को अच्छे से धोकर 3 से 4 घंटे तक या पूरी रात के लिए पानी में भिगो दें। जब दाल अच्छी तरह से फूल जाए, तो इसे पानी से छान लें।
- इसके बाद भीगी हुई दाल को मिक्सर ग्राइंडर में बिना पानी डाले या बहुत ही कम पानी का इस्तेमाल करके दरदरा पीस लें। इस बात का ध्यान रखें कि पेस्ट एकदम महीन न हो। बल्कि इसमें सूजी जैसा हल्का दाना रहना चाहिए।
- भारी तले की कड़ाही लें और इसमें लगभग 1/2 कप देसी घी डालकर मध्यम आंच पर गर्म कर लें। घी गरम होने पर पिसी हुई दरदरी दाल कड़ाही में डाल दें। आंच की धीमी रखें और दाल को लगातार चलाते रहें। यह स्टेप सबसे जरुरी है और इसके लिए करीब 15 से 25 मिनट समय लग जाएगा।
- दाल को तब तक भूनना चाहिए, जब तक उसका रंग बदलकर सुनहरा पीला न हो जाए और उसमें से हल्की-सी भीनी खुशबू आने न लगे। अच्छी तरह भुन जाने पर दाल दानेदार दिखाई देने लगती है और घी कड़ाही के किनारों से अलग होने लगता है।
- यदि आप हलवे में खोया डालना चाहते हैं, तो इसे हल्का से भूनकर ही दाल में मिलाएं। ऐसा करने से हलवा मलाईदार बनेगा। इसके बाद आंच धीमी करें और इसमें गर्म दूध या दूध और पानी का मिश्रण धीरे-धीरे डालें।
- इसके साथ ही, गर्म दूध में भीगे हुए केसर के धागे भी मिला दें। इस मिश्रण को तुरंत लगातार चलाते रहें ताकि कोई गुठली न बने। दाल खुद ही दूध को सोखना शुरु कर देगी और फूल जाएगी।
- जब दाल दूध को पूरी तरह सोख ले और मिश्रण गाढ़ा होने लगे, तब उसमें स्वादानुसार चीनी और इलायची पाउडर मिलाएं। चीनी के घुलते ही हलवे का मिश्रण थोड़ा पतला हो जाता है, जिससे उसकी बनावट और भी मुलायम हो जाती है।
- इसे तब तक पकाएं जब तक चीनी का पानी पूरी तरह सूख न जाए और हलवा वापस गाढ़ा होकर कड़ाही को छोड़ने न लगे। आखिर में कटे हुए मेवे मिलाएं।
- हलवे की चमक और स्वाद को बढ़ाने के लिए, परोसने से पहले 1 छोटा चम्मच देसी घी ऊपर से डालकर अच्छी तरह से मिला सकते हैं।
- यह लीजिए गरमा-गरम और स्वादिष्ट मूंग दाल का हलवा तैयार है। इसे कटे हुए मेवों से गार्निश करके परोसें।

न्यू ईयर सेलिब्रेशन के लिए कम बजट में घूमे इन जगहों पर

नया साल हर किसी के लिए बेहद खास होता है, और इसे यादगार बनाने के लिए लोग तरह-तरह की तैयारियां करते हैं। कोई अपने घर पर या रेस्त्रां में पार्टी करना पसंद करता है, तो कुछ लोग नए स्थानों पर घूमने की योजना बनाते हैं।

दिसबंर साल का आखिरी महीना है और लोग नए साल वेलकम बड़े ही धूम-धाम से करते हैं। नया साल आने में ज्यादा दिन बचें नहीं है। इस खास दिन को सेलिब्रेट करने के लिए कोई घर पर पार्टी करता है और तो कुछ ट्रिप पर जरुर जाते हैं। घूमने-फिरने के नाम से ही मूड फ्रेश हो जाता है। ऐसे में नए साल पर घूमने का मतलब है कि आप ताजगी और अच्छे मूड के साथ नए साल की शुरुआत करें। अगर आप कम बजट में कहीं घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो इन जगहों पर जरुर जाएं।

मथुरा वृंदावन

दिल्ली से ज्यादा दूर नहीं है मथुरा वृंदावन। अगर आप कृष्णभक्त हैं तो आप नए साल की शुरुआत में प्रेम मंदिर, बांके बिहारी मंदिर और बरसाना जैसी कई जगहों पर घूमने जा सकते हैं। आप बस या ट्रेन से आसानी से जा सकते हैं।

बनारस

महादेव की नगरी काशी एक धार्मिक शहर है। यहां का पान बहुत ही फेमस है। आप यहां पर काशी विश्वनाथ के दर्शन कर सकते हैं। इसके साथ ही घाटों पर गंगा आरती देख सकते हैं। दुनियाभर में बनारस की गंगा आरती काफी फेमस है। 5 हजार के बजट में यहां पर आसानी से घूम सकते हैं।

आगरा

नए साल की शुरुआत आप आगरा जाकर भी कर सकते हैं। यहां पर आप ताजमहल का दीदार कर सकते हैं। इसके साथ ही फतेहपुर सीकरी, यमुना नदी के किनारे बने आगरा के किले और अकबर का मकबरा घूम सकते हैं। आगरा जाने के लिए आप दिल्ली से बस या फिर ट्रेन पकड़ सकते हैं।

नैनीताल

उत्तराखंड में स्थित नैनीताल बेहद खूबसूरत पहाड़ी स्थल है, जहां आप नए साल पर घूमने की योजना बना सकते हैं। यहां नैना देवी मंदिर में दर्शन करने के बाद नैनी झील में बोट राइड का आनंद लिया जा सकता है। यदि आप आसपास के स्थानों को भी देखना चाहें, तो मुक्तेश्वर या अल्मोड़ा की यात्रा करना भी एक अच्छा विकल्प है।

मसूरी

क्वीन ऑफ हिल्स कही जाने वाली मसूरी नए साल पर घूमने के लिए सबसे बढ़िया ऑप्शन है। यह बेहद ही खूबसूरत हिल स्टेशन है। इधर आप अपने दोस्तों के साथ नए साल का जश्न मना सकते हैं। इस बार आप कम बजट में इन जगहों पर घूमने जा सकते हैं।

मूंग दाल की खस्ता कचौड़ी

इस रेसिपी से मिलेगा हलवाई वाला स्वाद

शाम की चाय हो और साथ में कुछ चटपटा न हो, तो मजा अधूरा-सा लगता है। अक्सर हम समोसे या बाहर की कचौड़ी मंगा लेते हैं, लेकिन क्या आपने कभी घर पर बनी गरमा-गरम मूंग दाल की खस्ता कचौड़ी का स्वाद चखा है? अक्सर लोगों की शिकायत होती है कि घर पर कचौड़ी खस्ता नहीं बनती या फिर ठंडी होने पर नरम पड़ जाती है। इसका राज छिपा है 'मोयन' और उसे तलने के तरीके में। इस रेसिपी में हम उन छोटी-छोटी ट्रिक्स का इस्तेमाल करेंगे जो हलवाई करते हैं। आइए, जानते हैं इसकी आसान रेसिपी।

मूंग दाल कचौड़ी बनाने के लिए सामग्री

- **आटे के लिए:** 2 कप मैदा, 4-5 चम्मच घी या तेल (मोयन के लिए), स्वादानुसार नमक और थोड़ी सी अजवाइन।
- **मसालेदार स्टफिंग के लिए:** 1 कप पीली मूंग दाल (2-3 घंटे भीगी हुई और दरदरी पिसी हुई), 2 चम्मच बेसन, सौंफ (कुटी हुई), धनिया पाउडर, लाल मिर्च, हींग, अमचूर, गरम मसाला और नमक।

मूंग दाल कचौड़ी बनाने की विधि

सबसे पहले मैदे में नमक, अजवाइन और घी डालें। इसे अच्छे से मिलाएं। मुट्ठी बांधकर देखें, अगर आटा बंध रहा है तो मोयन सही है। अब थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर एक सख्त आटा गूंथ लें और इसे 15 मिनट के लिए गीले कपड़े से ढककर रख दें। एक पैन में तेल गर्म करें। इसमें हींग और कुटी हुई सौंफ डालें (सौंफ से ही असली खुशबू आती है)। अब बेसन डालकर भूनें। इसके बाद दरदरी पिसी हुई मूंग दाल और सारे मसाले डाल दें। इसे तब तक भूनें जब तक दाल का पूरा पानी सूख न जाए और खुशबू न आने लगे। अब आटे की छोटी लोई बनाएं, उसे हाथ से थोड़ा फैलाएं और बीच में दाल का मसाला भरें। किनारों को अच्छे से बंद करें और हथेली से दबाकर कचौड़ी का आकार दें। बेलन का इस्तेमाल न करें, हाथ से दबाना ही बेहतर है।

तलते समय रखें इस बात का ध्यान

यही वो स्टेप है जहाँ जादू होता है! कचौड़ियों को बिल्कुल धीमी आंच (Low Flame) पर ही तलें। तेल बहुत ज्यादा गर्म नहीं होना चाहिए। कचौड़ियों को तेल में डालें और उन्हें अपने आप ऊपर आने दें। इन्हें सुनहरा और करारा होने में 10-12 मिनट का समय लगेगा। जल्दबाजी बिल्कुल न करें।

परोसने का तरीका

आपकी गरमा-गरम, खस्ता कचौड़ी तैयार है! इसे तीखी हरी चटनी, इमली की मीठी चटनी और फ्राइड हरी मिर्च के साथ परोसें। एक बार यह रेसिपी आजमा कर देखिए, आपके घर वाले आपकी तारीफ करते नहीं थकेंगे।

नारायण पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक-प्रकाशक-हेमल पुरोहित द्वारा एआईएस प्रिंटिंग सोल्यूशंस, प्लॉट नं. ए-544, टीटीसी इंडस्ट्रीयल एरिया, ठाणे-बेलापुर रोड, महापे, नवी मुंबई 400709 से मुद्रित एवं प्रिमाइसेस नं. 1303/चेंबर्स, 13वां माला, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे मेट्रो स्टेशन के पास, अंधेरी-कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई 400 099 से प्रकाशित, पोस्टल रजि. MCN/325/2023-24, (चकाला MIDC पी.ओ.) रजि. नं. MAHHIN/2004/13755, संपादक-हेमल पुरोहित, स्थानीय संपादक-नीरज दवे, फोन : 022-46024646, ईमेल : jagruktimes@gmail.com

प्रायोजित परिशिष्ट

सफेद रेगिस्तान में संस्कृति का जादू

अधूरा नहीं पूरा कच्छ देखिए...

प्रकृति, वन्यजीवन और विकास का संगम

कच्छ का रण उत्सव न केवल गुजरात का, बल्कि देश का भी सबसे प्रिय और रंगीन उत्सव माना जाता है। यहां संस्कृति, कला, संगीत और प्रकृति का अद्वितीय संगम, अनंत सफेद रण के बेमिसाल दृश्य के बीच जीवंत हो उठता है। इस वर्ष यह उत्सव 4 मार्च 2026 तक आयोजित किया जा रहा है, जो सैलानियों को कच्छ की असली धड़कन और इसे जीवन्त अनुभव करने का दुर्लभ अवसर प्रदान करता है।

थीम और अनुभव

इस बार की थीम 'अधूरा नहीं, पूरा कच्छ देखिए' केवल सफेद रण तक सीमित नहीं है। इस पूरे क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक धरोहरों और यूनेस्को की विश्व धरोहर धोलावीरा तक फैली है। दर्शकों को न सिर्फ सफेद रेगिस्तान का जादू देखने को मिलेगा, बल्कि कच्छ की प्राकृतिक सुंदरता और प्राचीन इतिहास का भी प्रत्यक्ष अनुभव होगा।

PM मोदी की सोच से रण उत्सव बना पर्यटन का केंद्र

कच्छ का रण उत्सव आज न केवल गुजरात का, बल्कि देश-विदेश के पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण बन चुका है। इसकी परिकल्पना और आधारशिला 2005 में तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रखी थी। उनकी दूरदर्शिता और सांस्कृतिक संवेदनशीलता ने इस महोत्सव को केवल एक स्थानीय कार्यक्रम से ऊपर उठाकर अंतरराष्ट्रीय स्तर के महोत्सव में बदल दिया।

प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन में रण उत्सव ने कच्छ के प्राकृतिक सौंदर्य, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक कला और लोकधुनों को विश्व मंच पर पेश करने का अवसर पाया। यही वजह है कि आज यह महोत्सव राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय यात्रियों, दोनों को आकर्षित करता है और चार महीने तक चलने वाला महापर्व बन चुका है।

दूरदर्शिता और स्थायित्व का संगम

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने यह सुनिश्चित किया कि रण उत्सव न केवल मनोरंजन और अनुभव प्रदान करे, बल्कि स्थायित्व और पर्यावरणीय संवेदनशीलता का आदर्श भी प्रस्तुत करे। इस सतत दृष्टिकोण और संरक्षण के प्रयासों के परिणामस्वरूप ही धोरडो को UNWTO बेस्ट टूरिज्म विलेज 2023 का प्रतिष्ठित सम्मान मिला, जो भारत की सांस्कृतिक और पर्यटन क्षमताओं की वैश्विक मान्यता का प्रतीक है।

"गुजरात देश का ऐसा राज्य है, जो अपनी कला, संस्कृति और परम्पराओं के लिए जाना जाता है और इसलिए हमारा राज्य पर्यटकों के लिए आकर्षण का बड़ा केंद्र भी है। पर्यटन क्षेत्र का एक प्रमुख आकर्षण है सफेद रण, जो आज गुजरात के पर्यटन की वैश्विक पहचान है। यही कारण है कि श्री नरेन्द्रभाई मोदी जी की प्रेरणा से बने रण ऑफ कच्छ के इस टूरिज्म मॉडल को यूनाइटेड नेशंस की एजेंसी UNWTO द्वारा बेस्ट टूरिज्म विलेज का अवॉर्ड भी दिया गया है।

- श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

लोककला-हस्तशिल्प से खिंचे चले आते हैं सैलानी

कच्छ की लोककला, हस्तशिल्प और रंग-बिरंगे पारंपरिक डिज़ाइनें न सिर्फ स्थानीय लोगों बल्कि अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को भी अपनी ओर खींचती हैं। क्राफ्ट बाजार में आगंतुकों के सामने प्रस्तुत होते हैं अजरख प्रिंट, बांधणी, मिररवर्क और अन्य पारंपरिक हस्तकला के उत्कृष्ट नमूने। चार महीने तक चलने वाला रण उत्सव केवल संस्कृति का उत्सव ही नहीं, बल्कि स्थानीय समुदायों के लिए आजीविका और सशक्तीकरण का मंच भी बन चुका है। कारीगर, महिला स्वयं सहायता समूह, होमस्टे संचालक, परिवहन सेवाएं और युवा रोजगार के अवसर पाकर आय अर्जित कर रहे हैं।

धोलावीरा... 4,500 वर्ष पुराना इतिहास

कच्छ सिर्फ रण उत्सव ही नहीं, बल्कि इतिहास, कला और प्राकृतिक सुंदरता से भरे अनूठे स्थलों का प्रदेश है। उत्सव के दौरान धोलावीरा, निरोना, काळो डुंगर और ममाई देव कलीया ढ्रो की यात्रा पर्यटकों के लिए यादगार अनुभव बन जाती है।

धोलावीरा भारत के सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थलों में से एक है। लगभग 4,500 वर्ष पुरानी यह नगरी सिंधु घाटी सभ्यता की उन्नत नगर योजना और जल संरचना का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। विस्तृत किलों, जलाशयों और सुव्यवस्थित गलियों में घूमते हुए लगता है जैसे प्राचीन काल जीवंत होकर सामने खड़ा हो।

निरोना गांव पारंपरिक कलाओं का केंद्र है, लेकिन इसकी असली पहचान है रोगन कला। पर्शिया से आई यह दुर्लभ चित्रकला आज भी एकमात्र परिवार संजोकर रखे हुए है। इसी कला की 'ट्री ऑफ लाइफ' पेंटिंग तब चर्चा में आई जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इसे अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को भेंट किया।

काळो डूंगर, कच्छ की सबसे ऊंची चोटी, ग्रेट रण का शानदार दृश्य प्रस्तुत करती है। यहां स्थित प्राचीन दत्तात्रेय मंदिर और सीमा के निकट स्थित इंडिया ब्रिज का अनुभव यात्रियों को विशेष रोमांच देता है।

ममाई देव कलीया ढ्रो, जिसे गुजरात का ग्रैंड कैनियन कहा जाता है, अपनी तरंगदार चट्टानों और अनोखी भू-आकृति के कारण ट्रेकिंग और फोटोग्राफी प्रेमियों का पसंदीदा गंतव्य बन चुका है।

रात का रोमांच

जैसे ही शाम ढलती है, खुले सफेद रण में ढोल की थाप गूंजती है और पारंपरिक परिधानों में सजी महिलाएं लोकनृत्य करती हैं। रंग-बिरंगे मंच, जीवंत संगीत और ताल की गूंज इस उत्सव को और भी आकर्षक व मनमोहक बना देती है। हर दृश्य, हर ध्वनि और हर अनुभव यह महसूस कराता है कि कच्छ सिर्फ आंखों से नहीं, बल्कि दिल से भी देखा जाता है।

संस्कृति का संगम

रण उत्सव केवल मनोरंजन या उत्सव नहीं है, बल्कि यह कच्छ की प्राकृतिक दिव्यता और सांस्कृतिक धरोहर के साथ सीधे जुड़ने का अवसर है। सफेद रेगिस्तान की विशालता, रंग-बिरंगे परिधान, लोकनृत्य और संगीत का सम्मिलन यह संदेश देता है कि कच्छ की असली खूबसूरती दृश्य से अधिक अनुभव और दिल में उतरती है।

पूर्णिमा की रातें

रण उत्सव की सबसे खास झलक है पूर्णिमा की रातें, जब कच्छ का सफेद रण चंद्रमा की चांदनी में पूरी तरह दमक उठता है।
नमक के मैदानों पर पैदल चलना, ठंडी हवा और चमकती ध्रुवीय धरा, ऐसी रातें पर्यटक के लिए जीवन भर याद रहने वाला अनुभव बन जाती हैं। यह कच्छ की आत्मा को सीधे महसूस करने का अवसर है।

रोमांच भरपूर

उत्सव के दौरान ऊंट सफारी, पैरामोटरिंग और ATV राइड्स रोमांच प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर देती हैं। विशाल सफेद रेगिस्तान में ये गतिविधियां न केवल उत्साह बढ़ाती हैं, बल्कि आपको कच्छ की अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरता का मजा भी देती हैं।

प्राकृतिक अनुभव

जो पर्यटक शांति और सौंदर्य के बीच खुद को खोना चाहते हैं, उनके लिए स्टारगेजिंग सेशन्स, साइक्लिंग ट्रेल्स और योग क्लासेज उपलब्ध हैं।

आरामदायक और लग्जरी अनुभव के लिए ठहरें यहां

रण उत्सव के दौरान पर्यटकों के लिए कई आरामदायक और लग्जरी टेंट सिटी उपलब्ध हैं, जहां रहने का अनुभव भी उतना ही खास है जितना उत्सव का आनंद।

रण उत्सव टेंट सिटी, इवोक धोलावीरा, सफेद रण धोलावीरा **ये टेंट सिटी 1 से 4 रातों के ऑल-इंक्लूसिव पैकेज प्रदान करती हैं, जिनमें ट्रांसफर, भोजन और सैर-सपाटे शामिल हैं।**

आवास विकल्प

पर्यटक सुविधा और बजट के अनुसार विभिन्न प्रकार के ठहरने के विकल्प चुन सकते हैं...
दरबारी और राजवाड़ी सुइट्स
सुपर प्रीमियम टेंट और प्रीमियम टेंट
स्विस कॉटेज (AC/Non-AC)

दिन-रात का अनुभव

दिन में टेंट सिटी कच्छ की संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य का केंद्र बन जाती है। वहीं रात में संगीत, नृत्य और लोक संस्कृति से भरपूर माहौल अनुभव को जादुई बना देता है।

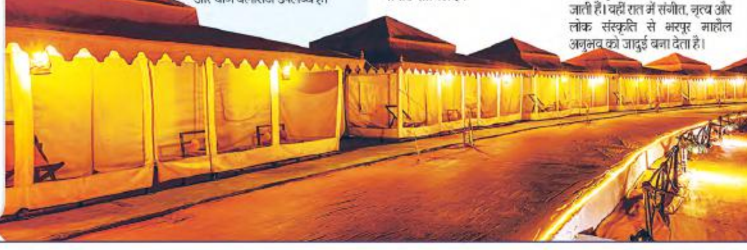

कैसे पहुंचें कच्छ

सड़क मार्ग : गुजरात पर्यटन और जीएसआरटीसी की ओर से संचालित वोल्वो बस सेवाओं के माध्यम से आप कच्छ की अनोखी संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्यता को आरामदायक तरीके से अनुभव कर सकते हैं। विभिन्न पर्यटन मार्गों के लिए टिकट की कीमत अलग-अलग है। इन टूर पैकेजों में धोरों से माता नो माध, मांडवी, धोलावीरा और नारायण सरोवर जैसे प्रमुख दर्शनीय स्थलों का भ्रमण शामिल है।

ट्रेन से यात्रा : कच्छ जाने के लिए सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन भुज है, जो रण ऑफ कच्छ से करीब 85 किलोमीटर दूर स्थित है। भुज रेलवे स्टेशन अहमदाबाद और मुंबई जैसे बड़े शहरों से रेल मार्ग द्वारा अच्छी तरह जुड़ा हुआ है, जो इसे एक सहज और आर्थिक विकल्प बनाता है।

हवाई मार्ग : कच्छ पहुंचने का सबसे तेज तरीका है भुज एयरपोर्ट , जो भले ही छोटा है, लेकिन काफी व्यस्त रहता है। यहां से मुंबई के लिए नियमित उड़ानें उपलब्ध हैं, जिससे देश-विदेश से आने वाले यात्रियों के लिए यात्रा बेहद सुविधाजनक हो जाती है।

जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रसारित

स्पंदन

गुलाब कोठारी

लेखक पत्रिका समूह के प्रधान संपादक हैं

स्मरण-1

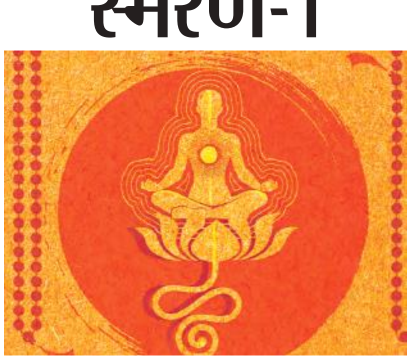

स्मृति का संग्रह स्वतः होता है। स्मरण विचारपूर्वक किया जाता है। स्मृति बाहरी विश्व, मन, इन्द्रिय विषयों से जुड़ी रहती है। स्मरण मन और अध्यात्म का विषय है। बाहरी विषयों से विमुख होने का प्रयास है।

हमारा जीवन हमारे ही कर्मों का फल है। ये फल ही प्रारब्ध बनकर आत्मा के साथ आते हैं। जीवन की अनेक गतिविधियां इसी प्रारब्ध के आधार पर संचालित होती हैं। प्रारब्ध को ईश्वर की स्मृति भी कह सकते हैं। स्मृति का अर्थ है किसी भी घटना अथवा संयोग की अनुभूति या संस्कारजन्य ज्ञान। 'संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः।' स्मृति का संग्रह अवचेतन मन में रहता है। प्रारब्ध की स्मृति आत्मा में रहती है। स्मृति का अनुभव हमें कई तरह से होता है। पूर्व जन्म की स्मृति, वर्तमान जीवन में स्मृति, व्यावसायिक ज्ञान की स्मृति अथवा सोच-समझकर किया गया स्मरण।

संध्या, उपासना, जप आदि सब तो स्मरण के उपक्रम ही हैं। हां, होने पूर्ण मनोयोग से चाहिए। यांत्रिक भाव से अभ्यास बन भी जाए तो भीतर आत्मा तक नहीं पहुंचता है। इसके बिना निदिध्यासन-तैलधारवत् निरन्तर-कैसे हो सकता है। आत्मसात् करना ही तो लक्ष्य है। जैसे सन्तान अपनी सुरक्षा के लिए मां को आंख से ओझल नहीं होने देता, भक्ति में स्मरण भी व्यक्ति को सांसारिक कार्यों में रहते हुए भी ईश्वर से जोड़े रखता है। उसका आसक्ति भाव टूट जाता है। कर्म में एक सहजता आ जाती है।

स्मृति का संग्रह स्वतः होता है। स्मरण विचारपूर्वक किया जाता है। स्मृति बाहरी विश्व, मन, इन्द्रिय विषयों से जुड़ी रहती है। स्मरण मन और अध्यात्म का विषय है। बाहरी विषयों से विमुख होने का प्रयास है। स्मृति को भी बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। स्मृति का लोप हो जाने पर चिकित्सा भी करनी पड़ती है। स्मरण इन सबसे छुटकारे का मार्ग है।

पूर्व जन्म की स्मृति हमें साक्षात् कम ही होती है। इसको हम घटना-चक्र से जोड़कर समझने का प्रयास करते हैं। आपसी व्यवहार, घटनाएं, दुर्घटनाएं, बीमारियां, प्रेम-शत्रुता, लेन-देन आदि पूर्व जन्म से संचालित होते हैं। कहा जाता है-'हानि-लाभ जीवन-मरण जस-अपजस विधि हाथ।' यह विधि ही प्रारब्ध कहलाती है। यही व्यक्ति का जन्म, कुल, कार्य, आयु आदि तय करती है। कभी-कभी भीतर संगृहीत यह विधि-पुराण अपनी झलक भी दिखा जाता है-संकेतों में। किसी विषय में विशिष्ट रुचि अथवा अकुलाहट भी प्रारब्ध की ओर इंगित करता है। ध्यान में हम अपनी आत्मा के आवरणों को समझने और हटाने का अभ्यास करते हैं। ये आवरण भी तो स्मृति रूप ही होते हैं।

जैसे-जैसे आप आवरण हटाते हैं अथवा उस कालक्रम की घटनाएं प्रकट होती हैं, मन एक बार फिर उनमें रमण करना चाहता है। वह घटनाओं की स्मृति में उतर जाता है। उसी में खो जाता है। फिर से वैसा ही व्यवहार करने लग जाता है। क्योंकि उस काल में किसी कारणवश इसे दबा दिया गया था। आपने देखा होगा कई बार सत्पुरुष भी अचानक विरुद्ध व्यवहार करने लग जाते हैं। संत भोगों में प्रवृत्त हो जाते हैं। फिर से पुराने मित्र-शत्रु याद आ जाते हैं। व्यक्ति उन्हें ढूंढने निकल पड़ता है। बीमारियों एवं दुर्घटनाओं का भी रिश्ता पूर्व जन्म से काफी होता है। व्यक्ति प्रारब्ध के कलैण्डर को लेकर ही पैदा होता है। सौ साल इसी के अनुरूप जीता भी है। इसको बदल पाना संभव नहीं है।

एक कलैण्डर वर्तमान जीवन का होता है, जो हमारे कर्म पर आधारित रहता है। इसी कर्म तथा कर्म-बन्धन के आधार पर मेरा भावी जीवन निर्भर करेगा। अर्थात् वर्तमान का हर क्षण मेरे लिए महत्त्वपूर्ण है, भविष्य निर्माण के लिए। इसकी सबसे बड़ी शत्रु है स्मृति। यहां स्मृति मेरे जीवन का वह भाग है जो बीत चुका। अब लौटकर नहीं आएगा। फिर भी व्यक्ति जब स्मृतियों में खोता है तो मानो डूब जाता है। इसका फल रूप हाथ में कुछ आता नहीं है। हां, कुछ विषयों में राग या द्वेष का भाव बढ़ जाता है। किन्तु इसका सबसे बड़ा नुकसान होता है वर्तमान का। वर्तमान का इतना बड़ा हिस्सा स्मृति की भेंट चढ़ जाता है। बिना किसी कर्म के, बिना किसी भविष्य निर्माण के। इससे बड़ा अपमान और नुकसान मेरा और हो भी क्या सकता है!

स्मृति कई बार व्यक्ति के वर्तमान जीवन की सार्थकता समाप्त कर देती है, तो कई बार व्यक्ति को अनावश्यक रूप से अवसाद में घेर लेती है। कई बार कल्पना की उड़ानों से जोड़ देती है। कालिदास दुष्यन्त के चित्र का वर्णन करते हैं कि वे सिंहासन पर बैठे हैं। पीछे हंसपदिका गा रही है कि किस प्रकार कमल के पराग पर बैठकर भौंरा भूल जाता है कि कभी उसे मंजरी के पराग से प्रेम था। दुष्यन्त को अतीत याद ही नहीं था, दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण। फिर भी गीत को सुनकर उसका आत्मा विकल हो गया था। उनको लगा कि ऋषि कण्व के आश्रम से लोग क्यों आए है? क्या मेरे पाप के कारण पेड़ों-लताओं में फल-फूल आने बन्द हो गए हैं! कर्म-फल रूप अवसाद ही है। दुर्वासा के शाप का कारण भी तो स्मृति ही रहा था। शकुन्तला दुष्यन्त की स्मृतियों में ऐसी डूबी थी कि दुर्वासा ऋषि की आवाज उसके कान में ही नहीं पड़ी। इसी कारण शकुन्तला को शाप देकर चले गए कि तू जिस प्रियतम की याद में इतनी खोई है, वह तुझे पहचानेगा भी नहीं।

(क्रमशः)

gulabkothari@epatrika.com

सामाजिक संस्कारों से जुड़ा यह स्तंभ नई पीढ़ी को भी पढ़ाएं।

लघुकथाएं
SHORT STORIES

पिताजी

राम गोपाल आचार्य
patrika.com

सुबह-सुबह दरवाजे की डोर बेल बजी, रजनी ने जब दरवाजा खोला तो सामने बाबूजी खड़े थे, उसने अनमने मन से प्रणाम किया और अंदर बैठक में बैठने का इशारा किया। कमरे में जाकर अपने पति राजेश को कहा, 'तुम्हारे पिताजी गांव से आए हैं, शायद कुछ बहाना बना कर पैसे लेने के लिए आ गए होंगे। यहां तो हमारी आर्थिक हालत पहले से ही खराब चल रही है, इतनी कम तनख्वाह में बच्चों की फीस, घर खर्च चलाना मुश्किल हो रहा है। ऊपर से यह महंगाई यहां शहर का खर्चा जो चलाए उसे पता चले।' राजेश ने उसे समझा बुझा कर चुप किया और बैठक में आकर पिताजी को प्रणाम किया, गांव के हाल-चाल पूछे और उनके साथ चाय पी। बाबूजी ने कुछ देर इधर-उधर की बातें की, आराम किया, खाना खाया।

कुछ समय पश्चात पिताजी ने अपने कुर्ते की जेब में से पांच सौ-पांच सौ के चालीस नोट निकाले और राजेश के हाथ में रखते हुए बोले, 'बीते कुछ दिनों से तुम्हारा फोन नहीं आया, तुम्हारी मां चिंतित हो रही थी। हमें लगा कि तुम कुछ परेशानी में हो, इस बार फसल अच्छी हुई, कल ही मैंने फसल बेची है जिससे कुछ पैसे आए हैं। हमारा तो काम चल रहा है तुम्हारे काम आएंगे। गांव जाने वाली बस कुछ देर बाद है मैं निकलता हूं, फसल बुवाई का समय है, खेती बाड़ी संभालनी है, फोन करते रहना।' यह कह बाबूजी उठ गए। राजेश और उसकी पत्नी रजनी एक दूसरे को लज्जित भाव से जाते हुए बाबूजी को देख रहे थे।

मजबूरी

शीला श्रीवास्तव
patrika.com

'सुनो, आज मिस्टर एण्ड मिसेज भाटिया डिनर पर आने वाले हैं उनके लिए कुछ स्पेशल बना देना।' नहा कर तौलिया से अपने बाल पोंछते हुए दिवाकर ने अपनी पत्नी सुजाता से कहा।

'कैसी बातें कर रहे हैं आप? कामवाली बाई चार दिनों से नहीं आ रही है, कैसे-कैसे मैं रूटीन का काम निबटा रहीं हूं वो मैं ही जानती हूं।'

दोनों में बहस ही हो रही थी कि बिमला काम पर आ गई। दिवाकर ने राहत की सांस ली, पर सुजाता का पारा अभी भी कम नहीं हुआ। वह विमला पर फट पड़ी -'बिना सूचना के कोई इतने दिनों की छुट्टी मारता है क्या? मैं तो पैसे काट लूंगी।'

विमला ने कोई विरोध नहीं जताया पर उसके नेत्र जरूर सजल हो उठे। 'पैसे काटने के नाम पर कैसे टेसुओं बहने लगे, तुम्हारे टेसुओं का मुझ पर कोई असर नहीं होने वाला।' सुजाता अपने मन की भड़ास निकालते हुए बोली।

'पैसे काटने को लेकर मेरे आंसू नहीं निकल रहे हैं, मेरे बेटे को अचानक से उल्टी-दस्त होने लग गए। उसे सरकारी अस्पताल लेकर गई, पर वहां उसे आराम नहीं मिल पा रहा था, इसलिए प्राइवेट अस्पताल जाना पड़ा। वहां पैसे भी बहुत लग गए और पूरी तरह ठीक होने में समय भी लग गया। यही कारण था कि मुझे इतने दिनों की छुट्टी मारनी पड़ी।' विमला पल्लू से अपने आंसू पोंछते हुए भरे गले से बोली।

सुनकर सुजाता का पारा थोड़ा कम हुआ, फिर दूसरे ही पल वह उपदेश देते हुए बोली-'तुम लोग तो कुछ भी खा लेते हो। गर्मी में बासी खाना खाने से डायरिया नहीं होगा तो और क्या होगा?' पर कुछ दिन पहले उसने भी बासी चावल- दाल उसे थमा दी थी, इस तरफ उसका ध्यान गया ही नहीं।

'क्या करूं मैडम जी, मजबूरी ना हो तो कौन बासी खाना खाना चाहेगा?' लाचारगी भरे स्वर में बोलकर विमला काम में जुट गई।

पति से भावनात्मक संबल पाकर रोजी की हिम्मत लौट आई थी। उन्होंने कॉफी के साथ कुकीज खा दवाई ली, कुछ देर आराम किया और एक नए जोश के साथ क्रिसमस के स्वागत में जुट गई।

क्रिसमस की सुबह

मेहा गुप्ता
patrika.com

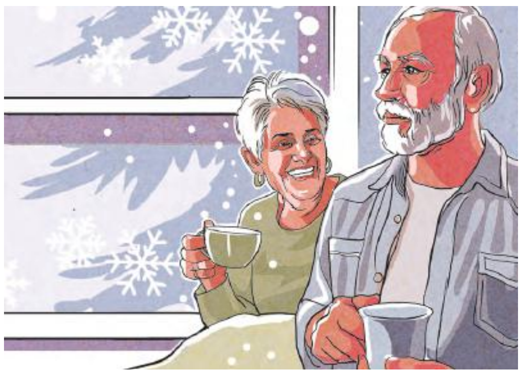

वो गुनगुनी धूप वाली क्रिसमस की सुबह थी। पीटर हमेशा की तरह उठकर बालकनी में बैठकर प्रकृति का आनंद लेते हुए अपनी कॉफी का इंतजार कर रहे थे। जब काफी देर बीत जाने पर भी उनकी पत्नी रोजी कॉफी लेकर नहीं आई तो वे उन्हें ढूंढते हुए अंदर आए, देखा वह तो रजाई में दुबकी हुई सोफे पर लेटी हुई है। उन्हें देखते ही कहने लगीं,'मेरे घुटनों में अब भी बहुत दर्द है और पेनकिलर भी खत्म हो गई है। रानी (गृह सहायिका) का भी बच्चा बीमार है तो वह भी काम पर नहीं आएगी।' उन्हें जैसे याद आया कि रोजी को कल भी घुटनों में दर्द था। वे पेनकिलर लेकर शाम का खाना भी मुश्किल से ही बना पाई थीं।

इसलिए वे चुपचाप दोनों के लिए कॉफी बनाने रसोई में चले गए। वैसे भी वे जब से उठे तब से ही उन्हें सिर में भारीपन महसूस हो रहा था। शायद वे कल रात वाली बीपी की दवाई लेना भूल गए थे। कैसे याद रहता! आज तक रोजी ही उनके हाथ में दवाइयां थमाती आई है। पर कल तबियत ठीक ना होने की वजह से ही वह शायद दवाई देना भूल गई थी।

शुक्र है ! उन्हें कॉफी बनानी आती थी। फ्रिज खोला तो वहां दूध नहीं मिला। वे रोजी से पूछने जा ही रहे थे तभी उनकी नजर कोने में रखे दूध के जग पर गई। उन्हें ध्यान आया कि रोजी ने रात को उन्हें दूध फ्रिज में रखने के लिए बोला था। पर वे न्यूज सुनने में इतने डूबे हुए थे कि यह बात भूल ही गए। एक उबाल आते ही खद-खद की आवाज के साथ दूध उछाल मारने लगा। वे समझ गए कि दूध फट गया है।

इस समय तक तो दूधवाला ताजा दूध रख गया होगा। सोचकर झल्लाए से वे बाहर गए पर वहां दूध कैसे मिलता? उसके लिए तो रात को ही दूध की खाली बोतलें बाहर रखनी पड़ती हैं। गेट पर दूध की जगह अखबार मिल गया तो वे उसे लाकर बरामदे में रखी बेंत की कुर्सी में धंस गए।

धत्त तेरे की! उनका पढ़ने का चश्मा तो कमरे में ही रह गया था। रोजी ठीक होती तो कभी उन्हें इतना परेशान नहीं होने देती। आज पहली बार उन्हें अहसास हुआ कि गृह-प्रबंधन भी उतना ही मुश्किल है जितना वित्त प्रबंधन! पर उन्होंने आज तक अपनी पत्नी के गुण और समर्पण की कद्र नहीं की थी।

जब उनके सब्र का बांध टूट गया तो उन्होंने अपनी बेटी पिंकी को फोन लगा दिया जो उनके ही शहर में रहती है। सोचा उसके आने से मदद हो जाएगी और त्योहार के दिन नाती-नातिन के साथ से घर में भी थोड़ी रौनक हो जाएगी।

'पापा आई एम सॉरी! आप तो जानते ही हैं कि हम लोग रात की गाड़ी से न्यू ईयर सेलिब्रेट करने शिमला जा रहे हैं। अभी तो मैं केक बना रही हूं फिर चर्च जाएंगे और फिर बच्चों के लिए कुछ गर्म कपड़े लेने बाजार भी जाना था। पापा मैं आप लोगों के लिए खाना और केक भिजवा दूंगी और शिमला से लौटकर आपसे मिलने आऊंगी।' कहकर उसने फोन रख दिया।

दो दिन पहले जब से उनके बेटे पैट्रिक ने फोन पर बताया था कि इस साल वो लोग हर साल की तरह क्रिसमस मनाने उनके पास नहीं आएंगे। बल्कि दोस्तों के साथ गोवा जाएंगे तब से ही रोजी कुछ उदास थी। अब स्पीकर पर बेटी की बात सुनकर तो वह और भी उदास हो गई और कहने लगी, 'खाना तो बाजार में भी मिल जाता है। बस उम्र के इस मोड़ पर आकर दुख-तकलीफ में माता-पिता को अपने बच्चों के साथ की आस होती है..उनके प्रेम और परवाह की प्यास होती है।'

'कैसी प्यास .. और कैसी आस..

बच्चे अपनी दुनिया में व्यस्त हैं ... हमें अकेले ही अपनी दुनिया में मस्त रहना सीखना होगा।'

आज तक तुम मेरी सैंटा बन मेरी सारी ख्वाहिशों और फरमाइशों को बिना कहे पूरा करती आई हो। अब से मैं भी तुम्हारा सैंटा बन तुम्हारी छोटी से छोटी जरूरतों का खयाल रखूंगा।'

पीटर ने रोजी का माथा चूमते हुए कहा और गले में मफलर डाल नुक्कड़ की दुकान से दूध और दवाई लेने चले गए।

अपने पति से भावनात्मक संबल पाकर रोजी की हिम्मत लौट आई थी। उन्होंने कॉफी के साथ कुकीज खा दवाई ली, कुछ देर आराम किया और एक नए जोश के साथ क्रिसमस के स्वागत में जुट गई।

क्रिसमस की वह सुहानी सुबह उन दोनों के जीवन में नया नजरिया..नई उम्मीद.. नई उमंग ले आई थी।

काव्यांजलि
POEM

जीने को मधुमास बहुत है

अशोक दीप

सांस-सांस पर मर मिटने की
मेरे मन को प्यास बहुत है।
मरने की ऋतु रोज कहां? पर
जीने को मधुमास बहुत है।

फेंक दिया दुनिया ने जिनको
कहकर जूठन अभिसारों की
गरज रही ना किसी भवन को
जिनके निश्छल व्यवहारों की

नफरत जिनका भाग्य बनी है
और जिंदगी जग की गाली
हर दिन जिनका सांझ अनमनी
और पूर्णिमा रजनी काली

ऐसे बेघर बंजारों का
मेरे घर अट्टहास बहुत है।
मरने की ऋतु रोज कहां? पर
जीने को मधुमास बहुत है।

गाने को तो नित ही गा लूं
किसी गजल को ना ही खुद को
पी लूं घूंट तबस्सुम वाले
करके कविता नीरस जग को

लेकिन यह स्वीकार नहीं है
आंख ठीकरी रखकर गाऊं
यहां लाश देखूं नजरों से
वहां करों से अर्घ चढ़ाऊं

जेब-खजाने रिक्त भले ही
करुणा मेरे पास बहुत है।
मरने की ऋतु रोज कहां? पर
जीने को मधुमास बहुत है।

कर न सकूं यदि हास रुदन को
तो खाक जिया जग में आकर
रह जाए यदि प्यास धरा पर
तो व्यर्थ बहा बादल छाकर

झंकृत कर न सके खामोशी
उस लहर पवन का बहना क्या
रह जाए यदि शीश तिमिर का
कंदील देह का दहना क्या

बुझूं किसी को रोशन करके
इतना सा इतिहास बहुत है।
मरने की ऋतु रोज कहां? पर
जीने को मधुमास बहुत है ।

लघुकथा
SHORT STORIES

पैसों की चमक

अन्जना मनोज गर्ग
patrika.com

आज आसमान में थी उर्मि। पहली तनख्वाह जो मिली थी। घर पहुंचते ही मां के हाथों में पैसे रख खुशी से झूमने लगी थी।

अब मैं सक्षम हूं मां। अपने मन का कुछ भी कर सकती हूं। उर्मि इठलाई।

हां, यह सही है कि तुम अपने पैरों पर खड़ी हो गई हो, किन्तु आत्मनिर्भरता और मनमानापन में फर्क है।

मैं कुछ समझी नहीं?

अब कुछ दिनों में तुम्हारी शादी है। वहां मनमानेपन का अर्थ है कि घर को बनने से पहले ही तोड़ देना। हर्ष और चिन्ता के मिश्रित स्वर में मां अकुलाई।

ओह मां! जब मैं भी लड़के के बराबर ही कमा रही हूं तो उससे कम हूं क्या। उर्मि तुनकी।

और वह भी तुम्हारी तरह ही अपने मन की करने की सोचे तब? पापा को कितना अपने मन की करते देखा है तुमने उर्मि? जबकि एक वही कमाने वाले हैं न घर में। पलट कर फिर सवाल कर दिऐ थे मम्मी ने।

हूं पापा तो अपने मन को मार कर हमारे मन की करते हैं।

तो बेटा जी, इन पैसों की चमक को अपना गुरूर न बनाओ बल्कि इसमें अपने और अपने होने वाले परिवार का भविष्य प्रकाशमय बनाओ। हां मां, आपने मेरी आंखें खोल दी। मां से लिपट गई थी उर्मि।

पुस्तक चर्चा
BOOK REVIEW

यह कृति कहती है- महसूस कीजिए और स्वस्थ रहिए

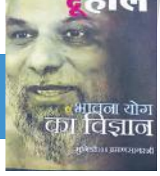

पुस्तक का नाम
फील टू हील

लेखक
मुनिश्री प्रमाणसागर
प्रकाशक
निर्ग्रंथ फाउंडेशन

पुस्तक 'फील टू हील: भावना-योग का विज्ञान' एक विचारपरक और अनुभवजन्य कृति के रूप में सामने आती है। पुस्तक का केंद्रीय विषय है कि मानव भावनाएं केवल मन की अवस्थाएं नहीं, बल्कि शरीर के स्वास्थ्य और रोग दोनों की निर्णायक कारक हैं। लेखक इस धारणा को आधुनिक मनोविज्ञान, योग-दर्शन और भारतीय जीवन-अनुभव के संदर्भ में स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

पुस्तक यह रेखांकित करती है कि भय, क्रोध, तनाव, ईर्ष्या, हीनता-बोध जैसी नकारात्मक भावनाएं दीर्घकाल में शारीरिक रोगों का कारण बन सकती हैं, जबकि करुणा, संतुलन, आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टि रोग-प्रतिरोधक क्षमता को सुदृढ़ करते हैं। इसे जीवन के व्यावहारिक उदाहरणों और अनुभवजन्य तर्कों से पुष्ट किया गया है।

लेखक मन और शरीर के पारंपरिक द्वैत को चुनौती देते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि भारतीय परंपरा में मन, प्राण और शरीर को एक समग्र इकाई के रूप में देखा गया है। इसी संदर्भ में योग, ध्यान और आत्मानुशासन को केवल आध्यात्मिक अभ्यास नहीं, बल्कि स्वास्थ्य विज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक के पृष्ठों में बार-बार यह संकेत मिलता है कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति यदि भावनात्मक कारणों की उपेक्षा करती है, तो उपचार अधूरा रह जाता है। लेखक यह स्थापित करने का प्रयास करते हैं कि लंबे समय तक दबी या असंतुलित भावनाएं शरीर के किसी न किसी तंत्र को प्रभावित करती हैं।

लेखक व्यावहारिक उपायों की ओर भी संकेत करते हैं–जैसे आत्मनिरीक्षण, संयमित जीवन-शैली, सकारात्मक सोच, योगाभ्यास और भावनात्मक अनुशासन। ये उपाय किसी त्वरित चमत्कार का दावा नहीं करते, बल्कि निरंतर अभ्यास और चेतन जीवन-पद्धति पर बल देते हैं। यह कृति न तो केवल चिकित्सा-ग्रंथ है और न ही आध्यात्मिक उपदेश; बल्कि यह मन, भावना और स्वास्थ्य के बीच सेतु का कार्य करती है। पुस्तक बताती है कि स्वस्थ जीवन की शुरुआत बाहरी उपचार से नहीं, बल्कि आंतरिक भावनात्मक संतुलन से होती है।

__अपनी रचना भेजिए:__ अपनी मौलिक और अप्रकाशित कहानी, कविता और लघुकथाएं हमें इस मेल एड्रेस पर भेजिए-sunday@in.patrika.com ध्यान रखें कहानी-1000 और लघुकथा-250 शब्दों से अधिक नहीं हो।

All ENGLISH Newspaper And Magazaines

INDIAN English Newspaper

Deccan Chronicle,
Economics times,
Times of India,
Mirror
Financial Express,
Hans india,
Indian Express,
New Indian Express NIE
The Hindu,
Mint, Newspaper
Business standard,
Business Line
, States Man
, Tribune, Newspaper
pioneer Newspaper
millennium Post Newspaper
Hitavada Newspaper
The Daily Guardian,
The Telegraph
Eastern Chronicle
The Goan
First India
Free Press Journal
Mid day English Gujarati
Maharashtra time
And also editorials of all English newspapers.
Etc.....

♨Also avialble Hindi, Andhra Pradesh Telangana
kannnada, Malayalam, Tamil Telugu
language papers ♨
Bengali | |
Marathi:
Kannada
Mumbai samachar
Sandesh news paper

The Assam Tribune
The Goan
Daily Excelsior
International Magzine
International Newspaper
Gujrati Marathi newspaper
Urdu Newspaper

Indian Express, Financial Express, The Hindu, Business Line, The Times of India, The Economic Times, Hindustan Times, ET wealth, Business Standard, First India, Mint, Greater Kashmir, Greater Jammu, The Himalayan, The Tribune, Brill Express, The Sikh Times, Avenue Mail, Western Times, Millennium Post, The Statesman, State Times, The Pioneer, Hans India, Free Press, Orissa Post, Mumbai Mirror, Mid-Day, Deccan Chronicle, Deccan Herald, Telangana Today, Financial Times, The Asian Age, The Telegraph, Oheraldo, Gulf of Times, The New York Times, The Washington Post, Los Angeles Times, USA Today, The Wall Street Journal, The Guardian, The Times

More Newspaper and Magazines Details Search

https://t.me/Magazines_8890050582 (@Magazines_8890050582)

Click Here To Join our Telegram Channel

सम्पादकीय

शनिवार, 20 दिसम्बर 2025

मनरेगा पर कांग्रेस की चिंता

संसद का शीतकालीन सत्र समाप्त हो गया है इस बीच सरकार ने मनरेगा का वैकल्पिक बिल 'विकसित भारत-गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण)' दोनों सदनों में पारित कर दिया नए बिल को संक्षेप में 'जी-राम-जी' कहा जा रहा है। शायद इसीलिए हिंदी और अंग्रेजी के शब्दों की खिचड़ी बनाई गई है। इसे भाजपा की 'रामवादी राजनीति' से जोड़ कर भी देखा जा रहा है। यह मानसिकता का संकरापन है। बुनियादी चिंता और सरोकार यह होना चाहिए कि जिस भारतीय को काम का संवैधानिक अधिकार हासिल है, क्या उसे 100 अथवा 125 दिन का रोजगार मुहैया कराया जा रहा है अथवा नहीं? जब 2005 में कांग्रेस नेतृत्व की यूपीए सरकार के दौरान 'राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी बिल' तैयार किया गया था, तब भाजपा के वरिष्ठ सांसद कल्याण सिंह की अध्यक्षता वाली संसदीय समिति में बिल पर व्यापक विमर्श किया गया था। संसदीय समिति ने तत्कालीन मनमोहन सरकार को कई सुझाव भी दिए थे। हमारी सूचना है कि अधिकांश सुझाव मान लिए गए थे। यकीनन वह एक ऐतिहासिक प्रयोग था कि देश में गरीब और बेरोजगार अथवा जिसे काम चाहिए, उस व्यक्ति को साल में कमोबेश 100 दिन का रोजगार, केंद्र सरकार के जरिए, उपलब्ध कराया जाएगा। वह संकल्प और कानूनी प्रावधान अधूरे ही रहे, क्योंकि 2006-07 से लेकर 2024-25 तक औसतन 50।24 दिन का रोजगार ही मुहैया कराया जा सका है। वाकई यह सरकार की नाकामियों का स्मारक भी है, लेकिन इसमें कांग्रेस और भाजपा दोनों की ही सरकारें शामिल रही हैं। साल 2008 में भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक द्धकैगत्र्ञ की रपट सामने आई, तो बदइंतजामी और गहरे भ्रष्टाचार के आरोप सामने आए। करीब 70 फीसदी ब्लॉक में मनरेगा अफसर ही तैनात नहीं थे। करीब 52 फीसदी पंचायतों में मनरेगा सहायक ही नहीं थे। बंगाल के 19 जिलों में बिना काम ही भुगतान किए गए और फंड के गलत इस्तेमाल किए गए। देश के 19 राज्यों में सर्वे कराए गए, तो अधिकारी और ठेकेदार के मिलीभगत भ्रष्टाचारों का खुलासा हुआ। 2024-25 में, मोदी सरकार के दौरान, 193 करोड़ रूपए का गबन और घोटाला पाया गया। 2025-26 में 23 राज्यों में मनरेगा के तहत या तो काम ही नहीं कराया गया अथवा बजटीय खर्च कम किया गया। बीती 5 दिसंबर को ही राज्यसभा में सरकार ने जानकारी दी थी कि मनरेगा की मद के 9746 करोड़ रुपये बकाया हैं। बजट में मनरेगा के लिए 80,000 करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे। चूंकि रकम खर्च नहीं की गई, लिहाजा साफ है कि मजदूरी बांटी नहीं गई, क्योंकि काम उपलब्ध ही नहीं कराया गया। यूपीए सरकार के दौरान ही केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने कुछ पेशेवरों, पत्रकार आदि, को प्रतिनिधि बना कर बुंद. ेलखंड जैसे पिछड़े इलाकों में भेजा था, ताकि मनरेगा का यथार्थ सामने आ सके। उनमें भी भ्रष्टाचार के कई मामले पकड़ में आए थे।

चुनावों में सरकारी धन और संसाधनों का दुरुपयोग

वोटर लिस्ट का शुद्ध, निष्पक्ष और त्रुटिरहित होना लोकतंत्र की बुनियाद है, इसमें किसी भी तरह की लापरवाही, भेदभाव या राजनीतिक हस्तक्षेप स्वीकार नहीं किया जा सकता, पार्टी के पदाधिकारी इस प्रक्रिया पर पैनी नजर रखें और जरूरत पड़ने पर चुनाव आयोग से शिकायत दर्ज कराएं, संगठन की ताकत और अनुशासन ही बसपा की सबसे बड़ी पूंजी है, सभी कार्यकर्ता ईमानदारी, निष्ठा और समर्पण के साथ पार्टी हित में काम करें, हाल के वर्षों में चुनावों के दौरान सरकारी धन और संसाधनों का दुरुपयोग बढ़ा है, जिससे निष्पक्ष चुनाव प्रभावित होते हैं, बिहार विधानसभा उपचुनाव के दौरान सामने आए घटनाक्रम इस बात का उदाहरण हैं, जिनकी गंभीरता से जांच होनी चाहिए।

-सुश्री मायावती, राष्ट्रीय अध्यक्ष, बसपा

महज नाम बदलने से योजना में ईमानदारी और पारदर्शिता आने की संभावना!

एम हसन

यूपीए सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगार लोगों तक पहुंचने के नेक इरादे से 2006 में यह योजना शुरू की थी। लेकिन राज्य सरकारों और ग्राम स्तरीय सरकारी तंत्र द्वारा इसके कार्यान्वयन से सरकारी खजाने पर भारी बोझ पड़ा। पिछले 20 वर्षों में जमीनी स्तर पर जिस तरह से धन का दुरुपयोग हुआ, उससे यह केंद्र द्वारा शुरू की गई अब तक की सबसे भ्रष्ट योजना बन गई है। अब वीबी-जी आरएएम जी योजना का धन उसी भ्रष्ट सरकारी तंत्र के हाथों में होगा।

यूपीए सरकार की प्रमुख ग्रामीण रोजगार योजना - महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम द्धएमजीएनआरईजीएत्र्ञ को समाप्त करने के लगभग एक दशक के प्रयासों के बाद, एनडीए सरकार ने अंततः इसे एक नई समान योजना - विकसित भारत गारंटी रोजगार और आजीविका मिशन ग्रामीण (वीबी-जी आरएएम जी) विधेयक, 2025 से बदलने का निर्णय लिया है। नई योजना का उद्देश्य यूपीए सरकार की योजना के समान ही ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को रोजगार प्रदान करना है, लेकिन इसमें कुछ संशोधन किए गए हैं, जिनमें नाम परिवर्तन भी शामिल है। यूपीए योजना का नाम महात्मा गांधी के नाम पर रखा गया था, जबकि एनडीए ने इसे नया नाम दिया है- वीबी-जी आरएएम जी। ग्रामीण क्षेत्रों में इसका उच्चारण कैसे होगा, यह कहना मुश्किल है। नई योजना में केंद्र सरकार द्वारा निगरानी का पूर्ण नियंत्रण रखा गया है, जबकि कुल संघीय निधि का केवल 60 प्रतिशत हिस्सा ही केंद्र सरकार के पास रहेगा। राज्यों को शेष 40 प्रतिशत धनराशि देनी होगी और अतिरिक्त व्यय की स्थिति में राज्य सरकारों को अतिरिक्त धनरा. शि वहन करनी होगी।

हालांकि, मूल प्रश्न यह है कि पिछले दो दशकों में इस योजना के लिए निर्धारित विशाल निधियों के उपयोग में व्याप्त भ्रष्टाचार को निचले स्तर पर पूरी तरह से कैसे समाप्त किया जाए। इसलिए, नई समान सैफ्रॉन मेगा ग्रामीण रोजगार योजना को आगे बढ़ाने से पहले, वर्तमान योजना की व्यवहार्यता का आकलन करते हुए इसका निष्पक्ष और पारदर्शी सामाजिक ऑडिट आवश्यक है। पिछले 20 वर्षों में पहले ही भारी मात्रा में सरकारी निधि बर्बाद हो चुकी है।

यूपीए सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगार लोगों तक पहुंचने के नेक इरादे से 2006 में इस योजना का शुभारंभ किया था, लेकिन राज्य सरकारों और ग्राम स्तरीय सरकारी तंत्र द्वारा इसके कार्यान्वयन से सरकारी खजाने पर भारी बोझ पड़ा है। पिछले 20 वर्षों में जमीनी स्तर पर जिस तरह से निधियों का दुरुपयोग हुआ, उससे यह केंद्र द्वारा शुरू की गई अब तक की सबसे भ्रष्ट योजना बन गई है। अब वीबी-जी आरएएम जी निधि इसी तरह के भ्रष्ट सरकारी तंत्र के हाथों में होगी।

> हालांकि, मूल प्रश्न यह है कि पिछले दो दशकों में इस योजना के लिए निर्धारित विशाल निधियों के उपयोग में व्याप्त भ्रष्टाचार को निचले स्तर पर पूरी तरह से कैसे समाप्त किया जाए। इसलिए, नई समान सैफ्रॉन मेगा ग्रामीण रोजगार योजना को आगे बढ़ाने से पहले, वर्तमान योजना की व्यवहार्यता का आकलन करते हुए इसका निष्पक्ष और पारदर्शी सामाजिक ऑडिट आवश्यक है। पिछले 20 वर्षों में पहले ही भारी मात्रा में सरकारी निधि बर्बाद हो चुकी है। यूपीए सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगार लोगों तक पहुंचने के नेक इरादे से 2006 में इस योजना का शुभारंभ किया था, लेकिन राज्य सरकारों और ग्राम स्तरीय सरकारी तंत्र द्वारा इसके कार्यान्वयन से सरकारी खजाने पर भारी बोझ पड़ा है। पिछले 20 वर्षों में जमीनी स्तर पर जिस तरह से निधियों का दुरुपयोग हुआ, उससे यह केंद्र द्वारा शुरू की गई अब तक की सबसे भ्रष्ट योजना बन गई है। अब वीबी-जी आरएएम जी निधि इसी तरह के भ्रष्ट सरक. ारी तंत्र के हाथों में होगी।

विशेष रूप से, मसौदा विधेयक का उद्देश्य प्रत्एक ग्रामीण परिवार को, जिनके वयस्क सदस्य अकुशल शारीरिक श्रम के लिए पंजीकरण कराते हैं, प्रति वित्तीय वर्ष 125 दिनों के मजदूरी रोजगार की वैधानिक गारंटी प्रदान करना है। नए प्रस्ताव के तहत, विधानसभाओं वाले सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए केंद्र-राज्य निधि-साझाकरण अनुपात 60:40 होगा। हालांकि, पूर्वोत्तर राज्यों, हिमालई राज्यों और उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर जैसे केंद्र शासित प्रदेशों में यह अनुपात 90:10 होगा। एमजीएनआरईजीए के कार्य एक मजबूत राष्ट्रीय रणनीति के अभाव में कई श्रेणियों में बिखरे हुए थे। नया अधिनियम 4 प्रमुख प्रकार के कार्यों पर केंद्रित है, जो टिकाऊ परिसंपत्तियों को सुनिश्चित करते हैं और सीधे जल सुरक्षा, मूलभूत ग्रामीण अवसंरचना, आजीविका संबंधी अवसं. रचना निर्माण और जलवायु अनुकूलन का समर्थन करते हैं। नया अधिनियम ग्राम पंचायतों द्वारा स्वयं तैयार की गई और पीएम गति-शक्ति जैसी राष्ट्रीय स्थानिक प्रणालियों के साथ एकीकृत विस्तृत ग्राम पंचायत योजनाओं को अनिवार्य बनाता है।

अपने 20 वर्षों के अस्तित्व के दौरान, सीएजी द्वारा केवल दो लेखापरीक्षाएं 2007-08 और 2013 और 2016 में एक सामाजिक लेखा परीक्षा की गई। सीएजी ने 2013 की अपनी व्यापक रिपोर्ट में कार्यान्वयन एजेंसियों को अनियमितताओं, धन के दुरुपयोग और लक्ष्य प्राप्ति में विफलता के लिए दोषी ठहराया था। ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में ऐसी रिपोर्टें हैं जिनमें बताया गया है कि कैसे ग्राम पदाधिकारियों ने अधिकारियों के साथ मिलकर धन का दुरुपयोग किया। 2013 की सीएजी रिपोर्ट ने तत्कालीन यूपीए सरकार की कड़ी आलोचना की थी और कहा था कि पिछले दो वर्षों में प्रति ग्रामीण परिवार रोजगार सृजन में काफी गिरावट आई है और पूर्ण किए गए कार्यों के अनुपात में भी ष्काफी कमीष आई है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया था कि बिहार, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश, जिनमें कुल मिलाकर 46 प्रतिशत ग्रामीण गरीब रहते हैं, ने केंद्रीय योजना निधि का केवल 20 प्रतिशत ही उपयोग किया, जिससे यह संकेत मिलता है कि गरीबी स्तर और एमजीएनआरईजीए के कार्यान्वयन के बीच संबंध बहुत मजबूत नहीं था। रिपोर्ट में यह भी कहा गया था कि केंद्रीय स्तर पर निगरानी संतोषजनक नहीं थी।

2016 की रिपोर्ट में एमजीएनआरईजीए के तहत सामाजिक लेखापरीक्षा इकाइयों के कामक. ाज की जांच की गई। रिपोर्ट में सामाजिक लेखापरीक्षा को प्राथमिक हितधारकों की सक्रिय भागीदारी के साथ समुदाय द्वारा किसी कार्यक्रम योजना के कार्यान्वयन और उसके परिणामों के सत्यापन के रूप में वर्णित किया गया है। यह महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना लेखापरीक्षा नियम, 2011 के तहत अनिवार्य है। ये नियम ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा सीएजी के परामर्श से तैयार किए गए थे। नियमों में राज्य सरकार को स्वतंत्र संगठनों अर्थात् सामाजिक लेखापरीक्षा इकाइयों एसएयू की पहचान और स्थापना, इन लेखापरीक्षाओं के संचालन की प्रक्रिया और लेखापरीक्षाओं से संबंधित व्यक्तियों के दायित्वों को सुगम बनाने का प्रावधान है। इस रिपोर्ट में कई अनियमितताओं का उल्लेख किया गया था, जिनमें यह भी शामिल है कि सात राज्यों में एसएयू स्थापित नहीं की गई थीं, जबकि आठ राज्यों में वे स्थापित तो थीं लेकिन कार्यरत नहीं थीं। रिपोर्ट में अन्य निष्कर्षों के साथ-साथ सामाजिक लेखापरीक्षा करने के लिए संसाधन व्यक्तियों की कमी का भी उल्लेख किया गया था। भ्रष्टाचार से निपटने के लिए योजना में अंतर्निहित तंत्र - कदाचार के किसी भी मामले का पता लगाने के लिए गठित सामाजिक लेखापरीक्षा इकाइयों-के बावजूद गबन किए गए धन की प्रभावी वसूली नहीं हो पाई है। पिछले कुछ वर्षों में एमएनआरईजीएस योजना को केंद्र सरकार से मिलने वाली धनराशि की कमी के चलते पश्चिम बंगाल जैसे कई विपक्षी शासित राज्यों ने केंद्र सरकार पर इस योजना के तहत धनराशि जारी न करने का आरोप लगाया है। जानकारी के अनुसार, केंद्र सरकार पर राज्यों का सबसे अधिक बकाया हैरू पश्चिम बंगाल का 2,770 करोड़ रूपए, उसके बाद राजस्थान का 979 करोड़ रूपए और बिहार का 669 करोड़ रूपए बकाया है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

क्रांतिकारी काकोरी के वीरों को नमन

योगेश कुमार गोयल

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल राजनीतिक आंदोलनों, प्रस्तावों और समझौतों का क्रम नहीं है बल्कि यह उन असंख्य क्रांतिकारियों की त्यागमई गाथा भी है, जिन्होंने मातृभूमि की आजादी के लिए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया। इन बलिदानों ने गुलामी की जड़ों को भीतर से हिलाया और जनता के मन में यह विश्वास जगाया कि अंग्रेजी हुकूमत अजेय नहीं है। ऐसी ही एक ऐतिहासिक और निर्णायक घटना है काकोरी कांड, जिसने न केवल ब्रिटिश सत्ता को गहरी चुनौती दी बल्कि भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन को एक नई दिशा और ऊर्जा प्रदान की। काकोरी कांड भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का वह अध्याय है, जिसने यह सिद्ध कर दिया कि आजादी केवल याचिकाओं और प्रार्थनाओं से नहीं मिलेगी बल्कि उसके लिए साहस, संगठन और बलिदान की आवश्यकता होगी। यही कारण है कि काकोरी कांड में शामिल क्रांतिकारियों को केवल इतिहास के पात्र नहीं बल्कि क्रांति की नींव रखने वाले शूरवीर माना जाता है। उनकी शहादत की स्मृति में हर वर्ष 19 दिसम्बर को काकोरी शहीद दिवस मनाया जाता है, जो हमें स्वतंत्रता की कीमत और उसकी रक्षा की जिम्मेदारी का बोध कराता है। बीसवीं सदी के प्रारंभिक दशकों में भारत का राजनीतिक परि.श्य तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन ने देश में जन-जागरण की लहर पैदा की थी। 1920 में शुरू हुआ यह आंदोलन ब्रिटिश शासन के लिए एक गंभीर चुनौती बन गया था लेकिन फरवरी 1922 में चौरी-चौरा कांड के बाद गांधी जी द्वारा आंदोलन वापस लिए जाने से देश के एक बड़े वर्ग, विशेषकर युवा क्रांतिकारियों में गहरी निराशा फैल गई। वे मानते थे कि जब अंग्रेज दमन और हिंसा का सहारा ले रहे हैं, तब केवल अहिंसा के माध्यम से आजादी पाना कठिन है। यही वह ऐतिहासिक मोड़ था, जहां से संगठित क्रांतिकारी आंदोलन ने नई दिशा पकड़ी। निराश लेकिन .ढ़ निश्चई युवाओं ने यह ठान लिया कि वे किसी भी कीमत पर स्वतंत्रता के लक्ष्य से पीछे नहीं हटेंगे। इसी सोच के परिणामस्वरूप 1923 में शचीन्द्रनाथ सान्याल के नेतृत्व में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन द्धएचआरएत्र्ञ की स्थापना हुई। इस संगठन का उद्देश्य केवल ब्रिटिश शासन का विरा. ेध करना नहीं बल्कि एक ऐसे स्वतंत्र, गणराज्यात्मक भारत की स्थापना करना था, जहां शोषण और अन्याय का कोई स्थान न हो। एचआरए के प्रमुख सदस्यों में राम प्रसाद बिस्मिल, योगेशचंद्र चटर्जी, शचीन्द्रनाथ बख्शी जैसे साहसी क्रांतिकारी शामिल थे। बाद में चंद्रशेखर आजाद और भगत सिंह जैसे तेजस्वी क्रांतिकारी भी इस विचारधारा से जुड़े। संगठन का स्पष्ट मत था कि क्रांति के लिए संसाधन चाहिए और संसाधनों के लिए धन, लेकिन चंदा मांगना न केवल संगठन की गोपनीयता को खतरे में डाल सकता था बल्कि अंग्रेजी खुफिया तंत्र को भी सतर्क कर सकता था।

ऐसे में निर्णय लिया गया कि ब्रिटिश सरकार के ही खजाने को निशाना बनाया जाए। इस विचार को कार्यरूप देने की जिम्मेदारी संगठन के सेना. पति पं. राम प्रसाद बिस्मिल को सौंपी गई। प्रारंभिक प्रयासों में क्रांतिकारियों ने कुछ धन जुटाने की कोशिश की, लेकिन वह हथियारों और क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए पर्याप्त नहीं था। अंततः यह निर्णय लिया गया कि सीधे सरकारी खजाने पर हाथ डाला जाए। यह फैसला न केवल साहसिक था बल्कि अत्यंत जोखिम भरा भी, क्योंकि असफलता की स्थिति में इसका परिणाम मृत्यु या आजीवन कारावास हो सकता था। 8 अगस्त 1925 को बिस्मिल के घर एक गुप्त बैठक हुई, जिसमें ब्रिटिश सरकार के खजाने को लूटने की विस्तृत योजना बनाई गई। अगले ही दिन 9 अगस्त 1925 को एचआरए के दस क्रांतिकारी सहारनपुर-लखनऊ पैसेंजर ट्रेन में सवार हुए। इनमें राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, चंद्रशेखर आजाद, राजेंद्र लाहिड़ी, शचीन्द्रनाथ बख्शी, मन्मथनाथ गुप्त, मुरारी शर्मा, बनवारी लाल, केशव चक्रवर्ती और मुकुंदी लाल शामिल थे।

लखनऊ के निकट काकोरी रेलवे स्टेशन के पास ट्रेन की चेन खींचकर उसे रोका गया। योजना के अनुसार, राजेंद्र लाहिड़ी ने नेतृत्व संभाला और कुछ ही क्षणों में सरकारी खजाने को कब्जे में ले लिया गया। यह कार्रवाई इतनी सुनियोजित थी कि यात्रियों को अधिक नुकसान नहीं हुआ। हालांकि दुर्भाग्यवश एक आकस्मिक गोली चलने से एक यात्री की मृत्यु हो गई, जिसे बाद में ब्रिटिश सरकार ने पूरे मामले को और अधिक संगीन बनाने के लिए प्रमुख आधार बनाया। इस लूट में कुल 4601 रूपए प्राप्त हुए, जो उस समय एक बड़ी राशि थी। अगले ही दिन यह खबर अखबारों के माध्यम से पूरे देश और विदेश में फैल गई। लंदन के हाउस ऑफ कॉमन्स तक में इस घटना की चर्चा हुई।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

गोवा मुक्ति: भारत की स्वतंत्रता का अंतिम निर्णायक अध्याय

औपनिवेशिक दासता के अंतिम अवशेषों के अंत और राष्ट्रीय स्वाभिमान की निर्णायक विजय का प्रतीक 'गोवा मुक्ति दिवस' हर वर्ष 19 दिसंबर को मनाया जाता है। यह दिन केवल एक भू-भाग की मुक्ति की तिथि नहीं है बल्कि उस संकल्प, साहस और राजनीतिक दृढ़ता का प्रमाण है, जिसके बल पर भारत ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि स्वतंत्रता अधूरी नहीं रह सकती और राष्ट्र की संप्रभुता पर किसी भी प्रकार का औपनिवेशिक दावा स्वीकार्य नहीं है। 19 दिसंबर 1961 को गोवा, दमन और दीव को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराकर भारत ने लगभग 450 वर्षों की विदेशी सत्ता का अंत किया और इतिहास की धारा को निर्णायक मोड़ दिया।

गोवा का भारत से संबंध केवल भौगोलिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सभ्यतागत रहा है। प्राचीन काल से यह भूमि भारतीय संस्कृति, धर्म और व्यापार का महत्वपूर्ण केंद्र रही थी लेकिन 1510 में पुर्तगालियों के आगमन के साथ ही गोवा विदेशी उपनि. वेशवाद का शिकार बन गया। वास्को-डी-गामा के समुद्री मार्ग खोजने के बाद पुर्तगाली सेनापति अफोंसो डी अल्बुकर्क ने गोवा पर कब्जा कर इसे पुर्तगाल का प्रमुख उपनिवेश बना लिया और अगली चार सदियों से अधिक समय तक गोवा, दमन और दीव पुर्तगाली शासन के अधीन रहे, जहां धार्मिक दमन, सांस्कृतिक हस्तक्षेप और राजनीतिक शोषण की लंबी और पीड़ादायक कहानी लिखी गई। 1947 में जब भारत आजाद हुआ, तब यह उम्मीद स्वाभाविक थी कि गोवा भी स्वेच्छा से भारत में शामिल हो जाएगा लेकिन पुर्तगाल ने इसे अपनी 'विदेशी संपत्ति' मानने से इन्कार कर दिया और गोवा को पुर्तगाल का अभिन्न अंग घोषित करता रहा। यह स्थिति भारत के लिए केवल कूटनीतिक चुनौती नहीं थी बल्कि राष्ट्रीय आत्मसम्मान का प्रश्न बन चुकी थी। भारत ने प्रारंभ में शांतिपूर्ण और कूटनीतिक प्रयासों के माध्यम से गोवा की मुक्ति का मार्ग तलाशा। संयुक्त राष्ट्र में भी इस मुद्दे को उठाया गया लेकिन पुर्तगाल अडिग रहा। गोवा के भीतर भी स्वतंत्रता आंदोलन धीरे-धीरे तेज हो रहा था। डॉ. राम मनोहर लोहिया जैसे नेताओं ने गोवा में सत्याग्रह को संगठित किया, स्थानीय लोगों ने गिरफ्तारी दी, यातनाएं सही और अपने प्राणों की आहुति दी। यह संघर्ष भले ही राष्ट्रीय स्तर पर उतना चर्चित न रहा हो लेकिन गोवा की मिट्टी में स्वतंत्रता की चिंगारी लगातार सुलगती रही। समय के साथ यह स्पष्ट हो गया कि केवल कूटनीति से समाधान संभव नहीं है। पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत ने यह निर्णय लिया कि गोवा को मुक्त कराना अब ऐतिहासिक अनिवार्यता है। दिसंबर 1961 में 'ऑपरेशन विजय' की योजना बनाई गई, जिसे अत्यंत गोपनीयता और सटीकता के साथ अंजाम दिया गया। यह अभियान थल, जल और वायु, तीनों सेनाओं का संयुक्त सैन्य अभियान था, जिसने भारतीय सशस्त्र बलों की समन्वय क्षमता और रणनीतिक कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। 18 दिसंबर 1961 की रात भारतीय सेना ने गोवा की सीमाओं पर मोर्चा संभाला। थल सेना ने उत्तर और पूर्व से गोवा में प्रवेश किया, नौसेना ने अरब सागर में पुर्तगाली जहाजों को निष्क्रिय किया और वायुसेना ने रणनीतिक ठिकानों पर दबाव बनाया। इस पूरे अभियान में भारतीय सेना ने अत्यंत संयम और मानवीय दृष्टिकोण का परिचय दिया। नागरिक क्षेत्रों को नुकसान न पहुंचे, इसके लिए विशेष सावधानियां बरती गईं। पुर्तगाली सेना, जो संख्या और संसाधनों में भारतीय सेना से बहुत पीछे थी, अधिक देर तक प्रतिरोध नहीं कर सकी। मात्र 36 घंटे के भीतर गोवा, दमन और दीव पर भारतीय ध्वज लहरा दिया गया। इस अभियान से जुड़े कई बहादुरी के किस्से इतिहास के पन्नों में दर्ज हैं, जो भारतीय सैनिकों के अदम्य साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा को उजागर करते हैं। नौसेना के युद्धपोत आईएनएस दिल्ली और आईएनएस मैसूर ने पुर्तगाली जहाजों को घेरकर समुद्री मार्ग को पूरी तरह सुरक्षित किया। वायुसेना के पायलटों ने बिना किसी अनावश्यक बमबारी के केवल रणनीतिक दबाव बनाकर पुर्तगाली प्रशासन को आत्मसमर्पण के लिए विवश किया। थल सेना के जवानों ने कठिन भू-भाग और सीमित समय में अपने लक्ष्य को सटीकता से प्राप्त किया। गोवा के तत्कालीन पुर्तगाली गवर्नर जनरल मैनुएल एंतोनियो वासालो ई सिल्वा ने 19 दिसंबर 1961 को भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया, जिससे सदियों पुराना उपनिवेशवाद शांतिपूर्वक समाप्त हुआ। गोवा की मुक्ति का महत्व केवल सैन्य विजय तक सीमित नहीं है। यह भारत की विदेश नीति में एक निर्णायक क्षण था, जिसने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अपने भू-भाग और संप्रभुता के प्रश्न पर किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करेगा। उस समय कुछ पश्चिमी देशों ने भारत की इस कार्रवाई की आला. ेचना भी की लेकिन समय ने सिद्ध कर दिया कि यह कदम न केवल न्यायसंगत था बल्कि ऐतिहासिक रूप से अपरिहार्य भी। गोवा की जनता ने भारतीय सेना का फूलों और आंसुओं के साथ स्वागत किया क्योंकि उनके लिए यह केवल सत्ता परिवर्तन नहीं बल्कि सम्मान और आत्मगौरव की पुनर्प्राप्ति थी। मुक्ति के बाद गोवा को केंद्र शासित प्रदेश का दर्जा दिया गया। यहां भारतीय संविधान लागू हुआ, लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थापना हुई और सामाजिक-आर्थिक विकास की नई यात्रा शुरू हुई। 30 मई 1987 को गोवा को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला और यह भारत का 25वां राज्य बना। दमन और दीव केंद्र शासित प्रदेश के रूप में रहे, जो बाद में दादरा और नगर हवेली के साथ विलय कर दिए गए। राज्य बनने के बाद गोवा ने पर्यटन, शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढ़ांचे के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की लेकिन साथ ही उसने अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को भी संजोकर रखा। भारत के कई हिस्सों में आजादी की लड़ाई अलग-अलग समय और परिस्थितियों में लड़ी गई।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

कहानी

पूजा गुप्ता

अंतिम संस्कार

चित्रांकन : संदीप जोशी

रविवार का दिन, वह दिन जो आमतौर पर आराम और परिवार के साथ समय बिताने का होता है। शहर के कोने में बसा आयुष्मान नर्सिंग होम भी इस रविवार की शाम को शांत और सुस्त नजर आ रहा था। नर्सिंग होम का छोटा-सा रिसेप्शन, जिसमें एक पुराना टीवी चल रहा था, वहां वार्ड ब्वॉय और नर्सें समय काटने के लिए रविवार की फिल्म देख रहे थे। फिल्म के बीच-बीच में आने वाले विज्ञापनों से वार्ड ब्वॉय का मूड खराब हो रहा था। वह बड़बड़ाता, 'ये विज्ञापन भी न, फिल्म का मजा किरकिरा कर देते हैं।' पास में बैठे कुछ मरीजों के रिश्तेदार, जो मजबूरी में वहां थे, भी उसी टीवी पर नजरें टिकाए हुए थे। उनकी आंखों में थकान और बेबसी साफ झलक रही थी।

तभी बाहर सड़क पर एक ऑटो रिक्शा रुकने की आवाज आई। वार्ड ब्वॉय ने कांच की खिड़की से बाहर झांका। एक व्यक्ति, जिसके चेहरे पर घबराहट और चिंता साफ दिख रही थी, एक वृद्ध महिला को गोद में उठाए नर्सिंग होम के अंदर दाखिल हुआ। उसने महिला को सावधानी से बेंच पर लिटाया और रिसेप्शन की ओर बढ़ा।

'डॉक्टर साहब हैं?' उसने हांफते हुए पूछा।

'आज रविवार है, डॉक्टर साहब नहीं आते,' वार्ड ब्वॉय ने बिना नजरें टीवी से हटाए जवाब दिया।

'मैं गिरीश वर्मा, डॉक्टर साहब का रिश्तेदार हूं,' उस व्यक्ति ने अपनी पहचान बताई।

'डॉक्टर साहब के सारे मरीज तो रिश्तेदार ही होते हैं। मैं आठ साल से यहां काम कर रहा हूं, आपको तो कभी नहीं देखा,' वार्ड ब्वॉय ने अपना अनुभव बताया।

'हम उनके दूर के रिश्तेदार हैं,' व्यक्ति ने गलती सुधारते हुए कहा, 'देखिए, यह मेरी मां हैं। बूढ़ी हैं, बाथरूम में गिर गईं, फिर से होश नहीं आया। रुक-रुक कर सांस ले रही थीं, अब अचेत हैं। छह महीने पहले इन्हें लकवा हुआ था। प्लीज, जल्दी से डॉक्टर साहब को बुला दें।'

'मरीज की हालत देखकर लगता है कि डॉक्टर का इंतजार करने से बेहतर है कि तुरंत भर्ती कर लिया जाए। यहां डॉक्टर साहब का असिस्टेंट है। कहें तो भर्ती कर दूं?' नर्स, जो अब तक चुप थी, ने स्थिति को समझते हुए कहा।

'मैं अकेले कोई फैसला नहीं ले सकता। मेरे तीन और भाई हैं, उनके बिना मैं क्या करूं?' गिरीश ने असमंजस में कहा।

'ठीक है, जैसा आप उचित समझें। लेकिन जल्दी कीजिए, मरीज की हालत गंभीर है। कुछ भी हो सकता है।' नर्स ने गंभीर स्वर में कहा।

कुछ ही देर में नर्सिंग होम में दो और लोग दाखिल हुए। एक पुरुष और एक महिला। पुरुष ने गिरीश को देखते ही पूछा, 'क्यों रे गिरीश, मां को क्या हुआ?'

'रमेश भैया,' गिरीश की आवाज कांप रही थी, 'मां बाथरूम में गिर गईं और बेहोश हो गईं। उनके हाथ-पैर ठंडे पड़ने लगे। मैं ऑटो में लेकर यहां आया। डॉक्टर साहब नहीं हैं, ये लोग कह रहे हैं कि भर्ती करा दो, वरना...' गिरीश की बात पूरी होने से पहले ही वह फफक पड़ा।

'भर्ती कराने में क्या दिक्कत है? मां को भर्ती क्यों नहीं कर लेते?' रमेश ने वार्ड ब्वॉय की ओर देखते हुए पूछा।

'दो हजार रुपये जमा कर दीजिए, मरीज को भर्ती कर लेंगे,' वार्ड ब्वॉय ने टीवी से नजरें हटाए बिना जवाब दिया।

'भाई, डॉक्टर साहब हमारे पहचान के हैं,' रमेश ने जोर देकर कहा।

'पैसे जमा कराने का नियम भी उन्हीं का है। पैसे जमा कर दीजिए, ताकि मरीज को दवा-दारू शुरू हो सके।' वार्ड ब्वॉय ने दो टूक जवाब दिया।

'क्यों रे, पैसे क्यों नहीं जमा किए?' रमेश ने गिरीश की ओर देखकर पूछा।

'रमेश भैया, चार महीने से मां मेरे पास हैं। उनकी देखभाल, दवा-दारू का खर्च मैं ही उठा रहा हूं। नगर निगम के मोहर्रिर को मिलता ही कितना है? हम चारों भाइयों ने मिलकर तय किया था कि तीन-तीन महीने मां को अपने पास रखेंगे।' गिरीश ने लाचार स्वर में कहा।

'शैलजा, तुम मां की देखभाल करो। मैं डॉक्टर साहब को लेकर आता हूं।' रमेश ने एक पल सोचकर कहा और स्कूटर लेकर नर्सिंग होम से बाहर निकल गया। रास्ते में एक टेलीफोन बूथ पर रुककर उसने सबसे बड़े भाई शिवप्रकाश को फोन लगाया। 'भैया, मां बहुत सीरियस हैं। गिरीश उन्हें आयुष्मान नर्सिंग होम लेकर आया है। आप जल्दी पहुंचें। और हां, तीन हजार रुपये भी साथ लाएं। मैं भी कुछ पैसे लेकर डॉक्टर साहब को लेते हुए पहुंच रहा हूं।' इतना कहकर रमेश ने फोन काट दिया।

'किसका फोन था?' शिवप्रकाश की पत्नी सविता ने पूछा।

'चलो, आयुष्मान नर्सिंग होम। मां भर्ती हैं। रमेश का फोन था। एक-दो हजार रुपये भी रख लो।' शिवप्रकाश ने जवाब दिया।

'पैसे रखना जरूरी है?' सविता ने तंज भरे लहजे में पूछा।

'बड़ा हूं, फर्ज तो निभाना पड़ेगा।' शिवप्रकाश ने कहा।

'रमेश के पास पैसे नहीं हैं?' सविता ने फिर सवाल किया। शिवप्रकाश ने बिना जवाब दिए पैसे निकाले और सविता के साथ नर्सिंग होम के लिए निकल पड़ा।

नर्सिंग होम पहुंचते ही शिवप्रकाश ने गिरीश को देखकर पूछा, 'क्यों रे, भर्ती के लिए पैसे नहीं थे तो फोन क्यों नहीं किया?'

'भैया, रमेश भैया को फोन किया था। उन्होंने कहा था कि वे आपको फोन करेंगे, इसलिए मैंने आपको सीधे फोन नहीं किया।' गिरीश ने सफाई दी।

'तो क्या हुआ? तुम फोन कर देते तो क्या बिगड़ जाता?' शिवप्रकाश ने सिगरेट जलाते हुए तल्खी से कहा।

'भैया, आपके यहां जब भी फोन किया, हमेशा यही जवाब मिला कि आप नहीं हैं। भाभी से पूछ लीजिए।' गिरीश ने जवाब दिया।

'खैर, चिंता मत करो। मैं देखता हूं,' शिवप्रकाश ने कहा और रिसेप्शन काउंटर पर पहुंचा। 'मैडम, मां को भर्ती करना है।'

'ठीक है, यह फॉर्म भर दीजिए और दो हजार रुपये जमा कर दीजिए,' नर्स ने कहा।

'हमें डॉक्टर साहब अच्छे से जानते हैं,' शिवप्रकाश ने रौब झाड़ते हुए कहा।

'सर, मरीज को भर्ती करने से पहले कन्सेंट जरूरी है।' नर्स ने स्पष्ट किया।

शिवप्रकाश ने फॉर्म लिया और मां का नाम, पिता का नाम और उम्र जल्दी-जल्दी भर दी। लेकिन जब पते का कॉलम आया, उनकी कलम रुक गई। वह एक पल के लिए असमंजस में पड़ गया। फिर बोला, 'एक्सक्यूज मी, मैडम, यह रुपये रखिए। फॉर्म मैं भरकर देता हूं।'

'सॉरी सर, फॉर्म जरूरी है। मरीज को कुछ हो जाए तो बहुत लफड़ा होता है।' नर्स ने सख्ती से कहा।

'गिरीश, इधर आ। मां को अभी कहां रहना था? रमेश के पास या महेश के पास?' शिवप्रकाश ने गिरीश को बुलाकर पूछा।

'महेश भैया के पास।' गिरीश ने जवाब दिया। शिवप्रकाश ने महेश का पता फॉर्म में भरा और महेश वर्मा के नाम से दस्तखत कर दिए। नर्स ने फॉर्म लिया और मरीज को भर्ती करने का आदेश दिया। वार्ड ब्वॉय और नर्स ने स्ट्रेचर लाकर वृद्ध महिला को जनरल वार्ड के बेड नंबर चार पर ले गए। असिस्टेंट ने उनका ब्लड प्रेशर नापा, थर्मामीटर लगाया और ग्लूकोज की बोतल चढ़ा दी।

शिवप्रकाश, सविता और गिरीश कोने में खड़े थे। तभी रमेश अपनी पत्नी शैलजा के साथ वापस आया और शिवप्रकाश व सविता के पैर छुए।

'क्यों रमेश, कैसे हो?' शिवप्रकाश ने पूछा। 'बस भैया, क्या बताऊं, धंधे में लगातार घाटा हो रहा है। आपके पैसे भी नहीं लौटा पा रहा। आज मेरी लाचारी देखिए, मां के भर्ती के पैसे भी मेरे पास नहीं हैं।' रमेश ने लाचारी भरे स्वर में कहा।

'फोन पर तो तुम पैसे लेकर आने की बात कह रहे थे।' शिवप्रकाश ने तंज कसा।

'बस भैया, बहुत सुन लिया। बाबूजी के गुजरने के बाद मां ने हमें भूखे रहकर पाला। आज वह मर गईं, तो तुम लोगों के पास जगह नहीं है। मैं ले जाऊंगा मां को। मैं करूंगा सब काम। हां, अगर तुम लोगों के पास वक्त हो तो आ जाना! वरना लोग कहेंगे कि चार बेटों ने मां की अर्थी को कंधा भी एक साथ नहीं दिया।' गिरीश की आंखें छलक पड़ीं और वह फफक पड़ा।

'घबराहट में बोल गया होगा भैया। वरना मेरी स्थिति तो गिरीश से भी बदतर है। लेकिन यह वक्त इन बातों का नहीं। अभी मां की जान बचाना जरूरी है।' रमेश ने कहा।

'जान बचाने के लिए तुम्हारे बड़े भैया हैं। लेकिन उसके बाद कौन देखेगा? महेश को भी बुला लो, ताकि वह यह न कहे कि उसे बताया नहीं गया।' सविता, जो अब तक चुप थी, बोली।

'वह जोरू का गुलाम क्या पूछेगा, भाभी? मां को रखने की जिम्मेदारी उसकी थी, लेकिन ताला लगाकर भाग गया।' गिरीश ने गुस्से में कहा।

'देखो, हम तीनों यहीं हैं। मां की देखभाल का नियम हम चारों ने मिलकर बनाया था। महेश को भी बात माननी होगी। सबसे पहले वह गिरीश को एक महीने का खर्च दे दे। मां ठीक होती हैं तो तीन महीने अपने पास रखे।' शिवप्रकाश ने बड़प्पन दिखाते हुए कहा।

'और अगर वह नहीं रखेगा तो?' रमेश ने पूछा।

'कैसे नहीं रखेगा? मां सबकी है, जिम्मेदारी भी सबकी है।' शिवप्रकाश ने जोर देकर कहा।

'बड़े भैया, मेरी कमाई इतनी नहीं कि मैं तीन महीने भी मां को रख सकूं। लेकिन अगर सब पैसे की मदद करें तो मैं मां को जिंदगी भर अपने पास रख सकता हूं।' गिरीश ने भावुक होकर कहा।

तभी महेश और उसकी पत्नी नर्सिंग होम पहुंचे। महेश ने बिना किसी अभिवादन के पूछा, 'मां कैसी हैं, भैया?'

'तुम्हें मां से क्या? अपने घर में नहीं रख सकते। ताला लगाकर भाग जाते हो। बड़े आए पूछने वाले।' गिरीश ने नाराजगी दिखाई।

'मैं तुम जैसे छोटे लोगों के मुंह नहीं लगता। जरूरी काम था, इसलिए गया था।' महेश ने तल्खी से कहा।

'एक महीने से इसी शहर में हो। मां का ख्याल था तो लेने क्यों नहीं आए?' गिरीश ने सवाल किया।

'मैंने ठेका नहीं ले रखा है। मेरी अपनी परेशानियां हैं। मैं मां को नहीं रख सकता। हां, पैसे की मदद कर सकता हूं।' महेश ने अकड़ के साथ कहा।

'महेश, पैसे का घमंड ठीक नहीं। फिर भी अगर तुम्हारे पास पैसे हैं तो गिरीश को मां के एक महीने का खर्च और दवा-दारू का खर्च दे दो।' शिवप्रकाश ने कहा।

'कितना खर्च हुआ तेरा, बता?' महेश ने गिरीश की ओर देखकर पूछा।

'भैया, यह जगह हिसाब करने की नहीं है। मां को बचाने की है।' गिरीश की आंखें भर आईं और वह रो पड़ा।

तभी नर्सिंग होम में डॉक्टर की कार रुकी। डॉक्टर ने कार से उतरते ही सबको देखा और मुस्कुराते हुए कहा, 'आज सारा वर्मा परिवार एक साथ! अच्छी बात है।' वह जनरल वार्ड में गए और बेड नंबर चार पर रुके। उन्होंने मां की नब्ज टटोली और वार्ड ब्वॉय को कहा, 'विवेक, टॉर्च लेकर आओ।' वार्ड ब्वॉय टॉर्च लेकर पहुंचा। डॉक्टर ने मां की आंखें खोली और टॉर्च से रोशनी डाली, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। उन्होंने पलकें बंद कीं और चादर ओढ़ा दी। बाहर निकलकर उन्होंने शिवप्रकाश को बुलाया और धीमे स्वर में कहा, 'सॉरी शिवप्रकाश, मां मर चुकी हैं। गर्मी का मौसम है, लाश ज्यादा देर नहीं रखी जा सकती। सुबह जल्दी अंतिम संस्कार करवा देना, वरना दुर्गंध आने लगेगी।'

'जी, डॉक्टर साहब।' शिवप्रकाश ने भारी मन से कहा।

'मैं डिस्चार्ज पेपर बना देता हूं। मैडम, शिवप्रकाश जी ने जो पैसे दिए हैं, वापस कर दो,' डॉक्टर ने रिसेप्शन पर कहा।

'सर, एक ग्लूकोज की बोतल लगी थी,' नर्स ने याद दिलाया।

'कोई बात नहीं। शिवप्रकाश जी पैसे वापस ले लेंगे। घर की बात है।' डॉक्टर ने कहा और चले गए।

शिवप्रकाश भारी कदमों से भाइयों के पास लौटा। 'मां हम सबको छोड़कर चली गईं। डॉक्टर साहब का कहना है कि गर्मी का मौसम है, अंतिम संस्कार सुबह जल्दी करना होगा, वरना दुर्गंध आएगी। मेरे घर में अंतरा और मिनी की पीएमटी की परीक्षा एक हफ्ते बाद है, इसलिए अंतिम संस्कार और बाकी कार्यक्रम तुम तीनों में से किसी एक के यहां कराना ठीक रहेगा।'

'मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। आपके पैसे भी नहीं लौटा पा रहा हूं।' रमेश ने तुरंत हाथ खड़े कर दिए।

'मैं भी पंद्रह दिन का समय नहीं दे पाऊंगा। हां, पैसे की मदद कर सकता हूं।' महेश ने पल्ला झाड़ते हुए कहा।

'बस भैया, बहुत सुन लिया। बाबूजी के गुजरने के बाद मां ने हमें भूखे रहकर पाला। आज वह मर गईं, तो तुम लोगों के पास जगह नहीं है। मैं ले जाऊंगा मां को। मैं करूंगा सब काम। हां, अगर तुम लोगों के पास वक्त हो तो आ जाना! वरना लोग कहेंगे कि चार बेटों ने मां की अर्थी को कंधा भी एक साथ नहीं दिया।' गिरीश की आंखें छलक पड़ीं और वह फफक पड़ा।

कविता

राजेंद्र कुमार कनौजिया

दिसंबर

मुझे तुम फिर
रुलाने आ गए हो,
जनवरी के बहाने,
आ गये हो।
कहां टूटा, कहां ख़ाली,
मुझे फिर से
बताने आ गये हो।

मिला था जो,
जनवरी में पिछली वाली,
वो वापस जा चुका,
अब उसको क्यों
बुलाने आ गये हो।

तुम्हारा नाम लेकर
सोचता हूं,
लुट गये ख़्वाब सारे
जनवरी के,
मुझे क्यों ये
बताने आ गये हो।

मोहब्बत के गिले-शिकवे,
अदावत की कहानी,
फ़रवरी में ही छूटी,
निभ ना पाई , मार्च तक भी,
अब उसको दोहराने
आ गये हो।

गर्मियां क्या बतायें
कैसी बीतीं, शहर में
आग बरसी, और फिर
बाढ़ का ग़म,
उन यादों को
जगाने आ गये हो।

मैं इतना बेरहम तो था नहीं,
पर याद रखा,
मुझे मुझसे मिलाने
आ गये हो।

जरा-सा वक्त तो देते,
अभी तो सर्दियां हैं,
रुक के जाना,
ये कैसा खेल है,
की, फिर रुलाने
आ गये हो।

अब तुमको क्या बतायें,
कहां से गुजरता आया है,
मौसम ज़िंदगी में,
जनवरी को
जगाने आ गये हो।

दिसंबर,
मुझे तुम फिर
रुलाने आ गए हो,
जनवरी के बहाने,
आ गये हो।

पुस्तक समीक्षा

समाज और संवेदनाओं का सजीव चित्रण

पुस्तक : ओ! मेरे मनमीत (दोहा संग्रह)
लेखिका : शोभा चन्दर
प्रकाशक : दीपक प्रकाशन, जयपुर
पृष्ठ : 119
मूल्य : रु. 375.

सुरेखा शर्मा

लेखिका शोभा चन्दर की नई कृति 'ओ! मेरे मनमीत' शीर्षक से सद्यः प्रकाशित दोहा संग्रह अनेक रंगों के पुष्पों से सजा एक गुलदस्ता है। प्रथम पूज्य गणपति व मां शारदा की वंदना से प्रारंभ कर चंद्रमा की श्रेष्ठता का वर्णन करते हुए लिखा है :-

'चंदा तेरी चांदनी, करती भाव विभोर।
ज्यों फैलाया रात ने, गोरस चारों ओर।'

संग्रह के दोहे जिंदगी के विभिन्न बिंदुओं को कभी सकारात्मक ढंग से समाधान तो कभी प्रश्न बनकर पाठकों को सोचने पर विवश कर देते हैं। शब्दों और अर्थों के बीच कबीर की तरह सच कहने का भी लेखिका ने प्रयास किया है, बानगी देखिए :- *'देखो जरा किसान की कैसी है तस्वीर*
बाल-बाल है कर्ज में, आंखों में है नीर।'

जैसे-जैसे पाठक दोहों के भाव जगत में डूबता जाता है, तो स्वयं को भी उसी स्थिति में पाता है। सभी दोहे रोचक, प्रवाहपूर्ण एवं जीवन का सार हैं, या यूं कहें कि सभी दोहे बेजोड़ हैं। संग्रह की खूबी कहें या विशेषता है जीवन के साथ जुड़ाव, जीवन का दृष्टिकोण, जीवन की कमजोरियां, ज़िन्दगी के सपने, वे तमाम पहलू जिन्हें हम जीते हैं, महसूस करते हैं, ऐसे सपनों को यथार्थ के धरातल पर सुख-दुख, संयोग-वियोग के साथ अन्य विषयों को दोहों में लिपिबद्ध किया गया है।

कहा जाता है कि सरल लिखना बहुत कठिन होता है। सरल शब्दों में, सरल भाषा में अपनी अनुभूतियों को वही शब्द दे पाता है जो हृदय से कवि होता है, केवल कवि। लेखिका ने दोहों में जिंदगी से कहीं शिकायत, कहीं समाज के दमघोंटू नियम-कानून के प्रति तीखा विरोध किया है।

संयोग-वियोग रस के दोहे भी पाठक के मन को अनायास ही भिगो देते हैं। दर्द को भी लेखिका ने अपने दोहों में स्थान दिया है। दोहों में सामाजिक सरोकारों का तारतम्य देखा जा सकता है। दम तोड़ते संस्कार, गिरते मानवीय मूल्यों को लेखिका ने दृढ़ता से दोहों में गूंथा है।

संगृहीत दोहे सहज, सरल होने के साथ-साथ सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक समकालीन अव्यवस्था को उजागर करते हुए पाठक को अपने साथ जोड़ लेते हैं। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' की ओर सभी का ध्यान है, तो लेखिका की दृष्टि से कैसे इस विषय पर लेखनी न चलती।

संग्रह का हर दोहा अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। एक विशेष विचार हर दोहे में है। यह कृति मानवीय संवेदनाओं का ऐसा दर्पण है, जिसमें हर पाठक सीख-शब्द ले सकता है।

यात्रा वृत्तांत के जरिए सांस्कृतिक झांकी

पुस्तक : ऐसा देश है मेरा (यात्रा संस्मरण)
लेखक : डॉ. मनोज भारत
प्रकाशक : साहित्यागार धामाणी मार्केट की गली, जयपुर
पृष्ठ : 137
मूल्य : रु. 250.

मनमोहन गुप्ता मोनी

पुस्तक 'ऐसा देश है मेरा' डॉ. मनोज भारत द्वारा लिखित एक संस्मरण संग्रह है, जिसमें लेखक ने देश के विभिन्न स्थानों की 14 यात्राओं का वर्णन किया है। इन यात्राओं में न केवल स्थानों की भौगोलिक विशेषताएं प्रस्तुत की गई हैं, बल्कि वहां के रहन-सहन, जीवन की परिस्थितियों और सांस्कृतिक परंपराओं का भी गहन अध्ययन किया गया है। लेखक ने विशेष रूप से महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और हरियाणा जैसे राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर वहां की जीवनशैली पर अपना ध्यान केंद्रित किया है।

लेखक ने हरियाणा के जादू लाहौरी गांव का भी उल्लेख किया है, जहां बाबा जगन्नाथ मंदिर है। उन्होंने वहां के लोगों के विश्वास और मंदिर के महत्व को बताया है। साथ ही, हिंदी के पहले कहानीकार पं. माधव प्रसाद मिश्र के पैतृक आवास का दौरा भी किया और उनके वंशजों से बातचीत की। इसके बाद, उन्होंने स्वतंत्र समर वीरों को फांसी दिए जाने वाले बरगद के पेड़ के बारे में लिखा, जो ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मध्य प्रदेश की भोज नगरी और होशंगाबाद में की गई यात्राओं का भी वर्णन किया गया है। लेखक ने भोज ताल की सुंदरता और होशंगाबाद के गुरुकुल में बच्चों को दी जा रही योग शिक्षा पर चर्चा की है। यह पुस्तक न केवल यात्रा के भौतिक पहलुओं को दर्शाती है, बल्कि वहां की सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों का भी जिक्र करती है।

उत्तर प्रदेश के हरदोई में अखिल भारतीय साहित्य परिषद के कार्यक्रम में भाग लेने के दौरान लेखक ने वहां के सामाजिक जीवन और चालीसा अधिवेशन का उल्लेख किया है। महाराष्ट्र के पुणे, त्र्यंबकेश्वर और नांदेड़ जैसे स्थानों के धार्मिक महत्व को भी लेखक ने विस्तार से बताया है। हिंगोली जिले के नागनाथ ज्योतिर्लिंग का भी वर्णन किया गया है, जो एक ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल के रूप में महत्वपूर्ण है।

पुस्तक का मुख्य आकर्षण यह है कि डॉ. मनोज भारत ने अपनी यात्रा के दौरान प्रत्येक क्षेत्र की परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत को समर्पित किया है। हर यात्रा के माध्यम से उन्होंने उन स्थानों की सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्वता को उजागर किया है। लेखक की लेखन शैली सरल और स्पष्ट है, जो पाठकों को यात्रा के अनुभवों से सीधे जोड़ने में सफल होती है।

कुल मिलाकर, 'ऐसा देश है मेरा' एक ऐसा संस्मरण संग्रह है जो भारतीय समाज और संस्कृति की विविधताओं को समझने में सहायक है।

पुस्तकें मिलीं

अरुण नैथानी

ज्ञान-हौसले की बाल कविताएं

पुस्तक : सूरज दादा कूल बनो
सृजनकार : नरेंद्र सिंह नीहार
प्रकाशक : स्वान बुक्स, नयी दिल्ली
पृष्ठ : 64
मूल्य : रु. 250.

पहली बालकृति 'हंसने दो मुस्काने दो' के बाद 'सूरज दादा कूल बनो' लेकर आए नरेंद्र सिंह नीहार की रचनाओं में जहां ज्ञान का ओज है, वहीं व्यावहारिक जीवन की सीख भी है। रचनाकार की बाल सरोकारों की प्रतिबद्धता और बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ रचनाओं को पठनीय और अनुकरणीय बनाती है। तपिश के दौर में बालमन 'सूरज दादा कूल बनो' की गुहार लगाता है। रचनाएं बालसुलभ सहजता, चपलता और हास्य-व्यंग्य से भरपूर हैं। रचनाएं बालमन की सहज अभिव्यक्ति हैं।

महानायक का जीवन-मर्म

पुस्तक : भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर - जीवन मर्म
लेखक : डॉ. राजेंद्र मोहन भटनागर
प्रकाशक : डायमंड पॉकेट बुक्स, नयी दिल्ली
पृष्ठ : 232
मूल्य : रु. 250.

सुविख्यात उपन्यासकार डॉ. राजेंद्र मोहन भटनागर ने डॉ. भीमराव अंबेडकर के जीवन का व्यापक अध्ययन किया। भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर-जीवन मर्म पुस्तक में उन्होंने एक स्कॉलर और व्यावहारिक इंसान के जीवन संघर्ष के विभिन्न आयामों को समेटा है। जाति की बेड़ियों को तोड़कर विविधता के भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोने के उनके महामानवीय प्रयासों की झलक पुस्तक में मिलती है। समतामूलक समाज की स्थापना में उनके योगदान का स्मरण किया गया है।

सामाजिक बदलाव की आकांक्षा

पुस्तक : पुष्पांजलि
सृजनकार : सुषमा शर्मा
प्रकाशक : अयन प्रकाशन, नयी दिल्ली
पृष्ठ : 187
मूल्य : रु. 550.

कुल 51 बाल कविताएं, बीस अन्य कविताएं, चार कहानियां, दो निबंध और तीन नाटकों सहित कुल अस्सी रचनाओं वाले गद्य-पद्य संग्रह वाली रचना पुष्पाजलि रचनाकार सुषमा शर्मा का पहला गद्य-पद्य संग्रह है। रचनाओं के केंद्र में समाज से जुड़े विभिन्न विषयों का विमर्श है। सकारात्मक सोच के साथ समाज में बदलाव की गहरी आकांक्षा रचनाओं में मुखरित होती है। एक शिक्षक के रूप में साढ़े तीन दशकों के व्यापक अनुभवों के जरिए लेखिका ने रचनाओं को समृद्ध किया है। रचनाओं की भाषा-शैली सरल और सहज है।

बिन पंख ऊंची उड़ान

पुस्तक : बिन पर परिंदे
सृजनकार : मिट्ठू राम मंडल
प्रकाशक : मंडल पब्लिशर
पृष्ठ : 102
मूल्य : रु. 249.

शिक्षक मिट्ठू राम मंडल के पहले कविता 'संग्रह बिन पर परिंदे' का सार यही है कि अभिव्यक्ति की आजादी के बिना इंसान वैसे ही जैसे बिना पंख के परिंदा होता है। गहन विचारों के जरिए रचनाकार एक ऐसे समाज का आकांक्षी है जहां जाति, धर्म, लिंग, भाषा व क्षेत्र के आधार पर किसी तरह का भेदभाव न हो। उनका मानना है कि डॉ. भीमराव अंबेडकर व महात्मा बुद्ध के जीवन-दर्शन में दुनिया के संकटों का समाधान निहित है।

पंछी होता बाल मन

पुस्तक : अगर हम पंछी होते
सृजनकार : ओमप्रकाश कादियान
प्रकाशक : नीलाभ पब्लिकेशन, मुंबई
पृष्ठ : 63
मूल्य : रु. 250.

'हम पंछी नील गगन के' बालगीत संग्रह के प्रकाशन के बाद ओमप्रकाश कादियान अपना नया रचनासंग्रह 'अगर हम पंछी होते' बाल पाठकों के लिए लेकर आए हैं। अनेक विधाओं पर पुस्तकें रचने वाले और छायाकार कादियान बाल पाठकों के लिए लगातार लिखते रहे हैं। उनकी मान्यता है कि बाल आकांक्षाओं के अनुरूप रचनाओं से ही उन्हें अच्छा इंसान बनाया जा सकता है। निस्संदेह, संकलन में शामिल तीस रचनाओं में उन्होंने बच्चा बनकर बालमन में झांका है।

डबवाली अग्निकांड के तीन दशक में भले ही त्रासदी स्थल पर अग्निकांड स्मारक बन गया है। लेकिन जरूरत है कि इस हादसे को एक सबक के रूप में एक मल्टीस्टोरी 'पैनोरमा' के तौर पर विकसित किया जाए , ताकि देश-विदेश से लोग इस जगह पर आकर अग्नि हादसों से बचने के लिए चौकसी व उपायों की जानकारी हासिल करें व जागरूक हों। जिसमें आग लगने के कारणों व बचाव से जुड़े तथ्य, प्रोजेक्ट व आधुनिक उपकरण प्रदर्शित किए जाएं।

तीस साल पहले का डबवाली अग्निकांड

मंडी डबवाली में 23 दिसंबर 1995 को विश्व की भयावह अग्नि त्रासदी घटित हुई थी। ऐसा हर हादसा उस दुर्भाग्यपूर्ण अग्निकांड के जख्म हरे कर देता है। इसमें चंद मिनटों में 442 लोग काल का ग्रास बन गये। जिनमें ज्यादातर स्कूली बच्चे थे। देश में आग लगने की त्रासदियों की लंबी फेहरिस्त है जो क्रम अभी भी जारी है। वजह है जागरूकता की कमी। कारण जानने के बावजूद सबक नहीं लिये जाते। बचाव उपायों पर अमल होना जरूरी है। पीड़ितों के प्रति तंत्र की बेरुखी भी कम नहीं। हालांकि असल जरूरत अग्नि सुरक्षा को बतौर 'संस्कार' अपनाने की है।

एक भयावह त्रासदी की बाकी है कसक

इकबाल सिंह शांत

डबवाली अग्नि त्रासदी के उस काले दिन से लेकर हाल में गोवा में आग की दुर्घटना तक, हर बार जब किसी बड़े हादसे की खबर सामने आती है, भीतर के जख्म पुनः ताज़ा हो उठते हैं। वह 23 दिसंबर 1995 का दिन आज भी स्मृतियों में सुलगता है। जब राजीव मैरिज पैलेस में आयोजित डीएवी स्कूल के भव्य पारितोषिक वितरण समारोह में शॉट सर्किट से विश्व की भयावह अग्नि त्रासदी घटित हुई। चंद मिनटों में 442 लोग काल का ग्रास बन गये।

यह सिर्फ आंकड़ा नहीं था, बल्कि डबवाली शहर की लगभग एक प्रतिशत आबादी की बर्बादी थी। डबवाली का लगभग हर तीसरा परिवार प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष तौर पर हादसे का पीड़ित हुआ। सैकड़ों परिवार बर्बादी की कगार पर आ गये, दर्जनों घरों को ताले लग गये। यह देश-दुनिया के लिए सबक था, पर सीख किसी ने नहीं ली। तीन दशक बाद भी हालात जस के तस हैं। गोवा अग्निकांड में 23 मौतों की खबर आई, तो लगा जैसे समय ठहर गया हो। वही अफरा-तफरी, वैसा ही आग का तांडव, वैसी ही बेबसी। हर बार वही सवाल उठता है कि हम कब तक लापरवाही की कीमत जानों से चुकाते रहेंगे? डबवाली अग्निकांड के मृतकों में 258 बच्चे, 140 महिलाएं व 44 पुरुष थे, हादसे में कुल 150 लोग घायल हुए व 31 दिव्यांग हो गये।

मैं (लेखक) इकबाल सिंह शांत, उस त्रासदी का जीवित दिव्यांग पीड़ित हूं। हादसे की आग में फंसे अपने पिता स्वतंत्रता सेनानी सरदार गुरदेव सिंह शांत को बचाने के लिए अंदर दोबारा दाखिल हुआ व उसी कोशिश में मेरे दोनों हाथ व पीठ गंभीर रूप से झुलस गई। दिव्यांग हो गया, लेकिन तसल्ली है कि पिता को बाहर निकाल लाया था। अफ़सोस, 25 दिसंबर 1995 को पीजीआई चंडीगढ़ में उनका देहांत हो गया।

त्रासदी ने डबवाली से बहुत कुछ छीन लिया।

अग्नि सुरक्षा नियमों का पालन जरूरी

डबवाली अग्नि त्रासदी के बाद मेरिज पैलेसों में आयोजनों की सुरक्षा बढ़ाने, अग्नि सुरक्षा ऑडिट अनिवार्य व आपातकालीन सेवाओं को मजबूत करने के कई नियम-कायदे तो बने। लेकिन गोवा जैसी घटनाएं बताती हैं कि कागज़ पर बने नियम ज़मीन पर उतरने से पहले ही दम तोड़ देते हैं। डबवाली अग्निकांड की सीबीआई रिपोर्ट में आग का कारण राजीव मैरिज पैलेस में कार्यक्रम हेतु लगाए दो बिजली कनेक्शन बताए गए थे। बिजली ट्रिपिंग के दौरान जेनरेटर का चेंज-ओवर नहीं बदला गया। पंडाल में लगी पॉलीथिन शीट, बांस व रेशमी कपड़े से आग तेजी से फैली। बिजली निगम, नगर पालिका, पैलेस मालिकों व दो निजी बिजली कर्मचारियों सहित 14 लोगों को दोषी माना गया। पुलिस ने कुछ पर 304-बी के तहत केस दर्ज किया। सीबीआई कोर्ट ने दो-दो साल सजा दी, पर बाद में उन्हें हाईकोर्ट ने बरी कर दिया। जांच में सामने आया कि कार्यक्रम स्थल का नक्शा तक पास नहीं था।

लापरवाही के चलते हादसों का सिलसिला

मामला सिर्फ डबवाली और गोवा तक सीमित नहीं है, तथ्य खंगालें तो दर्जनों मामले रिकार्ड पर होंगे। देश में 1995 के बाद कई बड़े अग्नि हादसे हुए, जिन्होंने सुरक्षा व्यवस्थाओं पर गंभीर सवाल खड़े किए। 13 जून 1997 को दिल्ली के उपहार सिनेमा में आग दुर्घटना में 59 लोगों की जान गई। सोलह जुलाई, 2004 को तमिलनाडु के कुंभकोणम स्कूल हादसे में 94 बच्चों की दर्दनाक मौत हुई। फरवरी 2010 में कोलकाता के स्टीफन कोर्ट में अग्नि त्रासदी ने 43 लोगों की जिंदगी छीन ली। दिसंबर 2017 में कमला मिल्स (मुंबई) की आग में 14 मौतें हुई। जनवरी 2018 में बवाना औद्योगिक क्षेत्र (दिल्ली) में आग से 17 मजदूरों की जान गई। मई 2019 में सूरत के तक्षशिला कोचिंग सेंटर में आग से 22 छात्रों की मौत हुई। साल 2019 में दिल्ली की अनाज मंडी में आग ने 44 लोगों को लील लिया। साल 2022 में उत्तर प्रदेश के भदोही क्षेत्र में दुर्गा पूजा पंडाल में भीषण आग से पांच मौतें व 68 लोग झुलस गये। अब दिवाली-2025 को अग्नि घटनाओं में दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल व बिहार में 482 से अधिक लोग झुलसे। गुरुग्राम में 29 व गौतम बुद्ध नगर में 26 आग की घटनाएं दर्ज हुई, नोएडा में एक युवक की मौत भी हुई। रौनक में डूबे हम पुराने सबक को भूल जाते हैं और गलतियां दोहराते हैं। इन हादसों के लिए सिर्फ प्रशासन ही जिम्मेवार नहीं है, हम सब भी हैं, जो व्यवस्था व नियमों को धता बताते हुए अग्नि हादसों को बुलावा देते हैं।

व्यवस्था व समाज में जगे चेतना

प्रत्येक अग्नि हादसे में बच जाते हैं, झुलसे हुए चेहरे, जले हुए हाथ-पैरों वाले पीड़ित तो कहीं बेबस मां-बाप या अनाथ बच्चे। मदद के नाम पर बस कुछ लाख का मुआवजा। इंसाफ के लिए अदालतों में तारीख-पर-तारीख। सरकारें तब जागती हैं, जब जिंदगियां राख हो चुकी होती हैं। हर हादसे में उमेश मित्तल, गगनदीप बुट्टर, गीता, सीमा बलाना, सुमन कौशल, विनोद बांसल, रमेश सचदेवा जैसे अनगिनत पीड़ित जीवन भर आग से मिले दुखों को ढोते हैं। उस अग्नि त्रासदी के बाद भी मेरी हिम्मत व सरोकारों में कमी नहीं आयी। पत्रकारिता में सक्रिय हूं। लेकिन विडंबना है कि कभी व्यवस्था व समाज में वांछित चेतना नहीं दिखी। दरअसल जरूरत हमदर्दी की नहीं, बल्कि सुरक्षा को बतौर 'संस्कार' अपनाने की है। स्कूल-कॉलेजों से लेकर गांव-कस्बों तक हर व्यक्ति को अग्नि सुरक्षा की पाठ्यक्रम में शिक्षा अनिवार्य हो। इमारतों, सार्वजनिक स्थानों, विवाह समारोहों, धार्मिक आयोजनों व दुकानों व बाजारों में सुरक्षा मानकों से कोई समझौता न किया जाये। अग्निशमन विभाग आधुनिक उपकरणों व पर्याप्त अमले से लैस हो। वहीं हादसों के जिम्मेदारों पर फ़ास्ट ट्रैक कार्रवाई हो।

इस बार 23 दिसंबर 2025 को भी हम सभी अग्नि पीड़ित डबवाली अग्निकांड की 30वीं बरसी मनाएंगे। इस बार गोवा अग्निकांड के 23 मृतकों का दुख भी साथ होगा। बता दें कि 23 दिसंबर को राष्ट्रीय अग्नि सुरक्षा दिवस घोषित करने की मांग अभी अधूरी है।

जिंदा रही ढेर तले दबी दो वर्षीय दिव्या

डबवाली स्थित नवनिर्मित राजीव मैरिज पैलेस में 23 दिसंबर 1995 को डीएवी स्कूल का पांचवां वार्षिकोत्सव था। पैलेस का नामकरण चंद्रभान धमीजा के पुत्र राजीव के नाम पर रखा गया। राजीव की अग्नि त्रासदी में मौत हो गयी थी। धमीजा परिवार से 6 लोग हादसे का शिकार हुए थे। हादसे में अधिक मौतों का कारण पैलेस की ऊंची दीवारें रहीं। वहीं लोहे के शेड के नीचे कपड़े व बांस आदि से बना पंडाल लगा था, नीचे प्लास्टिक बिछी थी। तीन दर्जन झूमर लगाये गये थे व इत्र भी छिड़का था। आने-जाने के लिए एक ही मुख्य द्वार था और भीड़ बढ़ने पर उसमें ताला लगा दिया गया था। त्रासदी के मृतकों में एक नवविवाहित जोड़ा राधेश्याम व वन्दना भी थे, जिन्होंने 70 दिन पहले इसी पैलेस में फेरे लिए थे। हादसे में सबसे उम्रदराज मृतक रेशमा देवी व दो माह की बच्ची आरजू थी। जबकि लाशों के ढेर तले दबी दिव्या नामक दो वर्षीय खुशकिस्मत जिंदा निकाली गई थी।

आग दो बार लगी थी

डबवाली की इस भयावह त्रासदी में एक बार नहीं बल्कि दो बार आग लगी थी। फर्क सिर्फ इतना था कि पहली आग एक माचिस की तीली तक सीमित रह गई थी। दरअसल, जब स्कूल के सालाना समारोह में ज्योति प्रज्वलित करने की रस्म चल रही थी तो मोमबत्ती जलाने के बाद लापरवाही से स्टेज से जलती हुई माचिस की तीली नीचे फेंक दी गई। पहली कतार में बैठे लोगों के ठीक सामने आकर गिरी। तब वहां मौजूद अग्नि पीड़ित रमेश सचदेवा 'आचार्य' बताते हैं कि जलती हुई उस तीली को लोगों ने तुरंत बुझा दिया। तब तो हादसा टल गया। उस समय किसी ने भी नहीं सोचा था कि कुछ देर बाद उसी स्थान पर आग का ऐसा भयानक तांडव देखने को मिलेगा।

हर्जाने के तौर पर मांगी रेलगाड़ी की सुविधा

अग्नि त्रासदी का शिकार हुई शहर की विभूतियों की कमी चंद दिनों के बाद खलने लगी थी। त्रासदी के बाद शोक सभा में 29 दिसंबर को तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव, केन्द्रीय मंत्री माधव राव सिंधिया व केन्द्रीय मंत्री कुमारी सैलजा डबवाली पहुंचे थे। उनके समक्ष शहर के कुछ संभ्रांत लोगों ने जम्मू-तवी रेलगाड़ी की मांग रख दी। सरकार ने शोक में डूबे शहर की भावना के मद्देनजर मांग को स्वीकार भी कर लिया। लेकिन इस रेलगाड़ी का न तो डबवाली से कोई सीधा सरोकार था और न अग्नि पीड़ितों की दिक्कतों से कोई सबंध था। बेहतर होता कि अग्नि पीड़ितों की जिन्दगी को मुख्यधारा में लाने के लिए मांगें रखी जातीं । बता दें कि तब घटना की ताज़ा स्थिति के चलते पीएम की सभा स्थल पर अग्नि पीड़ितों के परिजनों की उपस्थिति नगण्य थी।

पैनोरमा का विकास व सुनवाई जरूरी

हादसे के तीन दशक तक भले ही त्रासदी स्थल पर अग्निकांड स्मारक बन गया है, यहां विकास के नाम पर आज लाखों रुपये खर्च किये जा रहे हैं। लेकिन शायद ही अग्नि हादसे से जुड़ी समस्याओं व अग्नि पीड़ितों की कभी ढंग से सुनवाई हुई हो। दरअसल, अग्निकांड को एक 'अंतरराष्ट्रीय' सबक के रूप में एक मल्टीस्टोरी 'पैनोरमा' के तौर पर विकसित किया जाना चाहिए था, ताकि देश-विदेश से लोग इस जगह पर आकर अग्नि हादसों से बचने के लिए चौकसी व उपायों की जानकारी हासिल करते। जिसमें रेशमी कपड़ों से अग्नि हादसे , घरेलू गैस से आग, कृषि उपज में आग, बिजली उपकरणों से आग, व्हीकल में आगजनी के कारणों व बचाव से जुड़े तथ्य, प्रोजेक्ट व आधुनिक उपकरण प्रदर्शित किए जा सकते थे। जिसका अवलोकन कर दर्शक सभी तरह की अग्नि हादसों के प्रति जागरूक होते। ऐसी एक मांग अग्नि पीड़ितों द्वारा सरकार को भेजी गयी, जिसे 'इग्नोर' कर दिया गया।

त्रासदी ने छीनी समर्थ हस्तियां

अग्नि त्रासदी ने डबवाली का बचपन यानी भविष्य, जवानी व परिवार तो छीने ही, शहर की तत्कालीन समर्थ व अग्रणी हस्तियां भी छीन लीं। इस आग ने शहर के लोकप्रिय नेता व स्वतंत्रता सेनानी सरदार गुरदेव सिंह शांत को लील लिया, जिनका पल-पल शहर के विकास व बेहतरी को समर्पित था। वरिष्ठ पत्रकार अशोक वढेरा व समाजसेवी संजय ग्रोवर भी शहर की उभरती हस्तियों में शुमार थे। इन दोनों को अग्नि त्रासदी में बच्चों को बचाने के चलते भारत सरकार द्वारा मरणोपरांत राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। मृतकों में डॉक्टर रवि भटेजा, व्यापारी ओमप्रकाश मेहता, पांच प्रिंसिपल क्रमवार प्रीति कामरा (प्रिंसीपल डीएवी स्कूल), निर्मल शर्मा (प्रिंसिपल सतलुज स्कूल), संतोष सचदेवा, सतपाल राजपूत व स्वतंत्र सिंह भाटी थे। जबकि डीएवी स्कूल की 12 अध्यापिकाएं भी मौत का शिकार बनीं। जिनमें शहीद अशोक वढेरा की बहन बबिता वढेरा भी शामिल थीं।

नरेश कौशल द्वारा बतौर रिपोर्टर की गयी हादसे की कवरेज

दैनिक ट्रिब्यून

डबवाली अग्निकांड के 66 घायलों ने दम तोड़ा

285 मृतकों की पहचान, अस्पताल में 69 शव लावारिस

न्याय दिलाने को अंजू अरोड़ा ने किया संघर्ष

डबवाली अग्निकांड के पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए लड़ी गई कानूनी लड़ाई में डबवाली की बेटी एडवोकेट अंजू अरोड़ा ने एक मिसाल कायम की। अंजू अरोड़ा उस समय पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट, चंडीगढ़ में प्रैक्टिस कर रहीं थी, उन्होंने त्रासदी में उनके चार वर्षीय भतीजे रजत की मौत हो गयी, जबकि दूसरा मासूम भतीजा बॉबी गंभीर रूप से झुलस गया। निजी पीड़ा के बावजूद उन्होंने पीड़ितों के अधिकारों के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाया। अगस्त 1996 में हाईकोर्ट में रिट दायर कर पीड़ितों के लिए मुफ्त इलाज, पुनर्वास, शिक्षा व मुआवजे की मांग उठाई गई। स्थानीय कोर्ट से लेकर हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट तक चली कानूनी लड़ाई के दौरान हरियाणा में पांच सरकारें बदलीं, लेकिन अदालतों के माध्यम से ही पीड़ितों को न्याय मिल सका। करीब 22 वर्ष लंबी कानूनी प्रक्रिया के बाद 2017 में पीड़ितों के पक्ष में 34.14 करोड़ रुपये ब्याज सहित मुआवजे से जुड़े आदेश पारित हुए।

प्रशासनिक दर्द, सवाल भी

समारोह के मुख्यातिथि सिरसा के तत्कालीन उपायुक्त एम.पी. बिदलान थे जिन्हें अग्नि त्रासदी के दौरान बचाने को उनके सुरक्षा कर्मियों ने एक मात्र छोटे गेट से (इमरजेंसी) बाहर निकाला। उसके एकदम बाद उनकी अनुपस्थिति पर सवाल खड़े हुए। वहीं दूसरी ओर, त्रासदी में प्रशासनिक तन्त्र का दर्द भी जुड़ा हुआ है। इस अग्नि त्रासदी में डबवाली के तत्कालीन एसडीएम सोमनाथ कंबोज व उनकी पत्नी कमलेश कंबोज का भी देहांत हो गया था। वहीं, तब डबवाली में तैनात डीएसपी अनिल राव बच्चों को बचाते हुए त्रासदी में घायल हो गये थे, व उनकी मासूम पुत्री सुरभि का देहांत हो गया था। अब एडीजीपी के पद से सेवामुक्त हो चुके अनिल राव डबवाली अग्निकांड स्मारक पर अक्सर आते रहे हैं। त्रासदी में पुलिस के सिपाही गुरदास व सिपाही भागीरथ ने भी अनेक मासूमों को मौत के मुंह से निकाला, जब वे स्वयं बाहर निकलने लगे तो आग की लपटों ने उन्हें घेर लिया और दोनों शहीद हो गए।

राजकीय स्मारक की मांग भी अधूरी

23 दिसंबर 1995 को घटित अग्नि त्रासदी को 30 वर्ष पूरे हो गए, लेकिन पीड़ित परिवारों की राजकीय स्मारक की मांग आज भी अधूरी है। हर बरसी पर स्मारक निर्माण की मांग उठी, आश्वासन मिले, पर जमीन पर कुछ नहीं उतरा। अग्निकांड स्मारक की जमीन करीब दो कनाल है, जो राजस्व रिकॉर्ड में राज्य सरकार के नाम दर्ज है। सरकार के निर्देशों के तहत इस स्थल को लेकर पुरातत्व विभाग से एनओसी लेना आवश्यक है। जनहित की यह मांग अग्नि हादसों के प्रति जन जागरूकता से जुड़ी है। नगरपरिषद में तत्कालीन पार्षद व अग्नि पीड़ित विनोद बांसल की मांग पर स्मारक को राजकीय स्मारक घोषित करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ था जिसे सरकार को भेजा गया था।

जब दो अग्नि पीड़ितों ने रचाया ब्याह

डबवाली अग्नि त्रासदी में झुलसने के चलते दिव्यांग हुए नवगीत सेठी व प्रतिमा मुरेजा ने शादी के बंधन में बंधकर जिंदगी के प्रति एक जज्बा दर्शाया। मौजूदा समय में नवगीत व प्रतिमा सरकारी क्षेत्र में अच्छे पदों पर सेवारत हैं। यह दंपति संस्था 'द इवनिंग क्लासेज' के जरिये जरूरतमन्द बच्चों को निशुल्क शिक्षा दे रहे हैं। इसके अतिरिक्त अग्नि पीड़ित प्रभजोत विश्वास बांसल, भाविक बांसल, साहिल सेठी, गुंजन कामरा ने भी हादसे से उबरकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर ऊंचे मुकाम छूए।

इस खानदान ने भी खोये थे चार सदस्य

डबवाली अग्नि त्रासदी में हरियाणा के राजनीतिक चौटाला खानदान की भी पारिवारिक क्षति हुई थी। वरिष्ठ इनेलो नेता संदीप चौधरी की माता रामेश्वरी देवी, धर्मपत्नी रमा चौधरी, सात वर्षीय पुत्री आकाशदीप व करीब दो वर्षीय कर्णवीर चौधरी आग के शिकार हो गये थे।

विनोद बांसल की अहम भूमिका

अग्नि पीड़ितों के इंसाफ दिलाने के लिए स्वयं अग्नि पीड़ित विनोद बांसल ने कमान संभाली हुई है। तीन दशक लंबी कानूनी व प्रशासनिक प्रक्रिया व प्रयासों में पीड़ितों को मुफ्त इलाज, पुनर्वास, शिक्षा व मुआवजे की प्राप्ति में बड़ी भूमिका निभाई। वकील न होने के बावजूद एक वकील की भांति सुप्रीम कोर्ट तक सैकड़ों परिवारों के लिए इंसाफ जमीन तैयार की। बता दें कि विनोद बांसल ने भी हादसे में धर्मपत्नी रेनू, पुत्री नैंसी व पुत्र हिमांशु गंवाए थे।

लेखक डबवाली अग्निकांड के पीड़ित हैं।

इंडियन एक्सप्रेस समूह
जनसत्ता सरोकार
सम-सामयिक
एक
जनसत्ता | 21 दिसंबर, 2025

मन रे जा जा जा

दो दशक पहले शुरू किए गए महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) को बदलने के लिए लोकसभा और राज्यसभा में पेश किया गया विकसित भारत-रोजगार और आजीविका मिशन (ग्रामीण) गारंटी या वीबी-जी राम जी विधेयक को संसद ने पारित कर दिया। इस विधेयक का विपक्ष ने पुरजोर विरोध किया। उसने दलील दी कि यह मजदूर, किसान और गरीब विरोधी है और इसका नाम बदलकर महात्मा गांधी का अपमान किया गया है। वहीं, सरकार ने कहा कि नया विधेयक महात्मा गांधी के सपनों के अनुरूप है और इसमें रोजगार के दिनों की संख्या बढ़ाकर 125 कर दी गई है। पुरानी योजना भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई थी और नई योजना विकसित भारत के मुताबिक है। इस योजना से ग्रामीण भारत तेजी से विकास करेगा। वीबी जी राम जी विधेयक की चिंताजनक एक बात राज्यों से जुड़ी है।उन्हें इस योजना का 40 फीसद खर्च वहन करना होगा। मुद्दे पर सरोकार की पड़ताल।

सिर्फ नाम नहीं काम और दाम के ढांचे में भी बदलाव
अब राज्यों पर आर्थिक बोझ बढ़ने का अंदेशा

जनसत्ता सरोकार

नए विधेयक के जरिए सिर्फ मनरेगा का नाम ही नहीं बदला गया है, बल्कि इसके मूल स्वरूप को भी बदल दिया गया है। जानकार मानते हैं कि केंद्र में भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार ने नई रोजगार योजना के जरिए केंद्रीकरण का मजबूत बना दिया गया है जबकि 20 साल पुरानी योजना लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को महत्त्व देती थी। साथ ही उसमें गांधी के नाम का उपयोग उनके ग्राम स्वराज की अवधारणा से जुड़ाव को दर्शाता था। नया पारित विधेयक केंद्र सरकार को वस्तुतः एकमात्र निर्णयकर्ता बनाकर, ग्राम स्वराज और विकेंद्रीकरण की दिशा में कोई सकारात्मक योगदान नहीं देगा।

सरकार के समर्थकों का कहना है कि सालाना काम के दिनों की संख्या बढ़ाकर 125 करना ग्रामीण भारत के लोगों के लिए एक बड़ा लाभ है। सरकार की दलील है कि मनरेगा के तहत परिवारों को दिए गए रोजगार के आंकड़ों से साफ है कि कोविड-19 महामारी के वर्ष 2020-21 में केवल 9.5 फीसद (लगभग 72 लाख) परिवारों ने वास्तव में 100 दिन काम किया। दो वर्षों में, केवल सात फीसद परिवार ही पूरा कोटा प्राप्त कर सके।

वीबी-जी राम जी को केंद्र प्रायोजित योजना घोषित करके केंद्र सरकार ने मनरेगा जैसा प्राप्त विशेष दर्जा समाप्त कर दिया है। इसके तहत सरकार अकुशल शारीरिक श्रम के लिए मजदूरी भुगतान की पूरी लागत वहन करती थी। प्रस्तावित योजना में केंद्र और राज्यों के बीच निधि बंटवारे का अनुपात आम तौर पर 60:40 होगा। बंद हो रही योजना का एक लाभ यह था कि ग्रामीण रोजगार में पारिश्रमिक में तेजी से वृद्धि हुई थी। नई योजना में बड़ा आर्थिक बोझ राज्यों को उठाना पड़ेगा। कई राज्यों की वित्तीय स्थिति मजबूत नहीं है और जीएसटी के पुनर्गठन ने उनकी आमदनी को और घटा दिया है।

इसके अलावा, जब प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण योजनाओं को तेजी से राजनीतिक बदलाव के रूप में देखा जा रहा है, तो यह साफ है कि बहुत कम राज्य इस नई योजना में भाग लेने के इच्छुक होंगे। इससे भी महत्त्वपूर्ण यह है कि मौजूदा कानून का मूल तत्त्व- जमीनी स्तर की मांग आधारित योजना को ही हटा दिया गया है। प्रस्तावित नया विधेयक आपूर्ति आधारित है, जिसमें केंद्र सरकार द्वारा तय की गई सीमा के भीतर आबंटन किया जाएगा। साथ ही, राज्यों को किसी भी अतिरिक्त व्यय को वहन करना होगा। तमिलनाडु और केरल ने राज्यों के हितों को नुकसान पहुंचाने का हवाला देते हुए विधेयक का विरोध किया है। नए विधेयक का एक प्रावधान, जिसका उद्देश्य बुआई/कटाई के दौरान कृषि कार्यों में बाधा न आने देना है, राज्यों से परामर्श के बाद मनरेगा में स्पष्ट रूप से शामिल किया जा सकता था।

नए विधेयक में ग्रामीण परिवारों के लिए प्रति वित्तीय वर्ष गारंटीकृत रोजगार को 100 दिनों से बढ़ाकर 125 दिन करने का प्रस्ताव है। लेकिन यही एकमात्र अंतर नहीं है। यह अंतर प्रस्तावित विधेयक में महात्मा गांधी के नाम के न होने तक ही सीमित नहीं है, जिसकी राहुल गांधी और प्रियंका गांधी जैसे कांग्रेस नेताओं ने आलोचना की है। सरकार का कहना है कि नया विधेयक विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण के अनुरूप है, वहीं विपक्ष का तर्क है कि नया विधेयक मनरेगा के अधिकार-आधारित मूल सिद्धांतों को कमजोर करता है। यह निर्णय लेने की प्रक्रिया को केंद्रीकृत करता है और श्रमिकों के अधिकारों को कमजोर करता है। विधेयक पारित होने के बाद भारत के ग्रामीण रोजगार ढांचे में क्या बदलाव आएंगे, इसे आसानी से और स्पष्ट रूप से समझने के लिए यहां प्रमुख अंतर बताए गए हैं।

1. वीबी-जी राम जी से गारंटी कार्यदिवस बढ़ेंगे

वीबी-जी राम जी विधेयक में सबसे प्रमुख बिंदुओं में से एक ग्रामीण परिवारों के लिए वित्तीय वर्ष में गारंटी रोजगार को 100 दिन से बढ़ाकर 125 दिन करना है। कागजों पर, यह लाभ का विस्तार और इस बात की स्वीकृति प्रतीत होती है कि मनरेगा के तहत 100 दिन की सीमा अक्सर न्यूनतम गारंटी के बजाय एक कठोर सीमा के रूप में कार्य करती थी।

पहली बार, रोजगार विधेयक में एक प्रावधान शामिल किया गया है। इसके तहत बुआई और कटाई के व्यस्त समय के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में 60 दिनों तक रोजगार को स्थगित किया जा सकता है। इसका घोषित उद्देश्य कृषि श्रमिकों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करना है।

सत्ता पक्ष के विधेयक समर्थकों का तर्क है कि यह सुधार लंबे समय से चली आ रही कमियों को दूर करता है, विशेष रूप से कमजोर समूहों के लिए, और वन क्षेत्रों में या सूखे के दौरान अनुसूचित जनजाति परिवारों के लिए अतिरिक्त दिनों जैसी पिछली छूटों पर आधारित है। सरकार का यह भी दावा है कि संशोधित संरचना से काम की पूवार्नुमान क्षमता और योजना में सुधार होगा। हालांकि, आलोचकों का कहना है कि मनरेगा की ताकत केवल दिनों की संख्या में ही नहीं, बल्कि काम मांगने के अधिकार में निहित थी। उनका तर्क है कि नए ढांचे के तहत, गारंटीकृत दिन गारंटीकृत पहुंच में तब्दील नहीं हो सकते, क्योंकि रोजगार श्रमिकों की मांग के बजाय पूर्व अनुमोदित योजनाओं से जुड़ा हुआ है। विपक्षी नेताओं ने चेताया है कि कार्यदिवसों की संख्या के बारे में अधिक संख्यात्मक वादा करने से वास्तविक कार्यदिवसों की संख्या कम हो सकती है।

2. पूर्ण केंद्रीय वित्त पोषण से बदलाव का प्रतीक है

वीबी-जी राम जी योजना के अंतर्गत एक महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन केंद्र और राज्यों के बीच साझा वित्त पोषण की शुरुआत है। मनरेगा में, मजदूरी का घटक पूरी तरह से केंद्र से वित्तपोषित था। इससे एकरूपता सुनिश्चित हुई और राज्यों पर वित्तीय बोझ कम हुआ।

नया विधेयक मनरेगा माडल से अलग है। इसमें राज्यों को निधि का अधिक हिस्सा देना अनिवार्य है। इसमें केंद्र और राज्य के बीच 60:40 के अनुपात में निधि विभाजन का प्रस्ताव है, जो केंद्र-प्रधान 90:10 (पूर्वोत्तर, हिमालयी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए) और 75:25 माडल से अलग है। सरकार का तर्क है कि इससे सहकारी संघवाद को बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय विकास प्राथमिकताओं के साथ बेहतर तालमेल स्थापित होगा। सरकार का कहना है कि राज्यों को योजना के परिणामों पर अधिक स्वामित्व प्राप्त होगा।

विपक्षी दलों ने इसका विरोध करते हुए कहा कि इससे वित्तीय सहायता के बिना ही सारी जिम्मेदारी राज्यों पर आ जाएगी। उन्होंने चेतावनी दी कि गरीब राज्यों को निधि की आवश्यकताओं को पूरा करने में कठिनाई हो सकती है। इससे असमान कार्यान्वयन और वेतन भुगतान में देरी हो सकती है। आलोचकों ने यह भी कहा कि इससे ग्रामीण संकट और बढ़ेगा व केंद्र को वितरण पर अधिक नियंत्रण मिलेगा, जबकि उसकी अपनी देनदारियां सीमित हो जाएंगी। न केवल विपक्षी दलों ने, बल्कि भाजपा की प्रमुख सहयोगी और आंध्र प्रदेश में सत्ताधारी तेलगु देशम पार्टी के सदस्यों ने भी प्रस्तावित विधेयक के बारे में चिंता व्यक्त की।

3. कृषि माह के दौरान विराम का प्रस्ताव

पहली बार, रोजगार विधेयक में एक प्रावधान शामिल किया गया है। इसके तहत बुआई और कटाई के व्यस्त समय में ग्रामीण क्षेत्रों में 60 दिनों तक रोजगार को स्थगित किया जा सकता है। इसका घोषित उद्देश्य कृषि श्रमिकों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करना और महत्त्वपूर्ण कृषि अवधियों के दौरान श्रम की कमी को लेकर किसानों की शिकायतों को हल करना है।

सरकार का तर्क है कि इससे ग्रामीण रोजगार और कृषि उत्पादकता में संतुलन बना रहेगा। पहले भी इसी तरह की चिंताएं उठाई गई हैं, और कुछ नीति निमार्ताओं ने व्यस्त समय के दौरान मनरेगा के काम पर प्रतिबंध लगाने की मांग की थी। आलोचकों का तर्क है कि इस तरह का व्यापक प्रतिबंध लचीलेपन को कमजोर करेगा और क्षेत्रीय विविधताओं की अनदेखी करेगा। जानकारों के अनुसार मनरेगा की मांग ऐतिहासिक रूप से कृषि चक्रों के आधार पर घटती-बढ़ती रही है, और श्रमिक तब खेती का काम चुनते हैं, जब मजदूरी अधिक होती है। उनका कहना है कि अनिवार्य रोक से श्रमिकों के विकल्प और सौदेबाजी की शक्ति कम हो जाती है, न कि श्रम बाजार की वास्तविक समस्याओं का समाधान होता है।

4. नई योजना आपूर्ति, जबकि मनरेगा मांग आधारित

मनरेगा को वैश्विक स्तर पर इसकी मांग आधारित और अधिकार आधारित संरचना के लिए मान्यता प्राप्त थी। इससे ग्रामीण परिवारों को आवश्यकता पड़ने पर काम ढूंढने और रोजगार न मिलने पर मुआवजा पाने की सुविधा मिलती थी। वीबी-जी राम जी विधेयक इस सिद्धांत से एक विचलन का प्रतीक है। नई प्रणाली के तहत, पूर्व अनुमोदित ग्राम पंचायत योजनाओं के माध्यम से रोजगार सृजित किया जाएगा। इन योजनाओं को प्रखंड, जिला और राज्य स्तर पर समेकित किया जाता है और राष्ट्रीय अवसंरचना ढांचे में एकीकृत किया जाता है। सरकार ने कहा कि इससे कार्यकुशलता, परिसंपत्ति सृजन और राष्ट्रीय अवसंरचना लक्ष्यों के साथ तालमेल में सुधार होगा।

आलोचकों का तर्क है कि इससे ग्रामीण रोजगार का स्वरूप पूरी तरह बदल जाएगा और यह नौकरशाही नियोजन पर निर्भर आपूर्ति आधारित कार्यक्रम बन जाता है। उन्होंने चेतावनी दी कि नई योजना कार्य के कानूनी अधिकार को कमजोर करता है और निर्णय लेने की प्रक्रिया को केंद्रीकृत करता है। इससे स्थानीय स्वायत्तता और श्रमिकों की सक्रियता कम हो जाती है।

देश में, काम करने का अधिकार मुख्य रूप से भारतीय संविधान के अनुच्छेद 41 के तहत राज्य नीति के एक निर्देशक सिद्धांत के रूप में व्यक्त किया गया है, जो राज्य को नागरिकों के लिए रोजगार सुनिश्चित करने का मार्गदर्शन करता है। साथ ही, इसे मनरेगा जैसे कानूनों के माध्यम से व्यावहारिक रूप दिया गया है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरी आधारित रोजगार की गारंटी देता है। इसके अलावा, न्यायपालिका ने अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के अधिकार की व्याख्या में आजीविका के अधिकार को शामिल किया है। इससे संवैधानिक व्याख्या के माध्यम से काम करने के अधिकार को सुदृढ़ किया गया है।

5. दायरे को सीमित करना

नई योजना अनुमत कार्यों के दायरे को जल सुरक्षा, मुख्य ग्रामीण अवसंरचना, आजीविका से संबंधित परिसंपत्तियों और जलवायु लचीलेपन सहित चार क्षेत्रों तक सीमित करती है। हालांकि इसका उद्देश्य दीर्घकालिक विकास को प्राथमिकता देना है, लेकिन उसके प्रावधान पंचायतों को स्थानीय जरूरतों के प्रति प्रतिक्रिया देने के लिए पहले प्राप्त लचीलेपन को कम करते हैं, जो इन चार श्रेणियों से बाहर आते हैं। एक और विवाद का मुद्दा योजना का नाम बदलना है, जिसके तहत महात्मा गांधी का नाम हटा दिया गया है। सरकार ने जोर देकर कहा कि विधेयक गांधीवादी सिद्धांतों को समाहित करता है और समावेशी विकास का लक्ष्य रखता है। हालांकि, विपक्ष का कहना है कि यह बदलाव एक वैचारिक बदलाव है। यह उस सर्वसम्मत सहमति से अलग है जो कभी मनरेगा का आधार थी।

दुनिया के लिए प्रेरणा बन गया था मनरेगा

बीस साल पहले, भारत ने राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम शुरू करके एक तरह से दुनिया को राह दिखाई थी। यह विचार पूरी तरह से नया नहीं था। महाराष्ट्र ने साल 1970 के दशक की शुरुआत से ही अपनी रोजगार गारंटी योजना के साथ रास्ता दिखाया था। लेकिन मनरेगा ने इस विचार को बहुत आगे बढ़ाया और दुनिया के लिए प्रेरणा बन गया। यह पार्टी लाइन से परे एक राष्ट्रीय पहल थी, जिसे संसद में सर्वसम्मति से समर्थन मिला था।

छह साल बाद, 2011-12 में, महत्त्वपूर्ण प्रमाण सामने आए कि कार्यक्रम काफी सफल रहा था। उस समय, मनरेगा ने आधिकारिक तौर पर पांच करोड़ ग्रामीण परिवारों के लिए प्रति वर्ष दो करोड़ से अधिक व्यक्ति दिवस का रोजगार सृजित किया था। लगभग आधी श्रमिक महिलाएं थीं, और 40 फीसद से अधिक अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति से संबंधित थे। इन आधिकारिक आंकड़ों की पुष्टि स्वतंत्र घरेलू सर्वेक्षणों द्वारा बड़े पैमाने पर की गई, जिनमें राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण का 68वां दौर और विशेष रूप से दूसरा भारतीय मानव विकास सर्वेक्षण शामिल है। ग्रामीण मजदूरी अभूतपूर्व दर से बढ़ रही थी। कुछ अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि मनरेगा ने उत्पादक कार्यों को विस्थापित करने के बजाय, आर्थिक दक्षता और कुल उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव डाला था।

आंकड़ों में मनरेगा के दस साल (2015-16 से 2025-26); 100 दिन काम पाने वाले बहुत कम, औसत पारिश्रमिक वृद्धि 70 फीसद

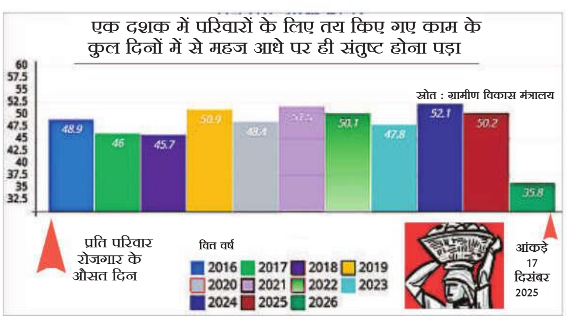

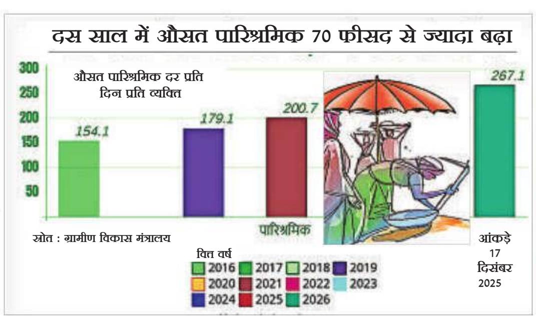

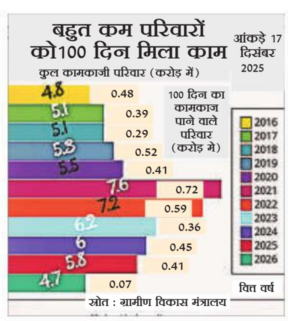

इंडियन एक्सप्रेस समूह
जनसत्ता सरोकार | विमर्श | दो
जनसत्ता | 21 दिसंबर, 2025

गांधी की दूसरी हत्या

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

> **नया विधेयक और योजना, मनरेगा की सभी विशेषताओं को नष्ट कर देते हैं। यह योजना अब राज्य-विशिष्ट होगी तथा लागत केंद्र और राज्य द्वारा क्रमश: 60:40 के अनुपात में साझा की जाएगी। केंद्र सरकार प्रत्येक राज्य को निधि का 'मानक आबंटन' करेगी, आबंटन से अधिक व्यय राज्य द्वारा वहन किया जाएगा और योजना के कार्यान्वयन वाले क्षेत्रों को केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचित किया जाएगा, जिससे यह आपूर्ति-आधारित योजना बन जाएगी। राज्य 125 दिनों के रोजगार की 'गारंटी' देगा- जो एक भ्रम है।**

महात्मा गांधी की हत्या 30 जनवरी, 1948 को हुई थी। आरएसएस ने इस बात से पुरजोर इनकार किया कि उसकी विचारधारा और प्रचार ने महात्मा गांधी के हत्यारे को प्रेरित किया था। आरएसएस का दावा था कि सरदार वल्लभ भाई पटेल की ओर से उनके संगठन पर लगाया गया प्रतिबंध अन्यायपूर्ण था। चलिए, एक पल के लिए आरएसएस की बात मान लेते हैं और उससे एवं उसकी संतति पार्टी भाजपा से सवाल पूछते हैं : *आपने महात्मा गांधी के नाम पर शुरू किए गए एकमात्र सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रम से उनका नाम क्यों मिटा दिया?*

महात्मा गांधी के नाम पर शुरू की गई योजना है- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा), जिसे संसद में पारित एक अधिनियम का समर्थन प्राप्त है। मौजूदा सरकार ने इस अधिनियम और योजना को *निरस्त* करने के लिए संसद में विधेयक संख्या 197/2025 पारित किया है। विधेयक की धारा 37(1) में लिखा है :

'धारा-10 में दिए गए प्रावधानों को छोड़कर, केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचना के माध्यम से तय की जाने वाली तिथि से... महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005 तथा उसके अंतर्गत बनाए गए सभी नियम, अधिसूचनाएं, योजनाएं, आदेश और दिशा-निर्देश निरस्त माने जाएंगे।'

विधेयक आगे कहता है : धारा 8(1) के तहत सभी राज्य सरकारों को ग्रामीण क्षेत्रों के प्रत्येक परिवार को एक वित्तीय वर्ष में 125 दिनों के रोजगार की गारंटी प्रदान करने के लिए एक योजना बनाने का दायित्व दिया गया है; यह योजना विधेयक की अनुसूची- I में निर्दिष्ट न्यूनतम विशेषताओं के अनुरूप होगी; और अनुसूची- I के अंतर्गत पहली न्यूनतम विशेषता यह है:

'अधिनियम की धारा-8 के तहत सभी राज्यों द्वारा अधिसूचित योजना का नाम 'विकसित भारत- गारंटी फार रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण): वीबी-जी राम जी योजना' होगा।'

यह नाम न केवल बोलने में बोझिल है, बल्कि गैर-हिंदी भाषी नागरिकों के लिए इसका कोई अर्थ नहीं है और यह उनका अपमान है।

गरीबों के लिए जीवन रेखा

एक वर्ष में सौ दिन के रोजगार की गारंटी योजना बारह करोड़ परिवारों के लिए जीवन रेखा थी, जिससे यह सुनिश्चित होता था कि घर का कोई सदस्य भूखा और हताश होकर सोने को मजबूर न हो। यह योजना गरीबों, विशेषकर महिलाओं और नियमित रोजगार से वंचित वरिष्ठ नागरिकों के लिए वरदान साबित हुई। इसने घर की महिलाओं के हाथों में पैसा दिया, जिससे उन्हें वह आत्मनिर्भरता मिली, जो उनकी पूर्वजों को नहीं मिली थी। इसने गरीबों के लिए एक सुरक्षा कवच बनाया। नया विधेयक इस सहूलियत को बेरहमी से छीन लेता है।

यूपीए सरकार के पहले बजट (2004-05) में मैंने कहा था: *'हमारी योजना में इसकी संपूर्ण निधि पर गरीबों का पहला अधिकार होगा... राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम पर काम शुरू हो चुका है। इसका उद्देश्य प्रत्येक गरीब परिवार में एक सक्षम व्यक्ति को वर्ष में सौ दिन का रोजगार सुनिश्चित करना है...'*

इस अधिनियम का मूलमंत्र ***'आजीविका सुरक्षा की गारंटी'*** था और इसकी प्रमुख विशेषताएं थीं:

- यह योजना सार्वभौमिक, मांग-आधारित और पूरे वर्ष उपलब्ध थी।
- रोजगार की गारंटी केंद्र सरकार द्वारा दी गई थी।
- इस योजना का वित्तपोषण केंद्र सरकार द्वारा किया गया था; राज्य का हिस्सा केवल सामग्री लागत का पच्चीस फीसद था।
- यदि किसी व्यक्ति को काम देने से इनकार कर दिया जाता था, तो वह बेरोजगारी भत्ता पाने का हकदार था।
- योजना के विकास के साथ इसमें महिला श्रमिकों के पक्ष में एक स्वागतयोग्य झुकाव आया।

मनरेगा की मूल भावना के विपरीत

नया विधेयक और योजना उपरोक्त सभी विशेषताओं को नष्ट कर देते हैं। यह योजना अब राज्य-विशिष्ट होगी तथा लागत केंद्र और राज्य द्वारा क्रमशः 60:40 के अनुपात में *साझा* की जाएगी। केंद्र सरकार प्रत्येक राज्य को निधि का *'मानक आबंटन'* करेगी, आबंटन से *अधिक* व्यय *राज्य* द्वारा वहन किया जाएगा और योजना के कार्यान्वयन वाले *क्षेत्रों* को *केंद्र सरकार* द्वारा अधिसूचित किया जाएगा, जिससे यह *आपूर्ति-आधारित* योजना बन जाएगी। *राज्य* 125 दिनों के रोजगार की *'गारंटी'* देगा- जो एक भ्रम है। अधिसूचित *व्यस्ततम कृषि मौसम* के दौरान, जो कुल मिलाकर एक साल में साठ दिन का होता है, उस समय कोई काम उपलब्ध नहीं कराया जाएगा। बेरोजगारी भत्ता अधिसूचित मजदूरी का पच्चीस फीसद जितना कम हो सकता है और राज्य की *आर्थिक क्षमता* सहित कई शर्तों से घिरा होगा। केंद्र सरकार सभी पहलुओं पर मध्यस्थ होगी, जिससे विधेयक *संघीय विरोधी* बन जाता है। कुल मिलाकर नया विधेयक और प्रस्तावित योजना ***गारंटीकृत आजीविका सुरक्षा*** की मूल अवधारणा को पूरी तरह से उलट देते हैं। विशेषकर भाजपा शासित राज्य- आर्थिक अक्षमता का हवाला देंगे, *कम* मानक आबंटन और कार्यान्वयन के लिए *सीमित* क्षेत्रों की मांग करेंगे, और धीरे-धीरे इस योजना को समाप्त कर देंगे।

स्मृति से मिटाना

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 फरवरी, 2015 को संसद में कहा था, *'मेरी राजनीतिक समझ कहती है कि मनरेगा को कभी खत्म नहीं करना चाहिए। ...यह आपकी (यूपीए सरकार की) विफलताओं का जीता-जागता प्रमाण है।'*

पिछले कुछ वर्षों में मनरेगा की उपेक्षा हुई है। हालांकि इसमें सौ दिनों के रोजगार का वादा किया गया था, लेकिन प्रति परिवार औसत लगभग पचास दिन ही रहा है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में 8.61 करोड़ जाब कार्ड धारकों में से केवल 40.75 लाख परिवारों ने और 2025-26 में सिर्फ 6.74 लाख परिवारों ने सौ दिन का काम पूरा किया। बेरोजगारी भत्ता, जो राज्य सरकार की जिम्मेदारी है, उसका भुगतान बहुत कम होता है। आबंटन अपर्याप्त रहे हैं और बजट अनुमान वित्त वर्ष 2020-21 में 1,11,170 करोड़ रुपए से घटकर 2025-26 में 86,000 करोड़ रुपए रह गया है। काम करने वाले परिवारों की कुल संख्या 2020-21 में 7.55 करोड़ से घटकर 2024-25 में 4.71 करोड़ रह गई। मनरेगा के तहत पारिश्रमिक की बकाया राशि बढ़कर 14,300 करोड़ रुपए हो गई है।

नए विधेयक में खामियों के साथ ही यह कदम महात्मा गांधी को राष्ट्र की स्मृति से मिटाने का एक जानबूझकर किया गया प्रयास है, जो निंदनीय है। भाजपा की गणना के अनुसार, स्वतंत्र भारत का इतिहास 26 मई, 2014 से शुरू हुआ। अतीत को मिटाना ही होगा- जवाहरलाल नेहरू से शुरू हुआ यह सिलसिला अब महात्मा गांधी तक पहुंच गया है। भाजपा की इन गंभीर गलतियों को भारत की जनता माफ नहीं करेगी।

लापरवाही की हद

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

> **पिछले दो दशकों में प्रदूषण हर साल बढ़ता गया है। इसलिए कि भारत सरकार ने कभी कोशिश भी नहीं की है समझने की कि चीन ने वायु प्रदूषण का हल कैसे ढूंढ़ा है। मुझे याद है बेजिंग जब गई थी कोई पंद्रह-बीस साल पहले, तो चीन की राजधानी का हाल बिल्कुल दिल्ली जैसा था। अब अगर नहीं है, तो इसलिए कि चीन की सरकार ने समाधान ढूंढ़ा, सिर्फ बेजिंग के लिए नहीं, बल्कि उसके आसपास कोई तीस अन्य शहरों का भी।**

दिल्ली के वायु प्रदूषण से मुझे इतनी तकलीफ हुई पिछले सप्ताह कि चाहूं भी तो किसी दूसरे विषय पर लिखना असंभव है। पहली मुसीबत यह हुई कि मुंबई से दिल्ली मुझे तकरीबन बारह घंटे लगे घर तक पहुंचने में। मुंबई में घर से निकलने वाली थी कि एअर इंडिया से खबर आई कि उड़ान में एक घंटा देरी है। एक घंटे बाद संदेश आया मेरे फोन पर कि एक घंटा और देर होगी। उसके बाद जब कोई खबर नहीं आई, तो मैं पहुंच गई मुंबई हवाईअड्डा, जहां मालूम हुआ कि देरी एक घंटा और होने वाली है। मुझे तकलीफ तो हुई, लेकिन जब आसपास मैंने ऐसे लोगों को देखा जो मुझसे तीन घंटे पहले से हवाईअड्डे पर भटक रहे हैं दिल्ली की इस उड़ान के इंतजार में। मैं चुपचाप बैठ कर किताब पढ़ने लगी।

किताब अच्छी तो थी, लेकिन उसको पढ़ते-पढ़ते सारा दिन गुजर गया और अंत में दिल्ली पहुंची शाम होने के बाद। जबकि मुझे आना था दोपहर में। दिल्ली हवाईअड्डे पर उतरने के बाद मालूम हुआ कि उस दिन सारी उड़ानें देर से चल रही थीं 'मौसम' की वजह से। जिस अधिकारी ने मुझे यह बताया, जब उससे पूछा कि मौसम का उसका मतलब प्रदूषण तो नहीं है, तो उसने माना कि प्रदूषण को ही वह मौसम कह रहा था। 'आप फिर भी ठीक हैं जी, आपको पता नहीं, कितनी उड़ानों को हमने चंडीगढ़ और जयपुर भेजा है मौसम की वजह से'।

हवाईअड्डे से बाहर आई, तो ऐसा लगा कि किसी डरावनी हिंदी फिल्म में गलती से पहुंच गई हूं। प्रदूषण और कोहरे की ऐसी चादर बिछी हुई थी शहर पर कि मेरी गाड़ी रुक-रुक के ही चली इस गहरी चादर में से, जिसमें दूसरी गाड़ियों की बत्तियां दिख रही थीं कोहरे में लिपटी हुईं। घर पहुंची तो पता लगा कि यमुना एक्सप्रेस-वे पर भयानक हादसा हुआ है, जिसमें कोई बीस गाड़ियां एक दूसरे से टकराई थीं 'मौसम' की वजह से। कई लोग इस हादसे में अपनी जान गंवा चुके थे।

अगले दिन मालूम हुआ कि जिस काम के लिए मैं दिल्ली आई थी, वह हो नहीं पाएगा। इसलिए कि पुरानी गाड़ियों पर रोक लग गई है और दिल्ली सरकार ने आदेश जारी किया है कि हर दफ्तर में आधे लोग घर से ही काम करें। मेरे लिए घर से काम करना संभव नहीं था, तो बैठ कर टीवी देखने लगी और देखते-देखते गुस्सा मेरा बढ़ता ही गया। पहला चेहरा जो देखा, वह दिल्ली सरकार के किसी मंत्री का था, जिसने प्रदूषण का सारा दोष पिछली सरकार पर डाला। उसकी बातें सुन कर याद आया कि जब अरविंद केजरीवाल की सरकार थी, तो किस आक्रामक अंदाज में भारतीय जनता पार्टी के लोग टीवी पर प्रदूषण की बातें करते थे। दोष लगाते थे कि पंजाब के किसानों के पराली जलाने से ही प्रदूषण बढ़ा है दिल्ली में और इसलिए कि पंजाब में भी आम आदमी पार्टी की सरकार थी और केजरीवाल इसको रोक नहीं रहे हैं। कभी दोष किसानों पर डालते हैं हमारे शासक, तो कभी बेघर गरीबों के चूल्हों पर, लेकिन कभी स्वीकार नहीं करते हैं कि असली दोष है भारत सरकार का।

पिछले दो दशकों में प्रदूषण हर साल बढ़ता गया है। इसलिए कि भारत सरकार ने कभी कोशिश भी नहीं की है समझने की कि चीन ने वायु प्रदूषण का हल कैसे ढूंढ़ा है। मुझे याद है बेजिंग जब गई थी कोई पंद्रह-बीस साल पहले, तो चीन की राजधानी का हाल बिल्कुल दिल्ली जैसा था। अब अगर नहीं है, तो इसलिए कि चीन की सरकार ने समाधान ढूंढ़ा सिर्फ बेजिंग के लिए नहीं, बल्कि उसके आसपास कोई तीस अन्य शहरों का भी। साथ में कोयले का इस्तेमाल तकरीबन पूरी तरह बंद किया और शहरों में चलने वाली गाड़ियों पर सख्त पाबंदियां लगाईं।

मैंने चीन का हवाला देते हुए 'एक्स' पर लिखा कि हमको चीन से सीख लेनी चाहिए, तो पीछे पड़ गए भाजपा के समर्थक और कुछ ऐसे लोग जो अपने आपको हर चीज का विशेषज्ञ मानते हैं। जो सुनने को मिला, वह कुछ इस किस्म का था। 'आप चुप रहिए। आपको इन चीजों के बारे में इतना नहीं मालूम, जितना हमारे प्रधानमंत्री को मालूम है। वे कर रहे हैं जो कुछ हो सकता है'। 'बैठ जाओ आपको क्या मालूम इन चीजों के बारे में'। और जो थोड़े सभ्य मिजाज के थे उनसे यह सुना, 'चीन जो कर सकता है, हम नहीं कर सकते। हमारा देश लोकतांत्रिक है इसलिए'।

इनसे कौन भिड़े, लेकिन हमारे-आपके लिए कहना जरूरी हो गया है कि वायु प्रदूषण जो इस तरह बढ़ गया है उत्तर भारत में, उसका दोष सीधा थोपा जा सकता है हमारे शासकों पर। इसमें बराबर का दोष बनता है राजनीतिकों और आला अधिकारियों का। इन लोगों ने लापरवाही ऐसी दिखाई है पिछले तीन दशकों में कि तकरीबन समाधान ढूंढ़ने की कोशिश तक नहीं हुई है। नतीजा यह कि जो समस्या कभी सिर्फ दिल्ली की थी, वह फैलते-फैलते अब उत्तर भारत के हर शहर की हो गई है। इतनी गंभीर समस्या बन गई है कि शर्म आनी चाहिए इस देश के हर पर्यावरण मंत्री को। केंद्रीय मंत्री व्यस्त रहते हैं विदेश में पर्यावरण बचाओ सम्मेलनों में शामिल होने में, लेकिन राज्य सरकारों के पर्यावरण मंत्री क्या कर रहे थे इस दौरान? क्या जानते नहीं थे कि अगर लोगों के लिए सांस लेना ही खतरनाक हो जाए, तो पर्यावरण को बचाने का कोई फायदा नहीं रहता है। आम लोग जब सांस लेंगे साफ वायु में, तब जाकर परवाह कर पाएंगे पर्यावरण बचाने का। आप बताइए कि ठीक है मेरी बात या नहीं?

धुंधलाती स्मृतियां

समाज

मोनिका शर्मा

> **इंसानों के लिए याद रखने के नाम पर स्मृतियां भर नहीं होतीं। रोजमर्रा की जिंदगी में भी बहुत कुछ याद रखना जरूरी होता है। मन-मस्तिष्क की सजगता के बिना संवाद-प्रतिवाद से लेकर दैनिक काम को पूरा करने तक अनगिनत मुश्किलें सामने आती हैं। ऐसे में आम जीवन से जुड़ी सहज-सी गतिविधियों, सामान और कामों की सूची को भी भूल जाना एक बड़ा खतरा बन गया है।**

हाल ही में सामने आए आंकड़ों के अनुसार जापान में स्मृति भ्रंश यानी याददाश्त खो देने की समस्या एक बड़ा संकट बनती जा रही है। गौरतलब है कि जापान में वर्ष 2024 में स्मृति भ्रंश से पीड़ित लगभग अठारह हजार उम्रदराज लोग अपने घर का रास्ता भूल गए। याददाश्त खोने या कमजोर होने से बुजुर्गों का भटक जाना समग्र समाज के लिए एक चेतावनी बनकर सामने आया है। तकलीफदेह है कि अपने ही आंगन तक पहुंचने का मार्ग भूले बुजुर्गों में से पांच सौ लोगों के शव लावारिस हालत में मिले। ऐसे में वहां स्मृति भ्रंश के शिकार लोगों के बढ़ते आंकड़े गहन चिंता का विषय बन गए हैं।

स्वास्थ्य से जुड़ी स्थिति के रूप में देखा जाए या जीवन से जुड़ी आवश्यक बातों और हालात को भूल जाने के तौर पर, स्मृति भ्रंश दुनियाभर में हर आयुवर्ग के बीच एक गंभीर समस्या बन रही है। चिंतनीय यह भी है कि स्मृति भ्रंश की समस्या बहुत से लोगों में आगे चलकर मनोभ्रंश की व्याधि बन जाती है। मनोभ्रंश स्मृति भ्रंश की ही एक व्यापक स्थिति है, जिसमें याददाश्त कमजोर होने के साथ ही भाषायी, तार्किक और निर्णय लेने की क्षमता में भी गिरावट आ जाती है। वहीं स्मृति भ्रंश मुख्यतः याददाश्त कमजोर होने से जुड़ी परेशानी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुमान के मुताबिक, दुनिया भर में साढ़े तीन करोड़ से भी ज्यादा लोग मनोभ्रंश से पीड़ित हैं। सन 2050 तक यह संख्या तिगुनी से भी अधिक बढ़कर साढ़े ग्यारह करोड़ तक पहुंच जाएगी।

विचारणीय है कि डिजिटल दुनिया में बीत रहे लंबे समय ने इंसान के मन-मस्तिष्क की कार्यशैली बदल दी है, जिसके चलते गुस्सा, चिड़चिड़ापन नींद की कमी और याददाश्त कम होने जैसी समस्याएं तेजी से बढ़ी हैं। एक ओर सोशल मीडिया मंचों की संख्या बढ़ी है, तो दूसरी ओर हर आयुवर्ग के लोग इन आभासी मंचों पर लंबा समय भी बिता रहे हैं। जरूरत से ज्यादा स्क्रीन पर रमने के चलते मन ही नहीं, मस्तिष्क पर भी नकारात्मक असर पड़ रहा है। अधिकतर लोग एक तरह के भावनात्मक संक्रमण, सूचनाओं की अति और जरूरी या गैरजरूरी जानकारियों के अंबार तले दबे हैं। यह स्थिति भी स्मरण शक्ति पर नकारात्मक प्रभाव डालने वाली है। स्पष्ट दिखता है कि तकनीकी सुविधाओं के घेरे में इंसान शारीरिक ही नहीं, मानसिक रूप से भी निष्क्रिय हो रहा है। सोचने-समझने की घट रही शक्ति से दिमाग की कार्यप्रणाली शिथिल हो रही है। यही नहीं, आभासी संसार में हर पल विचित्र सामग्री देखते रहने से भी अकेलापन, अवसाद, चिंता और दिमागी सुस्ती बढ़ रही है। इन हालात में तार्किक और भावनात्मक मोर्चे पर हिस्से आ रही उलझन दिमागी विघटन का सबसे बड़ा कारण साबित हो रही है, जो सीधे-सीधे मस्तिष्क की कार्यक्षमता पर दुष्प्रभाव डालने, मन को मायूसी में घेरने और व्यवहार में असंयम तथा अस्थिरता लाने वाली है।

दरअसल, तकनीकी तरक्की ने दृश्य माध्यमों की भूमिका बढ़ा दी है। हर मुट्ठी में मौजूद जानकारियों की स्क्रीन ने दिमाग पर जोर डालकर सोचने और याद रखने की जरूरत ही कम कर दी। क्लिक भर में स्क्रीन के माध्यम से मिलती या ढूंढ़ ली जाती हर सूचना-विवरण या तस्वीर दिमाग को सुस्त बनाने वाली गतिविधि साबित हो रही है। सामाजिकता का दायरा घटा है। शारीरिक-मानसिक और सामाजिक गतिविधियों में कमी स्मृति कम होने के जोखिम को और बढ़ा रही है। कुछ समय पहले एप से टैक्सी उपलब्ध करवाने वाली एक कंपनी द्वारा देश के पांच शहरों में किए गए सर्वे में लोगों की याददाश्त कमजोर होने की बात सामने आई थी, जिसमें मुंबई पहले नंबर पर रहा।

असल में इंसानों के लिए याद रखने के नाम पर स्मृतियां भर नहीं होतीं। रोजमर्रा की जिंदगी में भी बहुत कुछ याद रखना जरूरी होता है। मन-मस्तिष्क की सजगता के बिना संवाद-प्रतिवाद से लेकर दैनिक कामकाज को पूरा करने तक अनगिनत मुश्किलें सामने आती हैं। ऐसे में आम जीवन से जुड़ी सहज-सी गतिविधियों, सामान और कामों की सूची को भी भूल जाना एक बड़ा खतरा बन गया है। कमजोर होती स्मरण शक्ति दुर्घटनाओं तक को न्योता देने वाली साबित हो रही है। बच्चे हों या बड़े, पल भर में यह भूल जा रहे हैं कि उन्होंने क्या काम करने के बारे में सोचा था! अपना फोन नंबर या पता याद रखना मुश्किल हो गया है। अब न रास्ते याद रहते हैं और न ही किसी तरह के सीमा चिह्न। घर-परिवार में भी चीजों को रखकर या बातों को बोलकर भूल जाने की समस्या जिंदगी को हर मोर्चे पर मुश्किल बनाने लगी है। चिंता का विषय है कि अब यह जीवन के आखिरी पड़ाव पर पहुंचे बुजुर्गों की परेशानी भर नहीं रही। हमारे देश में भी कम उम्र के लोग कमजोर होती याददाश्त के मरीज बन रहे हैं। एकल परिवारों के इस दौर में भूल जाने की स्थितियां बहुत से जोखिम पैदा करने वाली हैं। तकनीक से घिरती जीवनशैली में कुछ सकारात्मक बदलाव ही इस समस्या से बचाने में मददगार बन सकते हैं।

धुंधलाती स्मृतियों की व्याधि से जूझने के लिए मन-मस्तिष्क को सजग-सक्रिय रखना आवश्यक है। तकनीकी सुविधाओं की सहायता लेने के बजाय इरादतन कुछ सूचनाएं याद रखने का प्रयास किया जाना चाहिए। साथ ही 'डिमेंशिया' को लेकर सरकार को भी देखभाल से जुड़ी उचित नीतियां बनानी होंगी। गौरतलब है कि जापान में सरकार ने स्मृति भ्रंश की व्याधि से जुड़ी संभाल-देखभाल को सबसे जरूरी नीतियों में से एक माना है। वहां भूलने की समस्या से निपटने के लिए तकनीक का सहारा लेने का भी निर्णय लिया गया है। कमजोर याददाश्त से पीड़ित लोगों को जीपीएस ट्रेकिंग सुविधा, रोबोटिक सहायक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता, यानी एआइ जैसी तकनीकों के माध्यम से नजर रखने, पहचानने और भावनात्मक सहारा देने का प्रयास किया जा रहा है। हालांकि तकनीकी सुविधाएं मानवीय देखभाल का विकल्प नहीं बन सकतीं। भारत में तो सामाजिक-पारिवारिक ताने-बाने को सहेजना क्षीण होती स्मरण शक्ति वाले लोगों के लिए सबसे जरूरी है। साथ ही कुछ नया सीखना, प्राकृतिक परिवेश से जुड़ना और शारीरिक गतिविधियां इस व्याधि से दूर रखने में मददगार बन सकती है। तकनीकी विस्तार के दौर में जीवनशैली में प्रभावी बदलाव के बिना स्मरण शक्ति कम होने की समस्या से नहीं जूझा जा सकता।

मन मुताबिक घेरा

बाखबर

सुधीश पचौरी

> **एक दिन कोलकाता में 'फुटबाल के भगवान' मेस्सी के दर्शन के लिए उनके प्रशंसकों में ऐसी होड़ मची कि सारा स्टेडियम दर्शनार्थियों की तोड़फोड़ का शिकार हुआ। चैनलों में खेल विशेषज्ञों ने आयोजकों को धिक्कारा। मेस्सी का आना, न आना बराबर हुआ।**

संसद से सड़क तक... सड़क से चैनलों तक 'तू-तू मैं-मैं' है। एक गरजता है, तो दूसरा बरसता है। बहस के नाम पर 'चुप रहो' या 'मुंह बंद रखो' है... तो कहीं अपशब्द भी है। एक एंकर कहने लगती है कि इतने नामी प्रवक्ता और ऐसी भाषा...! ऐसे तो बहस नहीं कराई जा सकती! इसी बीच फिल्म 'धुरंधर' सुपर हिट हो जाती है और चर्चा में एक 'नया वीरगाथा काल' शुरू हो जाता है। 'धुरंधर' आधुनिक 'पृथ्वीराज रासो' की तरह है और फिल्मकार 'चंदबरदाई' की तरह। मगर इसका खलनायक पाक के कुख्यात 'रहमान डकैत' (अक्षय खन्ना) सारी चर्चा ले जाता है। एक पक्ष फिल्म के सुपर हिट होने का कारण उसका 'घोर यथार्थवादी' होना बताता है, तो दूसरा पक्ष उसके 'पाक विरोधी' राष्ट्रवादी एजंडे को कारण बताता है।

इसी बीच चैनलों में दक्षिण भारत के एक राज्य की सत्ताधारी पार्टी की ओर से हाई कोर्ट के एक जज द्वारा मदुरै की पहाड़ी के पुराने मंदिर पर दीप जलाने के पक्ष में दिए गए आदेश के खिलाफ उन पर 'महाभियोग' चलाने की कार्यवाही शुरू करने की खबर चैनलों में आकर एक बड़ी बहस बन जाती है। एक पक्ष कहता रहा कि ये तो जज की कलम पर 'हुकुम' चलाना है, न्यायपालिका को 'डराना' है... दूसरे कहते रहे कि जज का फैसला 'सांप्रदायिकता' को बढ़ावा देता है। जवाब में एक चर्चक कहता है कि इससे साफ है कि बहुसंख्यक हिंदुओं को अपने ही देश में पूजा करने की आजादी नहीं है। जबकि पास की दरगाह वालों को पूजा पर कोई आपत्ति नहीं है। समूचा विपक्ष महाभियोग का हामी है, जबकि संसद में उसका बहुमत नहीं है। 'महाभियोग' के जवाब में सत्तावन जजों ने 'महाभियोग' को न्यायाधीशों को डराने वाला और जनतंत्र विरोधी बताया।

इसी बीच भाजपा ने पैंतालीस वर्ष के पंकज सिंह को अपना 'राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष' चुनकर विपक्ष को चौंका दिया। इतना युवा अध्यक्ष किसी दल के पास नहीं दिखता। एक प्रवक्ता ने कहा कि यह भाजपा का युवाओं को आमंत्रण है। साफ है, सत्ता दल जल्द पिंड छोड़ने वाला नहीं! एक दिन एक बड़े विपक्षी दल की 'वोट चोर गद्दी छोड़' रैली में नेताओं के वक्तव्यों की अपेक्षा कुछ कार्यकताओं के 'वोट चोर गद्दी छोड़... आज नहीं तो कल छोड़'... नारों ने चैनलों की बहसों में बड़ी जगह बनाई। सत्ता प्रवक्ता कहे कि ये देश के प्रधानमंत्री का अपमान है। नेता माफी मांगें! यह 'मुहब्बत की दुकान' नहीं, हिंसा को उकसाना है। अराजकता को निमंत्रण है। एक चर्चक कहिन कि यह विपक्ष का 'सेल्फ गोल' है। जवाब में विपक्षी कहे कि 'जर्सी गाय' किसने कहा... ये किसने कहा... वो किसने कहा... पहले अपने गिरेबां में झाकों, फिर बात करो..!

इसी बीच, सिडनी में दो आतंकियों ने 'हनुक्का' उत्सव के दौरान गोलियां बरसाकर पंद्रह यहूदियों को मौत के घाट उतारने की खबर को चैनल-चर्चा में ला दिया। एक एंकर ने कहा कि यह आस्ट्रेलिया का 'जागो आस्ट्रेलिया जागो' का आह्वान है... कब तक ऐसों को 'भटके लोग' कहोगे... इस तरह कब तक बचाते रहोगे... इसकी आलोचना क्यों नहीं करते। एक इस्लामिक विद्वान ने कहा कि यह निंदनीय है..। सिडनी आतंकवादी हमले पर एक अन्य चर्चा में एक मुसलिम विद्वान ने कहा कि अगर यहां का हिंदू 'सेकुलर' न होता, तो हम जिंदा नहीं रह सकते थे। ऐसे में जो कोई अतिवादी बातें करते हैं, वे वातावरण बिगाड़ते हैं।

कोलकाता के एक स्टेडियम में 'फुटबाल के भगवान' मेस्सी के दर्शन के लिए उनके प्रशंसकों में ऐसी होड़ मची कि सारा स्टेडियम दर्शनार्थियों की तोड़फोड़ का शिकार हुआ। लोग घायल हुए। चैनलों पर खेल विशेषज्ञों ने आयोजकों को धिक्कारा। मेस्सी का आना, न आना बराबर हुआ। मेस्सी कभी अतिमहत्त्वपूर्ण लोगों के घेरे से बाहर न निकल सके, न ही फुटबाल खेल-खिला सके।

फिर एक दिन एक राज्य के विपक्षी नेता ने बोल दिया कि सेना को किसी और काम में लगाओ... और इसके फलस्वरूप वे दो दिन चर्चा में छाए रहे। फिर 'राष्ट्रवादी' चैनलों ने दिल्ली के प्रदूषण को लेकर दिल्ली और केंद्र सरकार को एक साथ निशाने पर लिया, तो कई 'सत्ता प्रवक्ता' अचानक हतप्रभ से रह गए और तब समझ में आया कि चैनलों की बंदूकें किसी वक्त सत्ता की ओर भी मुड़ सकती हैं।

एक दिन नीतीश कुमार ने नियुक्ति पत्र देते हुए एक मुसलिम युवती के हिजाब को खींचकर निश्चय ही निंदनीय हरकत की। पक्षधर उनकी इस हरकत का बचाव करते रहे और स्त्रीवादियों की ओर से कठघरे में खड़े किए जाते रहे। अपने सुशासन बाबू कहीं कुछ हिले हुए हैं क्या? और इसी संसद सत्र में कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 'मनरेगा' का नाम बदलकर 'विकसित भारत- जी राम जी' करके और संसद में पास कराके सबसे 'जी राम जी' कहलवा दिया। सरकार ने 'जी राम जी' का ऐसा घेरा बनाया कि आप आलोचना करें तो 'जी राम जी' बोलें और न करें तो भी 'जी राम जी' बोलें!

अजय माकन का बाहरी होना ही राज्यसभा में मेरा पथ प्रशस्त कर गया

राज्यसभा के सांसद कार्तिकेय शर्मा ने कहा कि हम व्यवस्था तभी बदल सकते हैं, जब खुद व्यवस्था का हिस्सा होते हैं। उनका आरोप है कि कांग्रेस के पूर्व युवा प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने देश की उन उम्मीदों को पूरा नहीं किया, जिनके लिए उन्हें 414 सीटें मिली थीं। उन्होंने कांग्रेस की पूर्ववर्ती सरकारों पर चीन के मामले में पिछड़ जाने का आरोप लगाया। वोट चोरी के मुद्दे पर उन्होंने सुप्रिया सुले और उमर अब्दुल्ला के बयानों की मिसाल देते हुए कहा कि यह पूरे विपक्ष का नहीं एक खास राजनीतिक दल का आरोप भर है। नीतीश कुमार के हिजाब प्रकरण पर उन्होंने कहा कि इस मसले का राजनीतिकरण नहीं करना चाहिए। नई दिल्ली में कार्तिकेय शर्मा के साथ कार्यकारी संपादक *मुकेश भारद्वाज* की बातचीत *के चुनिंदा अंश।*

● **आप राजनीति में युवावस्था में आए। आपने अपनी राजनीतिक पहचान में किसी दलीय निशान की जरूरत भी नहीं समझी। क्या सोच रही इसके पीछे?**

●● मैं किसी योजनाबद्ध तरीके से राजनीति में नहीं आया। हां, राजनीतिक पृष्ठभूमि थी। मेरे पिता राजनीति में रहे। माताजी हैं। बचपन से राजनीति देखता और समझता आया हूं, और इसका महत्त्व समझता हूं। इंग्लैंड से पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं सोचता था कि राजनीति में आए बगैर सार्वजनिक मंच पर काम किया जा सकता है। इसके लिए मैंने जनसंचार का माध्यम चुना। संयोग से ऐसा अवसर आया कि कांग्रेस पार्टी ने राज्यसभा के लिए अजय माकन को उतारा, जो हरियाणा नहीं, दिल्ली के थे। मुझे इस बात का अहसास हुआ कि अगर आप व्यवस्थागत बदलाव लाना चाहते हैं, तो आपको व्यवस्था का हिस्सा बनना पड़ेगा। आप व्यवस्था के बाहर से टिप्पणी कर सकते हैं, व्यवस्था को बदल नहीं सकते हैं। तभी मैंने फैसला किया कि बाहरी टिप्पणीकार होने के बजाय व्यवस्था का हिस्सा बनना चाहिए।

● **व्यवस्था का हिस्सा बने आपको साढ़े तीन साल हो गए हैं। राजनीति की अपनी एक आभा है। आभा बनाम व्यवस्थागत बदलाव को आप कैस देखते हैं?**

●● आप की बात मैं समझ रहा हूं, परिदृश्यगत बदलावों को स्वीकार भी करता हूं। पर मैं किसी तरह के आभा निर्माण की नीयत से बिल्कुल नहीं आया था, जैसा कि बता चुका हूं उसके लिए मेरे पास खुद का खड़ा किया हुआ बड़ा मंच था।

● **बतौर सांसद अब तक का राजनीतिक अनुभव कैसा रहा?**

●● साढ़े तीन साल में सीखने का बहुत मौका मिला और जो सीखा है, उसे अलग-अलग जगहों पर इस्तेमाल भी किया। संसद में मेरी 92 फीसद उपस्थिति है। अब तक मैं सरकार से पौने तीन सौ सवाल पूछ चुका हूं। मैं 42 साल की उम्र में संसद में आया था। राज्यसभा के इतिहास में मैं सबसे कम उम्र का उपाध्यक्ष बना। आज का समय डिजिटल का है। मैंने संसद में सरकार से पूछे सारे सवाल और जवाब सोशल मीडिया पर डालने शुरू किए। इसका सकारात्मक असर रहा।

● **संसद में प्रवेश के लिए राज्यसभा को चोर दरवाजा माना जाता है। क्या आपको लगता है कि मुख्यधारा की राजनीति में आने के लिए लोकसभा का प्रत्यक्ष जनादेश जरूरी है?**

●● मौजूदा सदन में सिर्फ दो निर्दलीय सांसद हैं, मैं और कपिल सिब्बल। मैं इसे चोर दरवाजा इसलिए नहीं कह सकता कि जब मैंने नामांकन भरा था तो मुझे नहीं पता था कि किन लोगों का समर्थन मिलेगा। मेरे मतदाता विधायक थे।

● **फिर भी यह तो अप्रत्यक्ष निर्वाचन ही हुआ?**

●● हां, इन कारकों के साथ मैंने चुनाव लड़ा। मैं किसी पार्टी का हिस्सा नहीं था। मुझे भाजपा का समर्थन मिला, उनके पास आठ वोट थे। जजपा का समर्थन मिला, उनके पास दस वोट थे। इसके बाद भी मुझे ग्यारह से ज्यादा वोट चाहिए थे। मैं मानता हूं कि मैंने सही मायने में चुनाव लड़ा।

● **आप जब राज्यसभा के लिए चुने गए तो आपके साथ कई तरह के विवाद थे। इसके बावजूद आपको जो समर्थन मिला, हम उसकी वजह जानना चाहते हैं।**

●● मेरे माता-पिता के राजनीतिक, सामाजिक संबंध थे। मेरे भी संबंध थे। मेरे बारे में लोगों की यही राय बनी कि पढ़ा-लिखा युवा अगर काम करने का इच्छुक है तो उसे मौका देना चाहिए। आपकी पहचान आपके अपने काम से ही बनती है। मेरे सामने खड़ा उम्मीदवार बाहर से आया था। लोगों ने मुझे मौका देना बेहतर समझा। मैं विवादों का पीछा नहीं करता। मैं यह मानता हूं कि कई लोगों ने कई कयास लगाए। अगर आप कयासों को विवाद मानते हैं तो मैं आपकी बात से सहमत हूं।

● **कांग्रेस के एक सांसद ने बीस साल पहले कहा था कि राज्यसभा सीट की कीमत सौ करोड़ रुपए है। क्या आपका ऐसा कोई अनुभव रहा?**

प्रश्नकाल

कार्तिकेय शर्मा क्यों?

2022 के राज्यसभा चुनाव के दस दिन पहले कांग्रेस के अजय माकन के मुकाबिल खड़े थे एक स्वतंत्र उम्मीदवार कार्तिकेय शर्मा। इस स्वतंत्र उम्मीदवार का नाता हरियाणा के उस शर्मा परिवार से था जो पूर्व राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा से जुड़ता है। पिता विनोद शर्मा का रणनीतिकार सरीखा रुतबा था और माता शक्ति रानी शर्मा का अपना राजनीतिक अस्तित्व। एक हादसे ने इस राजनीतिक परिवार के पूरे परिदृश्य को धुंधला कर दिया। उसी परिवार के कार्तिकेय शर्मा ने आक्सफोर्ड से शिक्षा पूरी कर स्वतंत्र पहचान के साथ राजनीति में कदम रखा। अवसान से शीर्ष की राजनीति को समझने के लिए शर्मा से बेहतर कौन होता?

●● मैं इन सांसद के बारे में बिल्कुल नहीं जानता। किसी पार्टी में होता होगा ऐसा। मैं बस इतना जानता हूं कि आप अपनी पारिवारिक, राजनीतिक, अपने कार्यों की पृष्ठभूमि में वोट मांगते हैं, और ज्यादातर फैसले इसी आधार पर होते हैं कि आप क्या हैं।

● **मेरे अगले दो सवाल सहसंबद्ध हैं। आज जब परिवारवाद पर सबसे बड़ा सवाल है तो आपने सगर्व अपने राजनीतिक विरासत की बात की। दूसरा विचारधारा के बदलाव का है। आपके पिता कांग्रेस में रहे, आपके परिवार में हुए एक अप्रिय हादसे के बाद उन्होंने क्षेत्रीय दल बनाया। पर आज आप राजग के गठबंधन में हैं, जिसकी अगुआई भाजपा कर रही है। इन दो तथ्यों की व्याख्या आप किस तरह करेंगे?**

●● आपका सवाल मेरे संदर्भ में तब सही होता, जब मैं पढ़ाई पूरी किए बिना राजनीति में आ जाता। मैंने जनसंचार के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई। राजनीतिक परिवार होने का महत्त्व बदल भी गया है। आज के दौर में हर राजनीतिक परिवार राजनीति में सफल नहीं है। आपको फायदा सिर्फ शुरुआत भर का है। बाकी सब आपके कामकाज के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। गलत बात तब होगी, जब बिना किसी आधार के एक परिवार और उसी परिवार की पीढ़ियां राजनीतिक व्यवस्था पर काबिज हो जाएं।

● **आप राहुल गांधी की बात कर रहे हैं?**

●● आप समझ रहे हैं।

● **राजनीति के मैदान में आपके पिता की छवि रणनीतिकार सरीखी थी। आपकी माता शक्ति रानी शर्मा भाजपा से विधायक हैं। क्या भविष्य में आप भी भाजपा का हिस्सा हो सकते हैं, या ऐसी स्थिति करीब ही है?**

●● मेरी माताजी अंबाला की प्रत्यक्ष चुनी गई मेयर रही हैं और अभी भाजपा की सक्रिय विधायक हैं। मैं राजग का हिस्सा हूं और वैचारिक रूप से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों के साथ हूं। क्या इससे पहले किसी प्रधानमंत्री ने यह हिम्मत दिखाई कि भारत विकसित देशों में शुमार हो सकता है? अभी तक तो हम रोटी, बिजली, पानी और सड़क से आगे नहीं निकल पाए हैं। इंग्लैंड में पढ़ाई के दौरान मुझे अहसास हुआ कि भारत को सपेरों का देश कहा जाता है और इसे दुनिया में सबसे ज्यादा खुले में शौच करने वाले देश की संज्ञा दी जाती है। प्रधानमंत्री की कई उपलब्धियों में स्वच्छता अभियान है।

● **शौचालय तो बन गए, लेकिन कई जगहों पर शिकायत है कि उनमें पानी नहीं है।**

●● शौचालय बन गए तो पानी भी आएगा। आ भी रहा है। हो सकता है, हर घर नल की योजना बाद में आई, शौचालय पहले बन गए। सबसे अहम यह है कि नागरिकों व खास कर महिलाओं की गरिमा को ध्यान में रख कर शौचालय बने।

● **अभी बांग्लादेश में जेन-जी का आंदोलन हुआ। अन्य वैश्विक परिदृश्यों में भी युवाओं का असंतोष उफान पर है। इन हालात के बरक्स बिहार में मुख्यमंत्री मुसलिम महिला का हिजाब उतारने की कोशिश करते हैं। राजनीतिक परिदृश्यों के इस समुच्चय की व्याख्या आप कैसे करेंगे?**

●● इस घटना को अशोक गहलोत की घटना से जोड़ कर देखा जाना चाहिए, जब उन्होंने एक महिला का घूंघट उठा कर कहा था कि हमारे यहां यह प्रथा नहीं है। आपको यह अहसास होगा कि किन मुद्दों का राजनीतिकरण किया जा रहा है। आप यह जानेंगे कि क्या सही है, क्या गलत है। मैं मानता हूं कि दोनों ही सही नहीं हैं, लेकिन हमें इन चीजों से ऊपर उठ कर इसके राजनीतिकरण से बचना होगा। भारत युवाओं का देश है। मेरे पास कई विदेशी संस्थानों के युवा शोध के लिए आते हैं। एक ने पूछा कि आपके यहां नेता प्रतिपक्ष अपेक्षाकृत युवा हैं, लेकिन युवाओं का आकर्षण देश के प्रधानमंत्री के लिए है। ऐसा क्यों है? मैंने कहा, ऐसा इसलिए है क्योंकि आज भारत के अंदर ऐसी व्यवस्था बनी है जहां चाय बेचनेवाला भारत का प्रधानमंत्री बन सकता है। सफलता से बड़ा आकर्षण कुछ भी नहीं है। भारत के युवाओं को ऐसे असली नायक चाहिए, जो उनके लिए सफलता की कहानियां लाएं। जो उन्हें इस बात का भरोसा दे सकते हैं कि उनके बीच में से कोई भी इस देश का प्रधानमंत्री बन सकता है। अगर 45 साल के नेता भाजपा के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष बने हैं तो इससे अच्छी बात क्या हो सकती है?

> **इस घटना को अशोक गहलोत की घटना से जोड़ कर देखा जाना चाहिए, जब उन्होंने एक महिला का घूंघट उठा कर कहा था कि हमारे यहां यह प्रथा नहीं है। आपको यह अहसास होगा कि किन मुद्दों का राजनीतिकरण किया जा रहा है। आप यह जानेंगे कि क्या सही है, क्या गलत है।**

● **भावार्थ यह भी हो सकता है कि एक प्रतीकात्मक व्यक्ति को नेतृत्व दे दिया जाए तो जेन-जी की बेरोजगारी जैसी समस्या हल हो जाएगी?**

●● मैंने प्रतीकात्मक शब्द का इस्तेमाल बिल्कुल नहीं किया। यह शब्द आपका है। मैंने पीढ़ीगत अंतर की बात की, तब ज्यादा संवाद होता है।

● **आरोप है कि देश की समस्याओं पर संवाद करने से ज्यादा हिंदु-मुसलिम विमर्श में उलझा दिया जाता है।**

●● मैं इससे असहमत हूं। आप केंद्र सरकार की किसी भी एक योजना के बारे में बता दीजिए जिसमें हिंदू-मुसलिम के हिसाब से भेदभाव किया जा रहा हो। 1979 में अमेरिका की 'लुक ईस्ट' नीति थी, वह चीन का महत्त्व समझ रहा था। पर भारत बेपरवाह रहा। वह भी तब, जब 1984 के बाद 414 सीटों का जनादेश था। देश के हर क्षेत्र ने युवा प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गांधी को चुना था। उम्मीद थी कि कंप्यूटर व डिजिटल क्रांति की बदौलत विश्व-पटल पर भारत को अपनी जगह मिलेगी। लेकिन हुआ क्या? शाहबानो केस, रामजन्मभूमि का राजनीतिकरण। मंडल-कमंडल का दौर आ गया। 1984 से 1989 का समय जो एक युवा प्रधानमंत्री के हवाले था, हमने सोचा था कि जिन चीजों से वंचित रह गए वो पा लेंगे। जातिवाद से लेकर तुष्टीकरण का सबसे बड़ा दौर तो 1984 से लेकर 1989 तक का था। अगर आप आतंकवाद पर लगाम नहीं लगाएंगे तो विकास प्रभावित होगा।

● **आतंकवाद का दुष्प्रभाव तो अभी भी दिख ही रहा है।**

●● बहुत कम। एक सुरक्षा का माहौल बन चुका है। गुजरात माडल के तहत पूरे देश में काम शुरू हुआ। आज भारत दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है।

● **राजग की राजनीति इतिहास पर टिकी है। आपने भी नीतीश कुमार के बरक्स अशोक गहलोत का उदाहरण दिया। कांग्रेस का गलत, आपके गलत को सही ठहराने की वजह कैसे बन सकता है?**

●● मैं किसी चीज को सही-गलत नहीं कह रहा। मैं कह रहा हूं कि इसका तुष्टीकरण व राजनीतिकरण करना गलत है।

● **विपक्ष का आरोप है कि भाजपा चुनाव जीत नहीं रही, चुनाव का प्रबंधन कर रही है।**

●● राकांपा की नेता सुप्रिया सुले ने कहा कि मुझे ईवीएम से कोई दिक्कत नहीं है, मैं उसी से जीत कर आई हूं। उमर अब्दुल्ला ने भी यही बात कही। यह आरोप विशेष दल का है, पूरे विपक्ष का नहीं। न खाता न बही, जो मैंने कहा, वही सही।

● **आप सीताराम केसरी की बात कर रहे हैं।**

●● आप इतिहास में जा रहे हैं तो मैं भी इतिहास की ही बात कर रहा हूं।

● **भाजपा पर आरोप है कि वह हर जगह अपना प्रभुत्व चाहती है। पंजाब विश्वविद्यालय के सीनेट चुनाव में ऐसा दिखा और विद्यार्थियों ने विरोध किया। चंडीगढ़ पर भी केंद्रीय प्रभुत्व स्थापित करने की कोशिश हुई। ऐसा क्यों?**

●● मैं चंडीगढ़ का बाशिंदा हूं। इस विवाद को सुनते हुए बड़ा हुआ हूं। मैं मानता हूं कि चंडीगढ़ के ऊपर हरियाणा का भी उतना ही हक है, जितना पंजाब का है। जो भी सरकार में होता है, अपने विवेक से इन मुद्दों का समाधान करने की कोशिश करता है।

● **क्या चंडीगढ़ को केंद्रशासित प्रदेश रहना चाहिए।**

●● मेरे विचार से रहना चाहिए, क्योंकि यह दोनों राज्यों की राजधानी है। चंडीगढ़ पर न तो कभी पंजाब अपना दावा छोड़ेगा और न ही हरियाणा पीछे हटेगा।

● **आपके पिता व परिवार की मुकम्मल राजनीतिक पहचान थी। जब वे राजनीति के शिखर पर थे तो एक अप्रिय घटना ने उन्हें राजनीतिक अवसान पर ला दिया। आज, आप कैसे देखते हैं उस गुजरे हुए समय को?**

●● वह एक दुर्भाग्यपूर्ण हादसा था। हम उस स्थिति से आगे बढ़ चुके हैं। मुझे इस पर इससे ज्यादा कुछ नहीं कहना है।

> **सफलता से बड़ा आकर्षण कुछ भी नहीं है। भारत के युवाओं को ऐसे असली नायक चाहिए, जो उनके लिए सफलता की कहानियां लाएं। जो उन्हें इस बात का भरोसा दे सकते हैं कि उनके बीच में से कोई भी देश का प्रधानमंत्री बन सकता है। 45 साल के नेता भाजपा के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष बने हैं।**

प्रस्तुति : मृणाल वल्लरी

You will Get access to these 3 channels in just 19 rupees

♦ **Indian Newspaper**

1) Times of India
2) The Hindu
3) Business line
4) The Indian Express
5) Economic Times

And more Newspapers

♦ **International Newspapers channel**

[Europian, American, Gulf & Asia]

♦ **Magazine Channel**

National & International

[Genaral & Exam related]

Click here to join

📍 You will be given lifetime Validity 📍

No Monthly subscription

विनम्रता कमजोरी नहीं

विचार बोध

रोहित कुमार

इससे किसे इनकार होगा कि साहसी होना व्यक्तित्व का एक अहम गुण होना चाहिए। यह जीवन में आने वाली हर तरह की चुनौतियों का सामना करने से लेकर नए रास्ते तलाशने के लिए एक जरूरी कारक के तौर पर काम करता है। इस मूल्य में विश्वास करने वाला समाज निश्चित तौर पर व्यक्तित्व के एक सकारात्मक पक्ष पर विश्वास करता है। मगर साहस के इस मूल्य के भरोसे में आकर कई बार लोग विनम्रता को कमजोरी के तौर पर देखने लगते हैं। जबकि दिलचस्प यह है कि ऐसे लोगों में से कई इस बात में भी विश्वास करते हों कि 'जब पेड़ फलों से लद जाता है, तो झुक जाता है।' आशय यह है कि अगर कोई साहसी है, वास्तव में बहादुर है, तो समाज और मानवीयता के हक में वह नैतिक मूल्यों की कद्र करेगा और इस तरह वह अपने व्यवहार में विनम्र होगा।

बाधाओं के बावजूद

अब सवाल है कि आखिर ऐसा क्यों देखा जाता है कि अगर कोई व्यक्ति विनम्र हो, अपने सामने खड़ी की जाने वाली बाधाओं के बावजूद ईमानदारी से अपने काम में लगा रहता हो, तो लोग उसे हल्का करके देखने लगते हैं और उसे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करते हैं! दरअसल, हम जिस समाज में रहते हैं, उसमें वर्चस्व का मनोविज्ञान बड़े बारीक तरीके से काम करता है। इसमें एक पक्ष नाहक दूसरे पर हावी होने की कोशिश करता रहता है, जबकि दूसरा पक्ष नाहक ही अपने ऊपर बनने वाले दबाव के बावजूद विनम्रता की डोर को थामे रखता है। विडंबना यह है कि विनम्रता को मानवीय व्यवहार के लिए जरूरी मानने वाले व्यक्ति की क्षमताओं के आधार पर देखा जाना चाहिए, वहां उसे डरपोक या कमजोर व्यक्ति के तौर पर देखा जाने लगता है, यह मान कर कि उसके भीतर साहस और सामना करने की क्षमता का अभाव है।

मगर क्या सचमुच विनम्र लोग कमजोर होते हैं? ऐसा नहीं है। आमतौर पर विचार की बुनियाद पर खड़े व्यक्तित्व को संवेदना और मानवीय व्यवहारों की भी समझ होती है। वह अपनी ओर से किसी का दिल दुखाने से बचना चाहता है और लोगों की कद्र उनकी क्षमताओं के आधार पर करना चाहता है। इस क्रम में विनम्रता किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे बेहतर वाहक के रूप में काम करती है। मगर कई बार उसकी विनम्रता को कुछ लोग कमजोरी मानना शुरू कर देते हैं। इसके अपने कारण हो सकते हैं। मसलन, किसी विनम्र व्यक्ति को कमजोर समझने वाले व्यक्ति को शायद ही यह पता चल पाता है या इन कारणों की खोज करते हुए यह नहीं सोच पाता है कि दरअसल वह खुद एक तरह के दबाव में जीता है, उस पर गुलाम मानस हावी होता है, जो किसी की विनम्रता की शक्ति की पहचान कर पाने में सक्षम नहीं होता।

हकीकत यह है कि कामकाज की जगहों पर अगर विनम्रता को अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बनाया जाए, तो यह सबसे आगे बढ़ने और विकास करने का रास्ता तैयार करती है। अक्सर कम समझदारी या असुरक्षाबोध की वजह से विनम्रता को आत्मसम्मान या कमतरी के भाव से जोड़ दिया जाता है और इसका कारण कमजोरी को माना जाता है। जबकि सच यह है कि अगर किन्हीं स्थितियों में विनम्र व्यक्ति का उपहास उड़ाने, उसकी क्षमताओं को खारिज करने का सिलसिला जारी रहता है, तो इस कुंठा का शिकार व्यक्ति धीरे-धीरे अपने भीतर की सकारात्मक क्षमताओं को खोता चला जाता है और आगे चल कर वह एक प्रकार की हीन भावना का शिकार हो जा सकता है।

असुरक्षाबोध का हासिल

यह कहा जाए कि विनम्र व्यक्ति को कमजोर समझना और उसका उपहास करना, उसे नुकसान पहुंचाने की कोशिश का एक मुख्य कारण ही हीनभावना है, असुरक्षाबोध है, जिसमें ऐसा करने वाला व्यक्ति न केवल अपने भीतर की कुंठा का शिकार होकर सब कुछ खारिज करने की आदत से लाचार हो जाता है, बल्कि वह अपने आसपास के लोगों के भीतर भी एक तरह का नकार-भाव या नकारात्मकता भर देता है। वह कई तरह की नकारात्मक ग्रंथियों का शिकार हो जाता है, बल्कि कार्यस्थल पर तो यह आदत कामकाज की गुणवत्ता पर बेहद प्रतिकूल असर डालती है।

> **अक्सर** कम समझदारी या असुरक्षाबोध की वजह से विनम्रता को आत्मसम्मान या कमतरी के भाव से जोड़ दिया जाता है। जबकि अगर किन्हीं स्थितियों में विनम्र व्यक्ति का उपहास उड़ाने, उसकी क्षमताओं को खारिज करने का सिलसिला जारी रहता है, तो इस कुंठा का शिकार व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी सकारात्मक क्षमताओं को खोता चला जाता है।

हकीकत यह है कि अगर कार्यस्थल पर व्यक्ति विनम्रता को अपना एक जरूरी हिस्सा माने तो न केवल वह अपने सहयोगियों के साथ बेहतर तालमेल और मानवीय संवेदनाओं पर आधारित समझदारी और संबंध विकसित कर सकता है, बल्कि इससे जिम्मेदारियों के निर्वाह के मामले में उत्पादकता में भी काफी इजाफा होता है।

विनम्रता की शक्ति

यह ध्यान रखने की जरूरत है कि विनम्रता किसी भी व्यक्ति के भीतर एक खास तरह की शक्ति के रूप में काम करती है। ऐसा व्यक्ति नाहक ही दूसरों पर हावी होने, नुकसान पहुंचाने की कोशिश नहीं करता है और इस तरह के कुत्सित दुराग्रहों से मुक्त रहता है, इसलिए संवेदनशील और उदार भी होता है। उदारता यहां तक भी कि वह अपने व्यक्तित्व की कमियों की भी ईमानदारी से पड़ताल कर पाता है, कमियों को स्वीकार करता है और फिर किसी सलाह से या फिर खुद उसकी पहचान करके उसमें सुधार करने की भी कोशिश करता है। यानी वह अपनी शक्तियों, हुनर, खूबियों और कमियों को लेकर ईमानदार रहता है।

विनम्रता की एक सबसे बड़ी खासियत यह भी होती है कि मानवीयता और संवेदशीलता के समांतर यह नए विचारों और दृष्टिकोणों को लेकर भी उदार रहना सिखाती है। इससे दंभ या अपनी बात को ही अंतिम सत्य मानने की कुंठा से मुक्ति मिलती है और साथ ही अपने आसपास मौजूद लोगों के प्रति जरूरी सहानुभूति और सहयोग की भावना को मजबूत करने में मदद करती है। अपना ईमानदार मूल्यांकन करने और खुद सुधार करते हुए आगे अपने लिए बेहतर रास्तों की खोज की शक्ति इसी भाव से आती है, जो खुद को अहंकार से दूर रखने में भी मददगार है।

शहद का साथ कई मर्ज की दवा

सर्दी अब शुरू हो गई है। ऐसे में मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए सभी को तैयार रहना चाहिए। इन दिनों जितना हो सके भरपूर पौष्टिक भोजन करना चाहिए। इस समय मिलने वाली पत्तेदार सब्जियों और गाजर को किसी न किसी रूप में आहार में शामिल करना अच्छा माना जाता है। इस मौसम में मीठा खाने की तीव्र इच्छा होती है। अगर इन दिनों पोषक तत्त्वों से भरपूर शहद का इस्तेमाल करें, तो यह खांसी-बलगम की समस्या दूर कर देता है। वहीं यह रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ा देता है। कुल जमा ये कि अगर शहद का नियमित इस्तेमाल करें, तो संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। दरअसल, शहद में औषधीय गुण है जो इसे हर लिहाज से शक्तिवर्धक बनाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें प्राकृतिक रूप से मिठास होती है। इसमें एंटीआक्सीडेंट, अमीनो एसिड और खनिज आदि होने से यह पोषक तत्त्वों से भी भरपूर है। मगर ध्यान रहे कि इसमें कुछ चीजों के मिलाने से यह स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा कर देता है।

खांसी-जुकाम करे काबू

सर्दियों में सर्दी-खांसी और जुकाम की आम तौर पर शिकायत रहती है। ऐसे में शहद को नुस्खे के तौर पर आजमाया जाए, तो इससे काफी राहत मिलती है। बस करना यह है कि पिप्पली को पीस कर शीशी में भर कर रख लें। अब एक छोटा चम्मच पिप्पली का चूर्ण लें और इसमें दो चम्मच शहद अच्छी तरह मिलाएं। इस मिश्रण को प्रतिदिन सुबह दोपहर और रात लें। यह सर्दी और जुकाम से राहत दिलाता ही है, वहीं रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ा देता है। सर्दियों में अगर गले में खराश हो रही हो, तो राहत के लिए गुनगुने पानी में शहद मिला कर लें।

देह-दिमाग को शक्ति

आजकल चुनौतियों से घिरे लोग धीरे-धीरे कमजोर हो रहे हैं। रही-सही कसर गलत खान-पान और अधूरी नींद ने पूरी कर दी है। नतीजा शरीर की ऊर्जा कम होने के साथ दिमाग भी उतनी तेजी से काम नहीं करता। ऐसे में गुणकारी शहद को नुस्खे के रूप में अवश्य आजमाना चाहिए। इसके लिए करना यह है कि अखरोट और बादाम को रात में पानी में भिगो कर छोड़ दें और सुबह इन्हें शहद के साथ खाएं। इससे शरीर को शक्ति तो मिलेगी, दिमागी ताकत भी बढ़ेगी। शहद के साथ बादाम और अखरोट का इस्तेमाल स्मरण शक्ति बढ़ाता है।

नींद और तनाव में

कई नुस्खों में शहद का इस्तेमाल किया जाता है। अगर किसी को अच्छी नींद चाहिए, तो उसे शहद अवश्य लेना चाहिए। दरअसल, शरीर में रक्त शर्करा अस्थिर होने से और तनाव के कारण अक्सर लोगों की सुकून भरी नींद गायब हो जाती है। ऐसे में शहद को अचूक नुस्खे के रूप में आजमाया जा सकता है। सोने से पहले एक चम्मच शहद लें। इससे नींद अच्छी आएगी। रक्त शर्करा भी स्थिर रहेगी।

नुस्खे

मोटापे पर काबू

मोटापे से कई लोग परेशान रहते हैं। कई बार तो जिम जाने और पार्क की सैर करने का भी असर नहीं पड़ता। शहद से इस समस्या से काफी हद तक छुटकारा मिल सकता है। एक गिलास गुनगुने पानी में नींबू की कुछ बूंदें निचोड़ कर डालें और फिर इसमें एक चम्मच शहद मिला कर लें। इससे मोटापा कम होता है। यों इससे पाचन भी दुरुस्त होता है। शहद इतना गुणकारी है कि इसके सेवन से त्वचा में निखार भी आता है।

त्वचा में विकार जरूरी है उपचार

सेहत

आज जिस वातावरण में मनुष्य रह रहा है, वहां बीमारियों से बचने के रास्ते कम ही हैं। जल और वायु प्रदूषण का दायरा इतना गहरा और बड़ा है कि कोई भी इससे बच नहीं सकता। शरीर की त्वचा उन्हें रोक नहीं पाती है और न ही प्रतिरक्षा प्रणाली रोग से लड़ पाती है। अगर यह प्रणाली विषाणुओं से लड़ती भी है, तो उसका प्रभाव शरीर पर तो दिखता ही है, त्वचा पर भी दिखाई देता है। यह किसी भी प्रदूषक तत्त्व से बचाव की एक प्रतिक्रिया है। नतीजा ये कि त्वचा पर लालिमा के साथ चकत्ते भी दिखाई देते हैं। खुजली के कारण मरीज को जलन भी होने लगती है। ऐसे में त्वचा में विकार के कारणों को जानना जरूरी है।

कारणों का दायरा

त्वचा की एलर्जी कई कारणों से होती है। यह 'एलर्जेन' या फिर सौंदर्य प्रसाधन-साबुन और धूल कणों से हो सकती है। कई लोगों को किसी दवा और खासकर दर्दनिवारक दवाओं से भी एलर्जी हो सकती है। कुछ खाद्य पदार्थों से भी त्वचा पर असर हो जाता है। समुद्री खाद्य व्यंजन, अंडे आदि से भी लोगों को एलर्जी हो जाती है। विषैला कीड़ा काटने से भी त्वचा पर चकत्ते पड़ जाते हैं। कभी-कभी पालतू जानवरों के संपर्क में आने से भी यह स्थिति पैदा हो जाती है। सुगंधित पदार्थ भी समस्या बढ़ाते हैं। यही नहीं एक्जिमा और सोराइस जैसी बीमारियां त्वचा में एलर्जी का ही रूप हैं। हालांकि कई बार तो मरीज को भी पता नहीं होता कि उसे एलर्जी किस चीज से हो रही है।

लक्षणों की पहचान

आमतौर पर एलर्जी से पीड़ित व्यक्ति की त्वचा पर लालिमा दिखती है। कभी-कभी सूजन भी हो जाती है। एलर्जी होने पर त्वचा में खुजली होती है जिससे लालिमा और बढ़ जाती है। ऐसे में मरीज को छाले भी हो जाते हैं। त्वचा पर फुंसियां होने का अंदेशा बढ़ जाता है। त्वचा में सूखापन भी दिखाई पड़ सकता है। प्रभावित क्षेत्र में जलन और चुभन होती है।

निदान के रास्ते

आमतौर पर त्वचा की एलर्जी कुछ दिनों से लेकर एक हफ्ते तक रह सकती है। किस वजह से त्वचा में लालिमा दिखाई दे रही है, अगर इसका पता लगा लिया जाए, तो निदान के रास्ते खुल जाते हैं। गंभीर एलर्जी को ठीक होने में कई हफ्ते लग सकते हैं। आजकल 'पैच परीक्षण' से एलर्जी के कारणों का पता लगा लिया जाता है। इससे मरीज को उन सभी चीजों से सतर्क कर दिया जाता है, जिनसे एलर्जी होती है। उपचार शुरू हो इससे पहले राहत के लिए ठंडी सिंकाई बहुत कारगर साबित होती है। यह खुजली तो कम करती ही है, सूजन में भी राहत पहुंचाती है। शरीर पर बने चकत्ते को रगड़ने या खरोंचने से मरीज को बचना चाहिए। एलर्जी पैदा करने वाले कारणों जैसे कुछ खास कपड़े, रसायनों और कुछ खाद्य पदार्थों से बचने की भी सलाह दी जाती है।

रखें अपना खयाल

त्वचा में एलर्जी से पीड़ित लोगों को शरीर में नमी बनाए रखने के लिए और शरीर से विषैले तत्त्वों को बाहर करने के लिए पर्याप्त पानी पीना चाहिए। अगर मरीज को किसी खास खाद्य पदार्थ से एलर्जी हो रही है, तो इसका पता चलते ही उसका सेवन तुरंत बंद कर देना चाहिए। अमूमन एलर्जी जल्दी ठीक नहीं होती। इसलिए मरीज को संयम से काम लेना चाहिए। मर्ज जब तक ठीक न हो, मसालेदार भोजन से बचना चाहिए। अच्छी तरह से पके हुए खाद्य पदार्थ एलर्जी के लक्षणों को कम करते हैं। मरीज को न केवल डेयरी उत्पादों से बल्कि मद्यपान से भी बचना चाहिए। कच्चे खाद्य पदार्थों से भी परहेज करना जरूरी है। फलों में तरबूज, पपीता और सेब लिया जा सकता है। खट्टी और तीखी चीजों, अचार, डिब्बाबंद पदार्थ और पेय से बचना चाहिए। एलर्जी गंभीर होने पर तुरंत त्वचा रोग विशेषज्ञ से संपर्क कर उपचार कराना चाहिए।

(यह लेख सिर्फ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।)

सम्मान और गरिमा के रिश्ते

जीवन शैली

रिश्तों में सम्मान का महत्त्व बहुत गहरा होता है। यह प्रेम एवं विश्वास को बनाए रखता है, भावनात्मक सुरक्षा देता है और आपसी समझ को बढ़ाता है। एक-दूसरे का सम्मान किए बिना रिश्ते सिर्फ बंधन या बोझ लगने लगते हैं। सम्मान ही वह ताकत है, जो व्यक्ति को अपनी बात शालीनता से कहने, सीमाओं को तय करने और परस्पर स्वीकृति की आजादी देता है, जिससे रिश्ते में मजबूती और स्थिरता कायम रहती है। जब सम्मान होता है, तो लोग बिना डरे अपनी भावनाएं और विचार व्यक्त कर पाते हैं। अगर कभी मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो जाए, तो सुलह का रास्ता खोजना आसान होता है। सम्मान समानता और संतुलन कायम करने में मदद करता है, इसके बिना रिश्ते वर्चस्व के संघर्ष में बदल सकते हैं। सम्मान के जरिए ही व्यक्ति को अपनी गलतियां स्वीकार करने और उन्हें सुधारने का मौका मिलता है, जिससे रिश्ता और गहरा होता है।

सीमा का खयाल

एक समय था जब संयुक्त परिवार में घर के मुखिया की बात को कोई नहीं टालता था। आज घर के सदस्य एक-दूसरे से खुलकर बात करते हैं, लेकिन इसके साथ ही रिश्तों में सम्मान का भाव भी धीरे-धीरे कम होने लगा है। ऐसे में रिश्तों के बीच व्यक्तिगत सीमाओं को समझना बेहद जरूरी है। हर बात पर सहमत होना जरूरी नहीं, लेकिन असहमति को सम्मानपूर्वक सुलझाया जा सकता है। किसी की पूरी बात सुने बिना या उस पर गंभीरता से विचार किए बिना उसे खारिज कर देने से मतभेद पैदा होते हैं। परिवार के सदस्यों में किसी विषय पर बहस होना स्वाभाविक है, लेकिन उस बहस का निष्कर्ष सर्वसम्मत होना चाहिए, ताकि किसी भी सदस्य के सम्मान को ठेस न लगे।

भावनाओं को समझें

रिश्तों में सम्मान का अर्थ है- एक-दूसरे की भावनाओं को समझना, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, परस्पर सुझावों पर गहराई से गौर करना। साथ मिलकर काम करना और भावनात्मक मूल्यों का सम्मान रिश्तों को गहराई देता है। इस तथ्य को स्वीकार करना जरूरी है कि दो व्यक्तियों का स्वभाव और सोचने का तरीका अलग हो सकता है, इसलिए एक-दूसरे पर अपने निर्णय थोपने का प्रयास रिश्तों में कड़वाहट ला सकता है। जहां सम्मान होता है, वहां धैर्य एवं ईमानदारी से बातें कहने-सुनने और रचनात्मक बातचीत में शामिल होने की संभावना अधिक होती है।

> ***रिश्तों** में सम्मान का अर्थ है- एक-दूसरे की भावनाओं को समझना, विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, परस्पर इच्छाओं और सुझावों पर गहराई से गौर करना।*

खुशहाली की कुंजी

रिश्तों में सम्मान एक सामंजस्यपूर्ण और सुखी जीवन की कुंजी है। यह प्रेम एवं स्नेह की धारा का एक अहम हिस्सा है, बल्कि स्वस्थ संबंधों के लिए भी जरूरी है। कुछ लोगों के लिए सम्मान का महत्त्व बहुत स्पष्ट होता है, जबकि कई लोग इस अंतर्द्वंद्व से जूझते रहते हैं कि बड़े निर्णय लेते समय भागीदारों से पूछना जरूरी है या नहीं। कभी-कभी खुशहाल रिश्ते भी तब खराब हो जाते हैं, जब उनमें से कोई एक साथी अपनी सीमा से परे जाकर दूसरे के प्रति सम्मान का उल्लंघन करता है। बदले में वह अपने प्रति सम्मान को भी खो देता है। दरअसल सम्मान वह आधार है, जिस पर एक स्वस्थ, खुशहाल और स्थायी रिश्ता टिका होता है, यह प्रेम और विश्वास को पोषित करता है।

चटपटा और पौष्टिक जायका

रसोई

चना मसाला

चना एक ऐसी दाल है, जिसे किसी भी अन्य दाल के साथ मिलाया जा सकता है, या फिर किसी सब्जी के साथ भी इसका संयोजन किया जा सकता है। अकेला चना भी अपने आप में बेहतरीन स्वाद देता है और बात अगर चना मसाला की हो तो इसका जायका हर किसी को पसंद आता है। विभिन्न मसालों का मिश्रण इसे चटपटा और लजीज बना देता है। इसे घर पर बनाना बहुत आसान है।

सामग्री

सफेद चनाः 250 ग्राम, प्याज (बड़े आकार का): एक, जीराः एक चम्मच, लहसुनः पांच-छह कलियां, अदरकः एक इंच, हरा धनियाः एक चम्मच, हरी मिर्चः दो-तीन, गर्म मसालाः एक चम्मच, हल्दीः आधा चम्मच, मिर्च पाउडरः आधा चम्मच, नमकः स्वादानुसार।

विधि

सफेद चना को पानी से धोकर कुकर में उबाल लें। इस बीच, लहसुन, अदरक, हरा धनिया और हरी मिर्च को पीसकर उसका पेस्ट बना लें। इसके बाद एक कड़ाही में तेल गर्म करके उसमें जीरा, मेथी दाना, सूखा धनिया और गर्म मसाला डालकर भून लें। सुनहरा लाल रंग आने पर इसमें कटे हुए प्याज डाल दें। इसके बाद लहसुन-अदरक का पेस्ट और हल्दी भी इसमें मिला दें और आंच धीमी कर दें। एक-दो मिनट बाद इसमें कटे हुए टमाटर डालें और साथ में जरूरत के मुताबिक पानी मिला दें। इसे तब तक उबालें, जब गाढ़ी तरी बन जाए। इसके बाद उबले हुए चने इसमें डाल दें और नमक मिलाकर चम्मच से अच्छी तरह चलाएं। अगर पानी कम हो तो थोड़ा और डाल दें। इसके बाद आंच को तेज कर दें और इसे बिना ढके उबलने दें। बीच-बीच में चम्मच से चलाते रहें। जब चना मसाला गाढ़ा और बुलबुलेदार हो जाए, तो इसमें नींबू का रस और चाट मसाला डालकर आंच से उतार दें। अब इसमें बारीक कटा हुआ हरा धनिया मिलाएं और चावल या रोटी के साथ परोसें।

सांबर

सर्दियों में अगर कुछ चटपटा और रसीला खाने का मन करे तो सांबर एक बेहतरीन विकल्प है। इसमें भुने हुए मसालों की महक हर किसी को अपनी ओर खींच लेती है। चाहे चावल हो, इडली-डोसा हो या रोटी, सांबर सभी के साथ खाया जाता है। इसे बनाने में थोड़ा वक्त लगता है, लेकिन यह स्वादिष्ट होने के साथ-साथ पौष्टिक भी होता है।

सामग्री

चना और उड़द दाल : आधी-आधी कटोरी, लौकी और बीन्सः आधा-आधा कप, लाल मिर्चः दो, साबूत धनियाः एक चम्मच, जीराः आधा चम्मच, मेथी के दानेः आधा चम्मच, टमाटरः तीन, अदरकः एक इंच, हरा धनियाः दो-तीन चम्मच, करी पत्ताः तीन चम्मच, नमकः स्वादानुसार।

विधि

चना और उड़द की दाल को कुकर में पकाएं और ठंडा होने पर इसे हाथ से मसल कर दरदरा बना दें। इसके बाद एक कड़ाही में साबुत मसाले डालकर उन्हें धीमी आंच पर हल्का सा भून लें। फिर इन्हें मिक्सी में डाल दीजिए, साथ ही टमाटर, अदरक और हरी मिर्च भी काटकर मिला दें और सभी को बारीक पीस लें। इसी बीच हरी सब्जियां लौकी और बीन्स को छोटा-छोटा काटकर एक पैन में उबाल लें। अब सांबर बनाने के लिए कड़ाही में तेल गरम करके उसमें सरसों के बीज और मेथी दाने डालकर हल्का सा भूनें।

इसके बाद करी पत्ते, हल्दी पाउडर और पिसा हुआ मसाला इसमें डाल दीजिए। जब मसाले से तेल अलग होने लगे तो उबली हुई सब्जियों को इसमें डाल दें। साथ ही थोड़ा सा पानी भी मिला दें। एक उबाल आने पर इसमें उबली हुई दालों का मिश्रण, इमली का रस, नमक और थोड़ा सा पानी डाल दें। इसे सात-दस मिनट तक धीमी आंच पर पकाएं। अब सांबर बनकर तैयार है। इसमें बारीक कटा हुआ हरा धनिया डालकर इसे चावल, इडली, डोसा या मनपसंद रोटी के साथ परोसें।

सम्पादकीय

'भारत तोड़ो' की साजिशें

बीती 16 दिसंबर वह तारीख थी, जब 1971 में पाकिस्तान के 93,000 फौजियों को भारतीय सेना के सामने आत्मसमर्पण करना पड़ा था। उन्हें अपने हथियार जमीन पर रखने पड़े थे। नतीजतन बांग्लादेश की मुक्ति का आगाज हुआ था। भारतीय सेनाओं ने बांग्ला मुक्ति संग्राम में विशेष योगदान दिया था और पाकिस्तान को दोफाड़ करने की लड़ाई लड़ी थी। पूर्वी पाकिस्तान, अंततः बांग्लादेश बना था। वह भारत का ही सृजन था, लेकिन शेख हसीना के प्रधानमंत्री पद से तख्तापलट के बाद हमारी ही 'औलाद' अब हमें आंखें दिखा रही है। यह असहनीय होना चाहिए। भारत को कड़ी प्रतिक्रिया, बल्कि कार्रवाई करनी चाहिए। सिर्फ उसके राजदूत को मंत्रालय में बुला कर विरोध जताने से कुछ नहीं होगा, क्योंकि नौबत 'भारत तोड़ो' तक की आ गई है। बांग्लादेश के अराजक और जेहादी तत्त्व धमकियां दे रहे हैं। पूर्वोत्तर के सात राज्यों को भारत से अलग करने, वहां विद्रोहियों को पुनः सक्रिय करने और तनाव, उग्रवाद फैलाने की धमकियों के अलावा साजिशें भी रची जा रही हैं। अब पाकिस्तान बांग्लादेश को अपना 'भाई' बता रहा है और साज़िशों का सूत्रधार बना है। उल्फा की सैन्य ईकाई के सरगना परेश बरुआ को चीन से ढाका लाने की कोशिशें जारी हैं, ताकि पूर्वोत्तर को फिर अस्थिर किया जा सके। ढाका में भारतीय दूतावास के बाहर बेहद उत्तेजक और उन्मादी विरोध-प्रदर्शन किया गया। दूतावास में घुसने की कोशिशें की गईं। नारे लगाए गए-'बाबर के रास्ते पर चलो, सात राज्यों को आज़ाद कराओ'ᵔ जो हत्यारे को पनाह दे, उसे तोड़ दो, तोड़ दो।' शेख हसीना को 'हत्यारा' करार दिया जा रहा है, जिन्हें भारत ने शरण दी है। बांग्लादेश सरकार की ओर से बार-बार आग्रह किया जा रहा है कि भारत शेख हसीना को सौंप दे। बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार (परोक्ष रूप से प्रधानमंत्री) मुहम्मद यूनुस 85 साल के हो गए हैं, लेकिन उनका एकमात्र मकसद शेख हसीना को फांसी पर लटकाने का लगता है। इस संदर्भ में वहां की एक अदालत से 'सजा-ए-मौत' का फैसला भी करा लिया गया है। यूनुस को 2006 में नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया था, लेकिन अब इस उम्र में उनकी राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाएं उभर आई हैं। देश का विकास जाए भाड़ में, उन्होंने बांग्लादेश को कट्टरपंथी इस्लामी देश में तबदील करने का मानो संकल्प लिया है! देश में हिंसक प्रदर्शन हो रहे हैं, हिंदुओं की हत्याएं की जा रही हैं और देश से बेदखल करने की धमकियां दी जा रही हैं, हिंदुओं के मंदिर, घर-दुकानों को तोड़-फोड़ कर आग के हवाले किया जा रहा है। यह पराकाष्ठा है कि अब पूर्वोत्तर राज्यों को भारत से अलग करने की साज़िशें सामने आ रही हैं। बांग्लादेश के कठमुल्ला, कट्टरपंथी बयान सामने आ रहे हैं कि बांग्लादेश और पूर्वोत्तर के बीच 'चिकननेक' को बंद किया जाए, ताकि पूर्वोत्तर अपने आप ही भारत से कट जाए। बांग्लादेश की कट्टरपंथी, भारत-विरोधी जमात यह नहीं जानती कि भारत 1971 में ही इस 'चिकननेक' को चौड़ा कर सकता था अथवा इसे अपने कब्जे में ले सकता था, लेकिन भारत ने बांग्ला की मुक्ति और आजादी का सम्मान किया।

प्राकृतिक दीवार के रूप में जलवायु संतुलन का कवच है अरावली

विवेक वैष्णव

अरावली एक ''प्राकृतिक दीवार'' की तरह काम करती है जो थार रेगिस्तान की रेत और गर्म हवाओं को दिल्ली, एनसीआर और उत्तर भारत की ओर बढ़ने से रोकती है। यह मानसून की हवाओं को रोककर राजस्थान के पूर्वी हिस्सों में वर्षा कराने में सहायक होती है। अरावली दक्षिण में रणथंभौर और उत्तर में सरिस्का जैसे बाघ अभयारण्यों के बीच वन्यजीवों के लिए एक सुरक्षित गलियारे का काम करती है। अरावली एक ''वाटर स्पंज'' की तरह है। इसकी दरार वाली चट्टानें बारिश के पानी को सोखकर ज़मीन के अंदर भेजती हैं।

अरावली केवल पत्थरों का ढेर नहीं है बल्कि यह उत्तर भारत की जलवायु को संतुलित रखने वाला एक महत्वपूर्ण ''कवच'' है। अडावाला पर्वत श्रंखला को राजस्थान की 'लाइफ लाइन' कहा जाता है और भू-जल स्तर को बनाए रखने में मदद करती है। यह श्रृंखला 'धारवाड़' चट्टानों से बनी है जो खनिजों के मामले में बहुत समृद्ध हैं। यही समृद्धि आज इसके विनाश का कारण (अवैध खनन) भी बनी हुई है। विनाश को विकास कहना हमारे लिए मूर्खता होगी। अरावली पर्वतमाला न केवल भारत बल्कि दुनिया की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है। अरावली सिर्फ एक पहाड़ नही है बल्कि भारत की साँस हैं। अरावली है तभी तो जल, जंगल ओर जीवन हैं। भू-वैज्ञानिकों के अनुसार अरावली का निर्माण 'प्री-कैम्ब्रियन' काल में हुआ था जो लगभग 350 से 570 करोड़ वर्ष पुराना है। यह हिमालय से कहीं अधिक प्राचीन है। अरावली आज जिस रूप में है वह अपने मूल स्वरूप का मात्र एक अवशेष है। करोड़ों वर्षों के घर्षण ने इसे काफी छोटा कर दिया है। जानकारों का तो मानना है कि प्राचीन काल में इसकी ऊँचाई हिमालय जितनी रही होगी।

अरावली एक ''प्राकृतिक दीवार'' की तरह काम करती है जो थार रेगिस्तान की रेत और गर्म हवाओं को दिल्ली, एनसीआर और उत्तर भारत की ओर बढ़ने से रोकती है। यह मानसून की हवाओं को रोककर राजस्थान के पूर्वी हिस्सों में वर्षा कराने में सहायक होती है। अरावली दक्षिण में रणथंभौर और उत्तर में सरिस्का जैसे बाघ अभयारण्यों के बीच वन्यजीवों के लिए एक सुरक्षित गलियारे का काम करती है। अरावली एक ''वाटर स्पंज'' की तरह है। इसकी दरार वाली चट्टानें बारिश के

पानी को सोखकर ज़मीन के अंदर भेजती हैं। अरावली के खत्म होने का मतलब इन क्षेत्रों का पूरी तरह से सूख जाना है। विशेषज्ञों का तर्क है कि अरावली केवल ऊँचे पहाड़ नहीं हैं बल्कि उनकी तलहटी और कम ऊँचाई वाली ज़मीन भी 'वाटर रिचार्ज' के लिए ज़रूरी है। यदि इसे पहाड़ नहीं माना गया तो यहाँ धड़ल्ले से निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा। विकास के नाम पर प्रकृति टूटी तो इसकी कीमत हमारे साथ ही आने वाली पीढ़ी भी चुकायेगी। वर्तमान में यही अरावली अपने अस्तित्व को लेकर एक बड़े विवाद और संकट के दौर से गुजर रही है। हाल ही में प्रशासनिक स्तर पर अरावली की ''नई परिभाषा'' को लेकर विवाद छिड़ा है। इसके तहत केवल 100 मीटर से ऊंची पहाड़ियों को ही ''अरावली'' का हिस्सा माना जा रहा है। सिर्फ एक कानूनी फैसले ने देश में चर्चाओ को जन्म देते हुए सोचने पर मज़बूर कर दिया है ओर अरावली पर संकट के काले बादल मंडराने प्रारम्भ हो गये हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि इससे राजस्थान की लगभग 91प्रतिशत पहाड़ियाँ कानूनी सुरक्षा से बाहर हो जाएंगी जिससे भू-माफियाओं को रास्ता मिल जाएगा। राज्यसभा में भी यह मुद्दा उठा कि अरावली की नई परिभाषा (100 मीटर से ऊँची पहाड़ी) पारिस्थितिक रूप से विनाशकारी है। सुप्रीम कोर्ट में पेश की गई रिपोर्ट्स के अनुसार अरावली की 128 पहाड़ियों में से लगभग 31 पहाड़ियाँ गायब हो चुकी हैं। पत्थरों और खनिजों के लालच में पहाड़ों को अवैध रूप से खोदा जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट कोर्ट ने कई बार अवैध खनन पर पूर्ण रोक लगाई है और सरकारों को चेतावनी दी है कि यदि अरावली खत्म हुई तो उत्तर भारत एक ''रेगिस्तान'' बन जाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने 2002 में अरावली में सभी प्रकार की खनन गतिविधियों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया था जिसे बाद में सशर्त ढील दी गई थी लेकिन अवैध खनन जारी रहा। 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा के फरीदाबाद में अरावली की ज़मीन पर बने 'कांट एन्क्लेव' के निर्माणों को गिराने का आदेश दिया था, यह कहते हुए कि वन भूमि को नष्ट नहीं किया जा सकता। कोर्ट ने चिंता जताई थी कि यदि पहाड़ ही गायब हो जाएंगे तो आने वाली पीढ़ियाँ केवल कहानियों में ही अरावली को देखेंगी।

अफ्रीका की 'ग्रेट ग्रीन वॉल' की तर्ज पर भारत सरकार भी एक महत्वकांक्षी योजना के तहत अरावली के चारों ओर 5 किलोमीटर चौड़ी एक ''ग्रीन बेल्ट'' विकसित करने पर काम कर रही है ताकि मरुस्थलीकरण को रोका जा सके। अरावली को बचाना केवल पेड़ों को बचाना नही है बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए पानी, साफ हवा और जीवन को सुरक्षित करना है। अरावली को ऊंचाई के स्थान पर उसके पारिस्थितिक योगदान के आधार पर परिभाषित किया जाना चाहिए। अरावली पर्वतमाला के पूरे क्षेत्र को ही ''वन संरक्षण अधिनियम'' के तहत आधिकारिक रूप से वन घोषित किया जाना चाहिए। अरावली को विनाशकारी खनन के बजाय संधारणीय पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिलने के साथ ही प्रकृति का अस्तित्व भी बना रह सके।

बेलगाम बांग्लादेश की अशांति भारत के लिये खतरा

ललित गर्ग

शरीफ उस्मान हादी की हत्या के लिए बिना किसी ठोस जांच के भारत पर आरोप मढ़ना और उसके बाद भारतीय मिशनों को निशाना बनाने की कोशिशें यह बताती हैं कि हिंसा केवल स्वतःस्फूर्त जनाक्रोश नहीं, बल्कि एक सुविचारित राजनीतिक और वैचारिक साजिश का हिस्सा है। इतिहास गवाह है कि जब भी बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ती है, कुछ कट्टरपंथी ताकतें भारत विरोध को एक आसान औजार की तरह इस्तेमाल करती हैं। इससे न केवल भीड़ को भड़काया जाता है, बल्कि आंतरिक विफलताओं से ध्यान हटाने का रास्ता भी मिल जाता है। अंतरिम सरकार की निष्क्रियता या मौन सहमति इस आशंका को और मजबूत करती है कि वह या तो इन ताकतों पर नियंत्रण खो चुकी है।

बांग्लादेश में बीते कुछ समय से जो घटनाक्रम सामने आ रहे हैं, वे किसी एक देश की आंतरिक समस्या भर नहीं रह गए हैं, बल्कि दक्षिण एशिया की समूची भू-राजनीतिक स्थिरता के लिए एक गंभीर चेतावनी बनते जा रहे हैं। युवा छात्र नेता शरीफ उस्मान हादी की हत्या के बाद जिस तरह ढाका सहित कई शहरों में हिंसा भड़की, उसने यह उजागर कर दिया कि मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार न तो कानून का शासन स्थापित कर पा रही है और न ही समाज को उन्माद व कट्टरता से बचाने में सक्षम दिखाई देती है। सड़कों पर उग्र भीड़, अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर हमले, हिन्दू धर्म-स्थलों को ध्वस्त करना, मीडिया संस्थानों के दफ्तरों में आगजनी, पत्रकारों पर हमले और असहमति की आवाजों को दबाने की कोशिशें यह संकेत देती हैं कि बांग्लादेश तेजी से अराजकता के दलदल में धंसता जा रहा है। यह स्थिति लोकतंत्र के भविष्य के लिए जितनी भयावह है, उतनी ही खतरनाक क्षेत्रीय शांति के लिए भी है।

इस पूरे परिदृश्य का सबसे चिंताजनक एवं त्रासद पहलू 'भारत विरोधी नैरेटिव' का सुनियोजित एवं षड़यंत्रपूर्ण निर्माण है। शरीफ उस्मान हादी की हत्या के लिए बिना किसी ठोस जांच के भारत पर आरोप मढ़ना और उसके बाद भारतीय मिशनों को निशाना बनाने की कोशिशें यह बताती हैं कि हिंसा केवल स्वतःस्फूर्त जनाक्रोश नहीं, बल्कि एक सुविचारित राजनीतिक और वैचारिक साजिश का हिस्सा है। इतिहास गवाह है कि जब भी बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ती है, कुछ कट्टरपंथी ताकतें भारत विरोध को एक आसान औजार की तरह इस्तेमाल करती हैं। इससे न केवल भीड़ को भड़काया जाता है, बल्कि आंतरिक विफलताओं से ध्यान हटाने का रास्ता भी मिल जाता है। अंतरिम सरकार की निष्क्रियता या मौन सहमति इस आशंका को और मजबूत करती है कि वह या तो इन ताकतों पर नियंत्रण खो चुकी है या फिर उनसे समझौता कर चुकी है। इसमें सबसे घातक है पाकिस्तान का साजिशपूर्ण तरीके से भारत विरोध को हवा देना।

भारत द्वारा अपने वीजा केंद्रों को अस्थायी रूप से बंद करना और बांग्लादेशी उच्चायुक्त को तलब करना इस पृष्ठभूमि में एक आवश्यक और संतुलित कूटनीतिक कदम कहा जा सकता है। किसी भी संप्रभु

राष्ट्र की यह जिम्मेदारी होती है कि वह विदेशी राजनयिकों और मिशनों की सुरक्षा सुनिश्चित करे। ढाका में भारतीय प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने की कोशिशें और वहां प्रशासन की ढुलमुल प्रतिक्रिया यह दर्शाती हैं कि अंतरिम सरकार इस बुनियादी दायित्व को निभाने में विफल रही है। कूटनीति केवल सौहार्द की भाषा नहीं होती, बल्कि यह स्पष्ट संदेश देने का माध्यम भी होती है कि भारत अपने हितों और नागरिकों की सुरक्षा के प्रश्न पर किसी तरह की उदासीनता स्वीकार नहीं कर सकता।

इस अशांति का सबसे दर्दनाक और संवेदनशील पक्ष बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों, विशेषकर हिंदुओं की बिगड़ती स्थिति है। कथित ईशनिंदा के आरोपों में एक हिंदू युवक की पीट-पीटकर हत्या इस बात का प्रमाण है कि कट्टरपंथी तत्वों को अब प्रशासन का कोई भय नहीं रह गया है। जब न्याय भीड़ के हाथों में चला जाए और सरकार अल्पसंख्यक अधिकारों पर केवल औपचारिक बयान जारी करती रहे, तो यह लोकतांत्रिक राज्य की आत्मा पर सीधा प्रहार होता है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चुप्पी भी इस संदर्भ में कई सवाल खड़े करती है। मानवाधिकारों और अल्पसंख्यक संरक्षण की दुहाई देने वाले वैश्विक मंच तब मौन क्यों हो जाते हैं, जब यह उल्लंघन रणनीतिक या राजनीतिक समीकरणों के भीतर घटित होते हैं। अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के पुत्र और सलाहकार साजीब वाजेद जॉय का यह कथन कि बांग्लादेश की आग से भारत अछूता नहीं रह सकता, केवल एक राजनीतिक बयान नहीं, बल्कि एक कड़वी सच्चाई है। भारत और बांग्लादेश के बीच हजारों किलोमीटर की साझा सीमा, सांस्कृतिक-सामाजिक रिश्ते और आर्थिक निर्भरता ऐसी है कि ढाका की अस्थिरता का असर स्वाभाविक रूप से भारत के सीमावर्ती राज्यों पर पड़ेगा। अवैध घुसपैठ, कट्टरपंथी नेटवर्कों की सक्रियता और सीमा पार अपराधों का खतरा इस अस्थिरता के साथ बढ़ता ही जाएगा।

आगामी फरवरी में प्रस्तावित आम चुनाव बांग्लादेश के लिए एक अवसर हो सकते थे, जिससे वह लोकतांत्रिक प्रक्रिया के जरिए स्थिरता की ओर लौट सके। लेकिन मौजूदा हालात में चुनाव की पारदर्शिता और शांति पर गंभीर प्रश्नचिह्न लग चुके हैं। कट्टरपंथी ताकतें जनभावनाओं को भड़काकर हिंसा का माहौल बनाए रखने में जुटी हैं, ताकि सत्ता का संतुलन अपने पक्ष में मोड़ा जा सके। अंतरिम सरकार का यह दायित्व है कि वह निष्पक्ष और भयमुक्त चुनाव सुनिश्चित करे, लेकिन अब तक के संकेत बताते हैं कि वह इस चुनौती के सामने कमजोर साबित हो रही है। इस पूरे परिदृश्य में पाकिस्तान की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। दक्षिण एशिया में अस्थिरता फैलाना और भारत के पड़ोस में अशांति, हिंसा एवं आतंक के बीज बोना पाकिस्तान की पुरानी रणनीति रही है। बांग्लादेश में कट्टरपंथी संगठनों और भारत विरोधी तत्वों को वैचारिक, नैतिक और कभी-कभी परोक्ष समर्थन मिलना कोई नई बात नहीं है। पाकिस्तान के लिए यह एक अवसर की तरह है, जहां वह बांग्लादेश की आंतरिक कमजोरियों का फायदा उठाकर भारत के खिलाफ एक और मोर्चा खोल सकता है। सोशल मीडिया अभियानों से लेकर दुष्प्रचार तक, कई संकेत इस ओर इशारा करते हैं कि बांग्लादेश में फैलाई जा रही भारत विरोधी भावना के पीछे पाक की सोच भी सक्रिय है।

व्यंग्य

अकादमी सम्मान की रुकी हुई घोषणा

विवेक रंजन

सचिव का इंतजार था जो संस्कृति मंत्रालय में निदेशक भी हैं।अकादमी सम्मान घोषित होने थे । इंतजार सिर्फ एक घोषणा का नहीं था , उस व्यवस्था का था जो कहती है कि साहित्य स्वायत्त है । देश दुनियां में साहित्य के मेरे जैसे जागरूक पाठक , सुधी रचनाकार , साहित्यिक पत्रकार सब इंतजार करते रह गए और कोई ब्यूरोक्रेट गले में आई कार्ड डाले हाल में आया , दबी जुबान में कह गया कि आज घोषणा नहीं होगी । शब्द सहम जाते हैं,दृश्य किसी रंगमंच का लगता है, पर है देश की साहित्य अकादमी का। काना फूसी है ऊपर से आदेश आया दो नाम जोड़ो किसी ने कहा जूरी और सरकार में टकराव हुआ है, किसी ने कहा नाम तय है पर घोषणा रुकी है। इस सारी गासिप में सच्चाई कहीं बीच में छिपी बैठी जरूर होगी पर उसे कुर्सी नहीं मिली, और सब हाल की कुर्सियां खाली होते देखते रहे। जिस हाल में कैमरे सज चुके हों , सवालों की फेहरिस्त तैयार हों और समय की सुई प्रेस कांफ्रेंस के तय समय पर अटक गई हो,वहां पर्दा उठने से पहले ही गिरा दिया गया और दर्शक तालियां बजाने के बजाय सिर खुजाते हाल से बाहर निकलने के लिए मजबूर हुए। साहित्य अकादमी के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि न प्रेस कांफ्रेंस हुई न प्रेस रिलीज जारी की गई। पत्रकार घर लौट आया पर खबर वहीं की वहीं अटकी रह गई। भीतर क्या हुआ यह कोई बताने को तैयार नहीं पर बाहर बैठे हर आदमी को पता है कि भीतर कुछ न कुछ जरूर हुआ है। मंत्री जी, सफेद शर्ट वाले आका जी , बड़े प्रकाशक, कोई ना कोई तो है जो घोषणा रोकने की ताकत रखता है। सरकारी गलियारों की यह खासियत होती है कि वहां जब कुछ नहीं होता तब भी भीतर ही भीतर बहुत कुछ हो रहा होता है और जब बहुत कुछ होता है तब भी उसे कुछ भी नहीं कहा जाता । सवाल है कि इस उठापटक के बाद जो पुरस्कार घोषित होंगे , उन्हें सम्मान कहा जाए या जुगाड़ , प्रेशर पॉलिटिक्स या प्रतिभा,कलम का अपमान अथवा समझौता, उपलब्धि या अनुकंपा। साहित्य का मौलिक स्वभाव प्रश्न करना है पर पुरस्कार का स्वभाव अक्सर चुप करा देना होता है। जो कल तक व्यवस्था की विसंगतियों पर कलम चलाता था आज उसी व्यवस्था की चुप्पी पर मौन साध ले तो आम पाठक के भीतर का आदमी सरे आम ठगा ठगा सा रह जाता है। यह वह बिंदु है जहां व्यंग्य जन्म लेता है , और रोता नहीं हंसता है ताकि रोने की आवाज कहीं दब न जाए। नोबेल पुरस्कार की राजनीति की बातें अब फुसफुसाहट नहीं रहीं। साम दाम दंड भेद के सूत्र वहां भी खुली किताब की तरह पढ़े जा रहे हैं। जब विश्व का सबसे प्रतिष्ठित मंच भी सत्ता समीकरणों से अछूता नहीं तो अपने यहां के छोटे बड़े मंचों से मासूमियत की उम्मीद करना बाल सुलभ ही है। उत्तर प्रदेश राज्य सरकार के सम्मान , पुरस्कार वर्षों से लंबित हैं और फाइलें धूल खा रहीं हैं। सम्मान अब महज योग्यता का नहीं धैर्य का इम्तहान भी बन गये है। इस पूरी कथा में सबसे रोचक यह है कि सबको सब पता है पर कोई कुछ नहीं जानता। यह अनभिज्ञता नहीं एक संस्थागत अभिनय है। जब अकादमी जैसे मंच पर प्रेस कांफ्रेंस का रद्द होना एक रहस्य बने , तो समझ लेना चाहिए कि साहित्य से ज्यादा राजनीति और साहित्य की जुगलबंदी की गोपनीयता फलफूल रही है। समाधान क्या है? समाधान वही पुराना है। पुरस्कारों की प्रक्रिया को सार्वजनिक किया जाए , जूरी की राय को संक्षेप में सामने रखा जाए , सरकार का दखल अगर है तो उसे स्वीकार कर,स्पष्ट वैधानिक नामांकन नीति बनाई जाए ताकि पर्दे के पीछे की फुसफुसाहट मंच के खुले संवाद में बदल सके। और सबसे जरूरी यह कि लेखक पुरस्कार को अंतिम सत्य न माने बल्कि पाठक को ही अपना स्थायी निर्णायक समझे। व्यंग्यकार के लिए यह समय उपजाऊ है क्योंकि विसंगति खुलेआम मुस्कुरा रही है। यह पूरा प्रसंग किसी प्रहसन से कम नहीं जहां पात्र गंभीर हैं, संवाद गुप्त हैं और मंच पर अंधेरा है। फर्क बस इतना है कि यहां शो के प्रवेश पत्र पाठक ने, लेखकों ने और साहित्य प्रेमियों ने ले रखे हैं पर शो रद्द कर दिया गया है। ऐसे में हंसी ही बचाव है और सवाल ही उम्मीद है। साहित्य अगर जीवित है तो वह इन रहस्यों पर हंसेगा भी और उन्हें उजागर भी करेगा। यही साहित्य की सदा से जिद रही है ,यही उसका दायित्व भी है।

तस्करों का देश नहीं है भारत फिर बच्चे क्यों गायब हैं?

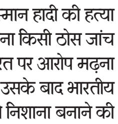

प्रो. आरके जैन

19 दिसंबर 2025 को सुप्रीम कोर्ट ने बाल तस्करी और बच्चों के वाणिज्यिक यौन शोषण को भारत की एक गहराई से परेशान करने वाली वास्तविकता बताते हुए कठोर टिप्पणी की। यह फैसला साफ संकेत देता है कि कड़े कानूनों के बावजूद ये अपराध इसलिए पनप रहे हैं, क्योंकि वे इक्का-दुक्का घटनाएं नहीं, बल्कि संगठित और सुनियोजित कार्टेलों का हिस्सा हैं। अदालत ने पीड़ित बच्चों की गवाही को विश्वसनीय ढंग से परखने के लिए अहम दिशानिर्देश जारी किए—छोटी-मोटी असंगतियों के आधार पर बयान खारिज न करने और यौन शोषण की स्मृतियों को बार-बार कुरेदने से पैदा होने वाली द्वितीयक पीड़ा के प्रति संवेदनशील रहने पर विशेष जोर दिया। यदि इन निर्देशों का जमीनी स्तर पर ईमानदारी से पालन हो, तो बाल तस्करी के खिलाफ संघर्ष को वास्तविक मजबूती मिल सकती है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के 2023 के आंकड़े इस संकट की भयावहता को और उजागर करते हैं। वर्ष 2023 में बच्चों के खिलाफ अपराधों के 1,77,335 मामले दर्ज हुए, जो 2022 की तुलना में 9.2% अधिक हैं। इनमें अपहरण और तस्करी की घटनाएं सबसे आगे हैं। मानव तस्करी के कुल 2,183 मामलों में अधिकांश पीड़ित बच्चे ही हैं।

हर आठ मिनट में एक बच्चा लापता हो रहा है, और लाखों ऐसे हैं जो कभी वापस नहीं मिलते। कोविड-19 महामारी के बाद हालात और बिगड़े हैं—कुछ इलाकों में तस्करी के मामलों में 68% तक की वृद्धि दर्ज हुई, कई राज्यों में अपहरण के मामले दोगुने से भी अधिक हो गए। गरीबी और सीमाओं की निकटता तस्करों के लिए रास्ते आसान बनाती है, और बच्चों के लिए खतरे कहीं अधिक गहरे हो जाते हैं। उत्तर प्रदेश जैसे राज्य इस भयावह संकट के केंद्र में हैं। यहां अपहरण के हजारों मामले दर्ज होते हैं और कोविड के बाद बाल तस्करी में तेज उछाल देखा गया है। अप्रैल 2025 में सुप्रीम कोर्ट ने अस्पतालों से नवजात शिशुओं की तस्करी पर कड़ा रुख अपनाते हुए निर्देश दिया कि ऐसे मामलों में संबंधित अस्पताल का लाइसेंस तत्काल निलंबित किया जाए। अदालत ने बाल तस्करी से जुड़े मुकदमों का निपटारा छह माह के भीतर करने का आदेश भी दिया। यह सख्ती इस कड़वी सच्चाई को उजागर करती है कि अस्पताल, जो जीवन के रक्षक होने चाहिए, अब कई जगह तस्करी के संगठित अड्डों में बदलते जा रहे हैं, जहां मिलीभगत के संकेत भी सामने आते हैं। इस अपराध की जड़ें गहरी सामाजिक-आर्थिक असमानताओं में धंसी हुई हैं। गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा परिवारों को बच्चों को काम पर भेजने के लिए मजबूर करती है, और वहीं तस्कर उन्हें अपने जाल में फंसा लेते हैं। दलित, आदिवासी और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बच्चे सबसे अधिक खतरे में हैं। कानूनों का कमजोर और असंगत क्रियान्वयन तस्करों को संरक्षण देता है। तकनीक का दुरुपयोग बढ़ा है—ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के जरिए बच्चों को बहकाया जाता है। अस्पताल, रेलवे स्टेशन और बस अड्डे कार्टेल के प्रमुख ठिकाने बन चुके हैं, जबकि राजनीतिक गठजोड़ और कानूनी पेचीदगियां जांच की राह में दीवार खड़ी करती हैं। केंद्र सरकार के आंकड़े बताते हैं कि 2020 से अब तक हजारों बच्चे लापता हैं, जिनमें बड़ी संख्या तस्करी का शिकार है।

भारत में बाल तस्करी रोकने के लिए सशक्त कानूनी ढांचा मौजूद है। संविधान का अनुच्छेद 23 मानव तस्करी पर पूर्ण प्रतिबंध लगाता है। भारतीय दंड संहिता, अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम 1956, पॉक्सो एक्ट, बाल संरक्षण अधिनियम 2012 और किशोर न्याय अधिनियम 2000 जैसे कानून इस अपराध से निपटने के लिए पर्याप्त प्रावधान करते हैं।

नए लेबर कोड: सुधार या खतरे की घंटी

भारत के श्रम बाज़ार में आज़ादी के बाद का सबसे बड़ा कानूनी बदलाव चुपचाप लागू कर दिया गया है। चार नए लेबर कोड—जिन्हें सरकार ऐतिहासिक सुधार बता रही है-देश के करोड़ों कामगारों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी को सीधे प्रभावित करेंगे। उद्योग जगत इसे आधुनिक अर्थव्यवस्था की ज़रूरत मानता है लेकिन मज़दूर संगठनों के लिए यह अधिकारों के क्षरण की शुरुआत है। असल सवाल यही है कि ये बदलाव रोजगार को सुरक्षित बनाएंगे या असुरक्षा को क़ानूनी जामा पहनाएंगे। क्या भारत स्थायी नौकरियों की अवधारणा से विदा लेकर कॉन्ट्रैक्ट और गिग इकॉनॉमी की ओर निर्णायक मोड़ ले चुका है? सरकार का दावा है कि नए लेबर कोड से उद्योगों को लचीलापन मिलेगा, निवेश बढ़ेगा और 'ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस' सुधरेगा। लेकिन किसी भी सुधार की असली परीक्षा यह होती है कि वह सबसे कमजोर तबके के लिए क्या बदलता है। अगर विकास की कीमत नौकरी की स्थिरता, कामगार की आवाज़ और सामाजिक सुरक्षा है, तो यह सुधार नहीं, चेतावनी की घंटी है। सवाल यह नहीं है कि बाज़ार कितना आज़ाद होगा. सवाल यह है कि काम करने वाले कितना सुरक्षित रहेंगे। सरकार ने 44 पुराने श्रम कानूनों को समेटकर चार कोड बनाए हैं—कोड ऑन वेजेज, कोड ऑन सोशल सिक्योरिटी, इंडस्ट्रियल रिलेशंस कोड और ऑक्युपेशनल सेफ्टी, हेल्थ एंड वर्किंग कंडीशंस कोड। वेजेज कोड 2019 में पारित हुआ जबकि शेष तीनों कोड 2020 में संसद से मंज़ूरी पा चुके थे। इसके बाद लंबे समय तक इन पर अमल नहीं हुआ जिससे यह धारणा बनी कि इन्हें ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है। 2024 में सरकार का दूसरा कार्यकाल समाप्त हो गया और तीसरे कार्यकाल के शुरुआती महीनों में भी इन पर कोई सार्वजनिक चर्चा नहीं हुई। ऐसे में अचानक इन श्रम संहिताओं को लागू करने की अधिसूचना जारी होना कई सवाल खड़े करता है। सरकार का तर्क है कि पुराने कानून बिखरे हुए थे और उनमें पारदर्शिता की कमी थी, इसलिए एक सरल और एकीकृत ढांचा बनाया गया। यह भी कहा गया कि ये कोड कर्मचारियों और मज़दूरों के हित में हैं और श्रम सुधारों की दिशा में एक प्रगतिशील कदम हैं लेकिन यह नहीं बताया गया कि पिछले कार्यकाल में इन्हें लागू करने से सरकार को किसने रोका था और अब अचानक इनकी क्या अनिवार्यता पैदा हो गई। यह भी याद रखना ज़रूरी है कि इन संहिताओं को जिस समय संसद से पारित कराया गया था, वह कोरोना महामारी का दौर था। नोटबंदी के बाद पहले से ही जूझ रही अर्थव्यवस्था पर महामारी ने करारा प्रहार किया। लाखों लोग बेरोज़गार हुए, प्रवासी मज़दूर सड़कों पर आ गए और देश ने अभूतपूर्व मानवीय संकट देखा। तब सरकार ने 'आत्मनिर्भर भारत' का नारा दिया था। दिलचस्प है कि अब, श्रम संहिताओं को लागू करते समय भी वही नारा दोहराया जा रहा है। लेकिन मज़दूर संगठन तब भी इनका विरोध कर रहे थे और आज भी यही कह रहे हैं कि ये संहिताएं मज़दूरों से ज़्यादा पूंजीपतियों के हितों को साधती हैं। न्यूनतम वेतन की गारंटी, एक साल में ग्रेच्युटी, महिलाओं को समान वेतन, समय पर सैलरी, गिग और प्लेटफॉर्म वर्कर्स की कानूनी पहचान-ये सभी प्रावधान काग़ज़ पर सकारात्मक दिखाई देते हैं। लेकिन असली चिंता वहीं से शुरू होती है, जहां नौकरी की स्थिरता, हड़ताल का अधिकार और काम के घंटों का सवाल आता है। यह समझना ज़रूरी है कि 'क़ानून' और 'संहिता' में बुनियादी अंतर होता है। क़ानून में उल्लंघन पर कड़ी सज़ा का प्रावधान होता है, जबकि संहिता में अधिकतर मामलों में जुर्माने तक ही सीमित दंड रखा गया है। इससे अनुपालन की गंभीरता अपने-आप कमजोर पड़ जाती है। फिक्स्ड टर्म कॉन्ट्रैक्ट (एफटीसी) को लेकर सबसे अधिक विवाद है। इसके तहत कंपनियां स्थायी पदों को भी कॉन्ट्रैक्ट आधारित बना सकती हैं। सरकार का कहना है कि एफटीसी वर्कर को स्थायी कर्मचारी जैसी सुविधाएं मिलेंगी, लेकिन मज़दूर संगठनों का तर्क है कि इससे नौकरी की सुरक्षा खत्म हो जाएगी। कॉन्ट्रैक्ट अवधि पूरी होते ही बिना किसी मुआवज़े के काम समाप्त किया जा सकेगा। इसके साथ ही फैक्ट्री बंद करने और छंटनी के लिए कर्मचारियों की सीमा 100 से बढ़ाकर 300 कर दी गई है। इसका मतलब यह है कि देश की लगभग 70–75 प्रतिशत औद्योगिक इकाइयाँ बिना सरकारी अनुमति कर्मचारियों को निकाल सकती हैं। उद्योग के लिए यह लचीलापन है लेकिन कामगारों के लिए असुरक्षा की एक चौड़ी खाई। कानून कहता है कि कुल काम के घंटे नहीं बढ़ाए जाएंगे लेकिन राज्यों को इसमें छूट दी गई है। कई राज्यों ने 12 घंटे की शिफ्ट और ओवरटाइम की ऊपरी सीमा बढ़ा दी है। यह व्यवस्था नियोक्ताओं के लिए सुविधाजनक हो सकती है, लेकिन मज़दूरों के लिए शारीरिक और मानसिक बोझ बढ़ाने वाली है। इंडस्ट्रियल रिलेशंस कोड की एक और विवादित धारा हड़ताल से जुड़ी है। अब हड़ताल से पहले 60 दिन का नोटिस अनिवार्य होगा। वार्ता, मध्यस्थता और रिफ़रल प्रक्रिया के दौरान हड़ताल पर रोक रहेगी और उल्लंघन की स्थिति में जुर्माना और जेल तक का प्रावधान है। पहले ऐसे नियम केवल ज़रूरी सेवाओं तक सीमित थे, अब इन्हें लगभग सभी क्षेत्रों पर लागू कर दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि हड़ताल अब एक संवैधानिक अधिकार से फिसलकर अपराध की श्रेणी में प्रवेश कर रही है। गिग और प्लेटफॉर्म वर्कर्स को पहली बार कानूनी परिभाषा दी गई है, यह एक महत्वपूर्ण कदम है लेकिन उनकी सामाजिक सुरक्षा कैसी होगी, फंडिंग कौन करेगा और पात्रता कैसे तय होगी-इन सवालों पर स्पष्टता नहीं है। पहचान मिल गई है, लेकिन सुरक्षा अभी भी धुंध में है। श्रम समवर्ती सूची का विषय है। कोड केंद्र ने बनाए हैं, लेकिन नियम राज्यों को बनाने हैं। कई राज्यों ने अभी तक पूरी अधिसूचना जारी नहीं की है। इससे देश में एक असमान श्रम ढांचा उभरता दिख रहा है, जहाँ काम के घंटे, सुरक्षा और अधिकार राज्य दर राज्य बदलेंगे। नए लेबर कोड भारत को ऐसे रोजगार मॉडल की ओर ले जाते दिखते हैं, जहां स्थायी नौकरी धीरे-धीरे अपवाद बनती जाएगी और कॉन्ट्रैक्ट व गिग वर्क सामान्य नियम।

कटाक्ष | सुरेश मिश्र

पंड़िया मरि गइ ठंड से, कुकुर उड़ावइं भोज
उधिराइल बाइन सुवर, खेत खनत हौं रोज
खेत खनत हौं रोज, देखाकर देसी कट्टा
लूटि लइ गए पिया,ट्यूबवेल वाला पट्टा
कह सुरेश ठंडी ना रोकि सकत बा सड़िया
अइब्या ना तउ हमहूं मरबइ जइसे पंड़िया

नाम परिवर्तन के साथ नीति में स्पष्ट सुधार

> भारत जैसे देश में आवश्यकता इस बात की है कि सरकारें नीति की निरंतरता बनाए रखें। योजनाएं किसी सरकार या व्यक्ति की नहीं, बल्कि जनता की होती हैं। सरकारी योजनाओं के नाम बदलने की राजनीति दरअसल भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता की परीक्षा है। यदि हम नामों से आगे बढ़कर परिणामों पर चर्चा करें, तो नीति विमर्श अधिक सार्थक होगा।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना एक्ट यानी 'मनरेगा' का नाम बदलकर 'विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन ग्रामीण यानी संक्षेप में 'जी राम जी' कर देने के साथ ही एक बार फिर से विभिन्न योजनाओं के नाम बदलने से खड़ा होने वाला विवाद सुर्खियों में है। जहां सत्ता पक्ष इसे ज़रूरी बता रहा है वहीं विपक्ष इतिहास को पुनर्परिभाषित करने का षड्यंत्र तो कह ही रहा है, साथ ही साथ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को भी उपेक्षित करने का आरोप सत्ता पक्ष पर लगा रहा है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में सरकारें आती-जाती रहती हैं किंतु शासन की निरंतरता योजनाओं के माध्यम से बनी रहती है। कहने के लिए तो इन योजनाओं का उद्देश्य आम नागरिक के जीवन में ठोस बदलाव लाना होता है परंतु पिछले दो दशकों में नई सरकारों द्वारा पुरानी सरकारों के द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के नाम बदलकर उसका राजनीतिक श्रेय लेने का 'खेल' भी लगातार देखने में आ रहा है। ऐसा नहीं है कि यह 'खेल' केवल वर्तमान सरकार तक सीमित हो बल्कि यह भी एक तथ्य और सत्य है कि इससे पूर्व की सरकारें भी ऐसा करती रही हैं और जिस तरह के आरोप अब विपक्ष लगा रहा है। पहले भी वर्तमान सरकार के दल जब विपक्ष में थी, वें भी ऐसे ही आरोप लगाया करते थे मगर सत्ता में आने के बाद वे स्वयं इसी प्रवृत्ति एवं रास्ते पर चलते दिखाई दे रहे हैं। प्रश्न यह नहीं है कि नाम बदले गए या नहीं बल्कि यह है कि क्या नाम परिवर्तन के साथ नीति, क्रियान्वयन और परिणाम भी बदले? यदि पलटकर देखें तो नाम बदलने की शुरुआत आज की सरकार से ही

नहीं हुई है अपितु 2004 के बाद यूपीए सरकार के कार्यकाल में भी ऐसा खूब हुआ। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना 'नरेगा' का नाम बदलकर महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना 'मनरेगा' किया गया। इसी प्रकार कई योजनाओं को तत्कालीन नेताओं या ऐतिहासिक व्यक्तित्वों से जोड़ा गया। उस समय यह तर्क दिया गया कि इससे योजनाओं को नैतिक प्रेरणा और पहचान मिलेगी। अधिक व्यापक दिखाई देती है। इंदिरा आवास योजना का नाम बदलकर प्रधानमंत्री आवास योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना को आयुष्मान भारत, निर्मल भारत अभियान को स्वच्छ भारत मिशन, जवाहरलाल नेहरू शहरी नवीनीकरण मिशन को अमृत योजना और मध्याह्न भोजन योजना को प्रधानमंत्री पोषण योजना में बदला गया। स्पष्ट है कि नाम परिवर्तन करना सत्ता परिवर्तन के साथ एक राजनीतिक श्रेय लेने एवं दूसरी सरकारों को उनके श्रेय से वंचित करने की प्रवृत्ति बन चुकी है और इस प्रवृत्ति के कीमत चुकानी पड़ती है देश को। इस संदर्भ में वर्तमान सरकार का दृष्टिकोण अपेक्षाकृत स्पष्ट है। अधिकांश योजनाओं के नाम में "प्रधानमंत्री" या "मिशन" शब्द जोड़ा गया। सरकार का तर्क है कि इससे योजनाओं को राष्ट्रीय पहचान मिलती है, जवाबदेही बढ़ती है और लाभार्थियों को यह स्पष्ट होता है कि योजना केंद्र सरकार की है। सरकार कहती है कि नाम परिवर्तन केवल प्रतीकात्मक नहीं बल्कि इन योजनाओं को अधिक व्यापक एवं लोक कल्याणकारी तथा समझने में आसान बनाना है। उदाहरण के लिए, आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत स्वास्थ्य बीमा की राशि को पहले की तुलना में बढ़ाया गया। पहले इस योजना के अंतर्गत केवल 30 से 40 हजार रुपए तक की सहायता मिल पाती थी जबकि अब यह सहायता 5 लाख तक बढ़ा दी गई है। प्रधानमंत्री आवास योजना में लक्ष्य और समय सीमा को स्पष्ट किया गया है। स्वच्छ भारत मिशन को केवल शौचालय निर्माण तक सीमित न रखकर व्यवहार परिवर्तन अभियान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। योजनाओं को प्रायः नेताओं के नाम से जोड़कर एक वैचारिक संदेश देने का प्रयास होता था। इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, जवाहरलाल नेहरू जैसे नामों के साथ योजनाएँ जोड़ना उस राजनीतिक धारा को मजबूत करता था जो स्वतंत्रता आंदोलन और उसके बाद की नीतियों को अपनी वैधता का आधार मानती थी। हालांकि वर्तमान सरकार ने भी कई योजनाओं के नाम दीनदयाल उपाध्याय और अटल बिहारी वाजपेई के नाम पर किए हैं, यानी जब जैसा सुविधाजनक लगे, राजनीतिक दल सरकार में आकर वैसा ही करने लगते हैं और यह प्रवृत्ति बहुत पहले से चली आ रही है। पहले भी आलोचनाएँ हुईं कि योजनाओं के नाम में व्यक्तियों का अत्यधिक उपयोग योजनाओं को राजनीतिक रंग देता है। अंतर केवल इतना है कि तब आलोचना अपेक्षाकृत सीमित थी जबकि आज मल्टीमीडिया, इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया की उपस्थिति व सक्रियता की वज़ह से यह एक बड़े राजनीतिक विमर्श का विषय बन रही है। विपक्ष का सबसे बड़ा आरोप यह है कि नाम बदलने से ज़मीन पर हालात नहीं बदलते। पुरानी योजनाओं को नए नाम देकर प्रचारित किया जाता है और जनता को भ्रमित किया जाता है कि नई योजनाएँ शुरू की गई हैं। इसके साथ ही विज्ञापन और ब्रांडिंग पर भारी सरकारी खर्च का प्रश्न भी उठाया जाता है। विपक्ष यह भी मानता है कि सरकार भारतीय लोकतंत्र की मूल आत्मा विकेंद्रीकरण को खत्म प्रयास कर रही है तथा व्यक्तिवाद को बढ़ावा दे रही है। इसके अतिरिक्त "प्रधानमंत्री-केंद्रित" नामकरण को संघीय ढांचे के विरुद्ध बताया जा रहा है क्योंकि योजनाओं के क्रियान्वयन में राज्यों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यदि एक तुलनात्मक विश्लेषण 'नाम बनाम परिणाम' के आधार पर किया जाए और निष्पक्ष देखा जाए तो दोनों ही पक्षों में कुछ सच्चाई है। यह भी सच है कि कई योजनाओं में केवल नाम बदला गया, जबकि ढांचा लगभग वही रहा। वहीं यह भी तथ्य है कि कुछ योजनाओं में वास्तविक सुधार, बजट वृद्धि और दायरा विस्तार किया गया। दरअसल समस्या तब पैदा होती है जब नाम परिवर्तन को ही उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यथार्थ और सत्य तो यही है कि विभिन्न योजनाओं का मूल्यांकन उनके नाम नहीं, परिणाम से होना चाहिए। अस्तु, कहा जा सकता है कि सरकारी योजनाओं का नाम बदलना न तो पूर्णतः ग़लत है और न ही पूर्णतः सही। यदि नाम परिवर्तन के साथ नीति में स्पष्ट सुधार, पारदर्शिता और परिणाम दिखाई दें, तो इसे सकारात्मक कदम माना जाना चाहिए किंतु यदि यह केवल राजनीतिक पहचान और श्रेय लेने का माध्यम बन जाए तो यह लोकतांत्रिक संसाधनों का दुरुपयोग है। भारत जैसे देश में आवश्यकता इस बात की है कि सरकारें नीति की निरंतरता बनाए रखें। योजनाएं किसी सरकार या व्यक्ति की नहीं, बल्कि जनता की होती हैं। नाम चाहे जो हो, असली सवाल यह है कि क्या योजना गरीब, किसान, श्रमिक, महिला और बच्चे के जीवन में वास्तविक बदलाव ला रही है? एक तरह से कहा जा सकता है कि सरकारी योजनाओं के नाम बदलने की राजनीति दरअसल भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता की परीक्षा है। यदि हम नामों से आगे बढ़कर परिणामों पर चर्चा करें, तो नीति विमर्श अधिक सार्थक होगा। सरकारें बदलेंगी, नाम भी बदल सकते हैं, यदि उद्देश्य जनकल्याण है तो उसे राजनीति से ऊपर रखा जाना चाहिए और यदि नाम केवल राजनीतिक विचारधारा को पुष्ट करने के लिए बदला जा रहा है।

■ **डॉ घनश्याम बादल**

कांग्रेस का सेना पर हमला आत्मघाती कदम

राहुल गांधी शोर मचाते हैं कि वोट चोरी के कारण कांग्रेस चुनाव हार रही है। उनका कहना है कि भाजपा चुनाव नहीं जीत रही है बल्कि कांग्रेस को हराया जा रहा है। मैं उनसे सहमत हूँ कि वोट चोरी हो रही है जिसके कारण कांग्रेस लगातार हार रही है। राहुल गांधी और उनके नेताओं के देशविरोधी बयानों के कारण वोट चोरी हो रही है। ऐसा लगता है कि लगातार मिल रही चुनावी हार के कारण कांग्रेस के नेताओं का धैर्य जवाब दे गया है। वास्तव में चुनाव में हारने के बाद नेता बहुत खतरनाक हो जाता है क्योंकि उसे अपनी हार के लिए अपने अलावा सब जिम्मेदार लगते हैं। वो सोचता है कि उसके जैसे योग्य और समझदार नेता के होते हुए जनता किसी दूसरे को कैसे चुन सकती है। यही कारण है कि वो अपनी हार के लिए जनता को भी दोष देने लगता है। भारतीय राजनीति में वो वक्त चला गया, जब नेता हार जाने के बाद जनता के फैसले को सिर झुकाकर स्वीकार कर लेता था । अब ऐसा वक्त आ गया है, जब कोई नेता हारता है तो वो चुनाव आयोग को दोषी बता देता है, कभी ईवीएम और कभी मतदाता सूची को दोष देता है। कांग्रेस और उसके नेता खुद को इस देश का मालिक समझते हैं, वो यह स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं कि देश की जनता उन्हें ठुकरा चुकी है। कांग्रेस को अब ये देश और उसकी पूरी व्यवस्था ही खराब नजर आने लगी है जबकि ये व्यवस्था उनकी ही खड़ी ही हुई है। द्वितीय विश्वयुद्ध में बर्बाद हो जाने के बाद खुद ही देश को आज़ाद करके निकल जाने वाले अंग्रेजों को भगाने का झूठा श्रेय लेने वाली कांग्रेस मानती है कि उसने देश को आज़ाद करवाया है, इसलिए सिर्फ उसे ही इस देश पर शासन करने का अधिकार है। इस झूठे विमर्श को चलाकर कांग्रेस ने 55 साल तक देश पर राज किया है। कांग्रेस की लगातार तीसरी हार के बाद पृथ्वीराज चव्हाण जैसे नेता भी अपना मानसिक संतुलन खो चुके हैं। उन्हें पता ही नहीं चल रहा है कि वो क्या बोल रहे हैं। उन्होंने भारतीय सेना पर ऐसा हमला किया है जिसकी उम्मीद हम दुश्मन देश पाकिस्तान से भी नहीं कर सकते। राजनीतिक समझ की दृष्टि से शून्य होती जा रही कांग्रेस अब ऐसे नेताओं के बयानों पर सफाई देने भी नहीं आती है। सेना, सुप्रीम कोर्ट, चुनाव आयोग और हिन्दू धर्म पर शर्मनाक बयान देना कांग्रेस नेताओं के लिए एक सामान्य बात हो गई है। चव्हाण के बयान पर भी कांग्रेस की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी है। इसका मतलब साफ है कि उनकी सोच कांग्रेस की वर्तमान विचारधारा के अनुकूल है। कितनी अजीब बात है कि इंदिरा जी के नेतृत्व में पाकिस्तान पर ऐतिहासिक जीत दर्ज करने वाले दिन, जिसे देश विजय दिवस के रूप में मनाता है, उसी दिन उनकी पार्टी का बड़ा नेता वीर सेना पर शर्मनाक बयान देता है। पृथ्वीराज चव्हाण ने अपने बयान में कहा है, "ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हुए भारत-पाक संघर्ष में हम पूरी तरह हार गए थे। 7 तारीख को जो आधे घंटे की हवाई लड़ाई हुई, उसमें हम पूरी तरह हार गए, चाहे लोग इसे मानें या मानें। भारतीय विमानों को मार गिराया गया। वायुसेना पूरी तरह से जमीन पर थी और एक भी विमान नहीं उड़ा।" चव्हाण ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि अगर ग्वालियर, बठिंडा या सिरसा से कोई विमान उड़ता, तो पाकिस्तान की ओर से उसे मार गिराए जाने की बहुत संभावना थी, इसलिए वायुसेना पूरी तरह से जमीन पर थी। इसके अलावा उन्होंने कहा कि हमने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान देखा कि सेना एक किलोमीटर भी आगे नहीं बढ़ी. दो-तीन दिनों में जो कुछ भी हुआ, वो सिर्फ हवाई युद्ध और मिसाईल युद्ध था। भविष्य में ऐसे ही युद्ध लड़े जाएंगे। ऐसी स्थिति में, क्या हमें सच में 12 लाख सैनिकों की सेना रखने की जरूरत है, या हम उनसे कोई और काम करवा सकते हैं। चव्हाण ने ये बयान किस आधार पर दिए हैं, इस बारे में उन्होंने कुछ नहीं बताया है। उनके पास ये जानकारी कैसे आयी, ये उन्हें बताना चाहिए था। वास्तव में चव्हाण कुछ नया नहीं बोल रहे हैं। जब से ऑपरेशन सिंदूर हुआ है, तब से राहुल गांधी लगातार सरकार से पूछ रहे हैं कि भारत के कितने विमान गिरे थे। एक तरह से वो भी भारतीय सेना की जीत को संदिग्ध बना रहे हैं। पाकिस्तान राहुल गांधी के बयानों को आधार बनाकर ही भारत को पूरी दुनिया में बदनाम कर रहा है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री और सेनाध्यक्ष अपनी जीत का डंका बजा रहे हैं। पाकिस्तान ऐसा देश है जो भारत से कई युद्ध हार चुका है लेकिन वो हर युद्ध में जीत का दावा करता आ रहा है। राहुल गांधी और कई विपक्षी नेताओं ने पाकिस्तान को मौका दे दिया है कि वो ऑपरेशन सिंदूर पर सवाल उठा सके। पृथ्वीराज चव्हाण के बयान ने पाकिस्तान को एक और मौका दे दिया है कि वो इस बयान के आधार पर भारत और भारतीय सेना का अपमान कर सके। चव्हाण के बयान की पाकिस्तानी मीडिया में जबरदस्त रूप से चर्चा हो रही है। उनके बयान का वीडियो पाकिस्तानी सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है। पाकिस्तानी नेता अपनी अवाम को बता रहे हैं कि भारत ने अपनी हार स्वीकार कर ली है। पाकिस्तान कह रहा है कि ऑपरेशन सिंदूर में भारत बुरी तरह हार गया था, अब इसे भारतीय नेता भी मान रहे हैं। पाकिस्तानी मीडिया में कहा जा रहा है कि भारत अपने विमान गिरने की बात नहीं मान रहा था, अब भारत के नेता ही बोल रहे हैं कि हमारे विमान पहले दिन ही गिर गए थे। देखा जाए तो कांग्रेस को सामने आकर उनके बयान का खंडन करना चाहिए था, लेकिन कांग्रेस तो पहले ही ऑपरेशन सिंदूर पर सवाल उठाती रही है। अगर सच में भारतीय सेना हार जाती तो पाकिस्तान कभी युद्ध-विराम नहीं करता । भारतीय सेना ने अपनी जीत के सबूत के तौर पर सैटेलाइट तस्वीरें जारी की हैं और वैश्विक मीडिया को बताया है कि उसने पाकिस्तान का कितना नुकसान किया है। भारतीय वायुसेना ने एक ही दिन में पाकिस्तान के 11 एयरबेस तबाह कर दिए थे जिनकी आज भी मरम्मत की जा रही है। पाकिस्तान के लोग ही भारतीय वायुसेना के हमले के वीडियो चलाकर बता रहे थे कि भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान को किस तरह से बर्बाद कर दिया है। भारतीय सैन्य अधिकारी मीडिया में अपनी कार्यवाही की ब्रीफिंग दे रहे थे। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय सेना की कार्यवाही के बारे में पूरा विवरण खुद सेना ने ही दिया था। इसका मतलब साफ है कि कांग्रेस को भारतीय सेना पर भरोसा नहीं है। सेना के बयानों के विपरीत कांग्रेस भारतीय सेना को हारा हुआ बता रही है। एक तरह से कांग्रेस देश के खिलाफ जाकर पाकिस्तानी प्रोपोगेंडा फैला रही है। अगर कांग्रेस की बात सच मानी जाए तो पाकिस्तान ने अपनी जीत के बड़े-बड़े दावे जरूर किये लेकिन वो अपनी जीत के पक्ष में एक भी सबूत मीडिया के सामने प्रस्तुत नहीं कर पाया ।

■ **राजेश कुमार पासी**

निजी अधिकार और सम्मान का मुद्दा

हिजाब विवाद की गूंज बिहार से ज्यादा अन्य राज्यों में सुनाई दे रही है। सोशल मीडिया पर नीतीश सरकार की तीखी आलोचना हो रही है। वहीं जदयू की ओर से सफाई देते हुए कहा गया है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मुस्लिम समाज, खासकर पसमांदा समाज के उत्थान के लिए लगातार काम किया है। दूसरी ओर अगर नुसरत परवीन अपने फैसले पर कायम रहती हैं तो यह देखना अहम होगा कि सरकार इस मामले में आगे क्या रुख अपनाती है। फिलहाल यह मुद्दा राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बना हुआ है और इस पर लगातार प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से जुड़ा हिजाब मामला अब और तूल पकड़ता जा रहा है। यह विवाद बिहार की सीमाओं से बाहर निकलते हुए दो राज्यों—उत्तर प्रदेश और कर्नाटक—तक पहुंच गया है जहां मुख्यमंत्री के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। नीतीश कुमार के खिलाफ पहली ज़ीरो प्राथमिकी उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के केसरबाग थाने में दर्ज की गई है। यह शिकायत समाजवादी पार्टी की प्रवक्ता सुमैया राणा ने कराई है। उन्होंने आरोप लगाया है कि सार्वजनिक मंच पर एक महिला का हिजाब हटाना महिला सम्मान और गरिमा के खिलाफ है। शिकायत में कहा गया है कि इस घटना से बड़ी संख्या में महिलाओं में नाराज़गी है और इसे हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। इसी मामले में कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में भी कानूनी कार्रवाई की गई है। यहां वकील ओवैज हुसैन ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के खिलाफ ज़ीरो प्राथमिकी दर्ज कराई है। उनका आरोप है कि यह कृत्य महिला की मर्यादा भंग करने की श्रेणी में आता है और सार्वजनिक जीवन में बैठे व्यक्ति से ऐसी संवेदनशीलता की अपेक्षा नहीं की जा सकती। समाजवादी पार्टी की प्रवक्ता सुमैया राणा ने मीडिया से बातचीत में कहा कि वह स्वयं भी हिजाब पहनती हैं और यदि उनके साथ इस तरह का व्यवहार होता तो वह भी चुप नहीं रहतीं। उन्होंने कहा कि यह मामला किसी एक महिला तक सीमित नहीं है, बल्कि सभी महिलाओं के निजी अधिकार और सम्मान से जुड़ा है। इस पूरे प्रकरण पर राजनीतिक बयानबाज़ी भी तेज हो गई है। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने नीतीश कुमार पर तंज कसते हुए कहा कि सार्वजनिक पद पर बैठे लोगों को अधिक संवेदनशील और जिम्मेदार व्यवहार करना चाहिए। विपक्ष इस घटना को सत्ता का अहंकार बता रहा है, जबकि सत्तापक्ष बचाव की स्थिति में नजर आ रहा है। हिजाब से जुड़ा यह मामला अब कानून, राजनीति और सामाजिक संवेदनशीलता के बीच एक बड़े विमर्श का रूप ले चुका है। बॉलीवुड की कई एक्ट्रेसेस ने इस मामले की खूब आलोचना की है। जायरा वसीम से लेकर राखी सावंत और अब सना खान ने भी मुस्लिम महिला डॉक्टर का हिजाब खींचने पर नीतीश कुमार के प्रति गुस्सा जाहिर किया है। आज जो हम अपनी सेफ्टी की बात करते हैं, मार्चेस करते हैं, कुछ हो जाता है तो हम प्रोटेस्ट करते हैं, कैंडेल मार्च करते हैं, ये सब हम क्यों कर रहे? क्योंकि हम सरकार से चाहते हैं कि लड़कियों की सुरक्षा के लिए कुछ हो। बिहार की राजधानी पटना में 15 दिसंबर को एक ऐसी घटना घटी जिसने महिला अस्मिता की रक्षा के गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

आज का कार्टून | साभार

दुनिया को प्रेरणा देता एक उजला देश भारत

मौजूदा दौर में समूची दुनिया में लगातार गहराती हिंसा, युद्ध, जातीय संघर्ष और धार्मिक उन्माद चिंता का विषय बने हुए हैं। कई देशों में आम नागरिक सीधे निशाने पर हैं. कहीं घर उजड़ रहे हैं और कहीं सत्ता के संघर्ष में निर्दोष लोग बलि चढ़ रहे हैं। इस वैश्विक चिंता के दौर में हाल ही में जनसंहार की रोकथाम का जिम्मा संभालने के लिए संयुक्त राष्ट्र में नव नियुक्त सलाहकार चलोका बेयानी ने पूरी दुनिया को आगाह करते हुए कहा कि अनेक देशों में टकरावों और युद्धों के दौरान आम लोगों को जानबूझ कर निशाना बनाए जाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है जिससे अत्याचार और गंभीर मानवाधिकार अपराधों का जोखिम तीव्र गति से बढ़ा है। उन्होंने 9 दिसम्बर को जनसंहार के भुक्तभोगियों की समृति व गरिमा और इस अपराध की रोकथाम के अन्तरराष्ट्रीय दिवस के अवसर पर इस बात पर भी भी चिंता जताई है कि अंतरराष्ट्रीय कानूनों के प्रति सम्मान में आ रही गिरावट एक बेहद खतरनाक संकेत है। बेयानी की यह चेतावनी एक ओर जहां समस्या की गंभीरता को दर्शाने वाली है वही दूसरी ओर पूरी मानवता के सामने संकट को व्यापक रूप में प्रस्तुत करती है लेकिन इसी के साथ यह तथ्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि भारत को लेकर विश्व के किसी भी मंच पर इस प्रकार की कोई आशंका व्यक्त नहीं की गई है। इस बात पर हर देशवासी को गर्व होना चाहिए कि समूचा विश्व आज भी भारत को एक ऐसे देश के रूप में देखता है जहां विविध संस्कृतियों, भाषाओं, खान-पान, जाति-धर्मों के बावजूद परस्पर सहयोग, शांति, समन्वय और लोकतांत्रिक संतुलन कायम है। दुनिया में हमारा देश ही ऐसा है, जहां सैकड़ों भाषाएं, अनेक धर्म, दर्जनों जातियां और अनगिनत सांस्कृतिक धाराएं एक साथ बहती चली आ रही हैं। अनेक विविधताओं के बावजूद हमारा समाज आज भी सह अस्तित्व, भाईचारे और सहयोग की भावना को अपने में समेटे हुए है। हमारे गांवों से लेकर शहरों तक, सबको अलग पहनावा है, अलग बोली है, अपने-अपने त्योहार हैं, अलग खान-पान है फिर भी सब एकजुटता से परिवार, समाज और देश को आगे बढ़ाने में जुटे हुए हैं। इसी मजबूत आधार पर देश खड़ा है और यह संदेश देता प्रतीत होता है कि अगर दृढ़ इच्छा हो तो विविधता को भी सबसे बड़ी ताकत बनाया जा सकता है। कश्मीरी पंडितों का नरसंहार और पलायन हमारे इतिहास का एक दर्दनाक अध्याय और एक ऐसा धब्बा है जिसे कोई भी संवेदनशील व्यक्ति अनदेखा नहीं कर सकता। उस दौर की पीड़ा आज भी स्मृतियों में जीवित है। इंदिरा गांधी की हत्या के बाद सिखों का कत्लेआम भी हमारे लिए सबसे शर्मनाक और पीड़ादायक अध्यायों में से एक है। वह ऐसा दौर था, जब व्यवस्था की विफलता ने निर्दोष लोगों को असहाय बना दिया। लेकिन आज के प्ररिपेक्ष्य में देखें तो अब देश ऐसे किसी भी संगठित खतरे और वैसी खतरनाक परिस्थितियों से बाहर निकल चुका है। वर्तमान में हमें ऐसी किसी त्रासदी की पुनरावृत्ति का डर नहीं सताता है क्योंकि हमारा सामाजिक और संवैधानिक ढांचा पहले से कहीं अधिक सजग, मजबूत और संतुलित बना है। नफरत के नियंत्रण से बाहर हो जाने पर सर्वाधिक शिकार मानवता ही होती है, कश्मीरी पंडितों और सिखों का कत्लेआम इसके उदाहरण हैं पर इनसे सबक लेते हुए देश ने जहां सबक लिया है बल्कि पहले से कहीं अधिक सतर्क, संवेदनशील और संवैधानिक रूप से मजबूत होकर खड़ा है। क्या तेजी से बढ़ते भारत में अब ऐसे अंधकारमय दौर को दोहराए जाने की कल्पना भी संभव है? इस बात को स्वीकारना होगा कि बीते कुछ सालों में देश के कुछ हिस्सों से हिंसा और सामाजिक तनाव की चंद घटनाएं सामने आई हैं। कहीं भीड़ के हाथों किसी की जान गई है, कहीं धार्मिक पहचान को लेकर आंशिक टकराव की स्थिति बनी है, कहीं उत्तेजक बयान देने वालों ने सामाजिक एकता में विष घोलने का प्रयास किया है मगर ऐसी घटनाओं की संख्या, उनका प्रभाव और उनके फैलाव को हम भारत की विशाल जनसंख्या और व्यापक सामाजिक ढांचे के संदर्भ में देखें तो यह कोई बड़ी बात नजर नहीं आती। हां, यह जरूर दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ ताकतें ऐसे अपवाद स्वरूप मामलों को पूरे देश की छवि खराब करने के लिए उदाहरण के रूप में पेश करने में जुट जाती हैं।

■ **अमरपाल सिंह वर्मा**

संपादकीय

ग़लतियां स्वीकार दें भविष्य

डॉ विजय गर्ग

जीवन में ग़लतियां होना स्वाभाविक हैं। हम सभी ग़लतियां करते हैं। कहा भी गया है कि इंसान ग़लतियों का पुतला है। इसका एक निहितार्थ ये भी हो सकता है कि व्यक्ति अपनी ग़लतियों से सीख कर ही इंसान बनता है। जैसे विभिन्न कठिनाइयां ही मनुष्य को विषम परिस्थितियों में जीना और आगे बढ़ना सिखाती हैं वैसे ही उसकी ग़लतियां भी मनुष्य को सबसे अधिक सीखने का अवसर प्रदान करती हैं। ग़लतियों के अभाव में मनुष्य कैसे कुछ सीखेगा? ग़लती कोई अपराध नहीं लेकिन ग़लतियों को सुधारना ज़रूरी है। ग़लती को न सुधारने से वह आदत बन जाती है, हमारे व्यवहार का अंग बन जाती है और हमारा अनिष्ट करके ही छोड़ती है। इसीलिए ग़लती का पता लगने पर भी उस ग़लती को दूर न करना अथवा एक ग़लती को बार-बार दोहराना अपराध नहीं होने पर भी अपराध से कम नहीं माना जाता। प्रायः जब हमसे कोई बड़ी ग़लती हो जाती है तो उसको छुपाने के लिए दूसरी ग़लती कर देते हैं और कई बार अपराध तक कर डालते हैं। जो व्यक्ति एक ही ग़लती को बार-बार करे उसके लिए अंग्रेज़ी में एक शब्द है एररिस्ट। एक एररिस्ट व टेररिस्ट में कोई विशेष अंतर नहीं होता। जब कोई व्यक्ति अपनी ग़लती को स्वीकार करके उसे सुधारने के बजाय उसे बार-बार करता है तभी वह टेररिस्ट या आतंकवादी बनता है। चोरी करना, परिग्रह एवं अतिशय लोभवृत्ति, झूठ बोलना, दादागीरी व हिंसा का सहारा लेना, आज का कार्य कल पर टालना, अपनी भावनाओं या विचारों पर नियंत्रण न करना, बात-बात पर क्रोध करना, क्षमाशीलता व संवेदनशीलता का अभाव, हर स्थिति में असंतुष्ट व छिद्रान्वेषी बने रहना व अन्य दूसरे नकारात्मक भाव या आदतें ऐसी ग़लतियां अथवा भूलें हैं जिन्हें स्वीकार करके उन्हें दूर करना या सुधारना अनिवार्य है। अन्यथा हमारे एक सामान्य व्यक्ति से निकृष्ट व्यक्ति में बदलते देर नहीं लगती। इन्हीं ग़लतियों के कारण एक व्यक्ति कुख्यात बन जाता है और इन्हीं को सुधारकर विख्यात अथवा प्रख्यात हो जाता है। वास्तव में हमारे सभी नकारात्मक भाव या उनसे उत्पन्न सब कर्म हमारी ग़लतियां ही होते हैं और उन्हें सुधारकर उनके स्थान पर सकारात्मक भाव या उनसे उत्पन्न सब कर्म ही जीवन का अपेक्षित विकास करते हैं। ग़लतियां किससे नहीं होतीं? गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में अपनी ग़लतियों अथवा कमियों को स्पष्ट रूप से लिखा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी जीवन में अनेक ग़लतियां कीं लेकिन उन्होंने कभी भी किसी ग़लती को छुपाया या दोहराया नहीं। उन्होंने हिम्मत के साथ अपनी ग़लतियों को स्वीकार कर उन्हें सुधारा। गांधी जी के बचपन की एक घटना है। उन पर एक दुकानदार का काफ़ी क़र्ज़ हो गया। उनका क़र्ज़ उतारने के लिए उन्होंने अपनी माताजी के सोने के कड़ों में से थोड़ा सा सोना काटकर बेच दिया और अपना क़र्ज़ चुका दिया। इस घटना से उन्हें बहुत दुख हुआ। वे आत्मग्लानि से भर उठे। वे सारी बातें अपने पिताजी को बतलाकर उनसे माफी मांगना चाहते थे लेकिन ऐसा करने की उनकी हिम्मत नहीं हुई। उन्होंने सारी बातें एक चिट्ठी में लिखीं और चिट्ठी पिताजी को दे दी। उनके पिता बीमार थे। जब उन्होंने चिट्ठी पढ़ी तो उनकी आंखों से आंसू बहने लगे। गांधी जी भी रोने लगे और उन्होंने पिताजी के सामने प्रण किया कि जीवन में कभी भी ग़लत कार्य अथवा चोरी नहीं करेंगे। हम सब जानते हैं कि गांधी जी ने जीवनभर अपने प्रण को बखूबी निभाया ही नहीं अपितु अपने दूसरे अवगुणों को भी त्याग कर सद्गुणों को अपने जीवन का आधार बनाया। जब पहली बार कोई ग़लती हो जाए तो उसे छुपाने के बजाय स्वीकार कर सुधार लेना ही दुरात्मा बनने के बजाय महात्मा बनने की दिशा में अग्रसर होना है। जब भी हम कोई नया काम करना सीखते हैं तो भी कुछ कमियां या ग़लतियां अवश्य रह जाती हैं। तो क्या हम वो काम करना ही बंद कर दें या जीवनभर ग़लतियां ही करते रहें? यदि हम चलते-चलते गिर पड़ें तो क्या हम वहीं पड़े रहें या उठकर वापस लौट जाएं? नहीं। गिरने के बाद उठना और दोबारा सावधानीपूर्वक आगे बढ़ना ही उन्नति व विकास का वास्तविक मार्ग है। ग़लती मानना भी बहुत हिम्मत की बात है और ग़लती मानने वाला अपराधी नहीं बहादुर व्यक्ति होता है। बहादुर व्यक्ति ही संसार में विजयी होते हैं।

शरीर ही ब्रह्माण्ड - माया का गहन समुद्र

> योगमाया ही सृष्टि का आवरण है। माया गुणातीत अवस्था है। यह समस्त सृष्टि ब्रह्म की इच्छा एकोऽहं बहुस्याम् की परिणति है प्रत्येक प्राणी ब्रह्म का विवर्त है अतः सभी माया से आवरित ब्रह्म हैं। न कहीं अकेला ब्रह्म होता है, न ही अकेली माया। अतः प्रत्येक प्राणी अर्द्धनारीश्वर है सृष्टि का। नर में ब्रह्म भाव का बाहुल्य तथा नारी में माया भाव की बहुलता रहती है।

सृष्टि पूर्व ब्रह्म जब गर्भ में था तब अदृश्य ही था। बाहर निकला योगमाया के आंचल में, तब भी अदृश्य है। पहले समुद्र से बाहर निकला - ब्रह्म रूप में, अव्यय पुरुष बनकर। ब्रह्म केन्द्र में था और योगमाया परिधि थी। यही पहली आकृति बनी। यह परिधि ही ब्रह्म का निवास कहलाया। जैसे-जैसे सृष्टि आगे बढ़ी, माया ने पहले निवास तैयार किया, फिर ब्रह्म ने अव्यय रूप में उसमें प्रवेश किया। सातों लोकों की प्रजा-सूक्ष्म से स्थूल तक अपनी प्रकृति के सहारे उत्पन्न की; आकृतियां बनाई और लीलाएं की।

अपनी इसी योगमाया को वर्णित करते हुए कृष्ण कहते हैं कि अपनी योगमाया से आवृत्त मैं सबको प्रत्यक्ष नहीं होता हूं। यह मोहित लोक (मनुष्य) मुझ जन्मरहित, अविनाशी को नहीं जानता है–

योगमाया ही सृष्टि का आवरण है। माया गुणातीत अवस्था है। यह समस्त सृष्टि ब्रह्म की इच्छा एकोऽहं बहुस्याम् की परिणति है प्रत्येक प्राणी ब्रह्म का विवर्त है अतः सभी माया से आवरित ब्रह्म हैं। न कहीं अकेला ब्रह्म होता है, न ही अकेली माया। अतः प्रत्येक प्राणी अर्द्धनारीश्वर है सृष्टि का। नर में ब्रह्म भाव का बाहुल्य तथा नारी में माया भाव की बहुलता रहती है। स्थूल जगत में पुरुष ब्रह्म की तथा स्त्री माया की प्रतिकृति है, साकार, सगुण व सजीव प्रतिमा है।स्त्री ही पुरुष की दृष्टि का आवरण बनती है। माया भी वही, योगमाया भी वही है। पूर्णता हेतु नर और नारी को अपने अर्द्धांश को भी पोषित करना आवश्यक है। अतः भारतीय परम्परा में विवाह-संस्कार महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान भौतिकवादी परिवेश में पुरुष का स्त्रैण भाग अब पूर्ण पोषित नहीं होता। स्त्री का प्रकृति रूप ही जीवन को चलाता है। अतः स्त्री का सूक्ष्म अंश भी पुरुष के लिए तो आवरित ही रहता है। जिस समय पुरुष अपने भीतर के सूक्ष्म भाग पर अधिकार कर लेगा, स्त्री की सूक्ष्मता का एक अंश तो तुरन्त स्पष्ट हो जाएगा।

पुरुष भी भीतर आधा स्त्री है। वहां भी माया के सारे रूप कार्य करते हैं। स्त्री शरीर में इनका स्वरूप प्रधानता लिए रहता है। माया दोनों शरीरों में गूढ़तम रहती है- ब्रह्मांश के आवरण रूप में। माया अंधकार का नाम है- ब्रह्म सदा इस अंधकार में ही निवास करता है। माया मार्ग कब देती है? जब पुरुष अपने अंश को दान करना चाहता है। माया की स्वीकृति के बिना संभव नहीं है। माया के लिए भी तप-योग-प्रार्थना की आवश्यकता है। देवी है, ब्रह्म की शक्ति है।

साधारण मनुष्य अविद्या के आवरण में जीता है। क्योंकि उसके जन्म का आधार ही अविद्या है।

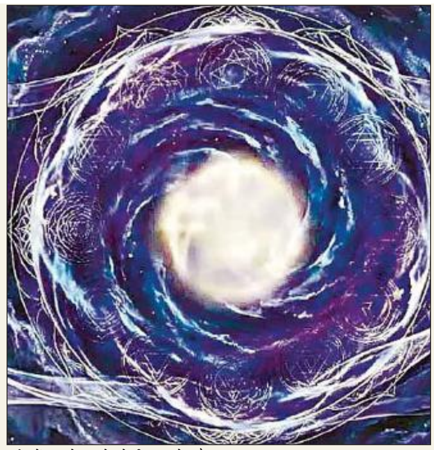

कर्मफलों का भोग करने को ही जन्म लेता है। मनुष्य शरीर अपरा का रूप है–पंच महाभूत, मन, बुद्धि, अहंकार। चूंकि मन, बुद्धि, अहंकार प्रकृति (सत्व-रज-तमोगुण) से आवरित हैं, अतः अविद्या का सहचर भाव होते ही इनके कई स्वरूप प्रकट हो जाते हैं।

अधिकांशतः व्यक्ति इस जाल से बाहर निकल ही नहीं पाता। देह अचेतन होती है किन्तु हमारी सारी कामनाएं देह से जुड़ी हैं। इसकी चकाचौंध, ऊर्जाओं का तांडव, लक्ष्मी का आकर्षण और भी जाने क्या-क्या इन्द्रजाल! व्यक्ति मुक्त हो ही नहीं पाता। प्रत्येक इन्द्रिय के अपने विषय होते हैं। वे भी इन्द्रियों द्वारा मन पर गिरते रहते हैं। एक मकड़ी जैसा जाल बन जाता है। कभी दृश्य, कभी ध्वनि, तो कभी स्वाद! आज शरीर भी भोग का, मनोरंजन का बड़ा साधन बनता जा रहा है, निरर्थक भाव के साथ। सामूहिक रंजन एवं सामाजिक परम्पराएं भी शरीर-तंत्र को खिलौना बना बैठे।

शरीर के साथ मन तो होता है, किन्तु चंचलता के साथ। बुद्धि भी जड़ जैसी है। इसमें संवेदना नहीं होती। इस स्थिति को पानी के बुद्बुद् जैसी कह सकते हैं, क्षणिक! इसके होने, नहीं होने का कोई अर्थ नहीं है। देर से शादी होना भी इस वातावरण को हवा देता है। सूक्ष्म शरीर और मन कारण शरीर को छू नहीं पाते। माया सुप्त रहती है।

ब्रह्म को क्रियाशील करने के लिए माया का योग पहली अनिवार्यता है। इसके लिए भिन्न प्रकार का वातावरण बनाया जाता है। मनोयोग, कामनाएं, संकल्प, प्रार्थना, मनुहार जैसे यत्न किए जाते हैं। माया के जागरण के बिना अन्य सभी प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। हां, भाग्य भी दूसरा कारण है जो फल से वंचित रख देता है।

जैसे कई फूल अतिसुन्दर होते हैं, किन्तु सुगन्ध नहीं होती। कुछ सुगंधित होते हैं, सुन्दर नहीं होते। कुछ सुन्दर भी और सुगंध वाले भी। कुछ पेड़ों पर फूल ही नहीं आते। कुछ पर फूल के साथ कांटे भी रहते हैं। कुछ में केवल कांटे ही होते हैं। ये सब भावनाओं की श्रेणियों की तरह समझे जा सकते हैं। जैसा भाव, वैसी अभिव्यक्ति। मुझे ब्रह्म का अंश लाना है तो माया को मनाना ही होगा।

यहां एक बड़ी रहस्यपूर्ण बात है। बीज पुरुष में रहता है, माया के आवरण में। ले जाना उसे दूसरे शरीर में होता है। स्त्री स्वयं माया है, कामना माया है। मन सृष्टि में केवल एक ही होता है- अव्यय पुरुष का मन। यह अव्यय पुरुष कारण शरीर है। शरीर की कामना यहां तक नहीं पहुंचती है। वे तो अधोगामी होती हैं।

कामना से प्राणों में स्पन्दन होता है। मन को भीतर जोडऩा जरूरी है। चूंकि स्त्री का बीजांश भी पति हृदय में रहता है, कन्यादान के माध्यम से पिता पुत्री के प्राणों को वर के प्राणों से मिला देता है। तब इनका मनोयोग इनको युक्त कर देता है। यह महामाया का क्षेत्र है। इनका मनोयोग ही अक्षर प्राणों को अव्यय के साथ जोड़े रखता है। मनोयोग ही माया को विस्थापित करके ब्रह्मांश प्राप्ति में सफल होता है।

ब्रह्म रस रूप है, माया बल रूप है। यही सृष्टि का मूल द्वन्द्व भी है। जहां रस की प्रधानता रहती है, वहां जीव मुक्तिसाक्षी हो जाता है। जहां माया बल प्रधान होता है, वहां सृष्टि आगे बढ़ती है। प्रत्येक शरीर में माया की इस भूमिका का प्रभाव भी दिखाई देता है। जब सृष्टि कामना है, तो महामाया हृदय से बाहर सृष्टि से अन्न ग्रहण करती है। विष्णु यह अन्न लाते हैं- ब्रह्मा तक। अव्यय का प्राण तत्त्व ही वाक् के निर्माण की ओर अग्रसर होता है।

ब्रह्मा-विष्णु एवं इन्द्र इन तीनों को 'हृदय' कहा जाता है। जैसे-अव्यय की एक माया है, उसी तरह इन तीनों की भी माया पृथक्-पृथक् है। ब्रह्मा को परिच्छिन्न करने वाली माया का नाम ब्रह्ममाया है। जिस माया से विष्णु का स्वरूप बनता है उसे विष्णुमाया कहते हैं। इसी से संसार का पालन होता है। तीसरी माया का नाम है-शिवमाया। तीनों ही मायाएं उस महामाया में युक्त रहती हैं अर्थात् अक्षर अव्यय में बद्ध रहता है। इसलिए इन तीनों मायाओं को योगमाया भी कहा जाता है। अव्यय की प्राण कला अक्षर पुरुष का तथा वाक्कला क्षर पुरुष का निर्माण करती है। अक्षर की ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, अग्नि व सोम इन पांच कलाओं से प्राण, आप, वाक् अन्न-अन्नाद ये पांच विकारक्षर उत्पन्न होते हैं। इन पांचों की जब पांचों में आहुति हो जाती है तो इस सर्व-हुत यज्ञ से स्वयम्भू-परमेष्ठी-सूर्य-चन्द्र एवं पृथ्वी-ये पांच यज्ञक्षर उत्पन्न होते हैं। इन्हीं पांचों से आगे की सारी सृष्टियां उत्पन्न होती हैं। इसलिए इनको 'विश्व-सृट्' भी कहा जाता है।

इन अक्षर-क्षर प्रकृतियों से घिरे अव्यय में योगमाया के उदय के कारण अनन्त पुरुष उत्पन्न होते हैं। उन्हीं को जीव कहा जाता है। अतः जीवों की उत्पत्ति का एकमात्र कारण ये तीनों योगमायाएं हैं। प्रत्येक जीव की योगमाया भी स्वतन्त्र हो जाती है। जितने जीव होते हैं, उतनी ही योगमायाएं हो जाती हैं। माया के साथ ही ब्रह्म भी (जीव इच्छा के अनुसार) माता के गर्भ में प्रविष्ठ होता है। योनि का निर्धारण कर्मों के अनुरूप महामाया (परा प्रकृति) के स्तर पर होता है। माया का समुद्र बड़ा ही गहन है। इसे पार करना अत्यन्त ही कठिन है, इसलिए आगम कहता है कि भगवती महामाया देवी ज्ञानियों के भी चित्त को बलपूर्वक खींच कर मोह में डाल देती है–

भारत-ओमान मुक्त व्यापार समझौता बदलती दुनिया में साझेदारी की नई राह

बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्य में भारत और ओमान के बीच गुरुवार को हुए मुक्त व्यापार समझौते को आर्थिक मोर्चे पर एक दूरगामी असर वाली साझेदारी के तौर पर देखा जा सकता है। दरअसल, पिछले कुछ वर्षों से दुनिया के कई विकसित और शक्तिशाली देश अपने इर्द-गिर्द एक ऐसा घेरा बनाने की कोशिश में हैं, जिसमें तीसरी दुनिया के देशों की उन पर निर्भरता बनी रहे और वे मन-मुताबिक अपनी सुविधा की शर्तें उन पर थोपते रहें। जबकि पारंपरिक रूप से सहयोगी रहे या फिर नए सिरे से संबंध विकसित करने में रुचि रखने वाले देशों के मामले में भारत का रुख पहले भी परिपक्व और उदार रहा है।

इस क्रम में अब ओमान के साथ भारत ने जिस तरह व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता किया है, वह आने वाले समय में न केवल दोनों देशों के आर्थिक संबंधों में एक नया आयाम रचेगा, बल्कि बहुध्रुवीय दुनिया में विकल्पों के नए मोर्चे भी सामने आ सकते हैं। इससे पहले भी भारत ने ताकतवर देशों के प्रभाव में आने के बजाय अपनी जरूरत के मुताबिक सहयोग के मोर्चे पर कदम बढ़ाया है।

गौरतलब है कि भारत और ओमान के बीच पिछले करीब सात दशक से अच्छे और कूटनीतिक संबंध रहे हैं। उसी को और मजबूत करने तथा अपने व्यापार को विस्तार देने के उद्देश्य से भारत ने ओमान के साथ अब जिस मुक्त व्यापार समझौते को आकार दिया है, उसके सकारात्मक असर अगले कई दशक तक देखने को मिल सकते हैं।इस करार के बाद दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश को नई गति मिलने और खासतौर पर युवाओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों में अवसर खुलने की उम्मीद की जा रही है। समझौते के तहत वस्त्र, कृषि उत्पाद और चमड़े के सामान सहित भारत के अट्ठानबे फीसद निर्यात को ओमान में शुल्क-मुक्त पहुंच मिलेगी। वहां के प्रमुख सेवा क्षेत्रों में भारतीय कंपनियों को विदेशी निवेश की अनुमति में भी बड़ी कामयाबी मिली है।

जाहिर है, इस सबसे श्रम की प्रमुखता वाले कई क्षेत्रों को बड़ा लाभ मिलेगा, रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे और लघु तथा मध्यम उद्योगों के साथ-साथ कारीगरों से लेकर महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों को मजबूती मिलेगी।

इसके अलावा, खाड़ी क्षेत्र में ओमान ऐसा देश है, जहां भारतीय सेना की तीनों शाखाएं नियमित संयुक्त अभ्यास करती हैं। इस लिहाज से देखें तो भारत को जिस तरह पहले से ही ओमान के दुक्म बंदरगाह पर जरूरत होने पर साजो-सामान के उपयोग की सुविधा मिली हुई है, उसमें नया समझौता सहयोग को और मजबूत करेगा।दुक्म बंदरगाह भारत के लिए एक वैकल्पिक रणनीतिक ठिकाना है और यह भारतीय नौसेना को पश्चिमी हिंद महासागर में मजबूत आधार देता है। ऐसे में दोनों देशों के बीच हुए करार की अहमियत समझी जा सकती है।

खासतौर पर पिछले कुछ महीने से जिस तरह अमेरिका ने मनमाने तरीके से शुल्क लगा कर अपनी सुविधा के मुताबिक नीतियां बनाने के लिए भारत पर दबाव डाला, वह एक तरह से व्यापार में वर्चस्व कायम करने की कोशिश थी। दूसरी ओर, चीन है, जिसे कारोबार के मामले में भारत के लिए वैकल्पिक रास्ते खुलने से निराशा होगी।

मगर ओमान सहित अनेक देशों के साथ भारत के अच्छे संबंध रहे हैं और उसे मजबूत करने के क्रम में विकल्प खुलते हैं, तो यह भारत की उपलब्धि है। अमेरिका और चीन जैसे देशों के लिए भी यह सोचने का मौका है कि बहुध्रुवीय विश्व और बदलते समीकरण के दौर में क्या कोई देश अपना वर्चस्व कायम करने की नीति पर ज्यादा देर टिक सकता है!

किधर जा रहा बांग्लादेश बिगड़ती कानून-व्यवस्था, हिंदुओं पर हमले और भारत की बढ़ती चिंता

> सवाल है कि वहां अंतरिम सरकार का जिस मकसद से गठन किया गया था, क्या वह चरमपंथियों के दबाव में अपना उद्देश्य भूल गई है? आखिर क्या वजह है कि वहां न तो कानून-व्यवस्था दुरुस्त हो पा रही है और न ही लोकतांत्रिक तरीके से सरकार चुनने का मार्ग प्रशस्त हो पा रहा ह

बांग्लादेश में अराजकता फिर से अपने पांव पसारने लगी है। हाल ही में वहां एक प्रमुख नेता की गोली मारकर हत्या कर दिए जाने के बाद शुरू हुए हिंसक प्रदर्शनों से कई जगह हालात तनावपूर्ण हो गए हैं। इस बीच अल्पसंख्यकों, खासकर हिंदू समुदाय की सुरक्षा को लेकर भी खतरा पैदा हो गया है। वहां गुरुवार को ईशनिंदा के आरोप में एक हिंदू व्यक्ति की पीटकर हत्या कर दी गई और उसके शव को आग लगा दी गई। इससे स्पष्ट है कि बांग्लादेश में अंतरिम सरकार का विरोध करने वालों के साथ-साथ अल्पसंख्यकों को भी निशाना बनाया जा रहा है।

सवाल है कि वहां अंतरिम सरकार का जिस मकसद से गठन किया गया था, क्या वह चरमपंथियों के दबाव में अपना उद्देश्य भूल गई है? आखिर क्या वजह है कि वहां न तो कानून-व्यवस्था दुरुस्त हो पा रही है और न ही लोकतांत्रिक तरीके से सरकार चुनने का मार्ग प्रशस्त हो पा रहा है? अस्थिरता और हिंसा के इस माहौल में बांग्लादेश-भारत के संबंध भी लगातार चुनौतीपूर्ण होते जा रहे हैं।

बांग्लादेश में शरीफ उस्मान हादी नामक जिस नेता की गोली मारकर हत्या

की गई, वह जुलाई में सरकार के विरुद्ध हुए प्रदर्शनों में प्रमुख चेहरा थे। सरकार की ओर से गुरुवार को उनकी मौत की पुष्टि किए जाने के बाद कई जगह हिंसक प्रदर्शन शुरू हो गए।

कुछ लोगों ने भारतीय सहायक उच्चायुक्त के आवास पर भी ईंट और पत्थरों से हमला किया। इससे पहले बांग्लादेश के कुछ राजनेताओं ने जिस तरह भारत के खिलाफ भड़काऊ बयान दिए, उसका सीधा असर भारत के साथ उसके संबंधों पर पड़ा है।

बांग्लादेश में सुरक्षा का माहौल जिस तेजी से बिगड़ रहा है और पहले भी पूर्वोत्तर भारत के कुछ अलगाववादी समूहों ने बांग्लादेश में शरण ली है, उसके मद्देनजर भारत की चिंता स्वाभाविक है।

फिलहाल बांग्लादेश में जिस तरह की अराजकता फैली हुई है और उसकी आंच में बहुत कुछ झुलसने की आशंका है, उसे देखते हुए भारत सरकार को चाहिए कि वह कूटनीतिक स्तर पर इन मसलों को बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के समक्ष प्रभावी तरीके से उठाए।

लोगों ने पहली बार एक नया रंग देखा

> स्पष्ट रूप से, यह पर्यटन व धार्मिक आस्था पर प्रहार था। अब तक की जांच में यह सामने आया है कि इस हमले के आरोपी इस्लामिक स्टेट की विचारधारा से प्रभावित थे। इनमें भारतीय मूल का हमलावर साजिद अकरम हैदराबाद से संबंधित था। वह बेहतर भविष्य की तलाश में 27 वर्ष पहले ऑस्ट्रेलिया गया था

डॉ विजय गर्ग

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले और वाशिंगटन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने एक अभूतपूर्व अध्ययन में दावा किया है कि उन्होंने पांच व्यक्तियों को उस रंग को समझने में सक्षम बनाया है जो पहले नग्न मानव आंख से अदृश्य था। इस पहले कभी न देखे गए रंग को, जिसे प्रतिभागी असाधारण रूप से संतृप्त नीले-हरे रंग के रूप में वर्णित करते हैं, का नाम 'ओलो।' रखा गया है साइंस एडवांस जर्नल में प्रकाशित यह खोज एक अग्रणी तकनीक पर निर्भर करती है, जो वैज्ञानिकों को रेटिना में एक विशिष्ट प्रकार के फोटोरेसेप्टर कोशिका को चयनात्मक रूप से उत्तेजित करके मानव दृष्टि की प्राकृतिक सीमाओं को दरकिनार करने की अनुमति देती है। 'ओलो' के पीछे का विज्ञान मानव आंखें आमतौर पर तीन प्रकार की प्रकाश-संवेदनशील कोशिकाओं के माध्यम से रंग को समझती हैं जिन्हें शंकु कहा जाता है एल शंकु (लंबी तरंग दैर्ध्य, लाल के प्रति संवेदनशील) एम शंकु (मध्यम तरंगदैर्ध्य, हरे रंग के प्रति संवेदनशील) एस शंकु (छोटी तरंगदैर्ध्य, नीले रंग के प्रति संवेदनशील) प्राकृतिक प्रकाश की स्थिति में, हम जो भी रंग देखते हैं, वह इन शंकुओं के संयोजन को उत्तेजित करता है, क्योंकि उनकी संवेदनशीलता एक दूसरे से मिलती-जुलती होती है। मस्तिष्क इन संकेतों के अनुपात की व्याख्या करके हमारे द्वारा अनुभव किए जाने वाले रंग का विशाल स्पेक्ट्रम तैयार करता है। यूसी बर्कले के इंजीनियरों के नेतृत्व में शोध दल ने 'ओज़ विजन सिस्टम' नामक एक उच्च तकनीक प्रणाली विकसित की (एमराल्ड सिटी का संकेत) । यह प्रणाली उन्नत लेजर प्रौद्योगिकी और रेटिना ट्रैकिंग का उपयोग करती हैः रेटिना का मानचित्रण करें: व्यक्तिगत एल, एम और एस शंकुओं को सटीक रूप से ज्ञात करें और उनकी पहचान करें। एम शंकु को लक्षित करें: एल या एस शंकुओं को उत्तेजित किए बिना, सीधे और विशेष रूप से एम शंकू (हरे-संवेदनशील शंकु) पर लेजर पल्स चलाएं। यह पृथक उत्तेजना एक अद्वितीय संकेत पैटर्न बनाती है - 0 (एल): 1 (एम):0 (एस) का अनुमान, जिसने 'ओलो' नाम को प्रेरित किया। यह संकेत मानव मस्तिष्क को प्राकृतिक दुनिया में प्राप्त होने वाली किसी भी चीज़ से भिन्न है। 'ओलो' कैसा है? अध्ययन में भाग लेने वाले पांच प्रतिभागियों ने, जिनमें कुछ शोधकर्ता भी शामिल थे, 'ओलो' को 'अभूतपूर्व संतृप्ति का नीला-हरा रंग' या 'गहरी तरह से संतृप्त टील' बताया उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यद्यपि वे रंग-मेल परीक्षण में इसे अत्यधिक संतृप्त टील से मिला सकते हैं, लेकिन वास्तविक अनुभव कहीं अधिक तीव्र, जीवंत और किसी भी वर्तमान प्रदर्शन प्रौद्योगिकी की क्षमताओं से परे था। जैसा कि प्रयोग के सह-नेता प्रोफेसर रेन एनजी ने कहा, यह ऐसा है जैसे 'हमारी आंखों की आदत से कहीं अधिक चमक और रंग डायल को चालू करना। महत्व और विवाद समर्थकों का तर्क है कि चूंकि यह तकनीक एक तंत्रिका संकेत पैटर्न उत्पन्न करती है, जिसका मानव दृश्य प्रणाली ने पहले कभी सामना नहीं किया है, इसलिए परिणामी धारणा एक वास्तविक 'नया रंग' है यह उपलब्धि साबित करती है कि मानव आंख को उसके प्राकृतिक दायरे से परे रंगों को देखने के लिए प्रोग्राम किया जा सकता है और इसमें नई संभावनाएं खुलती हैं दृष्टि विज्ञानः रंग अंधापन जैसे अपक्षयी नेत्र रोगों की बेहतर समझ और उपचार। डिस्प्ले और इमर्सिव मीडियाः भविष्य की प्रौद्योगिकियों द्वारा वर्तमान सीमाओं से परे दृश्य अनुभव बनाने की संभावना। हालांकि, आलोचकों का तर्क है कि यद्यपि तकनीकी उपलब्धि प्रभावशाली है, लेकिन रंग तकनीकी रूप से 'नया' नहीं है उनका तर्क है कि 'ओलो' केवल एक अति-संतृप्त हरा/नील रंग है और यह धारणा मौजूदा रंग श्रेणी में आती है, भले ही इसका संतृप्ति स्तर अप्राकृतिक हो। नामकरण बहस की परवाह किए बिना, 'ओलो' की खोज मानव धारणा की सीमाओं में एक दुर्लभ झलक प्रदान करती है । **डॉ विजय गर्ग** सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर पंजाब

गुरु महिमा की कहि सके, भक्ति शारदा शेष।
देव सदाफल गुरु कृपा, पाये पद अवशेष।।

गांवों में 'आप'

संपादकीय

आम तौर पर आम आदमी पार्टी को शहरी जनाधार वाली पार्टी के रूप में देखा जाता रहा है। लेकिन हालिया ग्रामीण निकाय चुनावों में उसकी जीत ने राजनीतिक विश्लेषकों को खूब चौंकाया है। पंजाब के जिला परिषद और पंचायत समिति चुनावों के परिणामों ने राजनीतिक वर्चस्व और उभरते मतभेदों की कहानी भी बयां की है। सत्ताधारी आम आदमी पार्टी यानी आप ने ग्रामीण निकाय चुनावों में शानदार सफलता को दर्ज करते हुए राज्यभर में बड़ी संख्या में सीटें जीती हैं। जिसने इस बात की पुष्टि की है कि आम आदमी पार्टी पंजाब के शहरों में ही नहीं, ग्रामीण इलाकों में भी लोकप्रियता का आधार रखती है। वहीं दूसरे शब्दों में कहें तो ग्रामीण मतदाताओं में पंजाब की सत्ता में लंबे समय तक भागीदारी निभाने वाले राजनीतिक दलों से मोहभंग का सिलसिला लगातार बना हुआ है। हालांकि, आप की इस सफलता के साथ कुछ ऐसे पहलू भी जुड़े हैं, जिन पर पार्टी और उसके नेताओं को गहन विचार करने की जरूरत होगी। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में आम आदमी पार्टी का मजबूत प्रदर्शन उसके शासन के मॉडल के लिये निरंतर समर्थन का संकेत दे रहा है। यह एक ऐसा परिणाम है जो साल 2027 के राज्य विधानसभा चुनावों से पहले राज्य में आप के पक्ष में सकारात्मक परिदृश्य बना सकता है। इसके विपरीत विरोधाभास यह भी है कि कई जगह ऐसे उल्लेखनीय उदाहरण सामने आए हैं, जहां आम आदमी पार्टी अपने नेताओं के गढ़ों में लड़खड़ा गई है। आप के कई प्रमुख नेता अपने ही गांवों में जीत हासिल करने में विफल रहे हैं। ऐसा क्यों हुआ, आप को इस पर मंथन करने की जरूरत है। वहीं शिरोमणि अकाली दल ने बठिंडा और मुक्तसर जैसे कुछ इलाकों में अपनी मजबूत पकड़ दर्शायी है। जो पार्टी के लिये हौसला बढ़ाने वाले संकेत कहे जा सकते हैं। दरअसल, शिअद के प्रदर्शन को लेकर मिश्रित प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं। कहा जा रहा है कि पार्टी यदि इस बढ़त को आगे भी कायम रख पाती है तो उसके संगठनात्मक पुनरुद्धार के लिये दीर्घकालिक परिणाम सामने आ सकते हैं। वहीं दूसरी ओर कांग्रेस का चुनावी प्रदर्शन निराशाजनक ही कहा जाएगा। दरअसल, अब भी कांग्रेस अपनी खोई हुई जमीन को फिर से हासिल करने लिये संघर्ष करती प्रतीत हुई है। ये कांग्रेस के लिये चिंता की ही बात हो सकती है कि वह अपने पारंपरिक गढ़ों तक में अब भी कोई ठोस व दमदार चुनौती पेश करने में असफल ही रही है। वहीं दूसरी ओर कुछ क्षेत्रों में भारतीय जनता पार्टी ने अपनी पैठ बनानी आरंभ की है। हालांकि, उसकी यह बढ़त सिर्फ मामूली ही कही जाएगी। बहरहाल, कह सकते हैं कि चुनाव परिणामों से उपजी तसवीर पंजाब में बदलते राजनीतिक परिदृश्य की ओर ही इशारा करती नजर आती है। वैसे एक हकीकत यह भी है कि किसी भी चुनाव के परिणाम चुनावी परिदृश्य का आंशिक दृष्टिकोण ही परिभाषित करते हैं। मतदाता जमीनी स्तर पर आम आदमी पार्टी की नीतियों से काफी हद तक संतुष्ट ही दिखे हैं। इसके बावजूद स्थानीय निष्ठाएं और उम्मीदवार विशिष्ट कारक प्रमुखता से सामने आते हैं। इन स्थानीय ग्रामीण इकाइयों के चुनावों में आम आदमी पार्टी के नेताओं के गृह क्षेत्रों में मिली हार इस बात की भी याद दिलाती है कि किसी दल के लिये राजनीतिक पूंजी बेहद नाजुक ही होती है। यह भी कि ग्रामीण मतदाता स्थानीय नेतृत्व के प्रति उतने ही सजग और संवेदनशील होते हैं, जितना कि राज्य स्तरीय विचारों के प्रति। आगे चलकर, अगर आप को पंजाब में अपने जनादेश को बनाये रखना है और साथ ही उसका विस्तार करना चाहती है, तो उसे जमीनी स्तर पर नेतृत्व को मजबूत प्राथमिकता के आधार पर तैयार करना होगा। साथ ही उसे ग्रामीण मतदाताओं की विभिन्न चिंताओं का समाधान भी प्राथमिकता के आधार पर करना होगा। अब ये आने वाला समय बताएगा कि आप ने इन चुनाव परिणामों के निहितार्थों का किस सीमा तक चिंतन-मनन किया है। यदि पार्टी इन चुनाव परिणामों से सबक लेकर अपनी रीतियों-नीतियों में बदलाव लाती है तो साल 2027 के विधानसभा चुनावों में उसका जनाधार मजबूत हो सकता है।

सहज योग संदेश

श्री सद्गुरु देव जी की अनुभव वाणी

जड़ प्रकृति में कारण के गुण कार्य में आते हैं। सृष्टि के व्यक्त सारे जड़ पदार्थों में तीनों गुण मिले हुए हैं। इन तीनों गुणों को त्रिधातु भी कहते हैं।

-जारी

महर्षि सदाफल देव जी महाराज

मौसम

सर्दी का सितम और कोहरे का कोहराम

बाल मुकुन्द ओझा

सर्दियों का मौसम आते ही उत्तर भारत समेत देश के कई हिस्सों में घना कोहरा लोगों की दिनचर्या को प्रभावित करने लगता है। इस समय उत्तर भारत के अधिकांश हिस्से कोहरे की चादर में लिपटे हुए हैं। यहां इतना घना कोहरा छाया हुआ है कि सामने का रास्ता तक दिखाई नहीं दे रहा है। घने कोहरे के कारण जनजीवन को पूरी तरह से थम गया है। शून्य दृश्यता होने के कारण यातायात प्रभावित हो रहे हैं। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश समेत कई हिस्सों में कोहरा इतना गहरा है कि सड़क से लेकर हवाई यातायात प्रभावित हो रहा है। मौसम विभाग ने दिल्ली में रेड अलर्ट तो यूपी, बिहार, पंजाब समेत कई राज्यों के विभिन्न जिलों में ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। लोगों को सलाह दी गई है कि सड़कों पर यात्रा करते हुए वाहनों की गति धीमी रखें और लाइट जलाकर रखें, ताकि कोहरे के कारण होने वाले हादसों से बचा जा सकें। कोहरा और सर्दी का चोली दामन का साथ है। बोलचाल की भाषा में धरातल पर बादल निर्माण की क्रिया को कोहरा कह सकते है। इस समय देश के कई प्रदेशों में कड़ाके की ठण्ड और सर्दी बढ़ गई है तो वहीं कोहरा भी लोगों को परेशान करने लगा है। सर्दियों के मौसम में कोहरा आम बात है। इसकी वजह से थम जाती है रोजमर्रा की रफ्तार। सर्दी के मौसम के साथ ही देश में कोहरे की समस्या से भी दो दो हाथ करने पड़ते है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार कोहरा वास्तव में हवा में तैरती पानी या फिर बर्फ की बहुत ही महीन बूंदें हैं। नम ठंडी हवा का संपर्क जब ऊष्णता से होता है तो कोहरा बन जाता है। कोहरा धरती के बिलकुल करीब आ चुके बादल हैं। जब आर्द्र हवा ऊपर उठकर ठंडी होती है तब जलवाष्प संघनित होकर जल की सूक्ष्म बूंदें बनाती है। कभी-कभी अनुकूल परिस्थितियों में हवा के बिना ऊपर उठे ही जलवाष्प जल की नन्हीं बूंदों में बदल जाती है तब हम इसे कोहरा कहते हैं। तकनीकी रूप से बूंदों के रूप में संघनित जलवाष्प के बादल को कोहरा कहा जाता है। सर्दियों में कैसे बनता है कोहरा? सर्दियों के मौसम में उत्तर भारत के कई राज्य कोहरे की मोटी चादर में ढक जाते हैं । इसकी वजह से न केवल राहगीरों को बल्कि ट्रेन ड्राइवरों और एयरोप्लेंस के पायलटों तक को रास्ता ठीक से नहीं दिखाई देता। घने कोहरे के चलते लोगों को सुबह के वक्त गाड़ियों की लाइट जलानी पड़ती है । कोहरे के कहर ने सडकों पर दौड़ते वाहनों की न सिर्फ रफ्तार थम गयी बल्कि वाहनों में यात्रा करने बाले यात्रियों को दुर्घटनाओं का डर सताने लगा 7 वैसे तो इस मौसम में कोहरा पड़ना आम बात है लेकिन आखिर सर्दियों में इतना कोहरा आता कहाँ से है? देश के महानगरों में सर्दियों में ऊषाकाल एवं प्रात:काल मे नमी वाले दिनों मे ऐसा कोहरा प्राय: छा जाता है। क्योंकि वायुमण्डल में धुआँ धूल एवं अन्य कण जल कणों को स्थिर रखने के लिए उपस्थित रहते है। इससे साइकिल या मोटर साइकिल चालक के कपड़े नम हो जाते हैं। गांवों के मुकाबले शहरों में कोहरा अधि क घना होता है क्योंकि शहरों की हवा में धूल और धुएं के कण अधि क होते हैं। ये कोहरे में मौजूद पानी की बूंदों के साथ मिलकर इसे गहरा बना देते हैं। कोहरा के बारे में बताया जाता है यह अच्छा और बुरा दोनों है। कोहरा अधिक समय तक न रहे और सूर्योदय के बाद जल्द खत्म हो जाए तो फसल तथा पौधों के लिए बहुत फायदेमंद होता है। इससे फसलों में नमी बनी रहती है। पानी में ऊष्माधारण क्षमता अधिक होती है और कोहरे में पानी की बूंदें होती हैं, इसलिए कोहरा होने पर टेम्प्रेचर माइल्ड रहता है, जो फसलों को लाभ पहुंचाता है। जमीन पर रेंगने वाले कई जीव खासकर रेगिस्तानी इलाकों में रहने वाले कोहरे से मिलने वाली पानी की बूंदों पर ही जीवित रहते हैं। तटीय इलाकों में रहने वाले कई लोग खेतों में फॉग नेट लगाते हैं, ताकि कोहरे से पानी की बूंदें टूटकर फसलों पर गिरें। सैनिक कोहरे का फायदा उठाकर दुश्मनों को चकमा देते हैं। कोहरे से हर साल हजारों फ्लाइट और ट्रैन कैंसिल होती हैं। सैकड़ों ट्रेन समय पर नहीं चल पातीं। दुर्घटनाओं में कई लोगों की जान चली जाती है। व्यापार की रफ्तार धीमी होती है। इन सबसे अरबों रुपए का घाटा होता है। कोहरा छंटने के बाद कई बार शीत-लहर शुरू हो जाती है। अचानक तापमान गिरने से पाला पड़ने की आशंका होती है, जो फसलों को नष्ट कर देता है।

कोहरे के कोहराम से फना होती जिन्दगी

मनोज कुमार अग्रवाल

उत्तर भारत में सर्दियों के दौरान कोहरा इतना घना हो जाता है कि कुछ मीटर आगे देख पाना भी मुश्किल हो जाता है. ऐसे हालात में थोड़ी लापरवाही बड़े हादसे का कारण बन सकती है. ऐसे में अगर छोटी-छोटी सावधानी पर ध्यान दिया जाए तो हादसों को रोका जा सकता है.सबसे भयावह दुर्घटना मथुरा के निकट, बीते मंगलवार तड़के घने कोहरे के चलते कई वाहनों के आपस में टकराने से उन्नीस लोग जिंदा जल गए।यह बेहद दर्दनाक हादसा है। थोड़ी सी सावधानी और संयम से ऐसी दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है लेकिन सरकारी तंत्र और आम आदमी दोनों लापरवाह बने हैं।

यमुना एक्सप्रेसवे पर 16 दिसंबर को मथुरा के पास कोहरे के कारण सुबह करीब साढ़े तीन बजे एक भीषण सड़क हादसा हुआ, जिसमें 8 बसें और 3 कारें आपस में टकरा गई. इस हादसे में 19 लोगों की मौत हो गई जबकि 70 से अधिक लोग घायल हो गए. इस हादसे से ठीक दो दिन पहले भी ऐसा ही एक हादसा हुआ. विजिबिलिटी कम होने के कारण यूपी-हरियाणा में एक के बाद एक कई हादसे हुए, जिसमें 12 लोगों की मौत हो गई. इन सभी हादसे की वजह कम विजिबिलिटी बताई जा रही है। मरने वाले निर्दोष लोग अपने-अपने जरूरी कामों के लिए जल्दी पहुंचने की चाहत में रात के सफर पर निकले थे। लेकिन हालात उन्हें मौत के मुंह में ले गया। बीते मंगलवार को अमंगल का यह कोहरे के कहर का सिलसिला यूपी हरियाणा पंजाब हिमाचल तक चला, और कितने ही जीवन लीला गया। पंजाब में जहां सुबह घने कोहरे के चलते पांच लोगों की मौत सड़क दुर्घटनाओं में हुई। बरनाला व तपामंडी में हुए दो सड़क हादसों में एक ही परिवार के तीन लोगों समेत पांच लोगों की मौत हुई। वजह वही, घने कोहरे के चलते दृश्यता में कमी और स्थिति का आकलन न कर पाने के कारण दुर्घटनाग्रस्त हो जाना। वहीं तपामंडी के व्यापारी की पत्नी व बेटी की मौत रास्ते में खड़े ट्रक से उनकी कार के टकराने से हुई। इससे पहले रविवार सुबह कोहरे के कोहराम से 66 वाहनों के टकराने से एक छात्रा समेत चार लोगों की मौत हरियाणा में भी हुई। चरखी दादरी में एक स्कूल बस व रोडवेज की बस की आमने-सामने की टक्कर में एक ग्यारहवीं की छात्रा की मौत हो गई और तीस से अधिक छात्राएं व शिक्षक, बस चालक समेत घायल हो गए। वहीं तेज रफ्तार वाले नेशनल हाईवे पर एक के बाद एक, अनेक वाहन दृश्यता की कमी के चलते दुर्घटनाग्रस्त हुए निश्चय ही निर्दोष लोगों का यूं असमय काल-कवलित होना बेहद दुखद ही है।

सवाल फिर वही है आखिर कब तक कोहरा कहर बनकर जिंदगी लीलता रहेगा। साल दर साल सर्दी के मौसम में कोहरे की धुंध की वजह से होने वाले हादसों के लिए हम क्यों अभिशप्त हैं? आखिर इन दुर्घटनाओं को टालने की गंभीर कोशिश सरकार, समाज व वाहन चालकों की तरफ से क्यों नहीं की जाती ?

देश की सरकार रोजाना सौ किलोमीटर सड़क का निर्माण करती है , तो राष्ट्रीय राजमार्गों व एक्सप्रेस-वे पर यात्रियों के जानमाल की रक्षा के लिए धुंध से मुक्ति की तकनीक क्यों नहीं निकाल पा रहे हैं? निश्चय ही प्रकृति की लीला का मुकाबला कर पाना संभव नहीं, लेकिन कमोबेश दुर्घटनाओं की संख्या कम करके जान-माल का नुकसान कम करने का प्रयास तो करें। यह सजगता नागरिकों के स्तर पर भी जरूरी है। यात्रा के समय के चयन और धुंध के बीच वाहन चालन में अतिरिक्त सतर्कता की जरूरत होती है। राष्ट्रीय राजमार्ग व एक्सप्रेस-वे पर पर्याप्त रोशनी और धुंध में दृश्यता बढ़ाने के तकनीकी प्रयास किए जाएं। मौसमी बाधा के बीच दुर्घटना का एक बड़ा कारण राजमार्गों के किनारे अवैध रूप से जगह-जगह खोले गए ढाबे भी बनते हैं। दरअसल, होटल ढाबों के पास वाहनों को अपने परिसर में खड़ा करने की जगह नहीं होती, जिसके चलते ट्रक व अन्य वाहन सड़कों में खड़े रहते हैं। जिसके चलते अक्सर तेजी से आने वाले वाहन दृश्यता की कमी से इन खड़े वाहनों से टकराकर दुर्घटना ग्रस्त हो जाते हैं। पिछले माह राजस्थान के फलोदी के निकट एक टेम्पो ट्रेवलर के सड़क के किनारे खड़े ट्रेलर से टकराने से दस महिलाओं व चार बच्चों समेत पंद्रह लोगों की मौत हुई थी। इस पर स्वतः संज्ञान सुप्रीम कोर्ट ने लिया। सोमवार को सुनवाई के कोर्ट ने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण व प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सख्त नाराजगी दिखाई। कोर्ट ने लगातार हादसों की वजह बन रहे इन अवैध होटलों-ढाबों पर नियंत्रण हेतु पूरे देश के लिये दिशा-निर्देश जारी करने की जरूरत बतायी।

उत्तर भारत में सर्दियों के दौरान कोहरा इतना घना हो जाता है कि कुछ मीटर आगे देख पाना भी मुश्किल हो जाता है. ऐसे हालात में थोड़ी लापरवाही बड़े हादसे का कारण बन सकती है. इसी बढ़ते खतरे को देखते हुए गौतम बुद्ध नगर जिला प्रशासन ने लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए एक विस्तृत 'सेफ ट्रैवल इन फॉग' एडवाइजरी जारी की है. इस एडवाइजरी का मकसद लोगों को डराना नहीं, बल्कि उन्हें सचेत करना है ताकि वे सही सावधानियां अपनाकर खुद को और दूसरों को सुरक्षित रख सकें। कई अध्ययनों में हादसों की वजह सड़कों के डिजाइन में कमी को भी बताया गया। सवाल है कि जब देश में अच्छी-तेज सड़कों का जाल तीव्र गति से बिछाया जा रहा है तो सुरक्षित सफर सुनिश्चित करना भी तो नीति-नियंताओं की जवाबदेही बनती है? हादसों के लिए सिर्फ चालकों को जिम्मेदार नहीं बताया जा सकता। हां, इतना जरूर है कि वाहन चालकों को गति के साथ गति भी तेज रखनी होगी। यातायात नियमों का पालन करने में एक जिम्मेदार नागरिक का भी दायित्व निभाना होगा।

अगर किसी कारणवश कोहरे में सफर करना बेहद जरूरी हो जाए तो वाहन बेहद धीमी गति से चलाना चाहिए. इसके साथ ही वाहन को पूरी सतर्कता के साथ चलाने की जरूरत है. विशेष रूप से वाहन के म्यूजिक सिस्टम और एफएम रेडियो बंद रखें क्योंकि कोहरे के वक्त सुनने की क्षमता देखने से भी ज्यादा अहम हो जाती है. सामने या पीछे से आने वाले वाहन की आवाज, हॉर्न या किसी आपात स्थिति की ध्वनि समय पर सुनना हदसा टालने में मदद कर सकता है।

कोहरे के दौरान वाहन के शीशों पर नमी जमना एक आम समस्या है. इससे सामने का दृश्य और धुंधला हो जाता है. वाहन चलाते समय एयर कंडीशनर के इस्तेमाल से बचें, क्योंकि इससे कांच पर नमी जम सकती है. इसके बजाय हल्के हीटर का उपयोग करें और हवा का प्रवाह विंडशील्ड की ओर रखें. जिन वाहनों में डिफॉगर की सुविधा है, उन्हें हल्के गर्म मोड पर चालू रखना फायदेमंद होता है. इसके साथ ही वाहन की खिड़कियां थोड़ी खुली रखने की सलाह दी गई है।

कोहरे में वाहन की लाइट्स आपकी पहचान बन जाती हैं. एडवाइजरी में भी इस बात का जिक्र किया गया है कि हेडलाइट्स हमेशा लो बीम पर रखें, क्योंकि हाई बीम कोहरे में रिफ्लेक्ट होकर आंखों को और भ्रमित कर देती है. दिन के समय भी अगर कोहरा बना हुआ है, तो लाइट्स जलाकर चलना जरूरी है. कोहरे में सबसे खतरनाक गलती ओवरटेक करने की होती है. प्रशासन ने स्पष्ट रूप से कहा है कि ऐसे मौसम में ओवरटेक करने से बचना चाहिए. आगे चल रहे वाहन से सुरक्षित दूरी बनाए रखें और अचानक ब्रेक लगाने से बचें. ब्रेक हमेशा धीरे-धीरे लगाएं।

गाइड लाइन के अनुसार दो लेन वाली सड़कों पर वाहन धीमी गति से चलाना चाहिए और सड़क के बाएं किनारे के करीब रहना ज्यादा सुरक्षित होता है. बीच सड़क पर वाहन चलाना जोखिम भरा हो सकता है. अतिरिक्त सुरक्षा उपाय के तौर पर जिला प्रशासन ने निजी वाहन चालकों से अपने वाहनों के पीछे लाल रंग की रेट्रो-रिफ्लेक्टिव टेप लगाने की अपील की है. यह टेप कोहरे में दूर से ही चमक जाती है, जिससे पीछे से आने वाले वाहन को पहले ही संकेत मिल जाता है. मोटर वाहन अधिनियम के तहत व्यावसायिक वाहनों के लिए आगे सफेद और पीछे लाल रेट्रो-रिफ्लेक्टिव टेप लगाना पहले से अनिवार्य है। नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे और यमुना एक्सप्रेसवे पर सर्दियों के मौसम के लिए विशेष गति सीमा भी तय की है. फरवरी तक हल्के वाहनों, जैसे कार आदि, के लिए अधिकतम गति सीमा 75 किलोमीटर प्रति घंटा और भारी वाहनों के लिए 60 किलोमीटर प्रति घंटा निर्धारित की गई है.वाहन चलाते हुए पर्याप्त दूरी बनाए रखें। सही ड्राइविंग आदतें और नियमों का पालन न सिर्फ आपकी जान बचा सकता है, बल्कि दूसरों की ज़िंदगी भी सुरक्षित रख सकता है. कोहरा एक प्राकृतिक स्थिति है, जिसे बदला नहीं जा सकता, लेकिन समझदारी और सावधानी से इसके खतरों को जरूर कम किया जा सकता है।

आज का विचार

हर आदमी को दुनिया में बूट, जूता या छाता सुलभ नहीं होता परंतु हर आदमी को अपने पड़ोसी से अधिक दिखावा करने का शौक़ होता है।

स्वास्थ्य-ध्वंस का इलैक्ट्रॉनिक संस्करण है ई-सिगरेट

योगेश कुमार गोयल

लोकसभा के शीतकालीन सत्र में पिछले दिनों उस समय असहज स्थिति बन गई, जब भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने दावा किया कि तृणमूल कांग्रेस के एक सांसद सदन की कार्यवाही के दौरान ई-सिगरेट पी रहे थे। यह आरोप अपने आप में गंभीर था क्योंकि भारत में 2019 से ई-सिगरेट का उत्पादन, विक्रय, वितरण, भंडारण, यहां तक कि प्रचार-प्रसार भी पूर्णत: प्रतिबंधित है। प्रश्नकाल के बीच उठे इस मुद्दे ने विपक्षी बेंचों में हंगामा मचा दिया और स्पीकर ओम बिड़ला को हस्तक्षेप करना पड़ा। उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा कि सदन की मर्यादा और नियम सभी पर समान रूप से लागू होते हैं और यदि कोई औपचारिक शिकायत आती है तो कार्रवाई होगी। यह घटना केवल संसदीय अनुशासन का प्रश्न नहीं बल्कि उस व्यापक खतरे की भी याद दिलाती है, जिसे 'ई-सिगरेट' के नाम पर आधुनिक नशे के रूप में समाज के बीच पाला-पोसा जा रहा था। सवाल यह है कि जब देश के युवाओं को इस घातक प्रवृत्ति से बचाने के लिए कानून बना, तब क्या संसद परिसर में उसका उल्लंघन देश के लिए सही उदाहरण है? ई-सिगरेट या 'वेपिंग डिवाइस' एक बैटरी चालित उपकरण है, जिसमें निकोटीन मिला एक तरल घोल गर्म होकर वाष्प के रूप में बाहर आता है। उपयोगकर्ता इसे कश लगाते हुए इनहेल करता है। इसमें कोई दहन नहीं होता, इसलिए इसे 'स्मोक-फ्री' कहा गया किंतु यह मात्र भाषाई छलावा है। 'ई-सिगरेट' शब्द भले ही आधुनिक लगे पर इसका मूल स्वभाव (लत, निकोटीन, और भ्रम) बेहद पुराना है। इसे धूम्रपान छोड़ने के सुरक्षित विकल्प के रूप में प्रचारित किया गया लेकिन विज्ञान ने इस भ्रम को जल्दी तोड़ दिया। इसकी भाप में निकोटीन, प्रोपलीन ग्लाइकॉल, ग्लिसरीन और दर्जनों रासायनिक फ्लेवर होते हैं। इन तत्वों की विषाक्तता पारंपरिक तंबाकू उत्पादों से कम नहीं बल्कि कई बार उससे भी अधिक खतरनाक होती है। अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना की 2018 की एक स्टडी में बताया गया कि प्रोपलीन ग्लाइकॉल और वेजिटेबल ग्लिसरीन दोनों ही मानव कोशिकाओं पर विषैला असर डालते हैं। इनसे कोशिकीय सूजन, डीएनए क्षति और फेफड़ों की संरचना में स्थायी बदलाव हो सकता है। एक अन्य अध्ययन में यह साबित हुआ कि ई-सिगरेट के वाष्प में एक्रोलिन नामक रसायन पाया जाता है, जो अस्थमा और फेफड़ों के कैंसर का कारण बनता है। भारत सरकार ने सितंबर 2019 में 'इलैक्ट्रॉनिक सिगरेट निषेध अधिनियम, 2019' लागू किया था, जिसके तहत उत्पादन, आयात, बिक्री, भंडारण और विज्ञापन सभी को अपराध घोषित किया गया। पहली बार अपराध करने पर एक वर्ष की जेल या एक लाख रुपये तक जुर्माने का प्रावधान है जबकि बार-बार अपराध करने पर तीन वर्ष तक कारावास और पांच लाख रुपये तक का दंड तय किया गया। यह कानून अचानक नहीं आया था। इसके पीछे भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर), एम्स और टाटा रिसर्च सेंटर जैसे शीर्ष संस्थानों की चेतावनियां थी। 2019 में जारी आईसीएमआर के श्वेत पत्र में कहा गया था कि ई-सिगरेट स्वास्थ्य के लिए साधारण सिगरेट जितनी ही हानिकारक है और यह भ्रांति फैलाना कि ई-सिगरेट सुरक्षित विकल्प है, पूरी तरह झूठा और व्यावसायिक प्रचार का हिस्सा है। ई-सिगरेट कंपनियों ने इसे धूम्रपान छोड़ने के साधन के रूप में पेश किया पर मेडिकल शोध यह बताते रहे हैं कि ई-सिगरेट धूम्रपान छुड़ाने में सहायक नहीं बल्कि नई लत का प्रवेश द्वार है। अमेरिकी स्कूलों में 10वीं से 12वीं कक्षा के छात्रों में ई-सिगरेट की लत 77 प्रतिशत तक बढ़ी। वे किशोर, जो कभी सिगरेट के करीब नहीं गए थे, उन्होंने भी 'वेपिंग' के नाम पर इसे अपनाना शुरू किया। भारत में भी यही प्रवृत्ति देखी गई। बबलगम, चॉकलेट, मिंट, कॉटन कैंडी इत्यादि अलग-अलग फ्लेवर के माध्यम से बच्चों और किशोरों को आकर्षित किया गया। यहां तक कि 'कैंडी वेप पेन' के नाम पर इसे खिलौनों की शक्ल में बाजार में उतारा गया। यह व्यापार नशे के नए ग्राहक बनाने का औजार बन गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2020 में अपनी रिपोर्ट में बताया कि ई-सिगरेट उद्योग दुनियाभर में तंबाकू विरोधी अभियान को कमजोर करने के लिए काम कर रहा है। डब्ल्यूएचओ ने स्पष्ट कहा कि 'ई-सिगरेट पारंपरिक सिगरेट के समान हानिकारक है। इसमें निकोटीन के साथ कई कार्सिनोजेनिक (कैंसरकारक) तत्व होते हैं।' ई-सिगरेट को 'इलैक्ट्रॉनिक निकोटीन डिलीवरी सिस्टम्स' कहा जाता है। इसमें निकोटीन-युक्त तरल घोल को गर्म करने पर उत्पन्न एरोसोल में सीसा, तांबा, सिलिकेट और कैडमियम जैसी भारी धातुएं पाई जाती हैं। ये कण सीधे श्वसन तंत्र और रक्त प्रवाह में प्रवेश कर मस्तिष्क तथा फेफड़ों को प्रभावित करते हैं। वैज्ञानिकों ने पाया है कि निकोटीन रक्तचाप को असामान्य रूप से बढ़ाता है, ब्लड क्लॉट की संभावना को दोगुना कर सकता है और हृदयाघात का खतरा 56 प्रतिशत तक बढ़ा देता है। ई-सिगरेट का अधिक सेवन करने वाले लोगों में इंसुलिन रेसिस्टेंस और मेटाबॉलिक सिंड्रोम जैसी नई समस्याएं सामने आई हैं। भारत के अलावा मालदीव, भूटान, नेपाल, ब्राजील, सिंगापुर, थाईलैंड, लेबनान, सीरिया, मॉरीशस, ऑस्ट्रेलिया इत्यादि लगभग तीन दर्जन देशों में ई-सिगरेट पर पूर्ण प्रतिबंध है। अमेरिका में इसे 18 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों तक सीमित रखा गया है लेकिन कई राज्यों में वहां भी प्रतिबंध लागू है। इन देशों ने सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा को प्राथमिकता देते हुए वेपिंग उद्योग के खिलाफ सख्त रुख अपनाया है। अब प्रश्न है देश के प्रतिबंध के बाद भी हमारी संसद के भीतर ही 'माननीयों' द्वारा ई-सिगरेट का उपयोग करने की तो यदि संसद के भीतर ही कोई इसका उपयोग करता है तो यह न केवल कानून का उल्लंघन है बल्कि राष्ट्रीय नैतिकता पर भी चोट है। संसद वह स्थान है, जहां कानून बनते हैं, सामाजिक आचरण की मर्यादा तय होती है। यदि वहीं से कानून तोड़े जाएं तो इसका पूरे देश में क्या संदेश जाएगा? भारत की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा 18-30 वर्ष के बीच है। यही वर्ग 'वेपिंग कल्चर' के सबसे अधिक जोखिम में है। सोशल मीडिया और विज्ञापनों ने इसे 'कूल' और 'सुरक्षित' दिखाने की चाल चली लेकिन असल में यह फेफड़ों की बीमारी, हृदय समस्याओं और कैंसर जैसी बीमारियों की नई लहर का कारण बन सकती है। कैंसर रिसर्च कंसोर्टियम के विशेषज्ञ इसे भारत जैसे विकासशील देशों के लिए टाइम बम करार देते रहे है। उनका कहना है कि ई-सिगरेट निकोटीन निर्भरता का नया रूप है, जो लोगों को पारंपरिक तंबाकू से नहीं बचाता बल्कि एक अलग 'इंस्ट्रूमेंटल नशे' के जाल में फंसाता है। देशभर में कई स्थानों पर ई-सिगरेट अब भी अवैध रूप से बेची जाती हैं। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, विदेशी आयात और छोटे दुकानों में यह व्यापार जारी है। इसलिए केंद्र व राज्य सरकारों को इस कानून के पालन पर सख्त निगरानी करनी होगी। यदि संसद जैसी सर्वोच्च संस्था में ई-सिगरेट का प्रयोग हो सकता है तो सड़कों पर इसकी रोकथाम की उम्मीद कमजोर पड़ जाती है। इसलिए जरूरी है कि इस मुद्दे को केवल संसदीय मर्यादा का नहीं बल्कि जनविश्वास का भी मामला माना जाए। बहरहाल, 2019 में भारत ने जब ई-सिगरेट पर प्रतिबंध लगाया तो यह सिर्फ स्वास्थ्य नीति नहीं, भविष्य की पीढ़ियों की सुरक्षा का संकल्प था। लोकसभा में उठी नवीनतम घटना इस संकल्प की याद दिलाती है। यह आवश्यक है कि संसद स्वयं उदाहरण बने, न कि अपवाद क्योंकि जब नीति-निर्माता नियम तोड़ेंगे, तब कानून की विश्वसनीयता गिरती है और समाज का नैतिक संतुलन डगमगाने लगता है। इसलिए अब वक्त है कि ई-सिगरेट के खिलाफ सरकार के कठोर रुख को व्यवहार में दिखाया जाए। कृत्रिम नशे के इस रासायनिक इंतजाम से भारत को बचाना न केवल जरूरी है बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों की सेहत के प्रति हमारी सामूहिक जिम्मेदारी भी है।

विकसित भारत जी राम जी- 125 दिन के रोजगार की गारंटी

शिवराज सिंह चौहान

भारत गांवों का देश है। पूज्य बापू ने भी कहा था कि असली भारत गांवों में बसता है। गांव को विकसित बनाये बिना विकसित भारत का संकल्प साकार नहीं हो सकता। आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में गांवों को विकसित, आत्मनिर्भर, सशक्त और संपन्न बनाने के लिए कई योजनाएँ चल रही हैं। हाल ही में संसद में पारित 'विकसित भारत - जी राम जी' बिल इसी दिशा में ऐतिहासिक कदम है।

पिछले कई दशकों से देश में कई सरकारें आई और सभी ने ग्रामीण रोज़गार की गारंटी देने के लिए कई प्रयास किए हैं। मनरेगा भी उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। लेकिन ज़मीनी हकीकत यह रही कि कागज़ों पर तो योजनाएं बहुत अच्छी लगती थीं, मगर गांवों में, खेतों-खलिहानों में, मेरे गरीब भाइयों-बहनों को वह हक नहीं मिल पाता था जिसका वादा किया गया था। फाइलों में काम दिखता था, पर ज़मीन पर मज़दूर भूखा सोता था। कहीं भ्रष्टाचार था, कहीं व्यवस्था की कमज़ोरी थी, कहीं समय पर भुगतान नहीं होता था। और यह हमारी पीड़ा रही है।

आज जब विकसित भारत जी राम जीबिल की बात हो रही है, तो स्वाभाविक रूप से कुछ साथियों के मन में सवाल उठते हैं। वे पूछते हैं कि यह पुरानी व्यवस्था को कमज़ोर तो नहीं करेगा? क्या गरीब मज़दूरों के अधिकार छिन तो नहीं जाएंगे? मैं इन चिंताओं का सम्मान करता हूं। किसी भी बड़े सुधार पर बहस होनी चाहिए, सवाल उठने चाहिए। यही लोकतंत्र की ताकत है। लेकिन साथ ही मैं आपसे निवेदन करूंगा कि इस नए विधेयक को खुले मन से, बिना किसी पूर्वाग्रह के पढ़िए और समझिए।

यह हर ग्रामीण परिवार को साल में 125 दिन के रोज़गार की पक्की कानूनी गारंटी देता है। सिर्फ 100 दिन नहीं, बल्कि 125 दिन। और अगर 15 दिन के अंदर काम नहीं मिला, तो बेरोज़गारी भत्ता मिलेगा। मनरेगा के ज़माने में जो दिक्कतें थीं, जिनकी वजह से लोगों को उनका हक नहीं मिल पाता था, उन्हें हटा दिया गया है।

गांव का विकास सिर्फ रोज़गार देने से नहीं होता, बल्कि गांव में ऐसी अधोसंरचना बनाने से होता है जो आने वाली पीढ़ियों के काम आएं। पानी के तालाब, सड़कें, सिंचाई की व्यवस्था, बाढ़-सूखे से बचाव के काम - ये सब जब मज़दूरी के साथ-साथ होंगे, तो गांव खुद-ब-खुद मज़बूत होगा। यही तो स्थायी विकास है।

कुछ लोग कहते हैं कि वीबी- जी राम जीमांग-आधारित रोज़गार को कमज़ोर करता है। लेकिन इस विधेयक को ध्यान से पढ़िए, हर धारा को समझिए। धारा 5(1) साफ-साफ कहती है कि हर उस ग्रामीण परिवार के पात्र वयस्क सदस्य को कम से कम 125 दिन का गारंटीकृत रोज़गार मिलेगा। यह बिल मांग के अधिकार को कमज़ोर नहीं करता, बल्कि इसे और मज़बूत करता है।

कुछ साथी कहते हैं कि यह योजना रोज़गार की जगह संपत्ति बनाने को ज़्यादा अहमियत देती है। यह सोच ही गलत है। रोज़गार और गांव का विकास - ये दोनों एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। विधेयक साफ तौर पर आजीविका की कानूनी गारंटी देता है, और साथ ही उस रोज़गार को ऐसे कामों से जोड़ता है जो गांव को मज़बूत बनाएं, जो स्थायी हों, जो आने वाली पीढ़ियों के काम आएं।

धारा 4(2) और अनुसूची में चार मुख्य क्षेत्र बताए गए हैं - पानी की सुरक्षा, बुनियादी ग्रामीण ढांचा, आजीविका से जुड़ा ढांचा, और प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के काम। सोचिए, जब गांव में तालाब बनेगा तो मज़दूर को मज़दूरी भी मिलेगी और गांव को पानी भी मिलेगा। जब सड़क बनेगी तो रोज़गार भी मिलेगा और गांव शहर से जुड़ेगा भी।

कुछ लोग भ्रम फैला रहे हैं कि यह योजना सारी शक्ति केंद्र में ले आएगी, गांव का अधिकार छीन लेगी। यह पूरी तरह से गलत है। धारा 4(1) से 4(3) एकदम साफ कहती है कि सारे काम गाँव के स्तर पर तय होंगे, ग्राम सभा से मंज़ूरी लेनी होगी। ग्राम सभा - जहां गांव का हर व्यक्ति बैठता है, जहां गांव के लोग मिलकर फैसला लेते हैं - वही तय करेगी कि उनके गांव में क्या काम होना चाहिए, किस चीज़ की ज़रूरत है।

विधेयक ने पुरानी व्यवस्था की एक बड़ी कमी को दूर किया है - बिखराव को। पहले एक विभाग अपना काम करता था, दूसरा विभाग अपना काम करता था, दोनों के मध्य कोई तालमेल नहीं था। अब सारे काम विकसित भारत राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना स्टैक में जोड़े जाएंगे, ताकि एक साथ मिलकर योजना बने, एक साथ काम हो, और पूरी व्यवस्था स्पष्ट दिखाई दे। इससे न तो भ्रष्टाचार होगा, न दोहराव होगा, न पैसों की बर्बादी होगी। यह ऊपर से थोपा गया केंद्रीकरण नहीं है, बल्कि मिलकर काम करने का तरीका है। धारा 16, 17, 18 और 19 पंचायतों को, कार्यक्रम अधिकारियों को, ज़िला प्राधिकारियों को योजना बनाने, लागू करने और निगरानी का अधिकार देती हैं।

एक बहुत महत्वपूर्ण सवाल उठाया गया है - खेती के व्यस्त मौसम में अगर सारे मज़दूर सरकारी कामों में लग गए, तो किसान की फसल कौन काटेगा? यह सवाल बिल्कुल सही है, और विधेयक में इसका भी जवाब दिया गया है। धारा 6 राज्य सरकारों को अधिकार देती है कि वे साल में कुल साठ दिनों के लिए - जिसमें बुवाई और कटाई का समय आता है - पहले से ही घोषणा कर दें कि इन दिनों इस योजना के तहत काम नहीं होगा। इससे किसान को मज़दूर मिलेंगे, फसल समय पर बोई जाएगी, समय पर कटेगी। और सबसे अच्छी बात यह है कि धारा 6(3) राज्यों को यह छूट देती है कि वे ज़िला, ब्लॉक या ग्राम पंचायत स्तर पर अलग-अलग घोषणा कर सकें। क्योंकि हर इलाके की खेती-किसानी अलग होती है। कहीं धान की बुवाई जून में होती है, कहीं जुलाई में। कहीं गेहूं की कटाई अप्रैल में, कहीं मई में। यह लचीलापन यह पक्का करता है कि बढ़ी हुई रोज़गार गारंटी खेती में रुकावट नहीं, बल्कि सहयोगी बने।

कुछ आलोचक पैसों की कमी की आशंका जताते हैं। वे कहते हैं कि राज्यों को कम पैसा मिलेगा। बिल की धारा 4(5) और धारा 22(4) साफ कहती हैं कि राज्यों के लिए बजट तय, पारदर्शी मापदंडों के आधार पर बांटा जाएगा। कोई मनमानी और भेदभाव नहीं होगा। जिस राज्य को जितनी ज़रूरत होगी, जहां जितना काम होगा, वहां उतना पैसा जाएगा। साथ ही, यह व्यवस्था राज्यों को महज़ काम करने वाली एजेंसी नहीं, बल्कि विकास का साझेदार मानती है।

तकनीक से बाहर किए जाने की आशंकाएँ भी जताई गई हैं। कहा जाता है कि बायोमेट्रिक, मोबाइल ऐप - ये सब गरीब मज़दूर के लिए मुश्किल होंगे। तकनीक का इस्तेमाल किसी को बाहर करने के लिए नहीं, बल्कि व्यवस्था को पारदर्शी बनाने के लिए किया जा रहा है। धारा 23 और 24 बायोमेट्रिक, जियो-टैग किए गए काम, रीयल-टाइम डैशबोर्ड और नियमित सार्वजनिक जानकारी को अनिवार्य बनाती हैं।

इससे क्या फायदा होगा? फर्जी हाज़िरी नहीं होगी, फर्जी लोगों के नाम पर पैसा नहीं खाया जाएगा, झूठे रिकॉर्ड नहीं बनेंगे। जो ईमानदार मज़दूर मेहनत करेगा, उसका पैसा सीधे उसके खाते में आएगा। बिचौलिए नहीं रहेंगे, भ्रष्टाचार नहीं रहेगा। यहाँ तकनीक को सख्त दरबान के रूप में नहीं, बल्कि मददगार के रूप में देखा गया है। अपवाद को संभालना, जिनके पास मोबाइल नहीं है उनकी मदद करना - यह सब इसके मूल डिज़ाइन में शामिल है।

धारा 20 ग्राम सभा द्वारा सामाजिक व्यवस्था को मज़बूत करती है, जिससे समुदाय की निगरानी और बढ़ती है। गांव के लोग खुद देखेंगे, जांचेंगे कि काम ठीक से हो रहा है या नहीं। तकनीक जवाबदेही को कमज़ोर नहीं करती, बल्कि मज़बूत आधार देती है। यह गरीब का दुश्मन नहीं, बल्कि भ्रष्टाचार का दुश्मन है।

यह ग्रामीण भारत के मेरे भाइयो-बहनों को सच्चा सशक्तिकरण देने की दिशा में एक ठोस और विश्वास से भरा कदम है। यह गांव के विकास का नया संकल्प है। यह उस भारत की नींव रखने का प्रयास है जहां हर गांव समृद्ध हो, हर हाथ को काम मिले, हर परिवार खुशहाल हो, और हर गरीब सम्मान के साथ जी सके। विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा जब हमारे गांव विकसित होंगे। और वीबी-जी राम जीउसी दिशा में एक मज़बूत, विश्वासभरा और ईमानदार कदम है।

-लेखक केंद्रीय ग्रामीण विकास, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री हैं

सम्पादकीय

बंगाल की रैली में गूंजा एसआईआर का मुद्दा, पीएम ने ममता को घेरा

पश्चिम बंगाल के दौरे पर गए प्रधानमंत्री मोदी ने वहां जो अनेक मुद्दे उठाए, उनमें से एक यह भी रहा कि ममता सरकार घुसपैठियों को बचाने का प्रयत्न कर रही है। उन्होंने यह आरोप ऐसे समय पर लगाया, जब बांग्लादेश के हालात खराब होते जा रहे हैं और वहां से घुसपैठ का खतरा बढ़ गया है। इसी कारण बांग्लादेश सीमा पर चौकसी बढ़ा दी गई है।

वैसे तो प्रधानमंत्री ने बंगाल सरकार पर घुसपैठियों को बचाने का जो आरोप मढ़ा, उसका संदर्भ मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर को लेकर हो रहे विरोध से है, लेकिन यह समझा जाए कि जितनी आवश्यकता एसआईआर की प्रक्रिया को सही तरह पूरा करने की है, उतनी ही बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ को रोकने की भी।

यह सही है कि एसआईआर के कारण बंगाल में रह रहे तमाम बांग्लादेशी वापस लौट रहे हैं, लेकिन इसमें संदेह है कि इस प्रक्रिया के चलते सभी अवैध नागरिक वापसी कर लेंगे। संदेह का कारण यह है कि चुनाव आयोग एसआईआर के जरिये नागरिकता जांचने का काम नहीं कर सकता। यह उसका काम है भी नहीं। इन स्थितियों में बंगाल के साथ-साथ पूर्वोत्तर के सीमावर्ती राज्यों में रह रहे बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान के लिए एनआरसी जैसी प्रक्रिया का पालन किया जाना चाहिए।

यह काम गृह मंत्रालय का है। उसे इस दिशा में प्रयत्न ही करने चाहिए। इसी के साथ उसे बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ को रोकने के लिए भी कमर कसनी चाहिए। इसलिए और भी, क्योंकि उसका आरोप है कि बंगाल सरकार घुसपैठियों को आधार कार्ड देकर उन्हें छिपाने-बचाने का काम करती है। इन स्थितियों में घुसपैठ रोकने के लिए और अधिक तत्परता दिखानी होगी।

यह कहना कठिन है कि बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ रुक गई है। घुसपैठ न रुकने का एक कारण यह है कि सीमा पर बाड़बंदी का काम पूरा नहीं हो सका है। बंगाल में बांग्लादेश के साथ लगने वाली 2,216.7 किलोमीटर लंबी सीमा में से अभी तक 1,647.696 किमी पर ही कंटीले तारों की बाड़ लग सकी है। शेष 569.004 किमी हिस्से पर बाड़ और अन्य बुनियादी ढांचे का काम बाकी है।

इस काम के बाकी रहने की एक वजह बंगाल सरकार की ओर से जमीन न उपलब्ध कराया जाना है। कुछ ही समय पहले कलकत्ता उच्च न्यायालय ने इस पर नाराजगी जताई थी। हो सकता है कि उच्च न्यायालय के हस्तक्षेप

के चलते बंगाल सरकार बाड़बंदी के लिए जमीन उपलब्ध कराने को तैयार हो जाए, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि इसके बाद भी बांग्लादेश से लगती करीब सौ किमी सीमा ऐसी है, जिस पर बाड़बंदी संभव नहीं है।

ऐसे में घुसपैठ रोकने के लिए अतिरिक्त चौकसी बरतने के अलावा और कोई उपाय नहीं। घुसपैठियों की पहचान के साथ ही घुसपैठ को रोकने के काम को सर्वोच्च प्राथमिकता देने में अब और देर नहीं की जानी चाहिए।

आज का इतिहास | बढ़ता राजस्थान

21 दिसंबर की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- 2012 - साउथ कोरिया के सिंगर साई का गाना 'गंगनम स्टाइल' यूट्यूब पर एक अरब बार देखे जाने वाला पहला वीडियो बना।
- 2012 - गंगनम स्टाइल यूट्यूब पर एक अरब बार देखे जाने वाला पहला वीडियो बना।
- 2009 - भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी की वित्त समिति एवं अधिशाषी मंडल (बीओजी) की प्रथम बैठक आयोजित हुई।
- 2008- कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी व बॉलीवुड स्टार शाहरुख ख़ान को अमेरिका पत्रिका न्यूज बीक ने दुनिया के 50 शक्तिशाली लोगों की सूची में शामिल किया।
- 2007 - सोशल एक्टिविस्ट, कवि हरिवंश राय बच्चन की पत्नी और अमिताभ बच्चन की मां तेजी बच्चन का निधन हुआ।
- 2007 - चीन के दक्षिणी यूनैन प्रान्त के कुनमिंग मिलिट्री एकेडमी में भारत व चीन के बीच पहला साझा अभ्यास शुरू।
- 2002 - ब्रिटेन ने धमकी के बाद बोगोटा का दूतावास बंद किया।
- 1998 - नेपाली प्रधानमंत्री गिरिजा प्रसाद कोइराला का इस्तीफ़ा।
- 1991 - कज़ाकिस्तान की राजधानी अल्मा अता में 11 सोवियत गणराज्यों द्वारा राष्ट्रमंडल का गठन।
- 1988 - स्कॉटलैंड की सीमा के नजदीक लॉकरबी शहर में एक पैन एम का जंबो जेट 258 यात्रियों के साथ दुर्घटनाग्रस्त हो गया।
- 1975 - मेडागास्कर में संविधान लागू हुआ।
- 1974 - पनडुब्बी प्रशिक्षण देने वाले देश के पहले पोत आईएनएस सतवाहन को आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में जहाजी बेडे में शामिल किया गया।
- 1971 - कर्ट वॉल्डहाइम संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के चौथे महासचिव चुने गए। वॉल्डहाइम ने 1 जनवरी 1972 से काम शुरू किया। वॉल्डहाइम 1918 में 21 दिसंबर को ही पैदा हुए थे।
- 1968 - फ्लोरिडा के केप केनेडी स्पेस सेंटर से अपोलो-8 को लॉन्च किया गया था। ये पहला मौका था जब कोई इंसान ग्रेविटेशनल फोर्स को चुनौती देकर धरती की कक्षा से बाहर गया था।
- 1962 - अमरीकी राष्ट्रपति जॉन एफ़ कैनेडी और ब्रितानी प्रधानमंत्री हैरल्ड मैकमिलन ने बहामास में बातचीत के बाद एक बहुआयामी नैटो परमाणु बल बनाने का फैसला किया।
- 1952 - सैफुद्दीन किचलू तत्कालीन सोवियत संघ का लेनिन शांति पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय बने।
- 1949 - पुर्तग़ाली शासकों ने इंडोनेशिया को संप्रभु राष्ट्र घोषित किया।
- 1937 - स्नोवाइट एंड सेवन डॉर्फ नाम की कार्टून मूवी रिलीज हुई। दुनिया की इस पहली फुल लेंथ एनिमेटेड फीचर फिल्म ने वॉल्ट डिज़्नी को दुनिया के सबसे इनोवेटिव और क्रिएटिव मूवी मेकर के रूप में स्थापित किया।

विशेष आलेख

प्राकृतिक दीवार के रूप में जलवायु संतुलन का कवच है अरावली

पहाड़ गायब हुए तो कहानियों में मिलेगी अरावली

विवेक वैष्णव
चित्तौडग़ढ़

अरावली केवल पत्थरों का ढेर नहीं है बल्कि यह उत्तर भारत की जलवायु को संतुलित रखने वाला एक महत्वपूर्ण ''कवच'' है। अडावाला पर्वत श्रंखला को राजस्थान की 'लाइफ लाइन' कहा जाता है और भू-जल स्तर को बनाए रखने में मदद करती है। यह श्रृंखला 'धारवाड़' चट्टानों से बनी है जो खनिजों के मामले में बहुत समृद्ध हैं। यही समृद्धि आज इसके विनाश का कारण (अवैध खनन) भी बनी हुई है। विनाश को विकास कहना हमारे लिए मूर्खता होगी। अरावली पर्वतमाला न केवल भारत बल्कि दुनिया की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है। अरावली सिर्फ एक पहाड़ नही है बल्कि भारत की साँस हैं। अरावली है तभी तो जल, जंगल ओर जीवन हैं। भू-वैज्ञानिकों के अनुसार अरावली का निर्माण 'प्री-कैम्ब्रियन' काल में हुआ था जो लगभग 350 से 570 करोड़ वर्ष पुराना है। यह हिमालय से कहीं अधिक प्राचीन है। अरावली आज जिस रूप में है वह अपने मूल स्वरूप का मात्र एक अवशेष है। करोड़ों वर्षों के घर्षण ने इसे काफी छोटा कर दिया है। जानकारों का तो मानना है कि प्राचीन काल में इसकी ऊँचाई हिमालय जितनी रही होगी। अरावली एक ''प्राकृतिक दीवार'' की तरह काम करती है जो थार रेगिस्तान की रेत और गर्म हवाओं को दिल्ली, एनसीआर और उत्तर भारत की ओर बढने से रोकती है। यह मानसून की हवाओं को रोककर राजस्थान के पूर्वी हिस्सों में वर्षा कराने में सहायक होती है। अरावली दक्षिण में रणथंभौर और उत्तर में सरिस्का जैसे बाघ अभयारण्यों के बीच वन्यजीवों के लिए एक सुरक्षित गलियारे का काम करती है। अरावली एक ''वाटर स्पंज'' की तरह है। इसकी दरार वाली चट्टानें बारिश के पानी को सोखकर ज़मीन के अंदर भेजती हैं। अरावली के खत्म होने का मतलब इन क्षेत्रों का पूरी तरह से सूख जाना है। विशेषज्ञों का तर्क है कि अरावली केवल ऊँचे पहाड़ नहीं हैं बल्कि उनकी तलहटी और कम ऊँचाई वाली ज़मीन भी 'वाटर रिचार्ज' के लिए ज़रूरी है। यदि इसे पहाड़ नहीं माना गया तो यहाँ धड़ल्ले से निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा। विकास के नाम पर प्रकृति टूटी तो इसकी कीमत हमारे साथ ही आने वाली पीढ़ी भी चुकायेगी। वर्तमान में यही अरावली अपने अस्तित्व को लेकर एक बड़े विवाद और संकट के दौर से गुजर रही है। हाल ही में प्रशासनिक स्तर पर अरावली की ''नई परिभाषा'' को लेकर विवाद छिड़ा है। इसके तहत केवल 100 मीटर से ऊंची पहाडियों को ही ''अरावली'' का हिस्सा माना जा रहा है। सिर्फ एक कानूनी फैसले ने देश में चर्चाओ को जन्म देते हुए सोचने पर मज़बूर कर दिया है ओर अरावली पर संकट के काले बादल मंडराने प्रारम्भ हो गये हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि इससे राजस्थान की लगभग 91प्रतिशत पहाडियाँ कानूनी सुरक्षा से बाहर हो जाएंगी जिससे भू-माफियाओं को रास्ता मिल जाएगा। राज्यसभा में भी यह मुद्दा उठा कि अरावली की नई परिभाषा (100 मीटर से ऊँची पहाड़ी) पारिस्थितिक रूप से विनाशकारी है।

सुप्रीम कोर्ट में पेश की गई रिपोर्ट्स के अनुसार अरावली की 128 पहाडियों में से लगभग 31 पहाडियाँ गायब हो चुकी हैं। पत्थरों और खनिजों के लालच में पहाड़ों को अवैध रूप से खोदा जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट कोर्ट ने कई बार अवैध खनन पर पूर्ण रोक लगाई है और सरकारों को चेतावनी दी है कि यदि अरावली खत्म हुई तो उत्तर भारत एक ''रेगिस्तान'' बन जाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने 2002 में अरावली में सभी प्रकार की खनन गतिविधियों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया था जिसे बाद में सशर्त ढील दी गई थी लेकिन अवैध खनन जारी रहा। 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा के फरीदाबाद में अरावली की ज़मीन पर बने 'कांट एन्क्लेव' के निर्माणों को गिराने का आदेश दिया था, यह कहते हुए कि वन भूमि को नष्ट नहीं किया जा सकता। कोर्ट ने चिंता जताई थी कि यदि पहाड़ ही गायब हो जाएंगे तो आने वाली पीढियाँ केवल कहानियों में ही अरावली को देखेंगी।

अफ्रीका की 'ग्रेट ग्रीन वॉल' की तर्ज पर भारत सरकार भी एक महत्वकांक्षी योजना के तहत अरावली के चारों ओर 5 किलोमीटर चौड़ी एक ''ग्रीन बेल्ट'' विकसित करने पर काम कर रही है ताकि मरुस्थलीकरण को रोका जा सके। अरावली को बचाना केवल पेड़ों को बचाना नही है बल्कि आने वाली पीढियों के लिए पानी, साफ हवा और जीवन को सुरक्षित करना है। अरावली को ऊंचाई के स्थान पर उसके पारिस्थितिक योगदान के आधार पर परिभाषित किया जाना चाहिए। अरावली पर्वतमाला के पूरे क्षेत्र को ही ''वन संरक्षण अधिनियम'' के तहत आधिकारिक रूप से वन घोषित किया जाना चाहिए। अरावली को विनाशकारी खनन के बजाय संधारणीय पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिलने के साथ ही प्रकृति का अस्तित्व भी बना रह सके।

आतंकवाद का नया पनाहगार बनता - बांग्लादेश

अरविंद रावल

पाकिस्तान वर्षों से आतंकवाद के सहारे भारत को अस्थिर करने का प्रयास करता रहा है और आज भी उसकी नापाक गतिविधियां जारी हैं । अब बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता और कट्टरपंथी सोच के चलते वह भी आतंकवाद का नया केंद्र बनता जा रहा है ।

बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के तख्तापलट के बाद बनी अंतरिम सरकार पर कट्टरपंथी और चरमपंथी ताकतों का प्रभाव लगातार बढ़ता दिखाई दे रहा है । इसके परिणामस्वरूप वहां रह रहे अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय पर अत्याचार की घटनाएं चिंताजनक स्तर तक पहुंच गई हैं । आए दिन हिंदुओं की हत्या, उनके घरों पर हमले तथा महिलाओं और बच्चियों की अस्मिता से खिलवाड़ की खबरें सामने आ रही हैं । विरोध करने पर पूरे परिवार को निशाना बनाया जाना यह दर्शाता है कि स्थिति कितनी भयावह हो चुकी है । अंतरिम प्रधानमंत्री मोहम्मद यूनुस के शासनकाल में हिंदुओं पर हिंसा की बढ़ती घटनाएं वहां की कट्टरपंथी मजहबी मानसिकता को उजागर करती हैं । यह स्थिति किसी से छिपी नहीं है, इसके बावजूद वैश्विक शांति की बात करने वाले अमेरिका, संयुक्त राष्ट्र और मानवाधिकार संगठनों की चुप्पी अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है । विडंबना यह है कि यदि भारत में अल्पसंख्यकों के विरुद्ध कोई छोटी-सी घटना भी होती है तो यही देश और संगठन मुखर होकर भारत की आलोचना करते हैं और प्रतिबंधों तक की बात करने लगते हैं ।

पाकिस्तान वर्षों से आतंकवाद के सहारे भारत को अस्थिर करने का प्रयास करता रहा है और आज भी उसकी नापाक गतिविधियां जारी हैं ।

अब बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता और कट्टरपंथी सोच के चलते वह भी आतंकवाद का नया केंद्र बनता जा रहा है । अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों के विरुद्ध भारत की सख्ती से वहां के कट्टरपंथी तत्वों में आक्रोश बढ़ा है, जिसका बदला वे हिंदुओं पर अत्याचार करके निकाल रहे हैं । आर्थिक रूप से कमजोर होने के बावजूद बांग्लादेश को परोक्ष रूप से कुछ वैश्विक शक्तियों का समर्थन मिल रहा है, जिसके कारण वहां की भारत-विरोधी ताकतें खुलकर बोलने लगी हैं । भारत आज विश्व की उभरती आर्थिक महाशक्ति है और एक विशाल बाजार के रूप में स्थापित हो चुका है । इसी कारण कुछ वैश्विक शक्तियां आतंकवाद को परोक्ष समर्थन देकर भारत की प्रगति को बाधित करना चाहती हैं ।

भारत सरकार को बांग्लादेश सहित सभी पड़ोसी देशों की गतिविधियों पर पैनी नजर बनाए रखनी होगी । अवैध घुसपैठियों के प्रति किसी भी प्रकार की नरमी देश की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन सकती है। देश के नागरिकों को भी यह स्पष्ट संदेश देना होगा कि अवैध घुसपैठ का समर्थन करने वाली राजनीति अब स्वीकार्य नहीं है । आज आतंकवाद केवल भारत की नहीं, बल्कि पूरे विश्व की समस्या बन चुका है। जब तक वैश्विक शक्तियां अपने व्यापारिक हितों से ऊपर उठकर आतंकवाद के खात्मे के लिए एकजुट नहीं होंगी, तब तक वैश्विक शांति एक सपना ही बनी रहेगी । अब समय आ गया है कि दुनिया दोहरे मापदंड छोडक़र आतंकवाद के विरुद्ध निर्णायक और ईमानदार पहल करे।

आध्यात्मिक चिंतन | बढ़ता राजस्थान

मृत्यु यानि एक नए युग का आरंभ

रूपक शर्मा

अभी इसी क्षण अगर सब कुछ थम जाए,श्वास बाहर जाए और लौटकर न आए तो क्या हम तैयार हैं? लोग मृत्यु को ही अंत समझते हैं क्योंकि हम केवल शरीर की यात्रा तक ही सिमित रहते हैं,आत्मा से तो जीवन भर हमारा छत्तीस का आंकड़ा बना रहता है क्योंकि शरीर और इंद्रियों के आगे नतमस्तक होकर हम आत्मा की जीवन में सैकड़ों बार हत्या कर चुके होते हैं। इसलिए जीवन को केवल शरीर तक ही समझते हैं कि शरीर की मृत्यु को ही इंसान की मृत्यु मानी जाती है। पर जो शरीर में से सब देख रहा था, जो सब सुन रहा था, जो भीतर से सब अनुभव कर रहा था वह आखिर कहां चला जाता है?

यही सबसे बड़ा प्रश्न है और यही वह द्वार है, जहां से आत्मा की यात्रा आरंभ होती है। गरुड़ पुराण कहता है की मृत्यु कोई अचानक अंधकार की यात्रा नहीं है यह एक बहुत सूक्ष्म बहुत शांत और बहुत गहरी घटना है, बाहर से देखने वाले को लगता है कि सब समाप्त हो गया लेकिन भीतर जो घटता है वह एक लंबी प्रक्रिया की शुरुआत है। या यूं कहें कि मृत्यु ही आरंभ है उस नए युग का। जब आखिरी सांस छूटती, है उसी क्षण आत्मा शरीर से अलग तो हो जाती है लेकिन काफी समय तक वह वहीं रहती है खुद की देह के आसपास, इसी घर में,इसी बिस्तर के पास जहां जीवन भर रही थी। अजीब लगता है यह सुनकर लेकिन सोचो अगर कोई व्यक्ति 40 50 60 वर्ष एक ही शरीर को मैं(अहम) मानता रहा हूं तो अचानक कैसे मान ले कि मैं रहा ही नहीं। गरूड़ पुराण के आधार पर आत्मा परमात्मा का एक अंश ही तो है आखिर उसे उस परमशक्ति तक वापिस लौटना है उस अनन्त यात्रा पर।

हैल्थ टिप्स | बढ़ता राजस्थान

चेहरे की झाइयों को जड़ से खत्म कर देंगे ये घरेलू नुस्खे, हफ्तेभर में स्किन हो जाएगी निखरी और बेदाग

हर व्यक्ति की चाहत होती है कि उसकी त्वचा हमेशा निखरी और बेदाग नजर आए। लेकिन कई लोगों के चेहरे पर झाइयां हो जाती हैं, जो चेहरे की सुंदरता को कम कर देती हैं। झाइयां होने पर त्वचा पर भूरे रंग के धब्बे दिखने लगते हैं और स्किन का रंग भी डार्क हो जाता है। ऐसे में, कई लोग जिद्दी झाइयों को हटाने के लिए तरह-तरह के प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करते हैं। वहीं, कुछ लोग पार्लर जाकर महंगे ब्यूटी ट्रीटमेंट्स कराते हैं। लेकिन फिर भी कुछ खास फायदा नहीं मिल पाता है। ऐसे में, झाइयों से छुटकारा पाने के लिए आप कुछ घरेलू उपायों को अपना सकते हैं।

शहद और नींबू का पेस्ट

चेहरे से झाइयों को हटाने के लिए आप शहद और नींबू का पेस्ट लगा सकते हैं। दरअसल, शहद में हाइड्रोजन पेरोक्साइड होता है, जो झाइयों को हल्का करने में मदद करता है। वहीं, नींबू में विटामिन-सी पाया जाता है, जो दाग-धब्बों और पिगमेंटेशन को कम करने में मदद करता है। इसके लिए आप एक चम्मच शहद लें। इसमें एक चम्मच नींबू का रस डालकर अच्छी तरह मिक्स कर लें। अब इस मिश्रण को अपने चेहरे पर लगाएं और करीब 10-15 मिनट बाद चेहरे को पानी से धो लें। हफ्ते में 2-3 बार इसका इस्तेमाल करने से धीरे-धीरे झाइयां गायब हो जाएंगी।

-दही -चेहरे से झाइयों को साफ करने के लिए दही काफी फायदेमंद साबित हो सकती है। दरअसल, इसमें लैक्टिक एसिड मौजूद होता है, जो दाग-धब्बों और झाइयों को कम करने में मदद करता है। साथ ही, त्वचा की रंगत को सुधारने में भी मदद करती है। इसके लिए दही में एक चुटकी हल्दी मिलाकर अपने चेहरे पर लगाएं और हल्के हाथों से सर्कुलर मोशन में मसाज करें। करीब 15 मिनट बाद चेहरे को पानी से धो लें। इससे आपकी त्वचा मुलायम और चमकदार नजर आएगी।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, अपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारम्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें संताए और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष

आज का दिन आपके लिए मौज मस्ती से भरा रहने वाला होगा। आपको अपने किसी साथी की कोई बात बुरी लग सकती है। आप यदि कहीं घूमने-फिरने की योजना बना रहे थे, तो आप अपने माता-पिता से पूछ कर जाएं।

वृष

आज का दिन सामाजिक क्षेत्रों में कार्यरत लोगों के लिए बढिय़ा रहने वाला है, उनकी मेहनत रंग लाएगी और उन्हें किसी नए पद की प्राप्ति हो सकती है। आपकी अपने बॉस से किसी बात को लेकर खटपट हो सकती है।

मिथुन

आज आपको कार्यक्षेत्र में कोई बहलाने फुसलाने की कोशिश कर सकता है, जिससे आपके आपसी वाद विवाद खड़े होंगे। आपको अपने पिताजी की कोई बात बुरी लगती है और घूमने फिरने के दौरान कोई महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होगी।

कर्क

आज का दिन आपके लिए मिला-जुला रहने वाला है। आपके परिवार में किसी सदस्य के विवाह की बात पक्की होने से माहौल खुशनुमा रहेगा और आपके ऊपर यदि कुछ कर्जो था, तो उसे भी आप आसानी से उतार सकते हैं।

सिंह

आज का दिन आपके लिए भागदौड़ से भरा रहने वाला है। एक साथ कई काम हाथ लगेंगे, जो आपके टेंशनों को बढ़ाएंगे। आपके मन में किसी बात को लेकर यदि उतावलापन हो।

कन्या

आज का दिन आपके लिए मौज मस्ती से भरा रहने वाला है। आज आपको अपनी कमियों को दूर करके आगे बढऩा होगा और जो जातक सरकारी नौकरी की तैयारी में लगे हैं, उन्हें कोई खुशखबरी सुनने को मिल सकती है।

तुला

आपका दिन आपके लिए सामान्य रहने वाला है। आपको अपने पिताजी की कोई बात बुरी लग सकती है, लेकिन सेहत को लेकर भी आपका इंतजार हो सकता है और किसी से धन का लेनदेन सोच समझकर करें, क्योंकि आपके साथ कोई धोखा हो सकता है।

वृश्चिक

आज का दिन आपकी इनकम को बढ़ाने वाला रहेगा, लेकिन आपको अपने किसी सहयोगी की कोई बात बुरी लग सकती है। आज आपका धैर्य और साहस बढऩे से खुशी होगी। संतान पक्ष की ओर से आपको कोई खुशखबरी सुनने को मिल सकती है।

धनु

आज का दिन आपके लिए सुख-सुविधाओं में वृद्धि लेकर आने वाला है। आपकी किसी बात को लेकर पिताजी आपसे नाराज हो सकते हैं। आप अपने बिजनेस में उतार चढ़ाव को लेकर भी थोड़ा टेंशन में रहेंगे।

मकर

आज का दिन आपके लिए सामान्य रहने वाला है। आपको किसी दूसरे के मामले में बोलने से बचना होगा। आपको अपने पिताजी की कोई बात बुरी लग सकती है, लेकिन आपकी अपने भाई व बहनों से भी खूब पटेगी।

कुंभ

आज का दिन आपके लिए बिजनेस के मामले में थोड़ा ध्यान देने के लिए रहेगा, क्योंकि आपका कोई भारी नुकसान हो सकता है। यदि आपने किसी काम को लेकर पार्टनरशिप की, तो उसमें भी आपके साथ कोई धोखा होने की संभावना है।

मीन

आज आपके अंदर कुछ नया करने की इच्छा जागृत होगी, जिससे आपके मन में जल्दबाजी रहेगी और संतान आपकी उम्मीदों पर खरी उतरेगी और आपकी सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी।

Website..........
www.hukmnamasamachar.com

हुक्मनामा समाचार

जोधपुर, रविवार 21 दिसम्बर 2025

सम्पादकीय...

एपस्टीन फाइल्स या षड्यंत्र

बहु प्रचारित और बहुचर्चित एपस्टीन फाइल्स मैं शुक्रवार को अमेरिकी न्याय विभाग ने जेफरी एपस्टिन कि सेक्स ट्रैफकिंग कांड से जुड़े कुछ दस्तावेज जारी किए हैं विभाग का कहना है कि सिर्फ दस्तावेज कुछ हफ्तों में टुकड़ों में जारी किए जाएंगे जारी दस्तावेजों को नवंबर में पारित फेस्टिन प्राइस ट्रांसपेरेंसी एक्ट की 30 दिवसीय समय सीमा की आखिरी दिन जारी किए गए हैं विभाग के डिप्टी अटॉर्नी के मुताबिक हम हर पीड़ित की पहचान और गोप नौ नेता की रक्षा कर रहे हैं इसके लिए संवेदनशील जानकारी पर कई की फेरी जा रही है। जेफरी एपिस्टिन दशकों तक दुनिया के सबसे शक्तिशाली लोगों का मित्र रहा है 2008 में उसे पर गंभीर आरोप लगे थे लेकिन तब एक गुप्त समझौते के तहत वह मामूली सजा काटकर बच निकला 2019 में फिर से गिरफ्तारी के बाद जेल में उसकी संदिग्ध मौत हो गई माना जाता है कि उसकी हत्या कराई गई जबकि पुलिस के मुताबिक उसने आत्महत्या की। सरकार को जो दस्तावेज जारी करने थे वह दस्तावेज रसूखदार लोगों की सूची और उनके कर्म को एक कच्चा चिट्ठा है जो पशतीन के यो तस्करी नेटवर्क से जुड़े थे या शामिल रहे। पहली किस्त में जो 68 फोटो और दस्तावेज जारी किए गए हैं वह बड़े लोगों से संबंधित है लेकिन उससे कहीं प्रमाणित नहीं होता है कि यह सेक्स रैकेट या सेक्स तस्करी से संबंधित मामला है। बड़े लोग उसके संपर्क में थे लेकिन वह ब्लैकमेल हो रहे थे या नेटवर्क का हिस्सा थे यह साफ नहीं हो पाया है उल्टा यह संदेह हो रहा है कि अमेरिकी सरकार क्या लोगों को ब्लैकमेल कर रही है या धमकाने की कोशिश कर रही है। कहां जा रहा है कि भारत से दो नेताओं और एक उद्योगपति का नाम इस सूची में है। सेक्स स्कैंडल से किसी का बिना दोषी होने पर नाम जोड़ना अच्छी बात नहीं है लेकिन अमेरिका जैसा देश तो शुरू से भारत के खिलाफ है और रहेगा वह इस मामले की आड़ में प्रधानमंत्री को दबाना और डराना चाह रहे हैं लेकिन उनके मंसूबा कामयाब नहीं होंगे। सारी सूचना जारी होने के बाद यह भी साफ होना चाहिए कि कितने लोगों का नाम था और कितनों की फोटो जारी की गई, कहीं ऐसा नहीं की कुछ लोगों को बदनाम करने की चेष्टा की जा रही है।

वैभव लोढ़ा...

इतिहास में आज

2009 – भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी की वित्त समिति एवं अधिशाषी मंडल की प्रथम बैठक आयोजित हुई।
2011 – देश के जाने-माने परमाणु वैज्ञानिक पी के आयंगर का निधन।
2012 – 'गंगनम स्टाइल' यूट्यूब पर एक अरब बार देखे जाने वाला पहला वीडियो बना।
1937 – रंगीन चित्रों और आवाज वाली पहली कार्टून फिल्म-डिजनीस स्नो व्हाईट- का प्रदर्शन किया गया।

-धर्म चंद मेहता

क्रॉस फायर

❑ **शेख हसीना के विरोधी नेता उस्मान आदि की हत्या के बाद बांग्लादेश में हिंसा।**
◆ **दूसरों की कब्र खोदने वाले की खुद की कब्र खुद जाती है।**
❑ **संसद के दोनों सदनों की कार्रवाई अनिश्चित काल के लिए स्थगित।**
◆ **खानापूर्ति पूरी हुई।**
❑ **राहुल गांधी बोले मनरेगा खत्म करना ग्रामीणों के अधिकारों पर सीधा प्रहार।**
◆ **जनता यह बात समझे तब ना।**
❑ **कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर प्रदूषण के खतरों को नकारने का आरोप लगाया।**
◆ **स्वीकारने और नकारने से थोड़ी प्रदूषण बढ़ जाता है।**
❑ **सुप्रीम कोर्ट बोला समुदाय से बाहर शादी पर बेटी को संपत्ति में हिस्सा नहीं।**
◆ **अब पैसे के चक्कर में कोई शादी नहीं करेगा।**
❑ **विधानसभा की सदाचार समिति के समक्ष विधायक निधि में घोटाला करने की कोशिश करने वाले विधायकों ने पक्ष रखा।**
◆ **जिनके सामने पक्ष रखा वह पाक साफ है क्या।**
❑ **हाई कोर्ट बोला सरकार छात्र संघ चुनाव को लेकर नीति बनाये और कमेटी का गठन करें।**
◆ **यदि चुनाव कराने की इच्छा हो तो।**
❑ **ट्रंप ने बंद किया अमेरिका का ग्रीन कार्ड लॉटरी प्रोग्राम।**
◆ **ट्रंप का बस चले तो सब की हवा पानी बंद कर दे।**

.............अंजू लोढ़ा

आज का राशिफल

रविवार 21 दिसम्बर, 2025

मेष राशि: परिवारवालों को अपनी प्रेमिका से मुलाकात करवा सकते हैं। लाइफ पार्टनर को यह यकीन दिलाने में सफल होंगे। वैवाहिक जीवन में एक दूसरे का साथ देने में सफल होंगे।

वृषभ राशि: वैवाहिक जीवन में परिवार जनों का भरपूर साथ मिलेगा। जीवनसाथी से भरपूर साथ मिलने वाला है। किसी कारणवश प्रेमिका से विवाद हो सकता है।

मिथुन राशि: प्रिय साथी की सेवा में हाजिर रहने वाले हैं। लाइफ पार्टनर के साथ किसी रोमांटिक यात्रा पर जा सकते हैं। लव लाइफ में साथी से मिलकर खुश रहने वाले हैं। जीवनसाथी की बातों का कष्ट होगा। अनावश्यक गतिविधि से दूर रहें।

कर्क राशि: पार्टनर किसी बात पर रूठ सकता है। लाइफ पार्टनर के सामने नम्र रहने वाले हैं। लव लाइफ में किसी बात को लेकर साथी से मनमुटाव रहेगा। वैवाहिक जीवन में आपसी मिठास बढ़ेगा।

सिंह राशि: लव लाइफ का रिश्ता वैवाहिक जीवन में बदल सकता है। जीवनसाथी के स्वास्थ्य के ऊपर धन खर्च होगा। वैवाहिक जीवन में कष्टों का सामना करना पड़ेगा। लव लाइफ में आपसी बातचीत बंद हो सकती है।

कन्या राशि: लव लाइफ में कोई नया मोड़ आने वाला है। वैवाहिक जीवन में किसी अजनबी से कुछ सीख मिल सकता है। लव लाइफ अधिक अपेक्षा से परेशान हो सकते हैं।

तुला राशि: दोस्तों के मस्त रहने वाले हैं। आपके दोस्त आपसे मिलने आपके घर आ सकते हैं। लव लाइफ की पुरानी यादों को ताजा करने वाले हैं। वैवाहिक जीवन यदि कोई तनाव पहले से है तो दूर होगा।

वृश्चिक राशि: आज अपनों के सहयोग से प्यार में सफलता पाने वाले हैं। अविवाहित जातकों की शादी पक्की हो सकती है। लव पार्टनर के सामने प्यार जताने में सफल हो सकते हैं।

धनु राशि: लव लाइफ में सफलता पाने के लिए किसे दोस्त का सहारा ले सकते हैं। वैवाहिक जीवन में कोई अतिरिक्त जिम्मेदारी मिलने वाली है। परिवार के लोग वैवाहिक जीवन में हस्तक्षेप करने वाला है।

मकर राशि: लव पार्टनर के साथ देश से बाहर घूमने जाने का मौका मिलेगा। रिश्ते में मजबूती आने वाली है। प्रेमिका से मिलने के लिए किसी अ%छे स्थान पर जा सकते हैं।

कुम्भ राशि: लव लाइफ में पारिवारिक समस्या का सामना करना पड़ेगा। किसी अनजान से प्यार हो सकता है। पुरानी प्रेमिका मिलने के लिए जिद्द कर सकती है। अविवाहित जातक को शादी में देरी हो सकती है।

मीन राशि: लव लाइफ की परेशानी को आसानी से निजात पा सकते हैं। शादी के लिए प्रस्ताव आ सकता है। जीवनसाथी की सेहत की चिंता रहने वाली है। प्रेम विवाह का सपना पूरा हो सकता है।

राजेन्द्र गुप्ता
ज्योतिषी और हस्तरेखाविद, मो. 9611312076

नोट- अगर आप अपना भविष्य जानना चाहते हैं तो दिए गए मोबाइल नंबर पर कॉल करके या इसी व्हाट्स एप नम्बर पर मैसेज भेजकर पहले शर्तें जान लेवें, इसी के बाद अपनी बर्थ डिटेल और हैंडप्रिंट्स भेजें।

बांग्लादेश : अस्थिरता, अराजकता और हिंसा के चक्रव्यूह में

-सुनील कुमार महला

पड़ोसी देश बांग्लादेश के हालात ठीक नहीं है और बांग्लादेश पिछले 17-18 महीनों से लगातार अस्थिरता , अराजकता और धर्मांधता की आग में झुलस रहा है। हाल ही में बांग्लादेश में फिर से हिंसा भड़क उठी, यह बहुत ही दुखद है।जानकारी के अनुसार एक छात्र नेता का शव पहुंचने के बाद ढाका में आगजनी की घटनाएं हुईं और यह दावा किया जा रहा है कि मुख्य आरोपी भारत भाग गया है तथा इधर, बॉर्डर पर भारतीय सेना अलर्ट है। गौरतलब है कि बांग्लादेश में शेख हसीना के विरोधी नेता उस्मान हादी का शव 19 दिसंबर 2025 शुक्रवार शाम सिंगापुर से ढाका पहुंचा और इस बीच ढाका में आंदोलनकारी फिर हिंसक हो गये। मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार उदिची संस्था के कार्यालय को जला दिया गया।

ये संस्था कट्टरपंथियों के विरोध में काम करती है। दरअसल, उदिची शिल्पी गोष्ठी बांग्लादेश का एक प्रमुख सांस्कृतिक संगठन है,जो 1968 में स्थापित हुआ था। यह प्रगतिशील कला, संगीत और रंगमंच को बढ़ावा देता रहा है। वास्तव में यह लोकतंत्र, अभिव्यक्ति की आजादी और मानवाधिकारों से जुड़े आंदोलनों में भी सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। हाल फिलहाल, यह बताया जा रहा है कि हत्यारों को ट्रांसपोर्टेशन में सपोर्ट करने वाले आरोपियों ने अदालत में हत्या के मुख्य आरोपी फैसल करीम के भारत भागने का दावा किया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इससे पहले उस्मान हादी की गुरुवार रात मौत हो गई थी और इसके बाद बांग्लादेश में हिंसा भड़क गई थी। इस दौरान आंदोलनकारियों ने ढाका में 2 प्रमुख मीडिया हाउस, आवामी लीग(शेख हसीना की पार्टी के ऑफिस) के कार्यालय को फूंक दिया। इतना ही नहीं, ढाका के नजदीक भालुका में धर्म का अपमान करने के आरोप में एक हिंदू युवक को पीट-पीटकर मार डाला गया।एक रिपोर्ट के मुताबिक, युवक के शव को नग्न करके एक पेड़ से लटका कर उसे आग लगा दी।मृतक की पहचान दीपू चंद्र दास के रूप में हुई है। सोशल मीडिया पर इस घटना का एक वीडियो भी वायरल हुआ, जिसमें लोग 'अल्लाह-हू-अकबर' के नारे लगाते दिख रहे हैं। बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि इन दिनों में शायद ही कोई ऐसा महीना रहा होगा, जब यहां हिंसा ना भड़की हो। सच तो यह है कि शेख हसीना की सरकार गिराने के बाद देश में शांति लाने का वादा करने वाली मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार हिंसा रोकने में पूरी तरह से नाकाम रही है।

हालांकि,यह बात अलग है कि यूनुस ने हाल ही की घटना पर यह बात कही है कि बांग्लादेश में हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है। पाठकों को बताता चलूं कि बांग्लादेश में मुहम्मद यूनुस ने शुक्रवार को छात्र नेता उस्मान की मौत के बाद भड़की हिंसक प्रदर्शनों के बीच एक हिंदू व्यक्ति की पिटाई और हत्या की कड़ी निंदा की है। यूनुस ने जोर देकर कहा कि 'नए बांग्लादेश में ऐसी हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है'। उन्होंने कहा कि इस अपराध में शामिल किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा।बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने पत्रकारों पर हमलों की भी कड़ी निंदा की है। दरअसल,उपद्रवियों ने देश के सबसे बड़े अखबार डेली स्टार और प्रोथोम आलो के ऑफिस में भी घुसकर तोड़फोड़ की थी और आग लगा दी थी। सरकार ने यह बात कही है कि वह हिंसा, धमकी, आगजनी और संपत्ति को नुकसान पहुंचाने की हर घटना की साफ और बिना किसी शर्त के निंदा करती है।सरकार ने कहा है कि इस समय बांग्लादेश एक ऐतिहासिक लोकतांत्रिक बदलाव के दौर से गुजर रहा है, जिसे नफरत और अराजकता से नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए। अंतरिम सरकार ने लोगों से यह अपील की है कि वे भीड़ की हिंसा का विरोध करें। सरकार ने कहा कि कुछ कट्टर और हाशिए पर मौजूद तत्व देश को अस्थिर करना चाहते हैं। क्या यह चिंताजनक बात नहीं है कि भारतीय राजनयिक परिसरों और उनके घरों पर हमले किए गए हैं तथा पूर्व राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान के आवास में भी तोड़फोड़ की गई। वास्तव में सच तो यह है कि आज भारत के पड़ोसी देश बांग्लादेश में हालात बहुत ही तेजी से बिगड़ते चले जा रहे हैं। वहां हिंसा और अराजकता बढ़ रही है और खास तौर पर हिंदुओं को निशाना बनाए जाने की खबरें लगातार सामने आ रही हैं। इसी बीच एक वीडियो वायरल हुआ है, जिसमें पुराने 'सिराजुद्दौला साम्राज्य' को दोबारा बनाने की बात कही जा रही है, जिसमें भारत के कुछ हिस्सों को भी शामिल बताया गया है।

वास्तव में,इससे माहौल और भी ज्यादा तनावपूर्ण हो गया है। बांग्लादेश में इन घटनाओं ने यह सवाल खड़े कर दिये हैं कि बांग्लादेश क्या सांप्रदायिक उग्रता की ओर बढ़ रहा है या फिर उसे जानबूझकर अस्थिर किया जा रहा है। भारत की चिंता यह भी है कि मौजूदा बांग्लादेशी नेतृत्व की नीतियां, बांग्लादेश में पाकिस्तान जैसी सोच को ही बढ़ावा दे रही हैं, जिससे भारत-विरोधी ताकतों को वहां खुला मंच मिल रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि मोहम्मद यूनुस, मोहम्मद अली जिन्ना की विचारधारा पर चल रहे हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि 1920 से पहले जिस जिन्ना को 'हिंदू-मुस्लिम एकता का राजदूत' कहा जाता था, 1920 के बाद राजनीतिक परिस्थितियों के बदलने, कांग्रेस के बढ़ते वर्चस्व और मुस्लिम समुदाय के भविष्य को लेकर आशंकाओं के कारण उनकी सोच में परिवर्तन आ गया था और वे मुसलमानों के राजनीतिक अधिकारों और संवैधानिक सुरक्षा पर जोर देने लगे थे। 1937 के प्रांतीय चुनावों के बाद जिन्ना इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि हिंदू और मुस्लिम केवल धार्मिक नहीं, बल्कि राजनीतिक रूप से भी अलग राष्ट्र हैं, और इसी विचार से द्विराष्ट्र सिद्धांत तथा पाकिस्तान की मांग सामने आई थी। बहरहाल, भारतीय संसद की विदेश मामलों की समिति ने भी अपनी एक रिपोर्ट में यह बात कही है कि 1971 के बाद यह भारत के लिए बांग्लादेश से जुड़ा सबसे बड़ा कूटनीतिक और रणनीतिक संकट है। समिति के अनुसार, बांग्लादेश में चल रही हिंसा से भारत को गंभीर सुरक्षा और कूटनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।इसके साथ ही, भारत को यह डर भी है कि बांग्लादेश चीन के और करीब जा सकता है, जैसा कि चीन ने मोंगला बंदरगाह के विस्तार में भारी निवेश किया है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि मोंगला बंदरगाह बांग्लादेश का दूसरा सबसे बड़ा समुद्री बंदरगाह है तथा यह देश के दक्षिण-पश्चिमी हिस्से में, पशुर नदी के तट पर स्थित है और सुंदरबन के निकट होने के कारण रणनीतिक व पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। इसकी स्थापना 1950 के दशक में हुई थी।

इस बंदरगाह से भारत ने अपनी सुरक्षा के लिए वहां रेलवे परियोजना में निवेश किया है। अंत में यही कहूंगा कि बांग्लादेश की स्थिति अब सिर्फ विदेश नीति की ही समस्या नहीं रही है, बल्कि यह भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए भी एक खतरा बनती जा रही है। दूसरे शब्दों में कहें तो बांग्लादेश में हालिया राजनीतिक-सामाजिक अस्थिरता ने भारत के लिए कहीं न कहीं गंभीर चिंता का विषय है। वहां बढ़ते विरोध-प्रदर्शन, हिंसा और भारत-विरोधी माहौल का असर सीमा सुरक्षा, द्विपक्षीय व्यापार और क्षेत्रीय स्थिरता पर पड़ रहा है। पिछले कुछ समय से भारत ने सीमावर्ती क्षेत्रों में और अधिक सतर्कता बढ़ाई है, क्योंकि अस्थिरता से अवैध गतिविधियों, शरणार्थी दबाव और बाहरी शक्तियों के प्रभाव की आशंका रहती है। कुल मिलाकर, बांग्लादेश का संकट भारत के लिए केवल पड़ोसी देश की समस्या नहीं, बल्कि सुरक्षा, कूटनीति और भू-राजनीतिक हितों से जुड़ा महत्वपूर्ण मुद्दा है।ऐसे हालात में भारत को बहुत सतर्क और समझदारी से कदम उठाने की जरूरत है।

संसद सत्र के बाद चाय की तस्वीरों से बदली कांग्रेस की सियासत और उभरी प्रियंका गांधी

स्वदेश कुमार

संसद के शीतकालीन सत्र के समापन के बाद लोकसभा अध्यक्ष की ओर से दी गई चाय की दावत आमतौर पर औपचारिक मानी जाती है, लेकिन इस बार यह आयोजन सियासी चर्चा का केंद्र बन गया। वजह बनीं कांग्रेस की नई सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा। चाय पर हुई इस मुलाकात की तस्वीरों में प्रियंका गांधी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के साथ पहली पंक्ति में बैठी नजर आईं। यही तस्वीरें कांग्रेस के भीतर बदलते समीकरणों और नेतृत्व की नई शैली की कहानी कहने लगीं। राजनीति में कई बार शब्दों से ज्यादा तस्वीरें बोलती हैं और इस मौके पर भी यही हुआ।

प्रियंका गांधी का संसद में यह पहला सत्र था, लेकिन उनकी मौजूदगी ने साफ कर दिया कि वे खुद को सिर्फ एक नई सांसद तक सीमित नहीं रखने वाली हैं। जिस जगह आमतौर पर सत्ता पक्ष के शीर्ष नेता और संवैधानिक पदों पर बैठे लोग दिखाई देते हैं, वहां प्रियंका का बैठना एक संकेत के तौर पर देखा गया। चाय के दौरान प्रधानमंत्री मोदी से उनकी सहज बातचीत ने यह संदेश भी दिया कि वे संवाद से पीछे हटने वाली नेता नहीं हैं। सूत्रों के मुताबिक इस बातचीत में वायनाड से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हुई। एक सांसद के तौर पर अपने क्षेत्र की बात सीधे प्रधानमंत्री तक पहुंचाना उनके सक्रिय रवैये को दर्शाता है। इस पूरे घटनाक्रम में राहुल गांधी की गैरमौजूदगी भी चर्चा में रही। राहुल गांधी पहले भी कई बार ऐसे अनौपचारिक कार्यक्रमों से दूरी बनाए रखते रहे हैं। वे आमतौर पर संसद के अंदर तीखे भाषण और आक्रामक विरोध के जरिए अपनी राजनीति करते हैं। इसके उलट प्रियंका गांधी ने चाय की इस मुलाकात को एक अवसर की तरह लिया। कांग्रेस के भीतर यह तुलना अपने आप होने लगी कि पार्टी में दो अलग-अलग राजनीतिक शैलियां अब खुलकर सामने आ रही हैं।प्रियंका गांधी का तरीका संसद के अंदर भी देखने को मिला। उन्होंने अपने पहले ही सत्र में यह स्पष्ट कर दिया कि वे सिर्फ बयानबाजी तक सीमित नहीं रहेंगी। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से उनकी मुलाकात इसी का उदाहरण रही।

वायनाड से जुड़े एक राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजना पर चर्चा के लिए उन्होंने गडकरी से समय मांगा। गडकरी ने भी बिना देर किए उन्हें अपने कार्यालय आने का न्योता दिया। दोनों नेताओं के बीच हुई बातचीत सौहार्दपूर्ण रही और इसका संदेश दूर तक गया। विपक्ष में रहते हुए सत्ता पक्ष के वरिष्ठ मंत्री से इस तरह का संवाद आसान नहीं होता, लेकिन प्रियंका की विनम्रता और तैयारी ने यह रास्ता खोल दिया। कांग्रेस के कई नेताओं का मानना है कि प्रियंका गांधी का यह अंदाज पार्टी के लिए फायदेमंद हो सकता है। वे सुबह तय समय से पहले संसद पहुंचती हैं और सदन की कार्यवाही को गंभीरता से समझने की कोशिश करती हैं। मीडिया में भी उनकी मौजूदगी लगातार बढ़ी है। संसद के गलियारों से लेकर सदन के भीतर तक, हर जगह उनकी सक्रियता पर नजर जा रही है। इससे यह धारणा बनने लगी है कि पार्टी में जिम्मेदारियों का संतुलन धीरे-धीरे बदल सकता है।पार्टी के अंदर एक और बड़ा बदलाव यह दिखा कि जिन नेताओं को लंबे समय से हाशिये पर माना जा रहा था, वे फिर से सक्रिय नजर आने लगे। मनीष तिवारी और शशि थरूर जैसे नेता संसद में महत्वपूर्ण मुद्दों पर बोलते दिखे। कांग्रेस के भीतर यह माना जा रहा है कि प्रियंका गांधी ने महसूस किया है कि अनुभवी और प्रभावी वक्ताओं को नजरअंदाज करना पार्टी को नुकसान पहुंचाता है। उनकी पहल पर इन नेताओं को आगे लाया गया, जिससे कांग्रेस की आवाज ज्यादा मजबूत और संतुलित दिखने लगी।

प्रियंका गांधी की कार्यशैली में उनकी मां सोनिया गांधी की झलक भी कई नेताओं को दिखाई देती है। सबको साथ लेकर चलने की कोशिश, मतभेदों को शांत तरीके से सुलझाना और संगठन को प्राथमिकता देना उनकी राजनीति का हिस्सा बनता दिख रहा है। कांग्रेस लंबे समय से गुटबाजी और अंदरूनी खींचतान से जूझती रही है। ऐसे में प्रियंका की यह कोशिश पार्टी के लिए राहत की तरह देखी जा रही है। कई वरिष्ठ नेता अब अपनी शिकायतें और सुझाव लेकर सीधे प्रियंका के पास पहुंच रहे हैं, क्योंकि उन्हें वहां सुने जाने का भरोसा मिलता है।भारतीय जनता पार्टी के नजरिये से भी यह बदलाव अहम माना जा रहा है। राहुल गांधी के बयानों पर भाजपा के नेता अक्सर तीखी प्रतिक्रिया देते रहे हैं, लेकिन प्रियंका गांधी को लेकर उनकी भाषा अपेक्षाकृत संयमित रहती है। प्रियंका सवाल पूछती हैं और सरकार को घेरती भी हैं, लेकिन उनका तरीका ऐसा होता है कि जवाब देना जरूरी हो जाता है। यही वजह है कि उन्हें नजरअंदाज करना आसान नहीं है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि चाय की इस मुलाकात ने कांग्रेस की राजनीति को एक नया मोड़ दिया है। यह सिर्फ एक तस्वीर नहीं थी, बल्कि एक संकेत था कि पार्टी संवाद और रणनीति की राजनीति की ओर बढ़ना चाहती है।

राहुल गांधी पार्टी का वैचारिक चेहरा और बड़े आंदोलनों का नेतृत्व करते रह सकते हैं, जबकि प्रियंका गांधी संगठन और संसद के भीतर रोजमर्रा की राजनीति को संभाल सकती हैं। कांग्रेस के भीतर अब इस तरह की चर्चाएं खुलकर होने लगी हैं।संसद सत्र के दौरान प्रियंका गांधी की सक्रियता ने यह भी दिखाया कि वे विपक्ष में रहते हुए भी कामकाज के मुद्दों पर सरकार से बात करने में विश्वास रखती हैं। यह राजनीति का वह रूप है जिसमें विरोध के साथ संवाद भी चलता है। चाय पर हुई बातचीत ने इसी राजनीति की झलक दिखाई। जनता के लिए भी यह संदेश गया कि लोकतंत्र में मतभेदों के बावजूद बातचीत संभव है।इस पूरे घटनाक्रम ने कांग्रेस के भविष्य को लेकर नई उम्मीदें और नए सवाल दोनों खड़े कर दिए हैं। क्या पार्टी में दो पावर सेंटर उभर रहे हैं या यह जिम्मेदारियों का स्वाभाविक बंटवारा है, इसका जवाब आने वाला वक्त देगा। लेकिन इतना साफ है कि संसद के उस चाय कप में सिर्फ चाय नहीं थी, बल्कि कांग्रेस की बदलती सियासत की झलक भी थी। प्रियंका गांधी की मौजूदगी ने यह साबित कर दिया कि वे अब सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि सक्रिय राजनीतिक भूमिका निभाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

अराजक मोड़ पर बांग्लादेश

- महेन्द्र तिवारी

बांग्लादेश आज जिस उथल-पुथल से गुजर रहा है, वह केवल एक देश की आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता नहीं है, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया के लिए चिंता का विषय बनती जा रही है। शेख़ हसीना के सत्ता से हटने के बाद पैदा हुआ राजनीतिक शून्य अब एक ऐसे मोड़ पर आ खड़ा हुआ है, जहाँ सत्ता, सड़कों और विचारधाराओं के बीच का टकराव हिंसक रूप ले चुका है। छात्र नेता और उभरते जनाक्रोश आंदोलन के प्रतीक चेहरे शरीफ़ उस्मान हादी की हत्या ने इस अस्थिरता को विस्फोटक दिशा दे दी है। यह घटना अपने-आप में जितनी दुखद और भयावह है, उससे कहीं अधिक गंभीर इसके राजनीतिक और सामाजिक निहितार्थ हैं। मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में बनी अंतरिम सरकार मूलतः एक संक्रमणकालीन व्यवस्था है, जिसके पास न तो जनादेश की नैतिक ताकत है और न ही प्रशासनिक मशीनरी पर वैसी पकड़, जो गहरे राजनीतिक संकट को संभाल सके। निष्पक्ष चुनाव, संस्थागत सुधार और कानून-व्यवस्था बहाल करने के वादों के बावजूद सरकार पर लगातार यह आरोप लग रहे हैं कि वह न तो समयबद्ध निर्णय ले पा रही है और न ही विभिन्न राजनीतिक शक्तियों के बीच विश्वास कायम कर पा रही है। फरवरी 2026 के लिए घोषित आम चुनाव अभी दूर हैं, और उससे पहले ही अवामी लीग द्वारा पूरी चुनाव प्रक्रिया को 'पक्षपाती' और 'फासिस्ट' बताकर खारिज कर देना इस आशंका को बल देता है कि आने वाले महीनों में टकराव और तेज़ होगा। ऐसे माहौल में शरीफ़ उस्मान हादी की हत्या एक ट्रिगर की तरह सामने आई।

हादी केवल एक छात्र नेता नहीं था; वह 2024 के छात्र-आंदोलन और तथाकथित 'जुलाई क्रांति' का प्रतीक बन चुका था। उसकी हत्या को अलग-अलग राजनीतिक खेमे अपने-अपने हिसाब से परिभाषित कर रहे हैं—कोई इसे पुराने सत्ता तंत्र की साज़िश बता रहा है, तो कोई इसे उभरते जनतांत्रिक नेतृत्व को कुचलने की कोशिश कह रहा है। जांच में कुछ संदिग्धों के भारत की ओर भागने की आशंका ने इस पूरे घटनाक्रम को अंतरराष्ट्रीय रंग दे दिया और गुस्से का रुख़ भारत की तरफ़ मोड़ दिया गया। भारत-विरोधी नारे, भारतीय उच्चायोग और वीज़ा केंद्रों के बाहर हिंसक प्रदर्शन, और 'भारतीय मिशन बंद करो' जैसी मांगें यह दिखाती हैं कि आंतरिक असंतोष को बाहरी दुश्मन की ओर मोड़ना कितना आसान और राजनीतिक रूप से उपयोगी होता है। बांग्लादेश की युवा राजनीति में पहले से मौजूद यह धारणा कि भारत शेख़ हसीना का संरक्षक रहा है, इस आग में घी का काम कर रही है। अंतरिम सरकार की प्रशासनिक कमजोरी और स्पष्ट संवाद की कमी ने अफ़वाहों और उग्र नैरेटिव को खुला मैदान दे दिया है। यहाँ सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि बांग्लादेश के इतिहास में राजनीतिक हिंसा अक्सर बहुत जल्दी साम्प्रदायिक रूप ले लेती है। 2021 और 2024 के बाद के अनुभव बताते हैं कि जब राज्य की पकड़ ढीली होती है, तो भीड़ का गुस्सा सबसे पहले अल्पसंख्यकों पर टूटता है। मौजूदा हालात में भी यह खतरा वास्तविक है। हालिया घटनाओं में हिन्दू समुदाय के खिलाफ़ हिंसा की खबरें और मयमन सिंह जैसे इलाकों में भीड़ द्वारा हत्या की घटनाएँ इस आशंका को पुष्ट करती हैं कि राजनीतिक अराजकता फिर से धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए असुरक्षा का माहौल बना सकती है। भारत-बांग्लादेश संबंध इस समय स्पष्ट रूप से तनावपूर्ण दौर से गुजर रहे हैं। एक ओर ढाका भारत पर हमलावरों को शरण देने जैसे आरोपों के जरिए घरेलू दबाव को संतुलित करने की कोशिश कर रहा है, तो दूसरी ओर दिल्ली ने अपने राजनयिक मिशनों की सुरक्षा को लेकर कड़ी चिंता जताई है और कूटनीतिक स्तर पर विरोध दर्ज कराया है। वीज़ा सेवाओं में कटौती और सीमित आवाजाही जैसे कदम दोनों देशों के आम नागरिकों पर भी असर डाल रहे हैं। यह स्थिति न तो भारत के हित में है और न ही बांग्लादेश के, लेकिन राजनीति में तात्कालिक लाभ अक्सर दीर्घकालिक नुकसान को अनदेखा कर देता है।

इस पूरे संकट में अंतरिम सरकार की भूमिका निर्णायक होनी चाहिए थी, लेकिन वह अब तक प्रतिक्रियात्मक ही दिखी है। राष्ट्रीय शोक, आधा झुका ध्वज और कुछ गिरफ्तारियाँ प्रतीकात्मक कदम हैं; वे सड़कों पर फैले अविश्वास और गुस्से को शांत करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। जरूरत एक पारदर्शी, विश्वसनीय और तेज़ जांच की है, जो किसी भी राजनीतिक दबाव से ऊपर उठकर सच्चाई सामने ला सके। साथ ही, सभी प्रमुख राजनीतिक शक्तियों के बीच संवाद का रास्ता खोलना भी अनिवार्य है, वरना चुनाव तक यह अस्थिरता और हिंसा बांग्लादेश को एक ऐसे दलदल में धकेल सकती है, जहाँ से निकलना मुश्किल होगा। दक्षिण एशिया के संदर्भ में देखें तो बांग्लादेश की अस्थिरता केवल उसकी सीमाओं तक सीमित नहीं रहेगी। सीमा सुरक्षा, व्यापार, शरणार्थी संकट और क्षेत्रीय कट्टरता—ये सभी मुद्दे इससे प्रभावित होंगे। भारत के लिए चुनौती यह है कि वह संयम और कूटनीतिक संतुलन बनाए रखते हुए अपने नागरिकों, मिशनों और सीमावर्ती क्षेत्रों की सुरक्षा सुनिश्चित करे, बिना इस नैरेटिव को और मजबूत किए कि वह बांग्लादेश के आंतरिक मामलों में दखल दे रहा है।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमला, वैश्विक चुप्पी और भारत के सामने कठोर सवाल

अजय कुमार

दो दिन पहले तक दुनिया को इस्लामिक आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होने का उपदेश दिया जा रहा था। बड़े मंचों से भाषण हो रहे थे, मानवता और सभ्यता की दुहाई दी जा रही थी। लेकिन आज वही दुनिया बांग्लादेश में बहते हिंदुओं के खून पर खामोश है। वही ताकतें, जो खुद को मानवाधिकारों की सबसे बड़ी संरक्षक बताती हैं, आज ऐसी चुप्पी साधे बैठी हैं मानो कुछ हुआ ही न हो। बांग्लादेश में जो कुछ बीते दिनों हुआ, वह सिर्फ एक पड़ोसी देश की आंतरिक अशांति नहीं है, बल्कि यह उस सलेक्टिव सोच और वैचारिक पाखंड का आईना है, जिसे पूरी दुनिया को देखना चाहिए। बांग्लादेश में हालात उस वक्त बिगड़ने शुरू हुए, जब कट्टरपंथी नेता शरीफ उस्मान हादी की मौत के बाद सड़कों पर उन्मादी भीड़ उतर आई।

देखते ही देखते विरोध प्रदर्शन हिंसा में बदल गए। ढाका समेत कई शहरों में आगजनी, तोड़फोड़ और अराजकता फैल गई। मीडिया संस्थानों को निशाना बनाया गया, सरकारी संपत्ति जलाई गई और भारत विरोधी नारे खुलेआम लगाए गए। यह सब कुछ अचानक नहीं हुआ, बल्कि लंबे समय से पनप रही कट्टर सोच का विस्फोट था।इस उन्माद की सबसे भयावह तस्वीर मैमनसिंह जिले से सामने आई। यहां एक हिंदू युवक दीपू चंद्र दास को भीड़ ने घेर लिया। पहले उसे बेरहमी से पीटा गया, फिर उसकी हत्या कर दी गई। यहीं तक भी दरिंदगी नहीं रुकी। युवक के शव को पेड़ से लटकाया गया और बीच सड़क पर लाकर आग लगा दी गई। यह घटना किसी एक व्यक्ति की हत्या नहीं थी, बल्कि यह साफ संदेश था कि कट्टरपंथी भीड़ कानून, संविधान और इंसानियत से ऊपर खुद को मानने लगी है।इस बर्बरता के बाद सवाल उठना स्वाभाविक था कि दुनिया क्या बोलेगी। लेकिन यहां भी वही पुरानी कहानी दोहराई गई। पश्चिमी देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों की ओर से कोई ठोस प्रतिक्रिया नहीं आई। न कोई तीखा बयान, न कोई सख्त चेतावनी। मानो एक हिंदू की हत्या कोई मायने ही नहीं रखती। इसके उलट जब ढाका में अखबारों के दफ्तर जले, तब प्रेस स्वतंत्रता की चिंता में बयान जारी होने लगे। यह फर्क साफ बताता है कि मानवाधिकारों की परिभाषा किसके लिए है और किसके लिए नहीं। ढाका में प्रथम आलो और द डेली स्टार जैसे बड़े अखबारों के दफ्तरों पर हमला हुआ। आगजनी और तोड़फोड़ की गई। इसके बाद पश्चिमी देशों के मीडिया संगठनों ने प्रेस नोट जारी कर चिंता जताई। यह चिंता अपनी जगह सही हो सकती है, लेकिन सवाल यह है कि उसी ढाका से कुछ ही दूरी पर जब एक हिंदू को जिंदा जला दिया गया, तब इनकी जुबान क्यों बंद हो गई। क्या इंसान की जान से ज्यादा इमारतें कीमती हैं।बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने जरूर इस हत्या की निंदा की और दोषियों पर कार्रवाई का भरोसा दिलाया। कुछ गिरफ्तारियां भी हुईं। लेकिन सच्चाई यह है कि जमीन पर डर का माहौल कायम है। हिंदू समुदाय खुद को असुरक्षित महसूस कर रहा है।

यह कोई पहली घटना नहीं है। इससे पहले भी बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले, मंदिरों की तोड़फोड़ और जबरन पलायन की खबरें आती रही हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि इस बार हिंसा ने बेहद क्रूर रूप ले लिया। इस पूरी उथल-पुथल के बीच एक और तस्वीर सामने आई, जिसने भारत में आक्रोश को और बढ़ा दिया। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने शरीफ उस्मान हादी को श्रद्धांजलि दी। वही हादी, जिसकी पहचान भारत विरोधी राजनीति से जुड़ी रही है। वही हादी, जिसका नाम ग्रेटर बांग्लादेश जैसे विवादित नक्शे से जुड़ा, जिसमें भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों को बांग्लादेश का हिस्सा दिखाया गया था। सवाल यह है कि जब बांग्लादेश की संस्थाएं खुलेआम भारत विरोधी सोच को सम्मान दे रही हैं, तो भारत को भी आंख बंद कर रिश्ते निभाने चाहिए या नहीं।यही सवाल अब भारतीय क्रिकेट और आईपीएल तक पहुंच गया है। कोलकाता नाइट राइडर्स द्वारा बांग्लादेशी खिलाड़ी मुस्तफिजुर रहमान को करोड़ों रुपये में खरीदे जाने पर बहस तेज हो गई है। खेल भावना की दुहाई देने वाले कह रहे हैं कि खेल को राजनीति से अलग रखा जाना चाहिए। लेकिन जब खेल संस्थाएं ही राजनीतिक संदेश देने लगें, तब यह तर्क कमजोर पड़ जाता है। अतीत में मुस्तफिजुर के भारत विरोधी पोस्ट लाइक करने को लेकर विवाद हो चुका है।